भृगु संहिता

दो शब्द

सौर जगत् में भ्रमणकर्ता ग्रहों की गतिविधियों का प्रभाव अन्योनाश्रित संबंध होने के कारण मानव शरीर स्थित सौर-जगत पर भी पड़ता है। अत: पृथ्वी पर निवास करने वाले प्राणी आकाशचारी ग्रहों से प्रभावित होते हैं।

महर्षियों ने दिव्य दृष्टि, सूक्ष्म प्रज्ञा, विस्तृत ज्ञान द्वारा शरीरस्थ सौर मंडल का अध्ययन-मनन-अन्वेषण-पर्यवेक्षण-अवलोकन तदनुसार आकाशीय सौर मंडल की व्यवस्था की। उन ग्रहों के मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया। ज्योतिष विद्या कालान्तर में देशकाल की सीमाएं बांध दिग्दिगंत में पहुंची, इसका प्रचार-प्रसार हुआ। इसे परिवर्धित करने में विदेशी विद्वानों ने भी अपना योगदान दिया।

ज्योतिष की अनेक शाखा-प्रशाखाओं में गणित और फलित का महत्त्वपूर्ण स्थान है। फलित के माध्यम से जीवन पर पड़ने वाले ग्रहों के फलाफल का निरुपण किया जाता है। जन्म कालिक ग्रहों की जो स्थिति नभ मंडल में होती है, उसी के अनुसार उसका प्रभाव हमारे जीवन पर पड़ता है। जीवन में घटित व आगे घटित होने वाली घटनाओं का ज्ञान फलित ज्योतिष द्वारा होता है।

एक बार भगवान् नारायण क्षीर सागर में शेष शय्या पर विश्राम कर रहे थे, लक्ष्मी चरण दबा रही थीं, उसी समय महर्षि श्रेष्ठ दर्शनीय वैकुण्ठ पहुंचे। भगवान के द्वारपाल जय-विजय ने उन्हें प्रणाम कर कहा, नारायण इस समय विश्रामाधीन हैं अत: उन तक आपको जाने देना संभव नहीं है। महर्षि रुष्ट हुए व जय-विजय को शाप दिया कि तुम्हें मुझे रोकने के अपराध में तीन बार राक्षस योनि में जन्म लेकर पृथ्वी पर रहना होगा। जय-विजय मौन नतमस्तक खड़े हो गए, इधर भृगु उस स्थान पर जा पहुंचे जहाँ भगवान शयन कर रहे थे। विष्णु को शयन करते देख भृगु ऋषि का क्रोध उमड़ पड़ा, सोचा, मुझे देख विष्णु ने जान-बूझकर आंखें मूंद ली हैं। मेरी अवज्ञा कर रहे हैं।

क्रोध में उफनते ऋषि ने उसी समय श्री विष्णु के वक्षस्थल पर अपने दाएं पैर का प्रहार किया, विष्णु की आंखें खुल गईं, वे उठ हाथ जोड़

प्रार्थना करते बोले– हे महर्षि! मेरी छाती तो वज्र के समान कठोर है, आपके चरण कमल कोमल हैं। कहीं उन्हें चोट तो नहीं लगी। मैं क्षमा प्रार्थी हूं।

ऐसा सुन महर्षि का क्रोध शांत हुआ, अपनी भूल व क्रोध पर आत्म–ग्लानि हुई अत: शोकाकुल होकर विष्णु से क्षमा–याचना करके उनकी स्तुति करने लगे पर लक्ष्मी ऐसा देख क्रोधित हो गई थीं। पति का अपमान सहन न कर सकीं, बोलीं– 'हे ब्राह्मण! तुमने लक्ष्मीपति का निरादर किया है अत: मैं तुम्हें व तुम्हारे सजातियों को शाप देती हूं कि उनके घर मेरा अर्थात लक्ष्मी का वास नहीं होगा, वे दरिद्र बने भटकते रहेंगे।'

भृगु बोले–हे लक्ष्मी! मैंने क्रोधावेश में जो अपराध किया उसकी क्षमा विष्णु से मांग ली है तथापि तुमने संयम न रख ब्राह्मणों के लिए जो शाप दिया है वह आपके पद व सम्मान योग्य नहीं है। शाप ठीक है पर मैं अपने सजातीय ब्राह्मणों की प्रतिष्ठार्थ, आजीविकार्थ ऐसे ज्योतिष ग्रंथ का निर्माण करूंगा जिसके आधार पर वे प्राणी मात्र का भूत–भविष्य–वर्तमान का ज्ञान कर दक्षिणा रूपेण धनोपार्जन करेंगे। तुम्हें वहां विवश होकर रहना होगा।'

ऐसा कह भृगु अपने आश्रम लौट आए फिर भृगु संहिता महाग्रंथ की रचना की। उन्होंने सर्वप्रथम अपने पुत्र व शिष्य शुक्र को पढ़ाया, उनसे समस्त ब्राह्मण समाज में व विश्व भर में यह ग्रंथ प्रचारित हुआ।

अनुक्रम

द्वादश-भाव

जन्म-कुंडली में बारह खाने होते हैं, इन्हें, 'घर' 'स्थान' अथवा 'भाव' कहा जाता है।

जन्म-कुंडली के द्वादश भाव
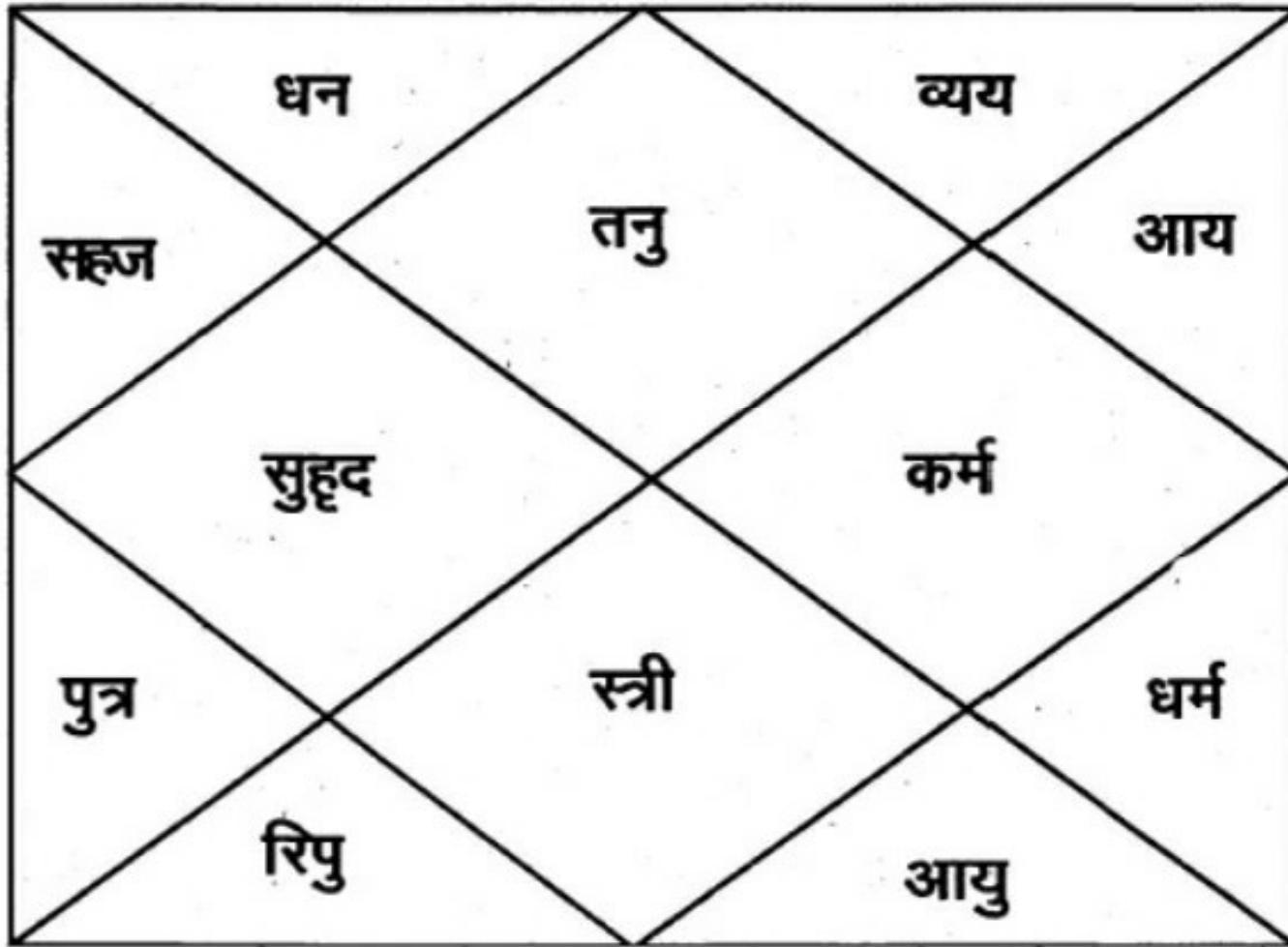
उदाहरणार्थ ऊपर दी गई कुंडली में इन द्वादश भावों को प्रदर्शित किया गया है। जन्म कुंडली के बारह भावों के नाम क्रमश: इस प्रकार हैं-

1. तनु 2. धन 3. सहज 4. सुहृद 5. पुत्र 6. रिपु 7. स्त्री 8. आयु 9. धर्म 10. कर्म 11. आय 12. व्यय।

द्वादश-भावों का परिचय-

जन्म-कुंडली के द्वादश भावों के नाम ऊपर बताए जा चुके हैं। इन भावों के विभिन्न नाम तथा इनके द्वारा किन-किन बातों का विचार किया जाता है, इसे नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए-

1. प्रथम भाव-इसे तनु के अतिरिक्त लग्न, वपू, कल्प, अंग, उदय, आत्मा, शरीर, देह, होरा, केन्द्र, कष्टक, आद्य, मूर्ति चतुष्ट्य तथा प्रथम भाव भी कहा जाता है।

इस भाव के द्वारा जातक के स्वरुप, जाति, आयु, विवेक, मस्तिष्क, शील, चिह्न, सुख-दुःख तथा आकृति आदि के संबंध में विचार किया जाता है।

इस भाव का कारक 'सूर्य' है। इसमें मिथुन, कन्या, तुला तथा कुंभ- इनमें से कोई राशि हो तो उसे बलवान माना जाता है।

लग्नेश की स्थिति और बलाबल के अनुसार इस भाव से जातक की जातीय उन्नति-अवनति तथा कार्यकुशलता का ज्ञान प्राप्त किया जाता है।

2. द्वितीय भाव-इसे धन के अतिरिक्त अर्थ, कुटुम्ब, द्रव्य, काश, वित्त, स्वफणकर तथा द्वितीय भाव भी कहा जाता है। इस भाव का कारक गुरु है।

इस भाव के द्वारा जातक के स्वर, सौंदर्य, आंख, नाक, कान, गायन, प्रेम, कुल, मित्र, सत्यवादिता, सुखोपभोग, बंधन, क्रय-विक्रय एवं स्वर्ण, चांदी, मणि, रत्न आदि संचित पूंजी के संबंध में विचार किया जाता है।

3. तृतीय भाव-इसे सहज के अतिरिक्त पराक्रम, भ्रातृ, उपचय, दुश्चिक्य, आपोक्लिम तथा तृतीय भाव भी कहा जाता है। इस भाव का कारक मंगल है।

इस भाव द्वारा जातक के पराक्रम, कर्म, साहस, धैर्य, शौर्य, आयुष्य, सहोदर, नौकर-चाकर, गायन, योगाभ्यास, क्षय, श्वास, कास तथा दमा आदि के संबंध में विचार किया जाता है।

4. चतुर्थ भाव-इसे सुहृद के अतिरिक्त, सुख, गृह, कण्टक, तूर्य, हिबुक, वाहन, यान, नीर, अम्बु, बंधु, पाताल, केन्द्र तथा चतुर्थ भाव भी कहा जाता है।

इस भाव के द्वारा जातक के सुख, गृह, ग्राम, मकान, सम्पत्ति, बाग-बगीचा, चतुष्पद, माता-पिता को सुख, अन्तःकरण की स्थिति, दया, उदारता, छल, कपट, निधि, यकृत तथा पेट के रोग आदि के संबंध में विचार किया जाता है।

इस भाव का कारक चन्द्रमा है। इस स्थान को विशेषकर माता का माना जाता है।

5. पंचम भाव-इसे पुत्र के अतिरिक्त सुत, तनुज, बुद्धि, विद्या, आत्मज, वाणी, पणफर, त्रिकोण तथा पंचम भाव भी कहा जाता है।

इस भाव का कारक गुरु है।

इस भाव के द्वारा जातक की बुद्धि, विद्या, विनय, नीति, देवभक्ति, संतान, प्रबंध–व्यवस्था, मामा का सुख, धन मिलने के उपाय, अनायास बहुत से धन की प्राप्ति, नौकरी छूटना, हाथ का यश, मूत्र पिण्ड, वस्ति एवं गर्भाशय आदि के संबंध में विचार किया जाता है।

6. षष्ठ भाव–इसे रिपु के अतिरिक्त द्वेष, शत्रु, क्षत, वैरी, रोग, नष्ट, त्रिक, उपचय, आपोक्लिम तथा षष्ठ भाव भी कहा जाता है।

इस भाव का कारक मंगल है।

इस भाव के द्वारा जातक के शत्रु, चिंता, संदेह, जागीर, मामा की स्थिति, यश, गुदा–स्थान, पीड़ा रोग तथा व्रण आदि के संबंध में विचार किया जाता है।

7. सप्तम भाव–इसे 'जाया' के अतिरिक्त स्त्री, मदन, काम, सौभाग्य, जामित्र, केन्द्र तथा सप्तम भाव भी कहा जाता है।

इस भाव के द्वारा जातक की स्त्री, मृत्यु, कामेच्छा, कामचिंता, सहवास, विवाह, स्वास्थ्य, जननेन्द्रिय, अंग–विभाग, व्यवसाय, झगड़ा, झंझट तथा बवासीर का रोग आदि के संबंध में विचार किया जाता है। इस भाव का कारक शुक्र है।

इस भाव में वृश्चिक राशि हो तो उसे बलवान माना जाता है।

8. अष्टम भाव–इसे आयु के अतिरिक्त 'त्रिक' रन्ध्र, जीवन, चतुरस्त्र पणफर अष्टम भाव भी कहा जाता है।

इस भाव का कारक शनि है।

इस भाव के द्वारा जातक की आयु, जीवन, मृत्यु, मृत्यु के कारण, व्याधि, मानसिक चिंताएं, झूठ, पुरातत्त्व, समुद्र यात्रा, संकट, लिंग, योनि तथा अण्डकोष के रोग आदि के संबंध में विचार किया जाता है।

9. नवम भाव–इसे धर्म के अतिरिक्त पुण्य, भाग्य, त्रिकोण तथा, नवम भाव भी कहा जाता है।

इस भाव का कारक गुरु है।

इस भाव के द्वारा जातक के तप, शील, धर्म, विद्या, प्रवास, तीर्थ यात्रा, दान, मानसिक वृत्ति, भाग्योदय तथा पिता का सुख आदि के संबंध में विचार किया जाता है।

10. दशम भाव–इसे कर्म के अतिरिक्त व्योम, गगन, नभ, रव, मध्य, आस्पद, मान, आज्ञा, व्यापार, केंद्र तथा दशम भाव भी कहा जाता है।

इस भाव का कारक बुध है।

इस भाव के द्वारा जातक के अधिकार, ऐश्वर्य भोग, यश प्राप्ति, नेतृत्व, प्रभुता, मान-प्रतिष्ठा, राज्य नौकरी व्यवसाय तथा पिता के संबंध में विचार किया जाता है।

विभिन्न भावों से विचारणीय विषय चक्र
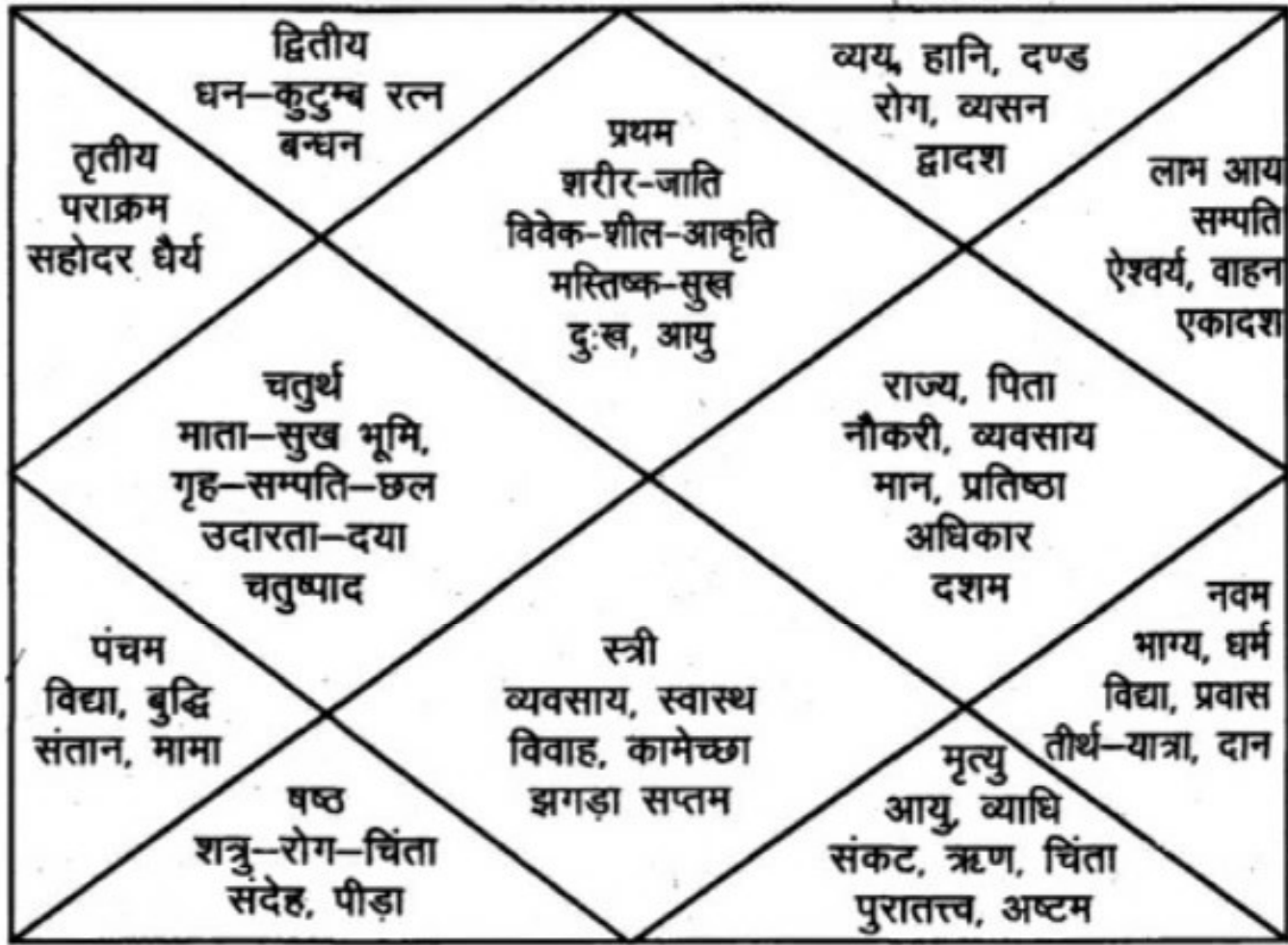
इस भाव में मेष, सिंह, वृष तथा मकर राशि का पूर्वार्द्ध एवं धनु राशि का उत्तरार्द्ध बलवान होता है।

11. एकादश भाव–इसे लाभ के अतिरिक्त आय, उत्तम, उपचय, पणफर, तथा एकादश भाव भी कहा जाता है।

इस भाव का कारक गुरु है।

इस भाव के द्वारा जातक की सम्पत्ति, ऐश्वर्य, मांगलिक कार्य, वाहन, रत्न आदि के संबंध में विचार किया जाता है।

12. द्वादश भाव–इसे व्यय के अतिरिक्त प्रान्त्य, त्रिक, रिष्फ, अंतिम तथा द्वादश भाव भी कहा जाता है।

इस भाव का कारक शनि है।

इस भाव के द्वारा जातक की हानि, व्यय, दण्ड, व्यसन, रोग, दान तथा बाहरी, संबंध आदि के संबंध में विचार किया जाता है।

विभिन्न भावों के कारण ग्रह
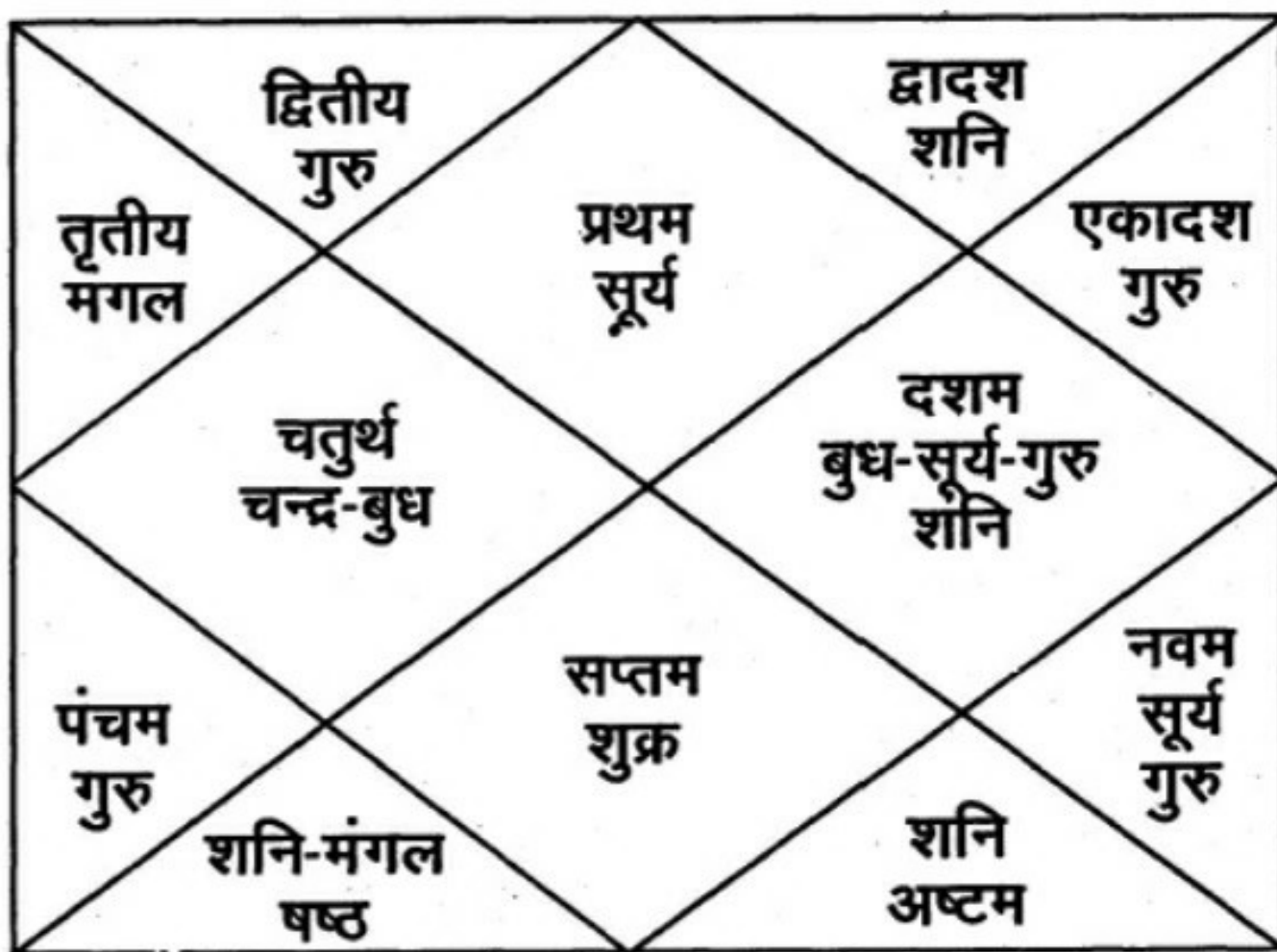
इससे पहले पृष्ठ पर दी गई कुंडली में किस–किस भाव के द्वारा किस–किस विषय के संबंध में जानकारी प्राप्त की जाती है, उसे प्रदर्शित किया गया है–

उपर्युक्त की कुंडली में किस भाव का कौन–कौन–सा ग्रह कारक (स्वामी) होता है, यह प्रदर्शित किया गया है–

प्रारम्भिक-ज्ञातव्य

इस पुस्तक की सहायता द्वारा जन्म–कुंडली स्थित विभिन्न ग्रहों के शुभाशुभ फल की जानकारी करने से पूर्व द्वादश राशि (मेष, वृष आदि) तथा नवग्रहों (सूर्य, चन्द्र आदि) से संबंधित कुछ प्रारंभिक विषयों का ज्ञान प्राप्त कर लेना आवश्यक है। अस्तु, इस प्रकरण में पहले उन्हीं विषयों का वर्णन किया जा रहा है।

तिथियां

ज्योतिषशास्त्र में चन्द्रमा की एक कला को तिथि माना जाता है। तिथियों की गणना शुक्ल पक्ष की प्रतिप्रदा से प्रारंभ होती है। अमावस्या के बाद की प्रतिपदा को लेकर पूर्णिमा तक की तिथियां शुक्ल पक्ष की तथा पूर्णिमा से बाद की प्रतिप्रदा से आरंभ करके अमावस्या तक की तिथियां कृष्ण पक्ष की होती हैं। इस प्रकार एक महीने में दो पक्ष होते हैं– (1) शुक्ल पक्ष (2) कृष्ण पक्ष। दोनों पक्षों की पूर्णिमा के अतिरिक्त

और अमावस्या के अतिरिक्त अन्य तिथियों के नाम एक जैसे होते हैं, जो वे निम्नलिखित हैं–

प्रतिपदा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पंचमी, षष्ठी, सप्तमी, अष्टमी, नवमी, दशमी, एकादशी, द्वादशी, त्रयोदशी और चतुर्दशी। चतुर्दशी के बाद शुक्ल पक्ष की पन्द्रहवीं तिथि को पूर्णिमा तथा कृष्ण पक्ष की तीसवीं तिथि को 'अमावस्या' कहा जाता है।

तिथियों को 1, 2, 3 आदि अंकों के रूप में लिखा जाता है। पूर्णिमा तक यह क्रम 15 की संख्या तक चलता है, परंतु उसके बाद पुनः 1, 2, 3 आदि लिखा जाता है, और जिस दिन अमावस्या होती है, उस दिन अमावस्या तिथि को 30 के अंक के रूप में लिखा जाता है।

निम्नलिखित चक्र में शुक्ल पक्ष की तथा कृष्ण पक्ष की तिथियों के अंक प्रदर्शित किये गये हैं–

तिथिबोधक चक्र

तिथियों के अंक	कृष्ण पक्ष	तिथियों के अंक	शुक्ल पक्ष
1.	प्रतिपदा	1.	प्रतिपदा
2.	द्वितीया	2.	द्वितीया
3.	तृतीया	3.	तृतीया
4.	चतुर्थी	4.	चतुर्थी
5.	पंचमी	5.	पंचमी
6.	षष्ठी	6.	षष्ठी
7.	सप्तमी	7.	सप्तमी
8.	अष्टमी	8.	अष्टमी
9.	नवमी	9.	नवमी
10.	दशमी	10.	दशमी
11.	एकादशी	11.	एकादशी
12.	द्वादशी	12.	द्वादशी
13.	त्रयोदशी	13.	त्रयोदशी
14.	चतुर्दशी	14.	चतुर्दशी
30.	अमावस्या	15.	पूर्णिमा

तिथियों के स्वामी

प्रतिपदा तिथि के स्वामी अग्नि, द्वितीया के ब्रह्मा, तृतीया की गौरी, चतुर्थी के गणेश, पंचमी के शेषनाग, षष्ठी के कार्तिकेय, सप्तमी के सूर्य, अष्टमी के शिव, नवमी की दुर्गा, दशमी के काल, एकादशी के विश्वेदेवा, द्वादशी के विष्णु, त्रयोदशी के कामदेव, चतुर्दशी के शिव, पौर्णमासी के चन्द्रमा तथा अमावस्या के पित्तर हैं।

नक्षत्र

आकाश-मंडल में असंख्य तारिकाओं के समूहों द्वारा जो विभिन्न प्रकार की आकृतियां बनती हैं, उन्हीं आकृतियों, अर्थात् ताराओं के समूह को **'नक्षत्र'** कहा जाता है।

जिस प्रकार पृथ्वी पर स्थान की दूरी फलांग, मील अथवा किलोमीटरों में नापी जाती है, उसी प्रकार आकाश-मंडल की दूरी को नक्षत्रों द्वारा ज्ञात किया जाता है।

ज्योतिषशास्त्र ने संपूर्ण आकाश-मंडल को सत्ताइस भागों में विभाजित किया है और प्रत्येक भाग का नाम एक-एक नक्षत्र रख दिया है। नक्षत्रों के नाम इस प्रकार हैं-

1. अश्विनी, 2. भरणी, 3. कृत्तिका, 4. रोहिणी, 5. मृगशिरा, 6. आर्द्रा, 7. पुनर्वसु, 8. पुष्य, 9. आश्लेषा, 10. मघा, 11. पूर्वाफाल्गुनी, 12. उत्तरा-फाल्गुनी, 13. हस्त, 14. चित्रा, 15. स्वाति, 16. विशाखा, 17. अनुराधा, 18. ज्येष्ठा, 19. मूल, 20. पूर्वाषाढ़ा, 21. उत्तराषाढ़ा, 22. श्रवण, 23. धनिष्ठा, 24. शतभिषा, 25. पूर्वाभाद्रपद, 26. उत्तरा-भाद्रपद, और 27. रेवती।

उक्त सत्ताइस नक्षत्रों के अतिरिक्त 'अभिजात' नामक एक अट्ठाईसवां नक्षत्र भी माना गया है। उत्तराषाढ़ा की अंतिम पन्द्रह घटी तथा श्रवण के प्रारंभ की 4 घटी-इस प्रकार कुल उन्नीस घटियों के मान वाला नक्षत्र 'अभिजित्' है। सामान्यत: एक नक्षत्र की साठ घटी होती है।

नक्षत्रों के स्वामी

अश्विनी नक्षत्र के स्वामी अश्विनी कुमार, भरणी के काल, कृत्तिका के अग्नि, रोहिणी के ब्रह्मा, मृगशिरा के चन्द्रमा, आर्द्रा के रुद्र, पुनर्वसु के अदिति, पुष्य के बृहस्पति, आश्लेषा के सर्प, मघा के पित्तर, पूर्वाफाल्गुनी के भग, उत्तराफाल्गुनी के अर्यमा, हस्त के सूर्य, चित्रा के विश्वकर्मा, स्वाति के पवन, विशाखा के शुक्राग्नि, अनुराधा के मित्र, ज्येष्ठा के इन्द्र, मूल के नैर्ऋति, पूर्वाषाढ़ा के जल, उत्तराषाढ़ा के विश्वेदेव, अभिजित् के ब्रह्मा, श्रवण के विष्णु, धनिष्ठा के वसु, शतभिषा के वरुण, पूर्वाभाद्रपद के अजैकापाट, उत्तराभाद्रपद के अहिर्बुध्न्य तथा रेवती के पूषा हैं। इन नक्षत्रों के स्वामियों का जैसा गुण-स्वभाव है, वैसा ही गुण-स्वभाव नक्षत्रों का भी होता है।

नक्षत्रों के चरण

ज्योतिषशास्त्र को सूक्ष्मता से समझने के लिए प्रत्येक नक्षत्र के चार-चार भाग किये हैं, जिन्हें प्रथम चरण, द्वितीय चरण, तृतीय चरण तथा चतुर्थ चरण कहा जाता है।

नक्षत्रों के चरणाक्षर

प्रत्येक नक्षत्र के चार-चार चरण होते हैं, उनमें से प्रत्येक नक्षत्र के प्रत्येक चरण का एक-एक 'अक्षर' ज्योतिषशास्त्र ने निर्धारित कर दिया है। जिस नक्षत्र के जिस चरण में जिस व्यक्ति का जन्म होता है, उसका नाम उसी जन्मकालीन नक्षत्र के चरणाक्षर पर रखा जाता है। उदाहरण के लिए यदि किसी व्यक्ति का जन्म पुनर्वसु नक्षत्र के प्रथम चरण में हुआ हो तो उसका नाम कैलास, केवलचन्द्र, आदि रखा जायेगा। किस नक्षत्र में कौन-कौन से चरणाक्षर होते हैं, इसे आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

नक्षत्रों का चरणाक्षर बोधक चक्र

नक्षत्र का नाम	चरणाक्षर			
	प्रथम चरण	द्वितीय चरण	तृतीय चरण	चतुर्थ चरण
1. अश्विनी	चू	चे	चो	ला
2. भरणी	ली	लू	ले	लो
3. कृत्तिका	आ	ई	ऊ	ए
4. रोहिणी	ओ	बा	बी	बू
5. मृगशिरा	बे	बो	का	की
6. आर्द्रा	कृ	घ	ङ	छ
7. पुनर्वसु	के	को	हा	ही
8. पुष्य	हू	हे	हो	डा
9. आश्लेषा	डी	डु	डे	डो
10. मघा	मा	मी	मू	मे
11. पूर्वाफाल्गुनी	मो	टा	टा	टू
12. उत्तराफाल्गुनी	टे	टो	पा	पी
13. हस्त	पू	ष	ण	ठ
14. चित्रा	पे	पो	रा	री
15. स्वाति	रू	रे	रो	ता
16. विशाखा	ती	तू	ते	तो
7. अनुराधा	ना	नी	नू	ने
8. ज्येष्ठा	नो	या	यी	यू
19. मूल	ये	यो	भा	भी
20. पूर्वाषाढ़ा	भू	धा	फा	ढा
21. उत्तराषाढा	भे	भो	जा	जो
22. अभिजित्	जू	जे	जो	खा
23. श्रवण	खी	खू	खे	खो
24. धनिष्ठा	गा	गी	गू	गे
25. शतभिषा	गो	सा	सी	सू
26. पूर्वाभाद्रपद	से	सो	दा	दी
27. उत्तराभाद्रपद	दू	थ	भ	जं
28. रेवती	दे	दो	चा	ची

राशियां

आकाश स्थित भचक्र के 360 अंश अथवा 108 भाग निश्चित किये गए हैं, तथा समस्त भचक्र को बारह राशियों में विभक्त किया गया है। अस्तु, तीस अंश अथवा नौ भाग की एक राशि होती है।

बारह राशियों के नाम क्रमश: इस प्रकार हैं– 1. मेष 2. वृष 3. मिथुन 4. कर्क 5. सिंह 6. कन्या 7. तुला 8. वृश्चिक 9. धनु 10. मकर 11. कुम्भ 12. मीन।

मेष आदि प्रत्येक राशि के अंतर्गत अश्विनी आदि नक्षत्रों के क्रमश: नौ–नौ चरण होते हैं।

अक्षरानुसार राशि ज्ञान–

प्रत्येक नक्षत्र के चार चरण होते हैं और उनमें से प्रत्येक चरण का एक–एक अक्षर होता है। यह बात पहले बताई जा चुकी है। किस–किस अक्षर की कौन–सी राशि होती है, इसे नीचे लिखे अनुसार समझ लेना चाहिए।

अक्षरानुसार राशिज्ञानबोधक चक्र

राशि नाम	राशि के अक्षर
1. मेष	चू चे चो ला ली लू ले लो आ
2. वृष	ई ऊ ए ओ वा वी वू वे वो
3. मिथुन	का की कू घ ङ छ के को हा
4. कर्क	ही हू हे हो डा डी डू डे डो
5. सिंह	मा मी मू मे मो टा टी टू टे
6. कन्या	टो पा पी पू ष ण ठ पे पो
7. तुला	रा री रु रे रो ता ती तू ते
8. वृश्चिक	तो ना नी नू ने नो या यी यू
9. धनु	ये यो भा भी भू धा फा ढ़ा भे
10. मकर	भो जा जी खी खू खे खो गा गी

11. कुम्भ	गू गे गो सा सी सू से सो दा
12. मीन	दी दू थ भ ज दे दो चा ची

किस राशि के अंतर्गत किस-किस नक्षत्र के कितने चरण होते हैं, उसे आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

नक्षत्र चरण बोधक राशि चक

राशियों के नाम	नक्षत्रों के चरण
1. मेष	अश्विनी तथा भरणी नक्षत्र के चारों चरण एवं कृत्तिका नक्षत्र का पहला चरण।
2. वृष	कृत्तिका नक्षत्र के अंतिम तीन चरण, रोहिणी नक्षत्र के चारों चरण, तथा मृगशिरा नक्षत्र के पहले दो चरण।
3. मिथुन	मृगशिरा नक्षत्र के अंतिम दो चरण, आर्द्रा नक्षत्र के चारों चरण तथा पुनर्वसु नक्षत्र के पहले तीन चरण।
4. कर्क	पुनर्वसु नक्षत्र का अंतिम चौथा चरण, तथा पुष्य और आश्लेषा नक्षत्र के चारों चरण।
5. सिंह	मघा तथा पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र के चारों चरण एवं उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र का पहला चरण।
6. कन्या	उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र के अंतिम तीन चरण, हस्त नक्षत्र के चारों चरण तथा चित्रा नक्षत्र के पहले दो चरण।
7. तुला	चित्रा नक्षत्र के अंतिम दो चरण, स्वाति नक्षत्र के चारों चरण तथा विशाखा नक्षत्र के पहले तीन चरण।
8. वृश्चिक	विशाखा नक्षत्र का अंतिम एक चरण, और अनुराधा एवं ज्येष्ठा नक्षत्र के चारों चरण।
9. धनु	मूल तथा पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र के चारों चरण एवं उत्तराषाढ़ा नक्षत्र का पहला चरण।
10. मकर	उत्तराषाढ़ा नक्षत्र के अंतिम तीन चरण, श्रवण नक्षत्र के चारों चरण तथा धनिष्ठा नक्षत्र के पहले दो चरण।
11. कुम्भ	धनिष्ठा नक्षत्र के अंतिम दो चरण, शतभिषा नक्षत्र के चारों चरण तथा, पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के पहले तीन चरण।
12. मीन	पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र का अंतिम एक चरण एवं उत्तराभाद्रपद एवं रेवती नक्षत्र के चारों चरण।

विशेष टिप्पणी–'अभिजित्' नक्षत्र की गणना मकर राशि के अंतर्गत की जाती है, अत: अभिजित् नक्षत्र के चारों चरणों के चार अक्षर 'जू जे जो खा' की राशि भी मकर ही समझनी चाहिए।

राशियों का स्वभाव और प्रभाव

किसी राशि का स्वभाव और प्रभाव कैसा है और उसके द्वारा किन बातों का विचार किया जाता है इसे नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

मेष–यह राशि पुरुष जाति, लाल–पीले वर्ण वाली, कांतिहीन, क्षत्रियवर्ण, पूर्व दिशा की स्वामिनी, अग्नि तत्त्व वाली, चर–संज्ञक, समान अंगों वाली, अल्प संततिवान् तथा पित्त–प्रकृतिकारक है। इसका स्वभाव अहंकारी, साहसी तथा मित्रों के प्रति दयालुता का है। इसके द्वारा मस्तक का विचार किया जाता है।

2. वृष–यह राशि स्त्री जाति, श्वेत वर्ण, कांतिहीन, वैश्यवर्ण, दक्षिण दिशा की स्वामिनी, भूमि तत्त्व वाली, स्थिर संज्ञक, शिथिल शरीर, शुभकारक तथा महाशब्दकारी है। इसका स्वभाव स्वार्थी, सांसारिक कार्यों में दक्षता तथा बुद्धिमत्ता से काम लेने का है। इसे अर्ध–जलराशि भी कहा जाता है। इसके द्वारा मुंह और कपोलों का विचार किया जाता है।

3. मिथुन–यह राशि पुरुष जाति, हरितवर्ण, चिकनी, शूद्र वर्ण, पश्चिम दिशा की स्वामिनी, वायु तत्त्व वाली, उष्ण, महाशब्दकारी, मध्यम संतति वाली, शिथिल शरीर तथा विषमोदयी है। इसका स्वभाव शिल्प तथा विद्याध्ययनी है। इसके द्वारा शरीर के कंधों तथा बाजुओं का विचार किया जाता है।

4. कर्क–यह राशि स्त्री जाति, रक्त–धवल मिश्रित वर्ण, जलचारी, उत्तर दिशा की स्वामिनी, सौम्य तथा कफ प्रकृति वाली, बहुत संतान एवं चरण वाली, रात्रिबली तथा समोदयी है। इसका स्वभाव लज्जा, सांसारिक उन्नति के लिए प्रयत्नशील रहना तथा समय के अनुसार चलना है। इसके द्वारा वक्षस्थल एवं गुर्दे का विचार किया जाता है।

5. सिंह–यह राशि पुरुष जाति, पीत वर्ण, क्षत्रिय वर्ण, पूर्व दिशा की स्वामिनी, पित्त–प्रकृति, अग्नि तत्त्व वाली, उष्ण स्वभाव, पुष्ट शरीर, यात्राप्रिय, अल्प संततिवान तथा निर्जल है। इसका स्वभाव मेष राशि के समान है, परन्तु इसमें उदारता तथा स्वातन्त्र्यप्रियता अधिक पाई जाती है। इसके द्वारा हृदय का विचार किया जाता है।

6. कन्या–यह राशि स्त्री जाति, पिंगल वर्ण, द्विस्वभाव, दक्षिण दिशा की स्वामिनी, वायु तथा शीत प्रकृति, पृथ्वी तत्त्व वाली, रात्रि बली तथा अल्प संतति वाली है। इसका स्वभाव मिथुन राशि जैसा है। परन्तु यह अपनी उन्नति तथा सम्मान पर विशेष रुप से ध्यान देती है। इसके द्वारा पेट का विचार किया जाता है।

7. तुला–यह राशि पुरुष जाति, श्याम वर्ण, चर–संज्ञक, शूद्र वर्ण, पश्चिम दिशा की स्वामिनी, वायु तत्त्व वाली, दीन बली, क्रूर स्वभाव, शिर्षोदयी, अल्प संततिवान तथा पाद जलराशि है। इसका स्वभाव ज्ञान–प्रिय, राजनीतिज्ञ, विचारशील एवं कार्य सम्पादक है। इसके द्वारा नाभि के नीचे के अंगों का विचार किया जाता है।

8. वृश्चिक–यह राशि स्त्री जाति, शूद्र वर्ण, कफ प्रकृति, ब्राह्मण वर्ण, उत्तर दिशा की स्वामिनी, रात्रि बली, बहु संततिवान तथा अर्द्धजल वाली है। इसका स्वभाव स्पष्टवादी, निर्मल, दृढ़प्रतिज्ञ हठी तथा दम्भी है। इसके द्वारा जननेन्द्रिय का विचार किया जाता है।

9. धनु–यह राशि पुरुष जाति, स्वर्ण वर्ण, द्विस्वभाव, क्षत्रिय वर्ण, पूर्व दिशा की स्वामिनी, दीन बली, पित्त प्रकृति, अग्नि तत्त्व वाली, अल्प संतति वान, दृढ़ शरीर तथा अर्द्ध जलराशि है। इसका स्वभाव करुणामय, मर्यादाशील एवं अधिकार प्रिय है। इसके द्वारा पांवों की सन्धि तथा जंघाओं का विचार किया जाता है।

10. मकर–यह राशि स्त्री जाति, पिंगल वर्ण, रात्रि बली, वैश्य वर्ण, दक्षिण दिशा की स्वामिनी, पृथ्वी तत्त्व वाली, शीतल शरीर, तथा वात प्रकृति है। इसका स्वभाव उच्च स्थिति का अभिलाषी है। इसके द्वारा पांव के घुटनों का विचार किया जाता है।

11. कुम्भ–यह राशि पुरुष जाति, विचित्र वर्ण, वायु तत्त्व वाली, शूद्र वर्ण, त्रिदोष प्रकृति वाली, पश्चिमी दिशा की स्वामिनी, उष्ण स्वभाव, अर्द्ध जल मध्यम संतान वाली, शिर्षोदय, क्रूर तथा दीन बली है। इसका स्वभाव शान्त, विचारशील, धार्मिक तथा नवीन वस्तुओं का आविष्कार कर्ता है। इसके द्वारा पेट के भीतरी भागों का विचार किया जाता है।

12. मीन–यह राशि स्त्री जाति, पिंगल वर्ण, जल तत्त्व वाली, ब्राह्मण वर्ण, उत्तर दिशा की स्वामिनी, कफ प्रकृति तथा रात्रि बली है। यह पूर्ण रुप से जल राशि है। इसका स्वभाव दयालु, दानी तथा श्रेष्ठ है। इसके द्वारा पैरों का विचार किया जाता है।

ग्रहों का स्वभाव और प्रभाव

किस ग्रह का स्वभाव और प्रभाव कैसा है, और उसके द्वारा किन बातों का विचार किया जाता है, इसे नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

1. सूर्य–यह ग्रह पुरुष जाति, रक्त वर्ण, पित्त प्रकृति तथा पूर्व दिशा का स्वामी है। यह आत्मा, आरोग्य, स्वभाव, राज्य, देवालय का सूचक एवं पितृकारक है। इसके द्वारा शारीरिक रोग, मंदाग्नि, अतिसार, सिरदर्द, मानसिक रोग, नेत्र विकार, उदासी शोक, अपमान, कलह आदि का विचार किया जाता है। मेरुदण्ड, स्नायु, कलेजा, नेत्र आदि अवयवों पर इसका विशेष प्रभाव रहता है। इससे पिता के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।

सूर्य लग्न से सप्तक स्थान में बली तथा मकर राशि से छः राशियों तक चेष्टा बली होता है। सूर्य को पाप ग्रह माना गया है।

2. चन्द्र–यह ग्रह स्त्री जाति, श्वेत वर्ण, जलीय तथा पश्चिमोत्तर दिशा का स्वामी है। यह मन, चित्त वृत्ति, शारीरिक स्वास्थ्य, सम्पत्ति, राजकीय अनुग्रह, माता–पिता तथा चतुर्थ स्थान का कारक है। इसके द्वारा पाण्डुरोग, कफ तथा जलीय रोग, मूत्र कृच्छ मानसिक रोग, स्त्री जन्य रोग, पीनस, निरर्थक भ्रमण, उदर तथा मस्तिष्क सम्बन्धित विचार किया जाता है। यह रक्त का त्यागी तथा वात–श्लेष्मा इसकी धातु है।

चन्द्रमा लग्न से चतुर्थ स्थान में बली एवं मकर से छः राशियों में चेष्टा बली होता है। कृष्ण पक्ष की षष्ठी से शुक्ल पक्ष की सप्तमी तक चन्द्रमा क्षीण रहता है। इस अवधि से चन्द्रमा को पाप का ग्रह माना जाता है। शुक्ल पक्ष की दशमी से कृष्ण पक्ष की पंचमी तक चन्द्रमा पूर्ण ज्योतिवान् रहता है। इस अवधि में इसे शुभ ग्रह तथा बली माना जाता है। बली चन्द्रमा ही चतुर्थ भाव में अपना पूर्ण फल प्रदान करता है। क्षीण चन्द्रमा फल नहीं देता।

3. मंगल–यह ग्रह पुरुष जाति, रक्त वर्ण, दक्षिण दिशा का स्वामी, अग्नि तत्त्व वाला तथा पित्त प्रकृति वाला है। यह धैर्य तथा पराक्रम का स्वामी, भाई–बहन का कारक तथा रक्त एवं शक्ति का नियामक कारक है। ज्योतिष शास्त्र में इसे पाप का ग्रह माना गया है। यह उत्तेजित करने वाला तृष्णा कारक तथा सदैव दुःखदायी रहता है।

मंगल तीसरे तथा छठे स्थान में बली होता है। दशम स्थान में दिग् बली होता है। चन्द्रमा के साथ रहने पर चेष्टा बली होता है तथा द्वितीय स्थान में निष्फल (बलहीन) होता है।

4. बुध–यह ग्रह नपुंसक जाति, श्याम वर्ण, उत्तर दिशा का स्वामी, त्रिदोष प्रकृति तथा पृथ्वी तत्त्व वाला है। यह ज्योतिष, चिकित्सा, शिल्प, कानून, व्यवसाय, चतुर्थ स्थान तथा दशम स्थान का कारक है। इसके द्वारा गुप्त रोग, संग्रहणी, वात रोग, श्वेत कुष्ट, गूंगापन, बुद्धिभ्रम, विवेक, शक्ति, जिह्वा तथा तालु आदि शब्द के उच्चारण से सम्बन्धित अवयवों का विचार किया जाता है।

बुध, सूर्य, मंगल, केतु तथा शनि इन अशुभ ग्रहों के साथ हो तो अशुभ फल देता है और पूर्ण चन्द्र, गुरु अथवा शुक्र इन शुभ ग्रहों के साथ हो तो शुभ फलदायक रहता है। यदि यह (बुध) चतुर्थ स्थान में बैठा हो तो निष्फल रहता है।

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार बुध जैसे ग्रहों के साथ हो वैसा ही शुभ अथवा पापग्रह बन जाता है। अकेला हो तो शुभ ग्रह है।

5. गुरु–यह ग्रह पुरुष जाति, पित्त वर्ण, पूर्वोत्तर दिशा का स्वामी तथा आकाश तत्त्व वाला है। यह कफ, धातु तथा चर्बी की वृद्धि करता है। इसके द्वारा शोथ (सूजन) गुल्म आदि रोग, घर, विद्या, पुत्र, पौत्र आदि का विचार किया जाता है। इसे हृदय की शक्ति का कारक भी माना जाता है।

गुरु लग्न में बैठा हो तो बली होता है। और यदि चन्द्रमा के साथ कहीं बैठा हो तो चेष्टा बली होता है। यह शुभ ग्रह है। इसके द्वारा पारलौकिक एवं आध्यात्मिक सुखों का विशेष विचार किया जाता है।

6. शुक्र–यह ग्रह स्त्री जाति, श्याम–गोरा वर्ण, दक्षिण–पूर्व दिशा का स्वामी, कार्यकुशल तथा जलीय तत्त्व वाला है। यह कफ, वीर्य आदि धातुओं का कारक माना जाता है। इसके प्रभाव से जातक के शरीर का रंग गेहुआं होता है। यह काव्य, संगीत, वस्त्राभूषण, वाहन, शैय्या, पुष्प, आंख, स्त्री (पत्नी) तथा कामेच्छा आदि का कारक है। इसके द्वारा चतुरता एवं सांसारिक सुख–सम्बन्धी विचार किया जाता है। यदि जातक का जन्म दिन में हुआ हो तो शुक्र के द्वारा माता के सम्बन्ध में भी विचार किया जाता है।

शुक्र छठे स्थान में बैठा हो तो निष्फल रहता है, और यदि सातवें स्थान में हो तो अनिष्टकर होता है।

ज्योतिष शास्त्र ने शुक्र को शुभ ग्रह माना है। इसके द्वारा सांसारिक तथा व्यावहारिक सुखों का विशेष विचार किया जाता है।

7. शनि–यह ग्रह नपुंसक जाति, कृष्ण वर्ण, पश्चिम दिशा का स्वामी, वायु तत्त्व, वातश्लेष्मिक प्रकृति का है। इसके द्वारा आयु, शारीरिक बल, दृढ़ता, विपत्ति, प्रभुता, मोक्ष, यश, ऐश्वर्य, नौकरी, योगाभ्यास, विदेशी भाषा एवं मूर्छा आदि रोगों का विचार किया जाता है। यदि जातक का जन्म रात्रि में हुआ हो तो यह माता–पिता का कारक होता है।

शनि सप्तम स्थान में बली होता है, तथा किसी वक्री ग्रह अथवा चन्द्रमा के साथ रहने पर चेष्टा बली होता है।

शनि क्रूर तथा पाप ग्रह है। परन्तु इसका अन्तिम परिणाम सुखद होता है। यह मनुष्य को दुर्भाग्य तथा संकटों के चक्र में डालकर, अन्त में उसे शुद्ध तथा सात्त्विक बना देता है।

8. राहु–यह कृष्ण वर्ण, दक्षिण दिशा का स्वामी और क्रूर ग्रह है। यह जिस स्थान पर बैठता है, वहां की उन्नति को रोक देता है। यह गुप्त युक्ति बल, कष्ट तथा त्रुटियों का कारक है।

9. केतु–यह कृष्ण वर्ण तथा क्रूर ग्रह है। इसके द्वारा नाना–हाथ, पांव, क्षुधाजनित कष्ट एवं धर्म रोग आदि का विचार किया जाता है। यह गुप्त शक्ति बल कठिन कर्म भय तथा कमी का कारक है। कुछ स्थितियों में केतु शुभ ग्रह भी माना जाता है।

ग्रहों की उच्च तथा नीच स्थिति

जातक की जन्म–कुण्डली में जिस राशि के जितने अंश गत हो चुके हों, उसके अनुसार विभिन्न ग्रह उच्च तथा नीच स्थिति को प्राप्त होते हैं।

1. ग्रहों की उच्च स्थिति–ग्रहों की उच्च स्थिति के बारे में नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए–

I. सूर्य–मेष राशि के 10 अंश पर उच्च का माना जाता है।

II. चन्द्र–वृष राशि के 3 अंश पर उच्च का माना जाता है।

III. मकर राशि के 28 अंश पर उच्च का माना जाता है।

IV. कन्या राशि के 15 अंश पर उच्च का माना जाता है।

V. गुरु–कर्क राशि के 5 अंश पर उच्च का माना जाता है।

VI. शुक्र–मीन राशि के 27 अंश पर उच्च का माना जाता है।

VII. शनि–तुला राशि के 20 अंश पर उच्च का माना जाता है।

टिप्पणी–राहु तथा केतु छाया ग्रह हैं, अत: ज्योतिष शास्त्र के अनेक ग्रथों में इनकी उच्च अथवा नीच स्थिति के विषय में कोई उल्लेख नहीं किया गया है। परन्तु कुछ विद्वानों के मत से मिथुन राशि के 15 अंश पर राहु उच्च का माना जाता है, तथा कुछ के मतानुसार वृष राशि में राहु को उच्च माना जाता है। इसी प्रकार कुछ विद्वानों के मतानुसार धनु राशि के 15 अंश पर केतु को उच्च माना जाता है, और कुछ के मतानुसार वृश्चिक राशि में केतु को उच्च माना जाता है।

(2) ग्रहों की नीच स्थिति–प्रत्येक ग्रह को जिस राशि के जितने अंशों पर उच्च का बताया गया है, उससे सातवीं राशि के उतने ही अंशों पर वह नीच का होता है। इसे नीचे लिखे अनुसार और अधिक स्पष्ट रुप से समझ लेना चाहिए।

I. सूर्य–तुला राशि के 10 अंश पर नीच का होता है।

II. चन्द्र–वृश्चिक राशि के 3 अंश पर नीच का होता है।

III. मंगल–कर्क राशि के 28 अंश पर नीच का होता है।

IV. बुध–मीन राशि के 15 अंश पर नीच का होता है।

V. गुरु–मकर राशि के 5 अंश पर नीच का होता है।

VI. शुक्र–कन्या राशि के 27 अंश पर नीच का होता है।

VII. शनि–मेष राशि के 20 अंश पर नीच का होता है।

टिप्पणी–राहु और केतु के विषय में यह है कि कुछ विद्वान धनु के 15 अंश पर राहु को नीच का मानते हैं। और कुछ के मतानुसार वृश्चिक राशि में राहु नीच का होता है।

इसी प्रकार कुछ विद्वानों के मतानुसार मिथुन राशि के 15 अंश पर केतु नीच का होता है और कुछ के मतानुसार वृष राशि में नीच का होता है।

नीचे दिये गए चक्र में ग्रहों की उच्च तथा नीच स्थिति को प्रदर्शित किया गया है–

**ग्रहों की उच्च तथा नीच स्थिति बोधक चक

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
उच्च	मेष	वृष	मकर	कन्या	कर्क	मीन	तुला	मिथुन	धनु
स्थिति	10	3	28	15	5	27	20	15	15
									अथवा वृषराशि वृश्चिक राशि
नीच	तुला	वृश्चिक	कर्क	मीन	मकर	कन्या	मेष	धनु	मिथुन
स्थिति	10	3	28	15	5	27	20	15	15
									अथवा वृश्चिक वृष राशि राशि

ग्रहों की दृष्टि

जन्म–कुण्डली में प्रत्येक ग्रह जिस भाव में बैठा होता है, उससे तीसरे तथा दसवें भाव को एक चरण दृष्टि से, पांचवें तथा नवें को दो चरण दृष्टि से, चौथे तथा आठवें भाव को तीन चरण दृष्टि से तथा सप्तम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता है, परन्तु इन भावों को पूर्णापूर्ण दृष्टि से देखने के अतिरिक्त मंगल अपने बैठे हुए स्थान से चौथे तथा आठवें स्थान को, गुरु अपने बैठे हुए स्थान से पांचवें तथा नवें भाव को, तथा शनि अपने बैठे हुए स्थान से तीसरे तथा दसवें भाव को भी पूर्ण दृष्टि से देखते हैं।

सूर्य की विभिन्न भावों पर दृष्टि चक्र
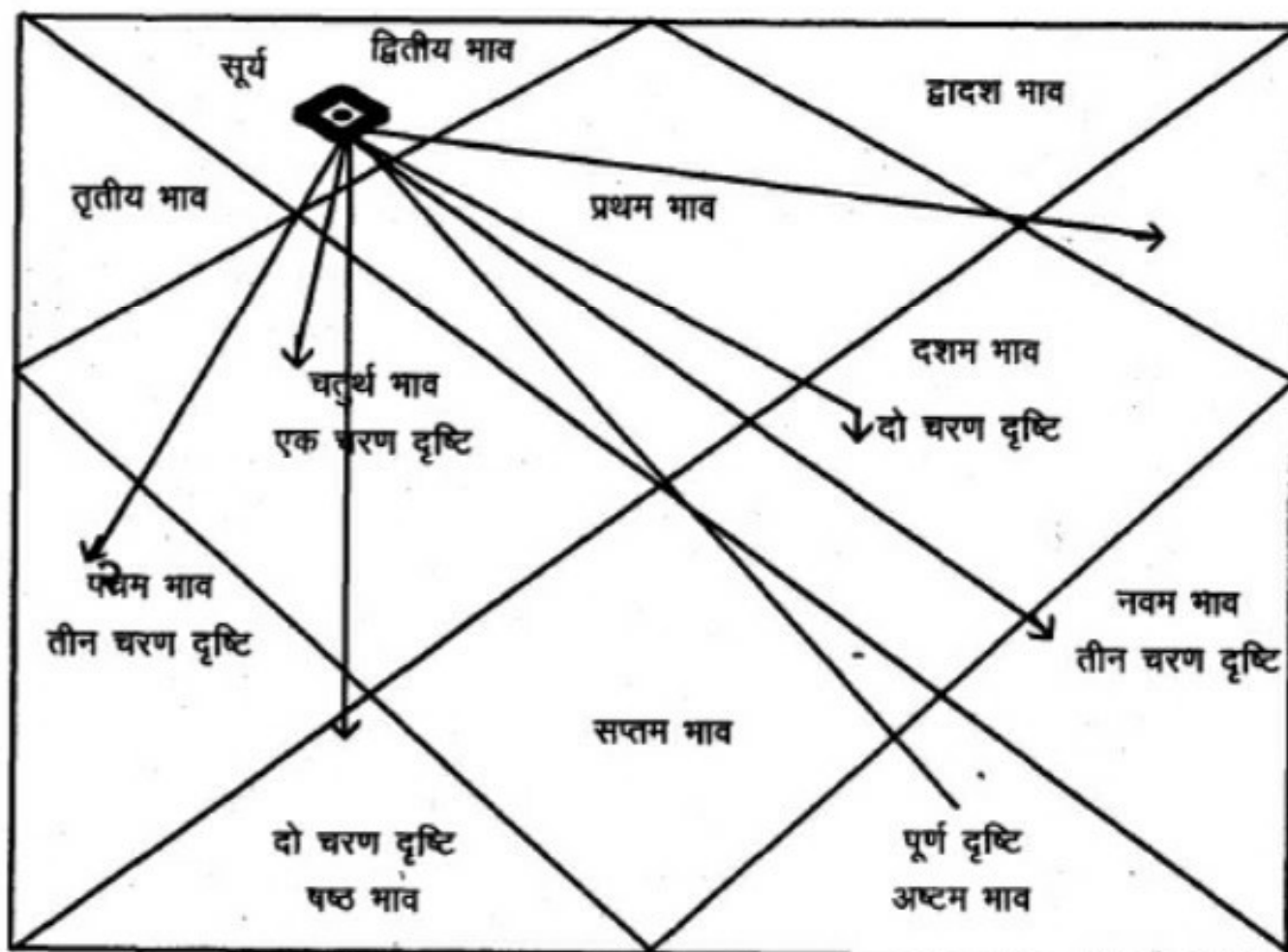
अगले पृष्ठ पर एवं आगे दी गई विभिन्न कुण्डलियों में विभिन्न ग्रहों की खण्ड तथा पूर्ण दृष्टि को प्रदर्शित किया गया है। इनके आधार पर अन्य जन्म–कुण्डलियों में भी ग्रहों की विभिन्न भावों पर पड़ने वाली दृष्टि की जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए।

सूर्य की खण्ड तथा पूर्ण दृष्टि–सूर्य जिस भाव में भी बैठा हो, वहां से तीसरे तथा दसवें भाव को एक चरण दृष्टि से, पांचवें तथा नवें भाव को दो चरण दृष्टि से, चौथे तथा आठवें भाव को तीन चरण दृष्टि से एवं सातवें भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता है।

उपर्युक्त उदाहरण कुण्डली में सूर्य को द्वितीय भाव में बैठा हुआ दिखाया गया है, अतः द्वितीय भाव से आरम्भ करके नियमानुसार विभिन्न भावों पर पड़ने वाली उसकी एक चरण, दो चरण, तीन चरण तथा पूर्ण दृष्टियों को प्रदर्शित किया गया है। जातक की जन्म–कुण्डली के जिस भाव में भी सूर्य की स्थिति हो, उसी भाव से आरम्भ करके अन्य भावों पर उसकी खण्ड तथा पूर्ण दृष्टियों की जानकारी उपर्युक्त नियम के अनुसार पड़ने वाली प्राप्त कर लेनी चाहिए।

चन्द्रमा की खण्ड तथा पूर्ण दृष्टि–चन्द्रमा जिस भाव में भी बैठा हो, वहां से वह दसवें तथा तीसरे भाव को एक चरण दृष्टि से, पांचवें तथा नवें भाव को दो चरण दृष्टि से देखता है।

चन्द्रमा की विभिन्न भावों पर दृष्टि चक्र
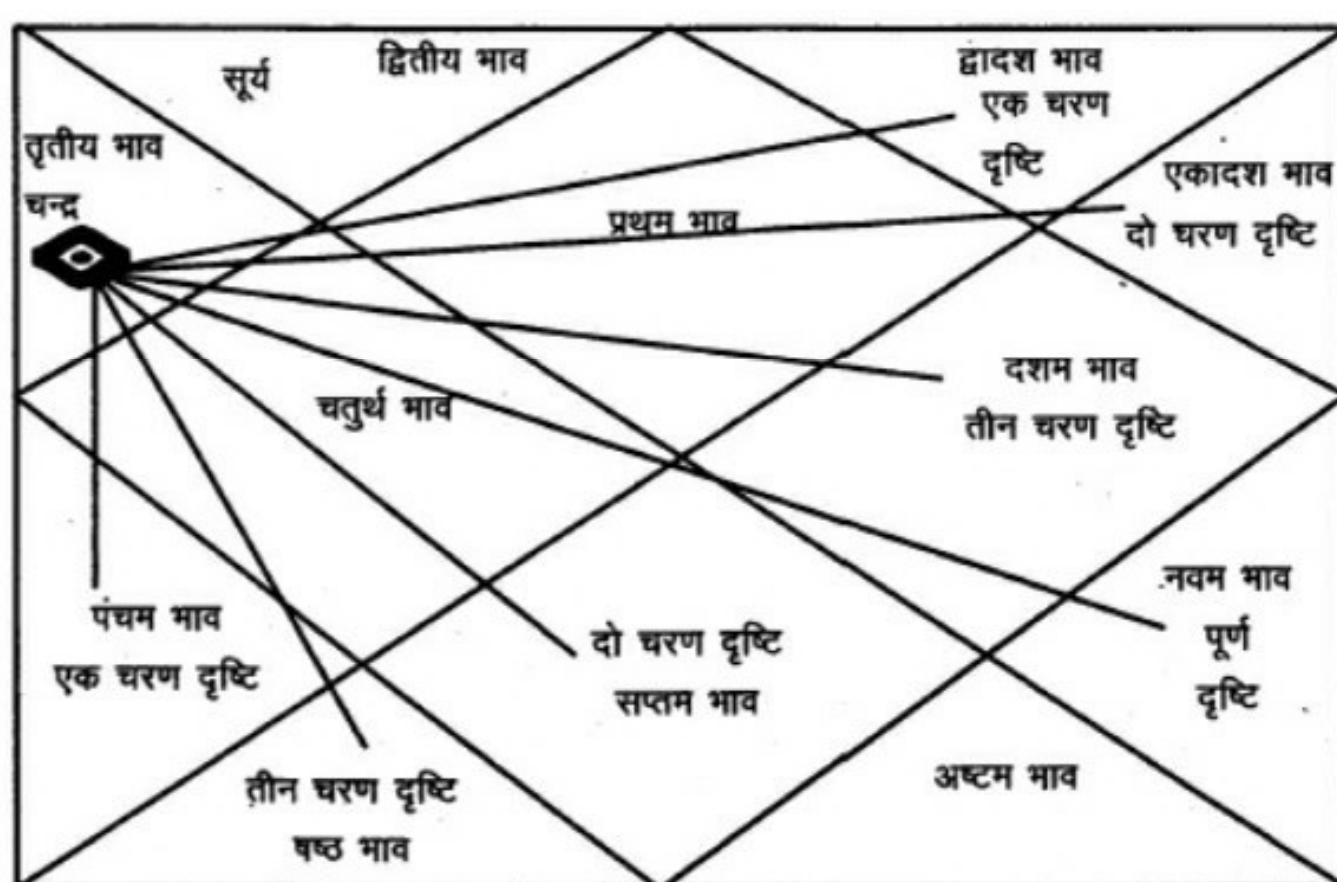
उपर्युक्त उदाहरण कुण्डली में चन्द्रमा को तृतीय भाव में बैठा हुआ दिखाया गया है, अतः तृतीय भाव से आरम्भ करके नियमानुसार विभिन्न भावों पर पड़ने वाली उसकी एक चरण, दो चरण, तीन चरण तथा पूर्ण

दृष्टियों को प्रदर्शित किया गया है। जातक की जन्म–कुण्डली के जिस भाव में भी चन्द्रमा की स्थिति हो, उसी भाव से आरम्भ करके अन्य भावों पर पड़ने वाली उसकी खण्ड तथा पूर्ण दृष्टियों की जानकारी उपर्युक्त नियम के अनुसार प्राप्त कर लेनी चाहिए।

मंगल की खण्ड तथा पूर्ण दृष्टि–मंगल जिस भाव में भी बैठता है, वहीं से वह तीसरे तथा दसवें भाव को एक चरण दृष्टि से, पांचवें तथा नवें भाव को दो चरणदृष्टि से, चौथे तथा आठवें भाव को तीन चरण दृष्टि से तथा सातवें, चौथे एवं आठवें–इन तीनों भावों को पूर्ण दृष्टि से देखता है।

मंगल की विभिन्न भावों पर दृष्टि–चक्र

आगे की पृष्ठ की उदाहरण कुण्डली में मंगल को अष्टम भाव में बैठा हुआ बताया गया है, अत: अष्टम भाव से आरम्भ करके नियमानुसार विभिन्न भावों पर पड़ने वाली उसकी एक चरण, दो चरण, तीन चरण तथा पूर्ण दृष्टियों को प्रदर्शित किया गया है। जातक की जन्म–कुण्डली के जिस भाव में भी मंगल हो, उसी भाव से प्रारम्भ करके अन्य भावों पर पड़ने वाली उसकी खण्ड तथा पूर्ण दृष्टि की जानकारी उपर्युक्त नियम के अनुसार प्राप्त कर लेनी चाहिए।
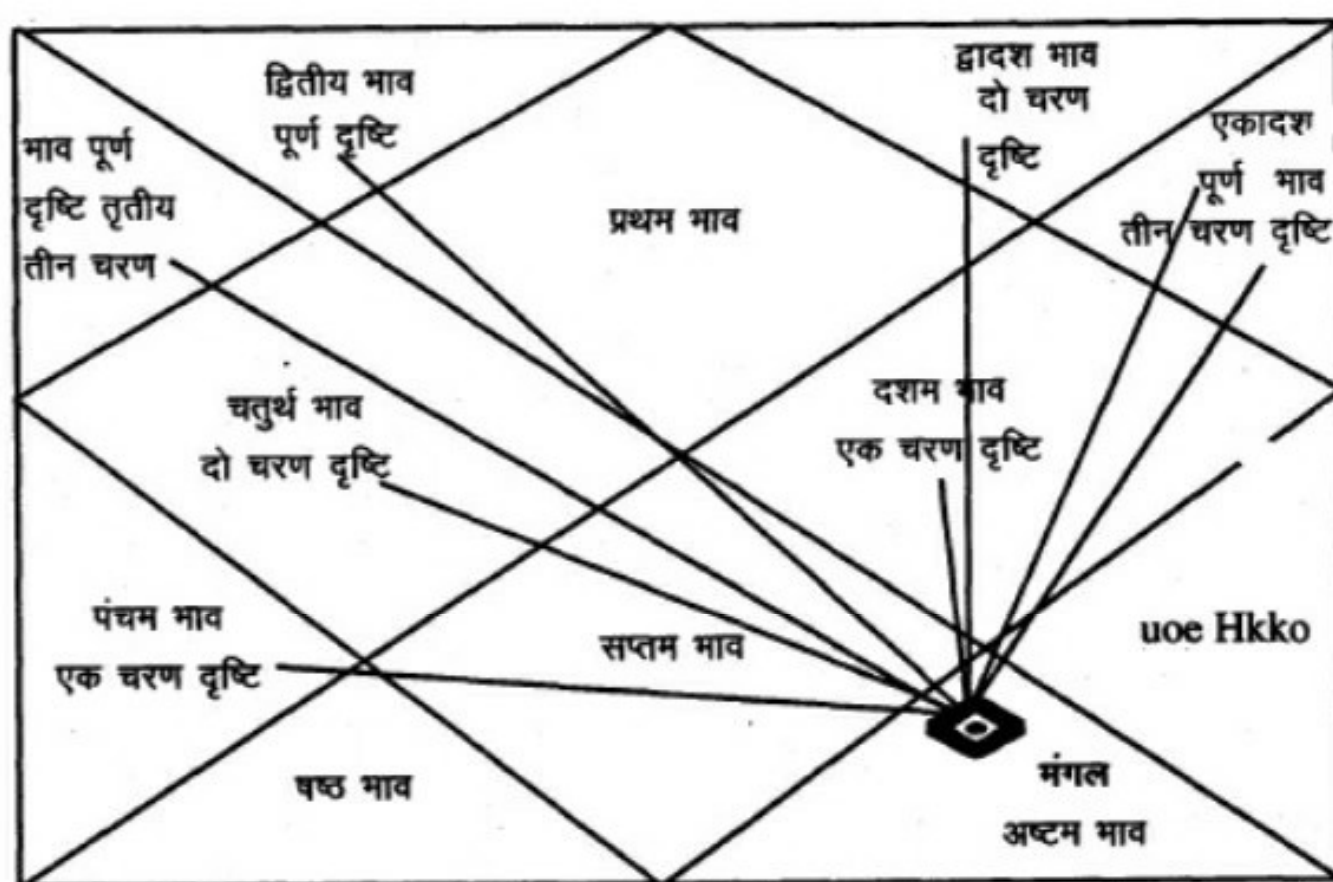
बुध की खण्ड तथा पूर्ण दृष्टि–बुध जिस भाव में भी बैठा हो, वहां से वह तीसरे तथा दसवें भाव को एक चरण दृष्टि से, पांचवें तथा नवें भाव को दो चरण दृष्टि से, चौथे तथा आठवें भाव को तीन चरण दृष्टि से देखता है।

बुध की विभिन्न भावों पर दृष्टि चक्र
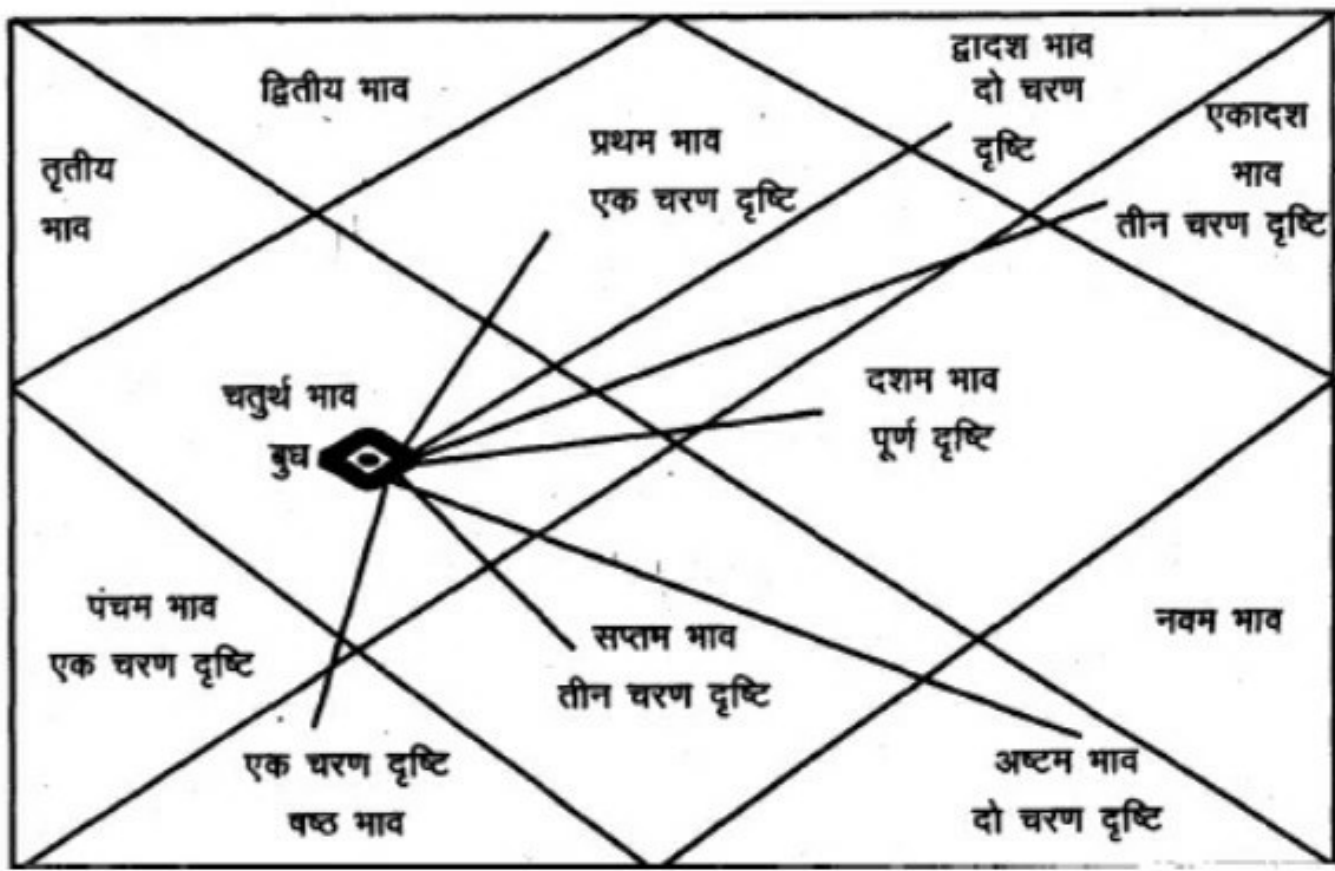
पिछले पृष्ठ उदाहरण कुण्डली में बुध को चतुर्थ भाव में बैठा हुआ दिखाया गया है। अतः चतुर्थ भाव से आरम्भ करके नियमानुसार विभिन्न भावों पर पड़ने वाली उसकी एक चरण, दो चरण, तीन चरण तथा पूर्ण दृष्टियों को प्रदर्शित किया गया है। जातक की जन्म-कुण्डली के जिस भाव में भी बुध की स्थिति हो, उसी भाव से आरम्भ करके अन्य भावों पर पड़ने वाली उसकी खण्ड तथा पूर्ण दृष्टियों की जानकारी उपर्युक्त नियम के अनुसार प्राप्त कर लेनी चाहिए।

गुरु की खण्ड तथा पूर्ण दृष्टि–गुरु जिस भाव में बैठता है, वहां से वह तीसरे तथा दसवें भाव को एक चरण दृष्टि से, पांचवें तथा नवें भाव को दो चरण दृष्टि से, चौथे तथा आठवें भाव को तीन चरण दृष्टि से तथा सातवें-पांचवें एवं नवें-इन तीनों भावों को पूर्ण दृष्टि से देखता है।

गुरु का विभिन्न भावों पर दृष्टि चक्र
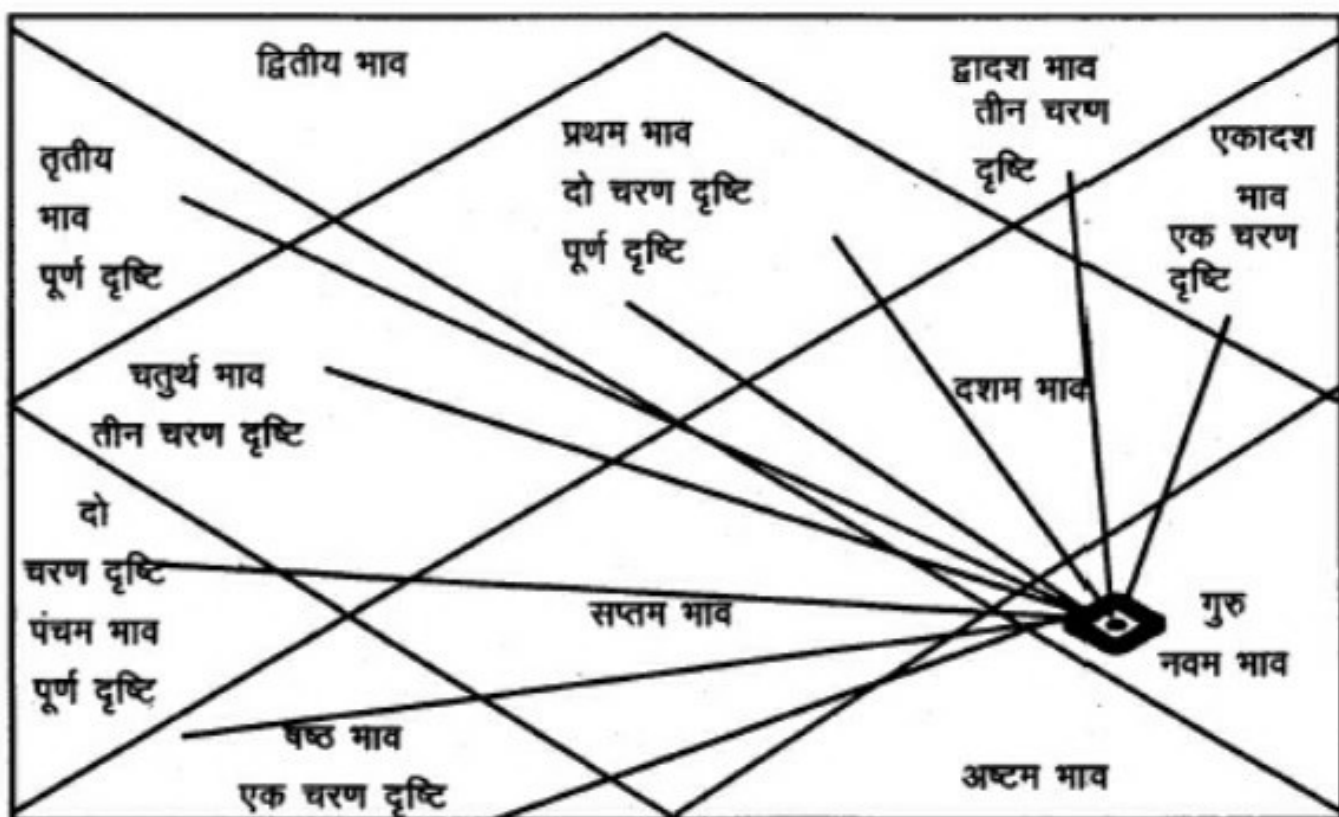
इस उदाहरण कुण्डली में गुरु को नवम भाव में बैठा हुआ दिखाया गया है, अतः नवम भाव से आरम्भ करके नियमानुसार विभिन्न भावों पर पड़ने वाली उसकी एक चरण, दो चरण, तीन चरण तथा पूर्ण दृष्टियों को प्रदर्शित किया गया है। जातक की जन्म-कुण्डली के जिस भाव में गुरु की स्थिति हो, उसी भाव से आरम्भ करके अन्यभावों पर पड़ने वाली उसकी खण्ड तथा पूर्ण दृष्टियों की जानकारी उपर्युक्त नियम के अनुसार प्राप्त कर लेनी चाहिए।

शुक्र की खण्ड तथा पूर्ण दृष्टि–शुक्र जिस भाव में भी बैठा हो, वहां से वह तीसरे तथा दसवें भाव को एक चरण दृष्टि से, पांचवें तथा नवें भाव को दो चरण दृष्टि से, चौथे तथा आठवें भाव को तीन चरण दृष्टि से एवं सातवें भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता है।

शुक्र की विभिन्न भावों पर दृष्टि चक्र
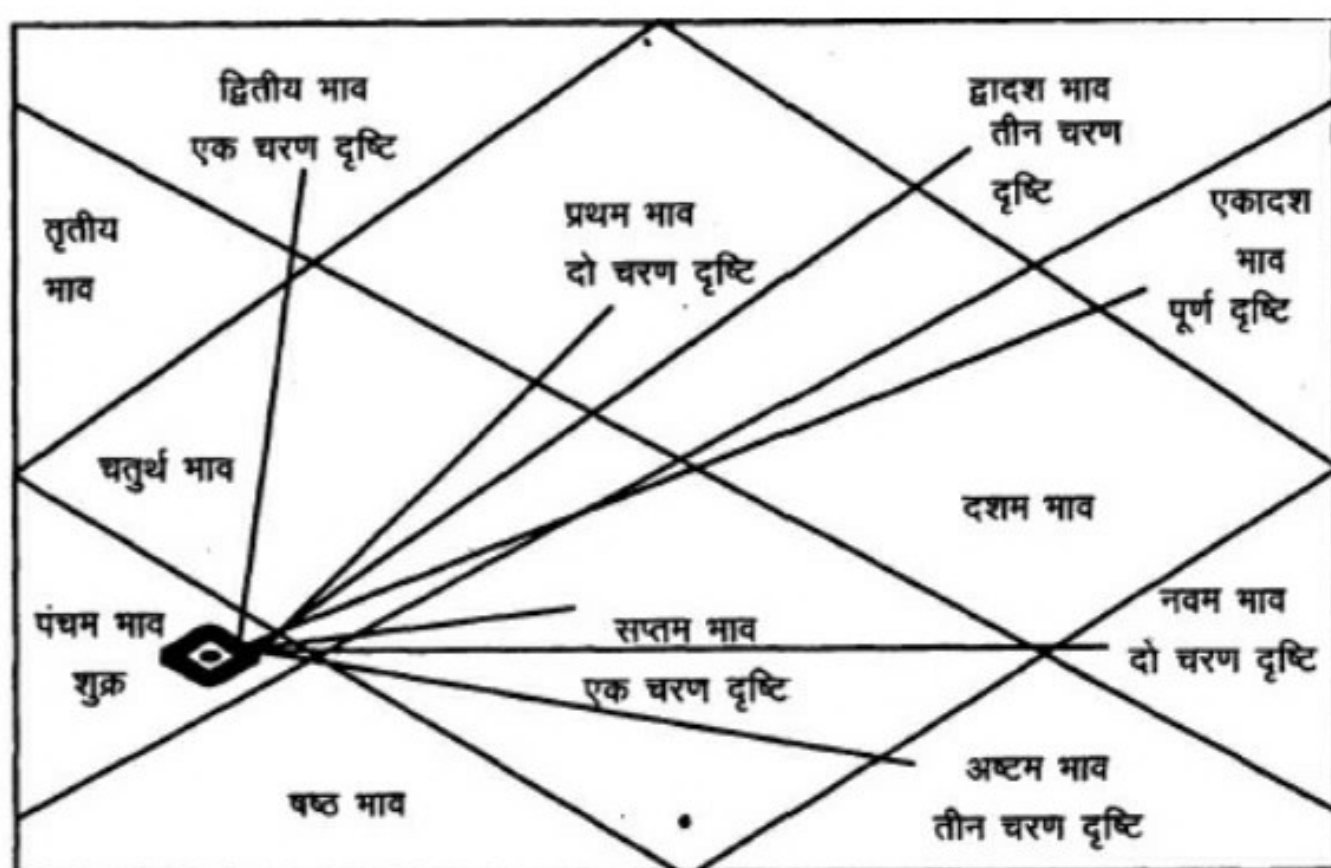
इस उदाहरण कुण्डली में शुक्र को पंचम भाव में बैठा हुआ दिखाया गया है, अतः पंचम भाव से प्रारम्भ करके नियमानुसार विभिन्न भावों पर पड़ने वाली उसकी एक चरण, दो चरण, तीन चरण तथा पूर्ण दृष्टियों को प्रदर्शित किया गया है। जातक की जन्म-कुण्डली के जिस भाव में शुक्र की स्थिति हो, उसी भाव से आरम्भ करके अन्य भावों पर पड़ने वाली उसकी खण्ड तथा पूर्ण दृष्टियों की जानकारी उपर्युक्त नियम के अनुसार प्राप्त कर लेनी चाहिए।

शनि की खण्ड तथा पूर्ण दृष्टि–शनि जिस भाव में भी बैठता है, वहां से वह तीसरे तथा दसवें भाव को एक चरण दृष्टि से, पांचवें तथा नवें भाव

को दो चरण दृष्टि से, चौथे तथा आठवें भाव को तीन चरण दृष्टि से तथा सातवें तीसरे एवं दसवें–इन तीनों भावों को पूर्ण दृष्टि से देखता है।

आगे उदाहरण कुण्डली में शनि को दशम भाव में बैठा हुआ दिखाया गया है, अत: दशम भाव से आरम्भ करके नियमानुसार विभिन्न भावों पर पड़ने वाली उसकी एक चरण, दो चरण, तीन चरण तथा पूर्ण दृष्टियों को प्रदर्शित किया गया है। जातक की जन्म–कुण्डली के जिस भाव में शनि की स्थिति हो, उसी भाव से आरम्भ करके अन्य भावो पर पड़ने वाली उसकी खण्ड तथा पूर्ण दृष्टियों की जानकारी उपर्युक्त नियम के अनुसार प्राप्त कर लेनी चाहिए।

शनि की विभिन्न भावों पर दृष्टि चक्र
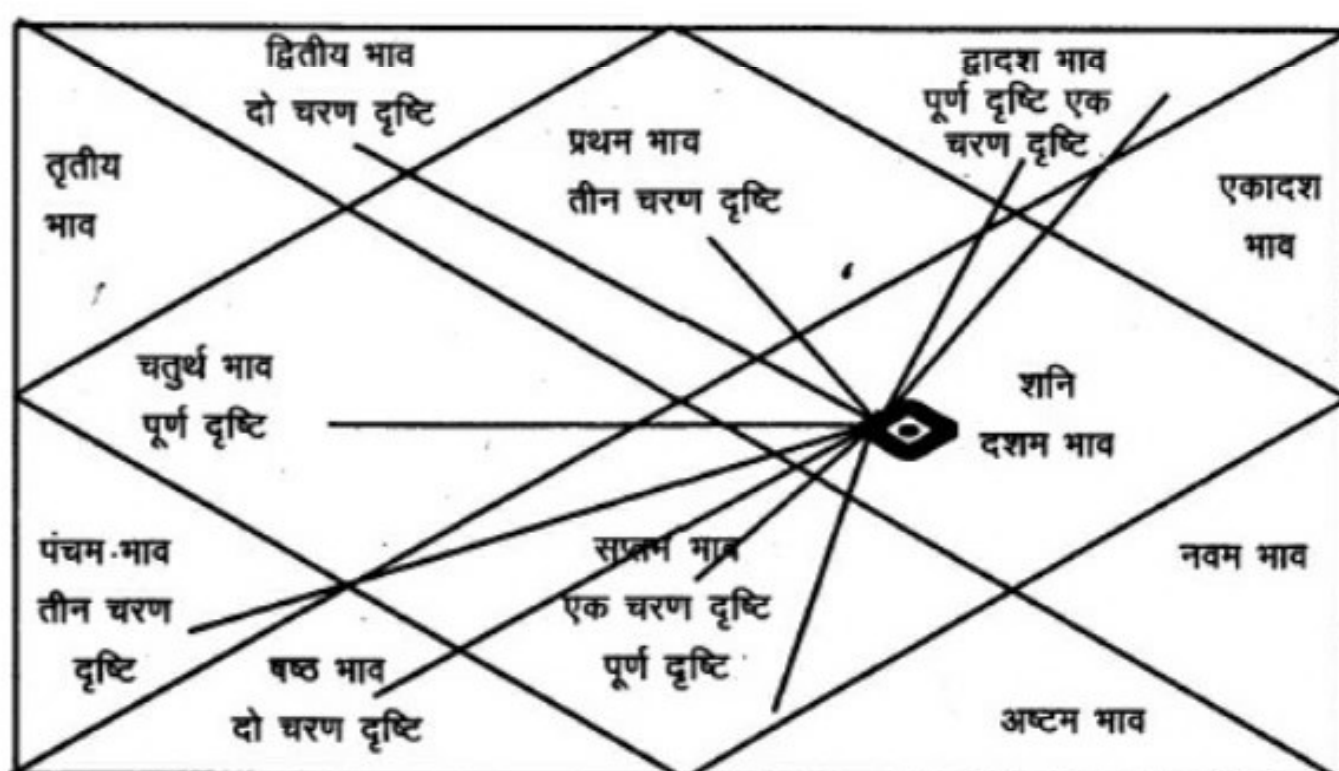
राहु की खण्ड तथा पूर्ण दृष्टि–राहु जिस भाव में भी बैठा हो, वहां से वह तीसरे तथा छठे भाव को एक चरण दृष्टि से, दूसरे तथा दशम भाव को दो चरण दृष्टि से एवं पांचवें, सातवें, नवें तथा बारहवें भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता है।

नीचे दी गई उदाहरण कुण्डली में राहु को प्रथम भाव में बैठा हुआ दिखाया गया है अत: प्रथम भाव से आरम्भ करके नियमानुसार विभिन्न भावों पर पड़ने वाली उसकी एक चरण, दो चरण तथा पूर्ण दृष्टियों को प्रदर्शित किया गया है। जातक की जन्म–कुण्डली में जिस भाव में राहु की स्थिति हो, उसी भाव से आरम्भ करके अन्य भावों पर पड़ने वाली उसकी खण्ड तथा पूर्ण दृष्टियों की जानकारी उपर्युक्त नियम के अनुसार प्राप्त कर लेनी चाहिए। राहु की त्रिपाद दृष्टि को 'अन्ध' माना गया है।

राहु का विभिन्न भावों पर दृष्टि चक्र
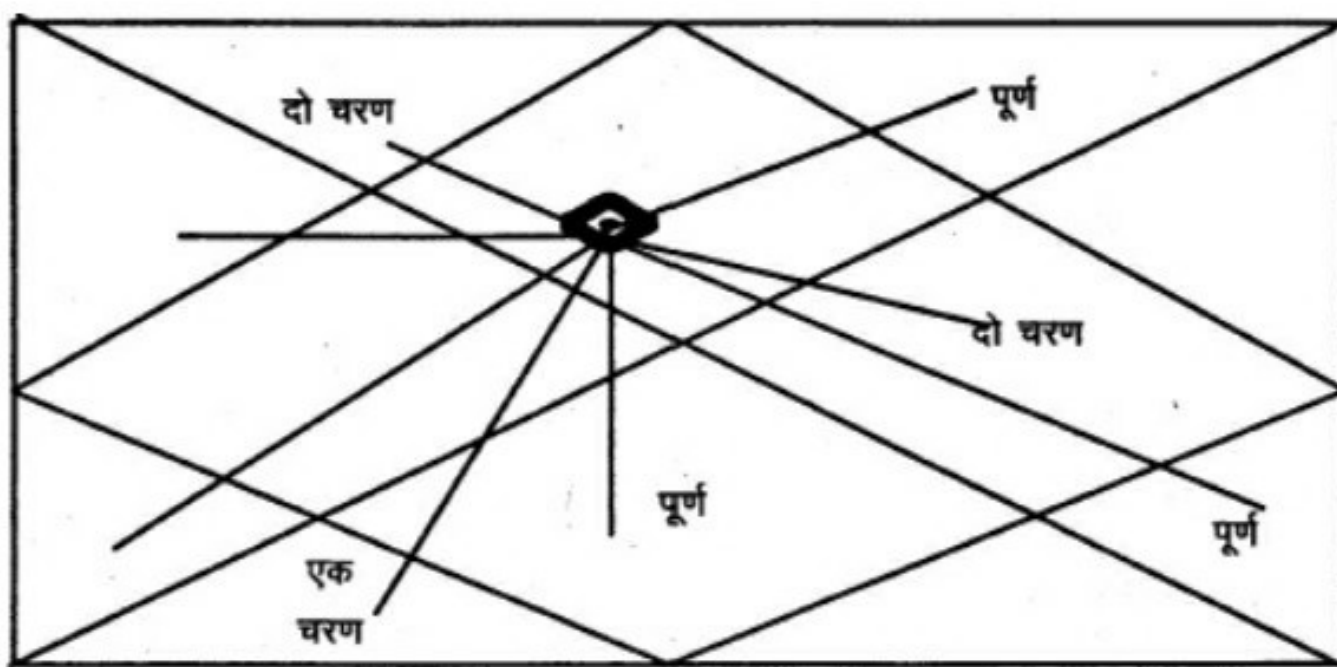
केतु की खण्ड तथा पूर्ण दृष्टि–केतु जिस भाव में भी बैठा हो, वहां से वह तीसरे तथा छठे भाव को एक चरण दृष्टि से, दूसरे तथा दसवें भाव को दो चरण दृष्टि से एवं पांचवें, सातवें, नवें तथा बारहवें भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता है।

नीचे दी गयी उदाहरण कुण्डली में केतु को सप्तम भाव में बैठा हुआ दिखाया गया है, अतः सप्तम भाव से आरम्भ करके नियमानुसार विभिन्न भावों पर पड़ने वाली उसकी एक चरण, दो चरण तथा पूर्ण दृष्टियों को प्रदर्शित किया गया है। जातक की जन्म–कुण्डली के जिस भाव में केतु की स्थिति हो, उसी भाव से आरम्भ करके अन्य भावों पर पड़ने वाली उसकी खण्ड तथा पूर्ण दृष्टि की जानकारी उपर्युक्त नियम के अनुसार प्राप्त कर लेनी चाहिए। केतु की त्रिपाद दृष्टि को 'अन्ध' माना गया है।

केतु का विभिन्न भावों पर दृष्टि चक्र
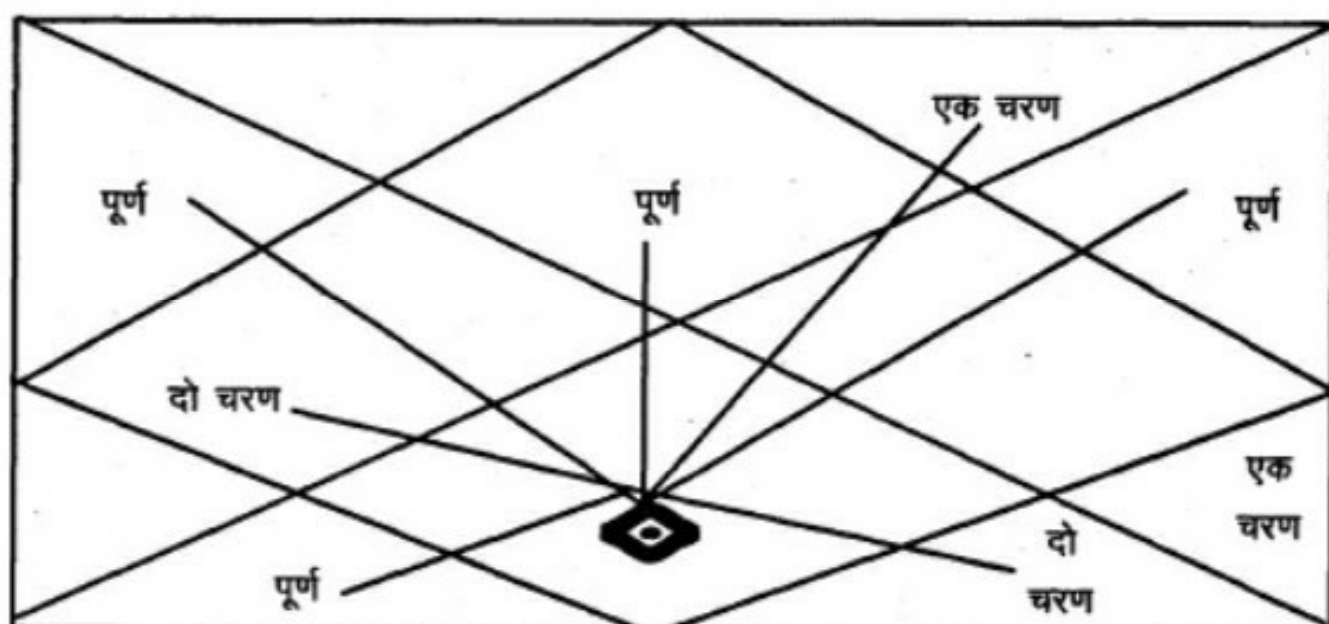
स्थानाधिपति

जन्म–कुण्डली में जो बारह खाने होते हैं, उन्हें द्वादश भाव कहा जाता है, यह बात पहले ही बताई जा चुकी है। जिस प्रकार जन्म–कुण्डली के

भावों की संख्या बारह है, उसी प्रकार मेषादि राशियों की संख्या भी बारह ही होती है। जातक के जन्म के समय जिस राशि की लग्न वर्तमान होती है, वही राशि जन्म–कुण्डली के लग्न स्थान अर्थात् प्रथम भाव में बैठती है। शेष राशियां अपने क्रम के अनुसार कुण्डली के अगले भावों में बैठती हैं।

उदाहरण के लिए यदि किसी जातक का जन्म मेष लग्न में हुआ है तो, उसे उसकी जन्म–कुण्डली में मेष राशि को प्रथम भाव में स्थापित किया जायेगा। तत्पश्चात् अगले भावों में क्रमशः वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ, मीन राशियों को स्थापित किया जायेगा।

कुण्डली में कौन–सा ग्रह किस स्थान पर बैठना चाहिए, इसका निर्णय जातक के जन्म–कालीन समय तथा उस समय की ग्रह स्थिति के अनुसार पंचांग के आधार पर किया जाता है। ज्योतिष शास्त्री इस विषय के ज्ञाता होते हैं, अतः यदि जिज्ञासा हो तो इस सम्बन्ध में उनसे जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए या फिर इस विषय से सम्बन्धित ज्योतिष–ग्रन्थों का अध्ययन किया जाना चाहिए।

जन्म–कुण्डली में जो राशि जिस स्थान (भाव) में स्थित होती है, उस राशि का स्वामी ही उस स्थान (भाव) का अधिपति होता है।

उदाहरण के लिए कर्क लग्न की कुण्डली में एकादश भाव पर विचार करना हो तो उस स्थान में वृष राशि स्थित है, तो ऐसी स्थिति में वृष राशि के स्वामी शुक्र को ही एकादश भाव का अधिपति अर्थात् लाभेश माना जायेगा।

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि जिस भाव में जो राशि स्थित है, उस राशि का स्वामी ही उस भाव का अधिपति होता है।

जिस भाव में जो राशि स्थित हो, उसका स्वामी उसी भाव में स्थित हो, यह आवश्यक नहीं है। उदाहरण के लिए यदि एकादश भाव में मिथुन राशि स्थित है, और उसका स्वामी बुध कर्क राशि वाले द्वादश भाव में स्थित है तो उस समय यह कहा जायेगा कि एकादशेश अथवा लाभेश द्वादश भाव में, अर्थात् व्यय स्थान में चला गया है। यदि बुध कर्क राशि वाले द्वादश भाव में जाने के बजाय तुला राशि वाले तृतीय भाव में चला जाता तो उस स्थिति में यह कहा जायेगा कि एकादशेश तृतीय भाव में चला गया है।

इसी प्रकार अन्य सभी भावों एवं ग्रहों के सम्बन्ध में समझ लेना चाहिए।

स्थानाधिपतियों के नाम

जन्म–कुण्डली में जो द्वादश भाव होते हैं, उनमें से प्रत्येक भाव के स्वामी को उसी भाव के नाम अथवा गुण के अनुरूप सम्बोधित किया जाता है। इस सम्बन्ध में नीचे लिखे अनुसार समझ लेना चाहिये–

1. प्रथम भाव के स्वमी को प्रथमेष, लग्नेश या देहाधीश कहा जाता है।

2. द्वितीय भाव के स्वामी को द्वितीयेश तथा धनेश कहा जाता है।

3. तृतीय भाव के स्वामी को तृतीयेश तथा पराक्रमेश कहा जाता है।

4. चतुर्थ भाव के स्वामी को चतुर्थेश तथा सुखेश कहा जाता है।

5. पंचम भाव के स्वामी को पंचमेश कहा जाता है।

6. षष्ठ भाव के स्वामी को षष्ठेश कहा जाता है।

7. सप्तम भाव के स्वामी को सप्तमेश कहा जाता है।

8. अष्टम भाव के स्वामी को अष्टमेश कहा जाता है।

9. नवम भाव के स्वामी को नवमेश, भाग्येश तथा धर्मेश भी कहा जाता है।

10. दशम भाव के स्वामी को दशमेश अथवा राज्येश भी कहा जाता है।

11. एकादश भाव के स्वामी को एकादशेश तथा लाभेश कहा जाता है।

12. द्वादश भाव के स्वामी को द्वादशेश तथा व्ययेश कहा जाता है।

विभिन्न भावों में ग्रहों का शुभाशुभ फल

1. केन्द्र (पहला, चौथा, सातवां तथा दसवां) भाव में बैठे हुए ग्रह अधिक शक्तिशाली होते हैं, अत: वे अपना पूर्ण फल प्रदान करते हैं।

2. त्रिकोण (पाचवां तथा नवां भाव) में बैठे हुए ग्रह भी जातक के ऊपर अपनी शक्ति एवं सामर्थ्य का पूरा–पूरा प्रभाव डालते हैं।

3. धन तथा लाभ स्थान (दूसरा तथा ग्यारहवें भाव) में बैठे हुए ग्रह जातक के धन की वृद्धि करते हैं। एकादश भाव में बैठा हुआ ग्रह विशेष लाभ देता है।

4. पराक्रम स्थान (तृतीय भाव) में बैठे हुए ग्रह जातक के पराक्रम की वृद्धि करते हैं, जिसके कारण वह सफलता प्राप्त करता है।

इस प्रकार प्रथम, द्वितीय, चतुर्थ, पंचम, सप्तम, नवम, दशम तथा एकादश भाव–ये नौ स्थान और इनमें बैठे हुए ग्रह उत्तम फल देने वाले बताये गए हैं।

5. षष्ठ, अष्टम तथा द्वादश भाव में बैठे हुए ग्रह जातक के लिए परेशानियां उत्पन्न करने वाले होते हैं, क्योंकि छठा स्थान शत्रु का, आठवां स्थान मृत्यु का एवं बारहवां स्थान व्यय का होता है।

परन्तु सभी अच्छे स्थानों में बैठे हुए ग्रह शुभ फल ही देते हों और छठे, आठवें तथा बारहवें घर में बैठे हुए ग्रह अशुभ फल ही देते हों, ऐसी बात भी नहीं है। राशि, स्थिति, अंश, उच्च, नीच, स्वक्षेत्र, मित्र क्षेत्र, शत्रु क्षेत्र, अन्य ग्रहों की दृष्टि, युति आदि कारणों से अच्छे तथा बुरे स्थानों में बैठे हुए ग्रहों के प्रभाव में भी सहस्त्रों प्रकार के भले–बुरे परिवर्तन हो जाते हैं–इस बात को सदैव स्मरण रखना चाहिए।

जन्म–कुण्डली का फलादेश

जन्म–कुण्डली में बारह भाव (स्थान) होते हैं। उनमें बारह राशियां तथा नौ ग्रह बैठते हैं। यह बात पाठकों की समझ में भली–भांति आ चुकी होगी।

जन्म–कुण्डली के किस भाव से किस विषय का विचार किया जाता है। कौन–सा ग्रह किस राशि का अथवा किस भाव में बैठकर किस प्रकार फल देता है, इन सब बातों पर पिछले पृष्ठों में पर्याप्त प्रकाश डाला जा चुका है।

इस पुस्तक को लिखने का उद्देश्य ज्योतिष शास्त्र के अनभिज्ञ अथवा उसका सामान्य ज्ञान रखने वाले पाठकों को किसी भी जातक की जन्म–कुण्डली को देखकर उसके फलादेश के विषय में जानकारी प्रदान करना है। अत: प्रारम्भिक विषयों का वर्णन करने के उपरान्त अब अगले द्वितीय प्रकरण में विभिन्न लग्नों में जन्म लेने वाले व्यक्तियों की कुण्डली स्थित विभिन्न ग्रहों का फलादेश का अलग–अलग विवरण दिया जायेगा।

पाठकों को चाहिए कि वे जिस जन्म–कुण्डली का फलादेश जानना चाहें, उसके विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों के फलादेश को अगले खण्ड में दिये गए निर्देशों के अनुसार विभिन्न उदाहरण कुण्डलियों में देखकर मालूम कर लें।

अधिकांश कुण्डलियों में एक ही स्थान पर दो, तीन, चार, पांच अथवा छह ग्रहों तक बैठे हुए देखने को मिलते हैं, उन्हें ग्रहों की युति कहा जाता है। एक ही स्थान पर विभिन्न ग्रहों की युति होने पर उनके फलादेश में भी अन्तर आ जाता है। विभिन्न ग्रहों की युति के फलादेश का वर्णन आगे किया जायेगा।

आगे के प्रकरणों में जन्म कालीन नक्षत्र द्वारा ग्रह दशा का ज्ञान, विभिन्न ग्रहों की दशा का फल, विशिष्ट योग तथा जातक की आयु के सम्बन्ध में किस प्रकार विचार करना चाहिए, आदि विषयों का विस्तार पूर्वक वर्णन किया गया है।

पुरुष और स्त्री

सामान्यत: पुरुष अथवा स्त्री दोनों की कुण्डलियों में स्थित ग्रह दोनों

के ऊपर एक जैसा ही प्रभाव डालते हैं। द्वितीय खण्ड में विभिन्न लग्न वाली कुण्डलियों के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों के जिस फलादेश का उल्लेख किया गया है, उसे पुरुष तथा स्त्री, बालक, युवा अथवा वृद्ध सभी पर समान रूप से लागू होने वाला समझना चाहिए। आगे के खण्डों में फलादेश में जहां कहीं पुरुष शब्द आया हो और वहां पर स्त्री की जन्म-कुण्डली का फलादेश मालूम किया जा रहा हो तो स्त्री समझना चाहिए। इसी प्रकार जहां पत्नी अथवा प्रेमिका शब्द आया हो वहां स्त्री की कुण्डली का फलादेश ज्ञात करते समय पति अथवा प्रेमी समझना चाहिए।

कुछ विशेष स्थितियों में कुछ ग्रह पुरुष की अपेक्षा स्त्रियों के ऊपर कुछ अन्य प्रकार का प्रभाव भी डालते हैं। उनके सम्बन्ध में आवश्यक जानकारी तथा स्त्रियों के सौभाग्य आदि के सम्बन्ध में विचार आदि विषयों का वर्णन आगे किया जा रहा है। अत: किसी स्त्री की कुण्डली का ठीक-ठीक फलादेश ज्ञात करने के लिए द्वितीय प्रकरण में वर्णित फलादेश को देखने के उपरान्त तृतीय फलादेश को भी देखना चाहिए।

दैनिक ग्रह-गोचर

अपनी दैनिक आकाशीय गति के अनुसार विभिन्न ग्रह विभिन्न समयों पर विभिन्न राशियों में पहुंचते रहते हैं। कौन-सा ग्रह किस राशि पर कितने समय तक रहता है, इसका उल्लेख पिछले पृष्ठों में किया जा चुका है। अत: प्रत्येक मनुष्य के जीवन पर प्रत्येक ग्रह अपना दो प्रकार से प्रभाव डालता है। एक तो स्थाई प्रभाव होता है जो जातक के जन्मकालीन ग्रहों की स्थिति के कारण उसके जीवन पर निरन्तर पड़ता रहता है और दूसरा प्रभाव वह होता है जो ग्रहों की दैनिक गति तथा विभिन्न राशियों के आवागमन के कारण निरन्तर बदलता रहता है।

उदाहरण के लिए यदि किसी जातक की जन्म-कुण्डली में चन्द्रमा लग्न में वृष राशि पर बैठा हुआ है तो वह उच्च का फल देने वाला (शुभ) होगा, परन्तु दैनिक ग्रह गोचर में यदि वह किसी नीच राशि में चला गया है तो वह जिस राशि या स्थान में उस समय बैठा है, उसका कुछ-न-कुछ बुरा फल भी इतने समय तक जातक के ऊपर अवश्य डालेगा। जब तक कि वह दैनिक ग्रह-गोचर में उस स्थान अथवा राशि से हट न जाए।

दैनिक ग्रह गोचर में किस समय कौन–सा ग्रह किस स्थान अथवा राशि में बैठा है, इसका ज्ञान पंचांग को देखकर आसानी से प्राप्त किया जा सकता है।

प्रत्येक पंचांग में एक–एक सप्ताह के ग्रह गोचरों की कुण्डलियां दी गई होती हैं। उन्हें देखकर यह बात सरलता से मालूम की जा सकती है कि इस समय कौन–सा ग्रह किस भाव में और किस राशि पर चल रहा है। अन्य ग्रहों में कोई भी ग्रह ऐसा नहीं है जो दैनिक ग्रह गोचर में एक राशि पर 21 दिन से कम ठहरता हो। अकेला चन्द्रमा ही ऐसा ग्रह है जो हर सवा दो दिन में अपनी राशि को बदल देता है। अत: चन्द्रमा की स्थिति को दैनिक ग्रह गोचर में विशेष रूप से देख लेना चाहिए। कौन–सा ग्रह किस राशि पर कितने दिन ठहरता है, इसका उल्लेख आरम्भ में किया जा चुका है।

ऊपर यह बात बताई जा चुकी है कि दैनिक ग्रह–गोचर में जो ग्रह जिस स्थान तथा राशि में बैठा होता है वह जातक के ऊपर अपना कुछ–न–कुछ अच्छा–बुरा प्रभाव अवश्य डालता है। इसलिए जब तक जन्म–कुण्डली के साथ ही जातकों की दैनिक ग्रह गोचर कुण्डली का मिलान नहीं किया जाता, तब तक फलादेश ठीक नहीं बैठता।

दैनिक ग्रह गोचर की स्थिति को किसी ज्योतिषी से पूछ कर मालूम कर लेना चाहिए। यह विषय इतना सरल है कि किसी भी ज्योतिषी से बहुत थोड़े ही समय में ग्रहों की सामयिक स्थिति के बारे में जानकारी प्राप्त करने की विधि आसानी से सीखी जा सकती है। उस विधि को सीख लेने के बाद फिर बार–बार ज्योतिषी से ग्रहों की तात्कालिक स्थिति को पूछने की आवश्यकता नहीं रहती। पंचांग देखकर उसे स्वयं ही जान लिया जा सकता है।

जन्म–कुण्डली के जिस भाव तथा जिस राशि में स्थित जिस ग्रह का जो फल द्वितीय खण्ड के फलादेशों में बताया गया, दैनिक ग्रह गोचर कुण्डली के विभिन्न भावों तथा राशियों में स्थित विभिन्न ग्रहों का फलादेश भी ठीक वैसा ही होता है।

किस दिन, मास अथवा वर्ष में दैनिक ग्रह गोचर स्थित किसी ग्रह का फलादेश किस उदाहरण कुण्डली में देखना चाहिए तथा जन्म–कुण्डली स्थित ग्रहों का फलादेश किस कुण्डलियों में देखना चाहिए, इसकी स्पष्ट जानकारी प्रत्येक की कुण्डलियों का फलादेश आरम्भ करने से पूर्व ही यथा स्थान दे दी गई है। पाठकों को चाहिए कि वे जन्म–कुण्डली स्थित ग्रहों का

फलादेश ज्ञात करते समय दैनिक ग्रह गोचर की स्थिति का फलादेश भी अवश्य मालूम कर लें। उन दोनों फलादेशों के समन्वय स्वरूप जो निष्कर्ष निकलता हो उसी को यथार्थ फलादेश समझना चाहिए।

सम्मिलित परिवार

जन्म–कुण्डली द्वारा फलादेश ज्ञात करने के इच्छुक महानुभावों को एक बात और भी स्मरण रखनी चाहिए, वह यह कि एक ही परिवार में सम्मिलित रुप से रहने वाले सभी व्यक्तियों का भाग्य एक–दूसरे के साथ बंधा हुआ रहता है और सभी की जन्म–कुण्डली स्थित ग्रहों का थोड़ा बहुत प्रभाव संयुक्त परिवार के सभी सदस्यों पर पड़ता है।

उदाहरण के लिए पति के ऊपर पत्नी की जन्म–कुण्डली के ग्रहों का प्रभाव अवश्य पड़ता है। इसी प्रकार पत्नी भी पति की जन्म–कुण्डली स्थित ग्रहों के प्रभाव से प्रभावित होती है।

बालक जब तक अवयस्क होता है अथवा माता–पिता के आश्रय में रहता है तब तक उसकी जन्म–कुण्डली स्थित अच्छे–बुरे ग्रहों का प्रभाव माता–पिता तथा भाई–बहनों के ऊपर भी पड़ता रहता है। इस प्रकार घर की लड़की का जब तक विवाह नहीं हो जाता तब तक उसके ग्रहों के प्रभाव से भी माता–पिता, भाई बहन आदि प्रभावित होते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि गृह स्वामी अपने सभी आश्रितों के ग्रहों से प्रभावित होता है और गृह स्वामी के ग्रहों के प्रभाव से आश्रित लोग भी थोड़े बहुत अवश्य प्रभावित होते हैं। निकटस्थ मित्रों की जन्म–कुण्डली के ग्रह भी जातक पर अपना थोड़ा बहुत प्रभाव डाला करते हैं।

अस्तु, किसी भी स्त्री अथवा पुरुष की कुण्डली को देखते समय उसके पति, पत्नी, पुत्र तथा अविवाहिता पुत्री की जन्म–कुण्डलियों में स्थित ग्रहों के प्रभाव को देखना भी आवश्यक है। इसी प्रकार माता–पिता, भाई–बहन आदि संयुक्त परिवार के सभी सदस्यों एवं निकटस्थ मित्रों की जन्म–कुण्डली के ग्रहों की स्थिति को देखकर, उन सबके ग्रहों के एक–दूसरे के ऊपर पड़ने वाले प्रभाव के समन्वय स्वरुप जो निष्कर्ष निकाला जाता है वही पूर्ण रुप से अन्तिम और यथार्थ होता है।

इस पुस्तक की सहायता से किसी भी स्त्री–पुरुष, बालक, वृद्ध, युवा मनुष्य की जन्म–कुण्डली में स्थित ग्रहों के शुभाशुभ प्रभाव की जानकारी

बहुत थोड़े ही समय में अत्यन्त सरलतापूर्वक प्राप्त की जा सकती है। अत: पाठकों को चाहिए कि वे इस पुस्तक से पूरा-पूरा लाभ उठाते रहें।

गलत जन्म कुण्डली को सुधारना

किसी भी जन्म-कुण्डली का सम्पूर्ण फल उसकी शुद्ध लग्न के ऊपर आश्रित रहता है। यदि लग्न ठीक न हो तो जन्म-कुण्डली का फल भी ठीक नहीं बैठ सकता।

बालक के जन्म के समय कौन-से लग्न वर्तमान हैं, इसका ठीक-ठीक ज्ञान उस समय क्या बजा है, इसकी सही जानकारी मिलने पर ही हो सकता है।

किसी भी जन्म-कुण्डली का निर्माण करने के लिए जिस स्थान पर बालक उत्पन्न हुआ है, वहां की घड़ी के स्टैन्डर्ड टाइम पर विचार न करके उस स्थान पर होने वाले सूर्योदय के समय का विचार किया जाता है।

विभिन्न स्थानों पर सूर्योदय का समय अलग-अलग होता है। जबकि घड़ियों का स्टैन्डर्ड टाइम देश के सभी स्थानों के लिए एक-सा रखा जाता है। अस्तु, यदि स्टैन्डर्ड टाइम के आधार पर ही जन्म-कुण्डली का निर्माण कर दिया जाय तो उसकी लग्न प्राय: गलत हो जाती है। लग्न के गलत हो जाने पर जन्म-कुण्डली स्थित सभी ग्रहों का फलादेश ही बदल जाता है। इसलिए सही फलादेश जानने के लिए जन्म-कुण्डली की लग्न का शुद्ध होना अत्यन्त आवश्यक है।

शुद्ध जन्म-कुण्डली किस प्रकार बनाई जाय, यह विषय कुण्डली निर्माण तथा गणित से सम्बन्धित है। जो महानुभाव इस विषय की जानकारी प्राप्त करना चाहते हों उन्हें या तो किसी ज्योतिषी से सीखना चाहिए अथवा फिर मेरी लिखी (प्रारम्भिक ज्योतिष या भारतीय ज्योतिष) का अध्ययन करना चाहिए।

यहां पर मैं गलत लग्न वाली कुण्डली को सुधारने की एक सरल विधि का वर्णन कर रहा हूं। इस विधि के अनुसार कोई भी व्यक्ति सहज में ही अपनी कुण्डली की लग्न का सुधार कर सकता है। लग्न को सुधारने की विधि इस प्रकार है।

जिस जातक की जन्म कुण्डली पर विचार करना है, उसमें स्थित ग्रहों के शुभाशुभ फल को इस पुस्तक को पढ़कर जान लेना चाहिए। फिर यह

देखिए कि वह फलादेश उस जातक के जीवन पर ठीक–ठीक घटित होता है या नहीं। यदि फलादेश ठीक–ठीक घटित होता है तो यह समझ लेना चाहिए कि जन्म–कुण्डली की लग्न ठीक है, उस स्थिति में जन्म–कुण्डली के सही होने के सम्बन्ध में संदेह करने की कोई आवश्यकता नहीं है।

परन्तु यदि यह देखा जाय कि उस जन्म–कुण्डली के ग्रहों का फलादेश जातक के जीवन पर ठीक–ठीक घटित नहीं होता तो उस स्थिति में जन्म–कुण्डली की लग्न को अशुद्ध समझ कर दो कुण्डलियां इस प्रकार तैयार की जानी चाहिए जिसमें से एक में एक लग्न आगे की हो, और दूसरी में एक लग्न पीछे की हो। फिर उनमें उन्हीं लग्नों के अनुसार ग्रहों को बैठाकर दोनों कुण्डलियों में स्थिति ग्रहों के शुभाशुभ फल को जातक के जीवन पर घटित करके देखना चाहिए तथा उन दोनों में जिस लग्न वाली कुण्डली का फलादेश ठीक–ठीक घटित होता हो उसी लग्न वाली कुण्डली को ठीक समझ लेना चाहिए।

उदाहरण के लिए यदि कोई जन्म–कुण्डली कर्क लग्न की हो और संशय हो कि यह गलत है तो एक कुण्डली सिंह राशि की एवं एक कुण्डली मिथुन राशि की बनाकर देख लेनी चाहिए।

वर्ष कुण्डली के फलादेश का ज्ञान
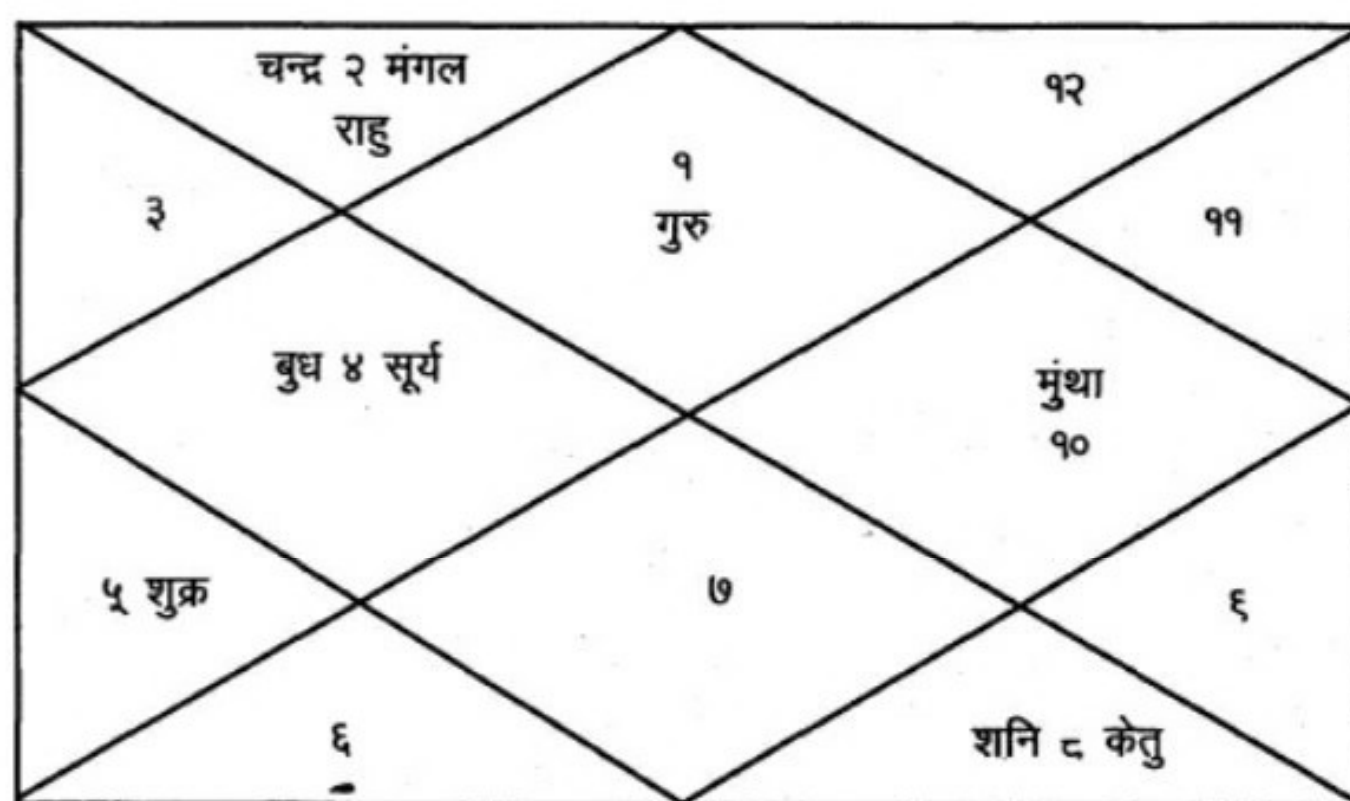
वर्ष कुण्डली स्थित ग्रहों के फलादेश की जानकारी भी जन्म–कुण्डली स्थित ग्रहों के फलादेश के समान ही इस पुस्तक की सहायता द्वारा प्राप्त की जा सकती है। किस भाव तथा राशि स्थित किस ग्रह का क्या फल होता है।

वर्ष कुण्डली में नव ग्रह के समान ही एक ग्रह 'मुंथा' विशेष रूप से माना गया है। जातक की वर्ष कुण्डली बनाते समय ज्योतिषी लोग वर्ष कुण्डली में मुंथा किस भाव में बैठाएं इसे स्पष्ट लिख देते हैं। उपर्युक्त कुण्डली में नव ग्रहों की स्थिति के साथ ही एक भाव में मुंथा की स्थिति को प्रदर्शित किया गया है।

मुंथा का संक्षिप्त फलादेश निम्नलिखित नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए–

1. लग्न–यदि मुंथा वर्ष कुण्डली के प्रथम भाव में स्थित हो तो उस वर्ष जातक को शान्ति सुख एवं स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है।

2. द्वितीय भाव–यदि मुंथा वर्ष कुण्डली के द्वितीय भाव में स्थित हो तो जातक को उस वर्ष व्यवसाय से लाभ, आकस्मिक लाभ एवं धन की प्राप्ति के अन्य अवसर प्राप्त होते हैं।

3. तृतीय भाव–यदि मुंथा वर्ष कुण्डली के तृतीय भाव में स्थित हो तो उस वर्ष जातक के बल, पौरुष, पराक्रम तथा गौरव की वृद्धि होती है।

4. चतुर्थ भाव–यदि मुंथा वर्ष कुण्डली के चतुर्थ भाव में स्थित हो तो उस वर्ष जातक को दुःख, कलह एवं अशान्ति पूर्ण समय व्यतीत करना होता है।

5. पंचम भाव–यदि मुंथा वर्ष कुण्डली के पंचम भाव में स्थित हो तो उस वर्ष जातक को कुटुम्बियों से प्रेम, आरोग्य तथा धन लाभ के योग प्राप्त होते हैं।

6. षष्ठ भाव–यदि मुंथा वर्ष कुण्डली के षष्ठ भाव में स्थित हो तो उस वर्ष जातक को शत्रु, रोग एवं अग्नि भय का सामना करना पड़ता है।

7. सप्तम भाव–यदि मुंथा वर्ष कुण्डली के सप्तम भाव में स्थित हो तो उस वर्ष जातक की स्त्री को रोग तथा सन्तान को कष्टों का सामना करना पड़ता है।

8. अष्टम भाव–यदि मुंथा वर्ष कुण्डली के अष्टम भाव में स्थित हो तो उस वर्ष जातक को मृत्यु अथवा मृत्यु तुल्य कष्ट की प्राप्ति होती है।

9. नवम भाव–यदि मुंथा वर्ष कुण्डली के नवम भाव में स्थित हो तो उस वर्ष जातक को धर्म तथा धन का लाभ होता है एवं भाग्य की वृद्धि होती है।

10. दशम भाव–यदि मुंथा वर्ष कुण्डली के दशम भाव में स्थित हो तो उस वर्ष जातक को राज्य सम्मान, शासन में अधिकार एवं यश की प्राप्ति होती है।

11. एकादश भाव–यदि मुंथा वर्ष कुण्डली के एकादश भाव में स्थित हो तो उस वर्ष जातक को व्यापार में क्षति एवं अन्य प्रकार की हानियां उठानी पड़ती हैं।

12. द्वादश भाव–यदि मुंथा वर्ष कुण्डली के द्वादश भाव में स्थित हो तो उस वर्ष जातक को कष्ट, हानि तथा रोगों का सामना करना पड़ता है।

ज्ञातव्य

यह सम्पूर्ण विश्वकाल परमात्मा, परब्रह्म का ही व्यक्त स्वरूप है। काल पुरुष के भिन्न–भिन्न अंगों में भिन्न–भिन्न राशियों का निवास माना गया है। प्राणी मात्र के भिन्न–भिन्न अंगों में भी उसी क्रम से राशियों का निवास समझा जाना चाहिए। मेष–मस्तक, वृष–मुख, मिथुन–छाती, कर्क–हृदय, सिंह–पेट, कन्या–कमर या कटि, तुला–वस्ति, वृश्चिक–शिश्न, धनु–जंघाएं, मकर–टेटुना, कुम्भ–घाव और मीन–पांव है। जन्म लग्न में जिस अंग का राशि में शुभ ग्रह हो मनुष्य का वही अंग पुष्ट व जिस राशि में पाप ग्रह हो वह अंग कमजोर, रोग–ग्रस्त, निर्बल होता है।

मीन राशि का स्वरूप परस्पर मुख–पुच्छ मिला दो मछलियों के जैसा है। **कुम्भ**, स्कन्ध पर घड़ा लिए हुए पुरुष समान, **मिथुन**–वीणा युक्त स्त्री व गदा युक्त पुरुष की जोड़ी के समान, **धनु** राशि हाथ में धनुष लिए धड़ तक मनुष्य व जांघों के नीचे घोड़े के समान, **मकर**–हिरण जैसे मुख वाले मगर के समान है। **कन्या**–हाथ में अन्न व अग्नि लेकर नौका पर बैठी कन्या सदृश्य, **मेष**–मेढ़ा समान, **वृष**–बैल समान, **कर्क**–केकड़े के समान, **सिंह**–शेर जैसी, **तुला**–तराजू समान, **वृश्चिक**–बिच्छू समान है। मेष–वृष, दिन में, वन में व रात्रि में ग्राम में रहती है। मिथुन ग्राम में, कर्क जल में, सिंह वन में, कन्या नौका पर स्थित जल में, तुला बाजार में, वृश्चिक बिल में, धनु–ग्राम में, मकर का पूर्वार्द्ध वन में उत्तरार्द्ध जल में, कुम्भ ग्राम में, मीन–जल में रहती है।

जितने पाप ग्रह बली व शुभ ग्रह निर्बल हों, बुध–शनि केन्द्र में हो तो जिस प्रकार के द्वादशांश में चन्द्रमा हो, वैसे ही प्राणियों का स्वरूप कहना चाहिए। यह द्वादशांश वियोनि संज्ञक हो अर्थात् द्विपद से अलग राशि का हो तो वियोनि का जन्म कहें। पाप ग्रह बली, शुभ ग्रह निर्बल हों तथा बुध शनि से लग्न दृष्ट हो तो भी वियोनि जन्म कहें। चन्द्रमा वियोनि संज्ञक द्वादशांश में हो यानि द्विपद द्वादशांश में हो तो द्विपद का जन्म कहें। चन्द्र मेष के द्वादशांश में हो तो मेढ़ा या छात्र, वृष में हो तो गाय–भैंसादि, कर्क में हो तो केकड़ा, सिंह में हो तो सिंह–बाघ–बिलाव, वृश्चिक में हो तो सरी–सृपादि, धनु के उत्तरार्द्ध में हो तो घोड़ा–गदहा, मकर के पूर्वार्द्ध में हो तो हरिणादि व उत्तरार्द्ध में हो तो गोह, जल–जन्तु आदि, मीन के द्वादशांश में हो तो मछली आदि का जन्म समझें। पर मिथुन–कन्या आदि द्विपद राशियों

के द्वादशांश में चन्द्रमा हो तो मनुष्य जन्म समझें। पाप ग्रह बली होकर अपने नवांश में हो तो व शुभ ग्रह निर्बल होकर दूसरों के नवांश में हो तथा द्विपद से भिन्न राशि का लग्न हो तो चन्द्रमा जिस राशि के नवांश में हो, उसके समान जन्म समझना चाहिए।

यदि लग्न पर चन्द्र की दृष्टि न हो तो पिता की अनुपस्थिति में जन्म समझें। इस योग में सूर्य 10वें भाव से आगे चर राशि में हो तो विदेश स्थित पिता के परोक्ष में, यदि शनि लग्न में, मंगल सातवें या बुध-शुक्र के मध्य में चन्द्रमा हो तो पिता के परोक्ष में जन्म समझें। चन्द्रमा-मंगल के द्रेष्काण में या पाप ग्रह शून्य मंगल लग्न के द्रेष्काण में हो, शुभ ग्रह 2/11 भाव में हो तो सर्प का या सर्वनेष्टित मनुष्य का जन्म कहें। सूर्य चतुष्पद राशि में हो तो अन्य ग्रह बलवान होकर द्विस्वभाव राशिस्थ हो तो जरूर दो जुड़वां का जन्म होता है। यदि 1/5/2 कोई लग्न हो, उसमें शनि या मंगल हो तो लग्न में जिस राशि का नवांश हो और उस राशि का जो अंग हो उस अंग में नाल वेष्ठित जातक का जन्म होता है।

गुरु की लग्न या चन्द्रमा पर दृष्टि न हो, या चन्द्रमा-सूर्य युक्त हो और उस पर गुरु की दृष्टि न हो, या चन्द्रमा, शनि या मंगल किसी के साथ ही सूर्य युक्त हो तो जातक की परजात यानि जारज सन्तान समझना चाहिए। यदि 9/12 राशि में चन्द्रमा हो या चन्द्र-गुरु की युति हो या द्रेष्काण या नवांश में चन्द्रमा गुरु की धनु मीन राशि में हो तो जातक जारज पुत्र नहीं होता।

दो पाप ग्रह, पाप ग्रह की राशि में स्थित होकर सूर्य से 5/7/9 भाव में हो तो जन्म के समय पिता बन्धन में था। यदि सूर्य चर राशिस्थ हो तो विदेश में, स्थिर राशिस्थ हो तो स्वदेश में, द्विस्वभाव राशिस्थ हो तो पिता मार्ग में बन्धन में था।

पूर्ण चन्द्रमा कर्क में, बुध लग्न में, शुभ ग्रह चौथे भाव में हो तो जन्म नौका में, जलयान में, लग्न में जलचर राशि हो, चन्द्रमा सातवें हो तब भी जन्म जलयान में समझें। पूर्ण चन्द्र जलचर राशि में हो तथा जलचर राशि जन्म लग्न को देखती हो तो जल में प्रसव समझें। जलचर स्थित राशिस्थ चन्द्रमा 10/4/1 भाव में हो तो भी ऐसा ही समझें। लग्न में चन्द्रमा, बारहवें स्थित शनि पर पाप ग्रह की दृष्टि हो तो जन्म कारागृह में, वृश्चिक या कर्कस्थ शनि लग्नस्थ पर चन्द्र की दृष्टि हो तो गर्त में जन्म समझें। जलचर स्थित राशिस्थ शनि लग्नस्थ पर बुध की दृष्टि हो तो जन्म क्रीड़ा स्थल में, सूर्य की दृष्टि हो तो देवालय में, चन्द्र की दृष्टि हो तो ऊसर भूमि में, द्विपद शशि

लग्न में, उसमें शनि हो, मंगल की दृष्टि हो तो श्मशान में, यदि शुक्र व चन्द्र दोनों की दृष्टि हो तो रमणीय स्थान में, गुरु दृष्टि हो तो हवनशाला में, सूर्य दृष्टि हो तो राजगृह–देवालय, गोशाला में, बुध की दृष्टि हो तो चित्रालय में, लग्न की राशि या नवांश तुल्य प्रदेश में जन्म समझें। लग्न या नवांश चर हो तो मार्ग में, स्थिर हो तो घर में जन्म समझें। लग्न अपने ही नवांश में हो तो स्वगृह में जन्म समझें।

यदि मंगल व शनि एक ही राशि में हो, उससे त्रिकोण या 7वें भाव में चन्द्रमा हो तो जन्मोपरान्त माता बालक को त्याग देती है, पर यदि चन्द्रमा पर गुरु की दृष्टि हो तो वह त्याज्य बालक दीर्घायु, सुखी होता है। पाप ग्रह (सूर्य शनि) से दृष्ट चन्द्रमा लग्न में हो, उससे 7वें मंगल हो तो उस मातृ त्यक्त बालक की मृत्यु हो जाती है। पाप दृष्ट चन्द्रमा एक राशिगत शनि–मंगल से 11वें हो तो भी वह बालक मर जाता है। यदि शुभ ग्रह की दृष्टि चन्द्रमा पर हो तो वह शुभ ग्रह जिस वर्ण का स्वामी हो, उसी वर्ण के पुरुष या स्त्री के हाथ में वह त्यक्त बालक जाता है। यदि चन्द्रमा पाप ग्रह दृष्ट हो तो उस पर गुरु की दृष्टि न हो तो अन्य के हाथ में जाने पर भी बालक मर जाता है।

जो ग्रह बली हो तदनुसार ही माता–पिता गृह में बालक का जन्म कहना चाहिए। यदि सभी ग्रह नीचस्थ हों तो वन–वाटिका में, यदि चन्द्रमा मकर–कुम्भ के नवांश में हो या चौथे भाव में हो, शनि से दृष्ट या युक्त हो तो अंधेरे स्थान में, तीन से अधिक ग्रह नीच राशिस्थ हों तो प्रसूता का शयन भूमि पर होता है। चन्द्रमा से 4/7 भावस्थ पाप ग्रह हो तो माता को प्रसव कष्ट होता है।

चन्द्र अंशानुसार दीपक में तेल या रोशनी की न्यूनाधिकता समझें। चन्द्रमा राशि के प्रारम्भिक अंश में हो तो दीपक में तेल भरा हुआ व अन्तिम अंशों में हो तो दीपक में तेल का अभाव, बीच के अंशानुसार तेल समझें। लग्नांश से बत्ती का मापन समझें। सूर्य राशि अनुसार दीपक को चर–स्थिर व द्विस्वभाव राशि के पूर्वार्द्ध में स्थिर, उत्तरार्द्ध में चलायमान समझें। सूर्य राशि जिस दिशा की हो उसी दिशा में सूतिका गृह में दीपक स्थिति समझें। केन्द्र स्थित ग्रहों से सूतिका–गृह द्वार समझें। केन्द्र में अधिक ग्रह होने पर सर्वाधिक बली गृह द्वार समझें। केन्द्र में कोई ग्रह न हो तो लग्न राशि की दशा में वह द्वार निश्चित करें। जन्म काल में सर्वाधिक शनि बली हो तो सूतिका गृह पुराना पर मरम्मत किया हुआ, यदि मंगल हो तो वह गृह जला

हुआ, चन्द्रमा हो तो नया घर, सूर्य हो तो अनेक कष्टों से युक्त व कमजोर, बुध बली हो तो अनेक कारीगरों द्वारा निर्मित, गुरु हो तो सुदृढ़, शुक्र हो तो सुन्दर चित्रों से सुसज्जित व नवीन सूतिका गृह होगा।

लग्न यदि 1/4/7/8/12 हो तो घर के पूर्व भाग में सूतिका का निवास 9/12/6/3 हो तो उत्तर में, वृष लग्न हो तो पश्चिम में, मकर या सिंह लग्न हो तो दक्षिण में सूतिका निवास समझें।

सूतिका भवन में 1/2 की पूर्व में मिथुन की ईशान कोण में, कर्क सिंह की उत्तर में, कन्या की वायव्य कोण में, तुला–वृश्चिक की पश्चिम भाग, में धनु की नैर्ऋत्य कोण में, मकर–कुम्भ की दक्षिण व मीन राशि की अग्नि कोण में स्थिति रहती है। इसी प्रकार खाट के सिरहाने के पूर्व दिशा कल्पित कर शय्या का स्वरुप समझें।

जन्म लग्न से चन्द्रमा तक जितने ग्रह हों उतनी ही संख्या प्रसूता के निकट स्त्रियों की समझें, जितने ग्रह 8 से 12 भाव पर्यन्त हो, उतनी संख्या प्रसूति कक्ष के बाहर स्त्रियों की समझें। यदि लग्न 1/12 हो तो दो उपसूतिकाएं, 2/11 हो तो चार, 10/3 हो तो पांच, 9/4 हो तो 5 एवं अन्य लग्न हो तो तीन उपसूतिकाएं समझें।

1/2/5/3 या 4 लग्न हो तो यह जन्मते ही रोने लगा था। यदि 11/6 लग्न हो तो थोड़ा बाद में रोया था। यदि 6/8/10/12 लग्न में जन्म हो तो बालक जन्म के समय रोया नहीं था। यदि 1/2/3/5/7 लग्न में जन्म हो तो बहुत रोया था। 11/6 लग्न हो तो थोड़ा रोया था व अन्य लग्न में जन्म हो तो रोया ही नहीं था।

जन्म 5/6/9/12/4/1/7 लग्न में है तो चारपाई आदि उच्च स्थान पर प्रसव व अन्य लग्न में भूमि पर प्रसव मानना चाहिए।

स्त्री संख्या सूचक ग्रहों में जितने ग्रह (पाप ग्रह) हो उतनी विधवा स्त्रियां, जितने क्रर ग्रह हों उतनी कुमारिकाएं, जितने शुभ ग्रह हों उतनी सधवाएं सूतिका के पास थीं।

लग्न से 4 या 10 वें भाव में शुभ ग्रह हों तो सुखपूर्वक प्रसव एवं 9/5/7 भाव में पाप ग्रह हों तो कष्ट पूर्वक प्रसव होगा। यदि 3/5/6/7/8/9/11/12 लग्न हो तो बालक सिर से पैदा हुआ है व अन्य लग्न हो तो पांव से, मीन हो तो हाथ से पैदा हुआ हो। गुरु लग्न से दशम भाव में उच्च हो तो प्रसूति गृह अनेक मंजिल का होगा। धनु में गुरु हो तो 3 खंड का, द्विस्वभाव राशि में हो तो दो खंड का समझें।

लग्न जिस ग्रह के नवांश में हो उसी ग्रह के समान जातक का आकार समझना चाहिए। नवांश पति निर्बल हो तो जो ग्रह सर्वाधिक बली हो तदानुसार समझें। चन्द्रमा जिस ग्रह के नवांश में हो उसी ग्रह के वर्ण के समान जातक का वर्ण होगा। लग्नगत द्रेष्काण से, लग्नादि भावों में अंग विभाग 3 प्रकार के होते हैं। उदिस भावों से वामांग, अनूदित भावों से दक्षिणांग समझें। अंग विभागस्थ राशियों में जिनमें पाप ग्रह, पाप ग्रह युक्त बुध, क्षीण चन्द्र, सूर्य, मंगल शनि हों, जातक के उसी अंग में वर्ण होता है। पाप ग्रह शुभ ग्रह युक्त या दृष्ट हो तो उस अंग में मस्सा, तिलादि चिह्न होगा। पाप ग्रह अपनी राशि, नवांश या स्थिर राशि, नवांश में हो तो जन्म के साथ ही उस स्थान पर वर्ण होगा। यदि अन्य राशि नवांश में हो तो उस् ग्रह की दशान्तर्दशा में वर्ण होगा। जिस अंग में शनि हो वहां पत्थर की चोट या वात रोग से वर्ण होगा, जिसमें मंगल हो वहां अग्नि, शस्त्र या विष से, जहां पाप ग्रह से युक्त बुध हो वहां गिरने से, सूर्य हो वहां लकड़ी या पशु के आघात से, जहां क्षीण चन्द्र हो वहां सींग वाले जन्तु से या जल-जन्तु से वर्ण होगा। जहां शुभ ग्रह हो, उस अंग में पुष्टता, मनोहरता होगी। छठे भाव में पाप ग्रह हो तो वह राशि जिस अंग की हो उस जगह वर्ण होगा। षष्ठ भावस्थ पाप ग्रह शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो उस अंग में तिल या मस्सा होता है।

मूनुष्य के मस्तक व मुख में सूर्य, छाती व गर्दन में चन्द्रमा, पेट व पीठ में मंगल, हाथ-पांव में बुध, कमर व जांघ में गुरु, गुदा व लिंग में शुक्र, जांघ व घुटनों में शनि शुभाशुभ फल देते हैं। अस्थि पर सूर्य, रक्त पर चंद्र, मज्जा पर मंगल, त्वचा पर बुध, वसा पर गुरु, वीर्य पर शुक्र, स्नायुओं पर शनि का अधिकार है। सूर्य आत्मा, चंद्रमा मन, मंगल बल, बुध वाणी, गुरु ज्ञान, शुक्र मद व शनि-राहु-केतु दुःख हैं।

लग्न से तीसरे सूर्य हो तो अग्रज की मृत्यु, शनि हो तो अनुज की मृत्यु होती है। मंगल हो तो सभी भाइयों की मृत्यु समझें। दशम भाव में मंगल शत्रु राशिस्थ हो तो पिता की शीघ्र मृत्यु, लग्न में शनि, छठे चंद्रमा, 7वें मंगल हो तो पिता जीवित नहीं रहता। लग्नस्थ गुरु, दूसरे शनि-सूर्य-मंगल व बुध हो तो उसके विवाह के समय पिता की मृत्यु होती है। लग्न से 6/12 भाव में पाप ग्रह हो तो माता को कष्ट, चतुर्थ पाप ग्रह माता को, 10वें पाप ग्रह पिता को अरिष्ट करते है।

लग्न कुण्डली में तीसरे शुक्र, गुरु सिंहस्थ या मेषस्थ, सूर्य दशम मंगल सूर्य युति हो तो बालक मूक होगा। पंचमस्थ शनि मंगल, राहु युक्त हो तो

बायीं कोख में लहसुन का चिह्न होगा। दशम भावस्थ बुध-गुरु से, सूर्य व मंगल 1/4/7/10 भाव में 3/11 वें भाव में पाप जुटे हों तो छः उंगलियां होंगी।

लग्न से सप्तम भाव तक अनुदित व अष्टम से द्वादश तक उदित भाग कहलाता है। प्रत्येक लग्न के 10-10-10 अंश के तीन द्रेष्काण होते हैं। प्रथम द्रेष्काण हो तो लग्न सिर 2/12 नेत्र 2रा बायां 12वां दायां नेत्र, तृतीय दायां कान, 11वां बायां कान 4 दायीं नासिका, 10वां बायीं नासिका, 5वां दायां कपोल, 9वां बायां कपोल, छठा दायीं ठोड़ी, 8वां बांयीं ठोड़ी, 7वां मुख समझें। लग्न से दूसरा द्रेष्काण हो तो लग्न से कंठ 2-12 से दायां-बायां कंधा, 3/11 से दायां-बायां बाहु, 4/10 से दायां-बायां पार्श्व, 5/9 से हृदय, 6/8 से पेट, 7वें से नाभि समझें। तीसरा द्रेष्काण हो तो लग्न को पेड़ू, 2/11 को जननेन्द्रिय व गुदा, 3/11 से अंडकोष, 4/10 से उरु 5/9 से दोनों जांघें, 6/8 से घुटने, 7 से पांव समझें।

सूर्य से शिव, चंद्र से पार्वती, मंगल से कार्तिकेय, बुध से विष्णु, गुरु से ब्रह्मा, शुक्र से इन्द्र, शनि से काल-ये इनके देवता हैं। क्रमशः ये अग्नि, जल, भूमि, विष्णु, इन्द्र, इन्द्राणी, ब्रह्मा ये प्रव्याधि देवता हैं। राहु के अधिदेव काल व प्रव्याधि देवता शेषनाग हैं। केतु के चित्रगुप्त व ब्रह्मा हैं।

ग्रहों का भ्रमण काल-सूर्य-बुध-शुक्र एक-एक मास, मंगल 1½ मास, गुरु एक वर्ष, शनि ढाई वर्ष, चन्द्रमा 2¼ दिन एक राशि पर रहते हैं। सूर्य-मंगल राशि के आदि भाग में, शुक्र-गुरु मध्य भाग में, बुध संपूर्ण राशि भोग काल में तथा शनि-चंद्र राशि के अंतिम भाग में शुभाशुभ फल देते हैं। मंगलादि 5 ग्रह यदि अतिचार से अग्रिम राशि में या वक्र होकर पृष्ठ राशि में भी जायें तो भी पूर्व राशि का ही फल देते हैं। गुरु अग्रिम राशि में जाने पर उसका फल देता है। जो ग्रह नीच या शत्रु क्षेत्री हों या सूर्य से अस्त हों वे शुभाशुभफल नहीं देते। पाप ग्रह शुभ ग्रह युक्त या दृष्ट हो तो पाप फल नहीं देते। सूर्य आदि के 5 दिन, चंद्रमा, अंतिम तीन घड़ी में, मंगल प्रारम्भ के आठ दिन, बुध, अंत की तीन घड़ी में, गुरु मध्य के दो महीने, शुक्र मध्य में 7 दिन, शनि अंतिम छः माह, राहु-केतु अंतिम दो-दो माह विशेष फल देते हैं।

यदि शनि राशि पर गुरु-गुरु की राशि पर शनि हो तो गुरु उस स्थान की हानि करता है पर शनि गुरु की राशि वाले भाव की वृद्धि करता है। केन्द्र में सूर्य हो तो राज्य-सेवा करेगा, चंद्र हो तो वैश्यवृत्ति, मंगल हो तो सैन्य

विभाग में, बुध हो तो अध्यापन, गुरु हो तो पंडिताई, शुक्र हो तो विद्या द्वारा अर्थोपार्जन, शनि केन्द्रस्थ हो तो नीच या शूद्रों से आजीविका करता है।

मेष का सूर्य वैशाख, वृष का हो तो ज्येष्ठ इस प्रकार जन्म मास समझें। सूर्य से छः भाव के मध्य जन्म हो तो अर्थात् लग्न हो तो जातक का जन्म दिन का व 7 से सायंकाल व 8 से 12वें घर तक, लग्न हो तो रात का जन्म समझें। सूर्य स्थित राशि से 7 राशि तक चंद्र हो तो शुक्ल पक्ष का जन्म, आगे हो तो कृष्ण पक्ष का जन्म समझें। सूर्य स्थित राशि से चंद्र स्थित राशि तक भाव को 2½ से गुणा करें, गुणन फल जन्म तिथि समझें। शनि जिस राशि का हो उससे वर्तमान कालीन शनि राशि तक गिन 2½ से गुणा करने पर गुणन फल गत वर्ष होंगे। उन्हें संवत् वर्तमान में से घटाने पर जन्म का संवत्त्वर आयेगा। जिस दिन का चंद्रमा देखना हो, कार्तिक माह से उस माह तक गिनें, जिस माह में चंद्रमा देखना हो। उस महीने तक जितने माह व्यतीत हुए हों उन्हें 2 से गुणा कर प्रतिपदा से गिन, उस दिन की तिथि को जोड़ें, जिस दिन का चंद्रमा देखना हो, प्रत्येक माह की एक तिथि जोड़कर 27 से भाग देने पर शेष अंक बचे उसमें एक और मिला अश्विनी से गिनें, उत्तर जो आये उन्हें नक्षत्र समझें व उसी नक्षत्र से चंद्रमा को निश्चित करें।

मंगल का वर्ण रक्त, गुरु का सुनहला, बुध का तोता सम नीला, सूर्य का कांति युक्त और चंद्र का अर्क पुष्प समान, शुक्र का अत्यन्त गौर, राहु-शनि का काला, केतु का धूम्र वर्ण है। इनमें जो ग्रह बलवान होकर लग्न में हो या देखता हो उसी के समान जातक के शरीर का वर्ण होगा। चंद्रमा मोटे शरीर का, शुक्र पतले शरीर का, मंगल तथा सूर्य सम शरीर, बुध-गुरु वर्तुल अर्थात् गोलाकार शरीर वाले, शनि-राहु-केतु लम्बे आकार के हैं। इनमें जो सर्वाधिक बलवान ग्रह लग्नस्थ हो या लग्न को देखता हो, तदनुरुप जातक की देह समझना चाहिए। सूर्य-मंगल पित्त प्रकृति, शुक्र-चंद्र कफ प्रकृति, बुध-गुरु सम वात-पित्त-कफ प्रकृति के, राहु-केतु-शनि वात प्रकृति के हैं। जो ग्रह अरिष्ट प्रद होता है, उसकी दशा-अन्तर्दशा में उस ग्रह की प्रकृति जन्म बीमारी का शिकार होना पड़ता है। सूर्य हृदय भाग, मुख के समीप, मस्तक, रक्त प्रवाह, नेत्र एवं दृष्टि को प्रभावित करता है तथा हृदय रोग, ज्वर, पित्त, मूर्च्छा, पीठ-पांवों में दर्द, उष्णवातादि विकार पैदा करता है। चंद्रमा उदरव्याधि, वक्षस्थल विकार, जलोदर, शीत ज्वर, स्त्री रोग, प्रदर, आंत्र कष्ट, अपस्मार, मृगी-रोग, मंगल रक्तस्राव, चेचक, खुजली, प्लेग, ज्वर, गुह्य रोग, नासारोग, चीर-फाड़, धावादि रोग देता है। बुध मेदा संबंधी

रोग, गर्दन, कंठ रोग, कण्ठमाला, मज्जा, तन्तु की अव्यवस्था, वाणी दोष, सिर में चक्कर, मानसिक कष्ट, गुरु यकृत, प्लीहा रोग, शरीर में रक्त संचय, पक्षाघात, दन्तरोग, फोड़ा–फुंसी, प्रतिबंधक रोग, शुक्र मधुमेह, वीर्य रोग, शनि खांसी, संधिवात, अर्द्धांग वायु, शीत रोग, क्षय, दमा, दाद, अपच, वात, बद्धकोष्ठता व दीर्घकालीन रोग देता है। राहु–केतु शनि समान रोग देता है।

7वें भाव में शुक्र–मंगल पाप दृष्ट हो तो प्रत्यक्ष रोग से युक्त रोगी चंद्रमा पाप युक्ंत कर्क–वृश्चिक के नवांश में हो तो गुप्त रोग, 2/12 भाव में पाप ग्रह हो, चंद्रमा लग्नस्थ, सूर्य से द्वितीय शनि हो तो विकलांग, चंद्र दो पाप ग्रह मध्य तथा सूर्य मकर का हो तो श्वास क्षय, प्लीहा, गुल्म रोग, सूर्य कर्क, चंद्र सिंह का या सूर्य कर्क के नवांश में चंद्रमा सिंह के नवांश में हो तो या सूर्य–चंद्र साथ में कर्क या सिंह में हो तो शोषरेणी या दुर्बल, चंद्रमा पंचम नवांश में हो या किसी भरी राशि में मीन, कर्क, मेष, मकर नवांश में हो व शनि, मंगल से दृष्ट या युक्त हो तो कण्ठ रोग, यदि 8/4//2/10 में राशि में पाप ग्रह से दृष्ट या युक्त होकर लग्न से 9/5 भाव में हो तो कुष्ठी, यदि सूर्य–चंद्र–मंगल–शनि किसी भी प्रकार से 8/6/2/12 भावों में हो तो, सर्वाधिक बली हो उसके दोष से नेत्र कष्ट होगा। अशुभ ग्रह 3/11/3/5 भावस्थ हो, उन पर शुभ दृष्टि न हो तो कर्ण रोग, पाप ग्रह 7वें शुभ दृष्ट न हो तो दन्त रोग, लग्न में राहु ग्रस्त चंद्र उससे 9/5 भाव में शनि–मंगल हो तो पिशाच बाधा, लग्न में सूर्य–राहु व त्रिकोण में शनि–मंगल हो तो अन्धा होता है। 7वें शनि, लग्नस्थ गुरु हो तो वात रोग, 7वें मंगल, लग्नस्थ बृहस्पति उन्माद रोग, लग्नस्थ शनि, मंगल 9/5/7वें उन्माद रोग, क्षीण चंद्र के साथ शनि द्वादश हो तो भी उन्माद रोग, जन्म राशि के नवांश पति सूर्य–चंद्र–गुरु में से कोई नीच या शत्रु के नवांश में हो तो गुलाम, 3 या 4 ग्रह नीच, शत्रु क्षेत्री राशि के नवांश में हो तो गर्भ से ही दास, 2/1/9 लग्न पाप ग्रह दृष्ट हो तो विद्रूप दांत। पाप राशि 1/8/5/10/11/9/2 लग्न हो तो गंजा, 9 या 5वें भाव में सूर्य पाप दृष्ट हो तो अल्प दृष्टि, 9/5 भाव में कहीं मंगल पाप दृष्ट हो तो अनेक रोग, 9/5 में शनि पाप दृष्ट हो तो अंगहीन, लग्न से द्वादश, पंचम, द्वितीय, 9वें भाव में पाप ग्रह हो तो सर्वाधिक बलवान गृह सम्बन्धी बंधन समझें। लग्न में सर्पयुक्त, निगुड़ युक्त द्रेष्काण हो और उस पर पाप दृष्टि हो तो बंधन होगा। चतुष्पद द्रेष्काण हो तो रस्सी से, द्विपद राशि का हो तो बेड़ी से, जलचर राशि का हो तो बिना बंधन; के

वृश्चिक का हो तो कन्दरादि में बंधन होता है। चन्द्रमा, शनि युक्त हो, मंगल से दृष्ट या युक्त हो तो कठोर भाषी, अपस्मार रोग, क्षय पीड़ित, सूर्य–शनि–मंगल में से कोई एक दशम हो तो उत्तम नौकरी वाला, दो हो तो मध्यम श्रेणी की नौकरी, तीनों हो तो निम्न श्रेणी की नौकरी वाला होगा।

दूसरे भाव में शनि युक्त मंगल हो, तृतीय राहु हो तो सहोदर की मृत्यु होती है। 6वें मंगल, 7वें राहु, आठवें शनि हो तो पत्नी की मृत्यु, तुला में शनि, कन्या में शुक्र, सिंह में मंगल, मिथुन में राहु हो तो माता की मृत्यु, यदि 4/10/12वें भाव में पाप ग्रह हो तो माता–पिता का नाश व वह परदेशवासी होगा। चौकोर, नाटी, छोटे–छोटे केश, पित्त प्रकृति, अधिक हड्डी युक्त, शूरवीर मधु वर्ण, पीत नेत्र, रक्त श्याम वर्ण, मोटा शरीर सूर्य स्वरूप है। स्वच्छ गौर वर्ण, चंचल स्वभाव, कफ़ वात प्रकृति, अधिक रक्त वान, मधुरभाषी, मित्र प्रिय, गोल व लंबा शरीर चंद्र स्वरूप है। हिंसक स्वभाव, युवावस्था, पीत नेत्र, पित्त प्रकृति, बलवान चंचल, रक्त गौरवर्ण, मज्जा सार युक्त मंगल स्वरूप है। मध्यम कद, मधुर वचन, दुर्वासम श्याम वर्ण, नसों से युक्त शरीर, निपुण, मोटी त्वचा, स्थूल प्रसन्न बदन बुध का स्वरूप है। मधु समान पीत नेत्र, बुद्धिमान, मांसल देह, कफ़ प्रकृति, थोड़ा पीला रंग, मेदावान गुरु का स्वरूप है। श्याम वर्ण, अंगों के स्पष्ट जोड़, कृष्ण वर्ण सिर के केश, सुखी, मनोहर शरीर, कफ़–वात प्रकृति, मधुरभाषी, अधिक वीर्यवान शुक्र का यह स्वरूप है। दुबला शरीर, कृष्ण वर्ण, कृपण, आलसी, वात प्रकृति, मोटे नख, दांत व रोमकूप, अधिक नसों से युक्त शरीर शनि का स्वरूप है।

सूर्य–मंगल की दृष्टि हेतु मूंगा, चन्द्र–शुक्र के लिए चांदी, बुध हेतु स्वर्ण, गुरु के लिए मोती, शनि के लिए लोहा, राहु–केतु के लिए अंगूठी में लाजवर्त धारण करना चाहिए। ग्रहों के लिए क्रमशः आक, पलास, खैर, अपामार्ग, पीपल, गूलर, शमी, दूब, कुशा की समिधा का प्रादेश मात्र ग्रहण करना चाहिए। सूर्य से केतु पर्यन्त सवत्सागौ, शंख, लाल बैल, स्वर्ण, पीला वस्त्र, सफेद घोड़ा, काली गाय, लोहा, बकरा दान देना चाहिए। जाप घर में एक गुना, नदी तट पर दो गुना, गौशाला में दस गुना, अग्निशाला में 100 गुना, तीर्थ, स्थानों पर सहस्त्र गुना, शालिग्राम शिला समीप करने से असंख्य गुनाफल मिलता है।

सूर्य मन्त्र–ॐ आकृष्णेन्........पश्यन् ॐ घृणि सूर्याय नमः।

जप संख्या 7000

चन्द्र मन्त्र–ॐ इमं देवा........छूं राजा ॐ सों सोमाय नमः।

जप संख्या 11000

मंगल मन्त्र–ॐ अग्निर्मूर्द्धा........सिजिन्वति ॐ अं अंगारकाय नमः।

जप संख्या 11000

बुध मन्त्र–ॐ उद्बुध्य........सीदत ॐ बुं बुधाय नमः।

जप संख्या 9000

गुरु मन्त्र–ॐ बृहस्पते........चित्रम् ॐ बृं बृहस्पते नमः।

जप संख्या 19000

शुक्र का मन्त्र–ॐ अन्नात्परि........मधु ॐ शुं शुक्राय नमः।

जप संख्या 16000

शनि का मन्त्र–ॐ शन्तो........स्यवन्तुनः। ॐ शनिश्चराय नमः।

जप संख्या 23000

राहु मन्त्र–ॐ कया........वृत्ता ॐ रौ राहवे नमः।

जप संख्या 18000

केतु का मन्त्र–ॐ केतुं........जा यथा ॐ के केलवे नमः।

जप संख्या 17000

संवत्सर

संवत्सर कुल 60 हैं। (1) प्रभव (2) विभव (3) शुक्ल (4) प्रमोद (5) प्रजापति (6) अंगिरा (7) श्रीमुख (8) भाव (9) युवा (10) धाता (11) ईश्वर (12) बहुधान्य (13) प्रमाथी (14) विक्रम (15) वृष (16) चित्र भानु (17) सुभानु (18) तारण (19) पार्थिव (20) व्यय (21) सर्वजित् (22) सर्वधारी (23) विरोधी (24) विकृति (25) खर (26) नन्दन (27) विजय (28) जय (29) मन्मथ (30) दुर्मुख (31) हेमलम्ब (32) विलम्ब (33) विकारी (34) शार्वरी (35) प्लव (36) शुभकृत् (37) शोभन (38) क्रोधी (39) विभावसु (40) पराभव (41) प्लवंग (42) कीलक (43) सौम्य (44) साधारण (45) विरोधकृत (46) परिधावी (47) प्रमादी (48) आनंद (49) राक्षस (50) नल (51) पिंगल (52) काल युक्त (53) सिद्धार्थी (54) रौद्र (55) दुर्मति (56) दुन्दुभि (57) रुधिरोद्गारी (58) रक्ताक्ष (59) क्रोधन (60) क्षय। प्रथम 20 ब्रह्म विंशतिका, अगले बीस विष्णु विंशतिका, शेष 20 रुद्र विंशतिका के अन्तर्गत माने जाते हैं।

1. प्रभव–सभी वस्तुओं को खूब पाने वाला, सुपुत्रवान, धनी, दीर्घायु, भोग युक्त होगा।

2. विभव–अनेक भोग भोगी, लालिमा युक्त काले नेत्र वाला, विद्वान, राज पूजित।

3. शुक्ल–जातक सुन्दर, शान्त स्वभाव, भागी, पुत्र–स्त्री युक्त, विद्वान सर्वगुण सम्पन्न।

4. प्रमोद–प्रसन्न चित्त, सत्यवादी, पंडित, कान्ति युक्त, सुखी व सम्मानित।

5. प्रजापति–प्रजापालक, धर्मात्मा, कृपालु, सत्यवादी, गुणी, देव भक्त होगा।

6. अंगिरा–कामी, सुखी, मानी, भोगी, मित्रों को प्रिय, दीर्घायु, सुपुत्रवान होगा।

7. श्रीमुख–श्रीमन्त, श्रेष्ठ, बुद्धिवाला, शान्त स्वभाव, प्रीतियुक्त, शुभ कर्मी, दीर्घायु।

8. भाव–यशस्वी, दानी, सुलक्षणी, सुख भोगी।

9. युवा–सद्‌गुणी, कीर्ति वाला, दीर्घायु, दानी, शान्त स्वभाव, श्रेष्ठ बुद्धि, पवित्र।

10. धाता–दीर्घायु, शुभ, चतुर, वेदाभ्यासी व सुन्दर।

11. ईश्वर–सर्वज्ञ, सब काम का ज्ञाता, गुरु भक्त, अति सुन्दर, क्रोधी।

12. बहुधान्य–बावड़ी, कुआं, तालाब बनवाने वाला, यज्ञादि कर्ता, दानी, धनी हो।

13. प्रमाथी–सेनापति, राजमन्त्री, शिव से वर पाने वाला, शास्त्रज्ञ, धनी।

14. विक्रम–उग्र प्रतापी, पराए कामों में सलाहकार, पाप कर्मरत, शूरवीर।

15. वृष–मंदबुद्धि, आलसी, महामूर्ख, बोझा ढोने वाला, पाप कर्म में रत।

16. चित्रभानु–परम विद्वान, नीतिज्ञ, बुद्धिमान, श्रीमन्त, स्वामि भक्त, प्रियवादी।

17. सुभानु–पिंगल वर्ण नेत्र, पिंगल वर्ण केश, गौरवर्ण, स्वामी, न्यायी, कांतिमान्, अत्यन्त दुष्ट स्वभाव।

18. तारण–चंचल, चपल, धृष्ट, धूर्त, पाप कर्म रत, शूर, दरिद्री निष्ठुर।

19. पार्थिव–मृदुभाषी, राजमान्य, रजोगुणी, शुभ लक्षण संपन्न, कांतिमान, धनी।

20. व्यय–जुआरी, मद्यपी, परस्त्री गमन, धन नाशक, चोर, पाप बुद्धियुक्त।

21. सर्वजित–स्वकार्यरत, शास्त्रज्ञ, रोगों की जानकारी में कुशल, छोटा व स्थूल शरीर, श्याम वर्ण शरीर।

22. सर्वधारी–सेवक युक्त, धनी, कामी, मिष्टान्न भोजी, स्वामी, आश्रयी।

23. विरोधी–कलह प्रिय, परस्त्रीरत, सर्व विरोधी

24. विकृति–कृष्ण वर्ण, काला, कलान्यास में चंचल, गुणहीन, रुक्ष देह।

25. खर–धूल धूसरित देह, दीर्घायु, पराए सत्य को सिद्ध करने वाला, अति कामी, निर्लज्ज।

26. नन्दन–आनंदित, संतुष्ट, कुआं–बावड़ी बनाने वाला, दरिद्रों का हितैषी व शक्तिवान।

27. विजय–शूरवीर, युद्ध–क्षेत्र में तेजस्वी, यशस्वी, कीर्तिवान, भूपति, विजयी, भोगी।

28. जय–विद्वान, मानी, यशस्वी, शास्त्रज्ञ, अनुयायी, प्राप्तकर्ता व विजयी।

29. मन्मथ–भोग पाने वाला, कामी, प्रियवादी, सुखी, वस्त्राभूषण युक्त।

30. दुर्मुख–शठ, क्रूर–बुद्धि–दुष्ट, हिंसक, उग्र, वृषली पति, टेढ़े मुख, टेढ़े हाथ–पांव वाला होगा।

31. हेमलम्ब–स्वर्ण धन–धान्य–पशु–वस्त्रादि से सम्पन्न, स्त्री–सन्तान सुख से पूर्ण।

32. विलम्ब–मंद भागी, लोभी, आलसी, दुःखी, कफ़ रोगी, ठग, स्वकार्यरत व पापी।

33. विकारी–अविवेकी, घमण्डी, विवाद कुशल, खल, ठग।

34. शार्वरी–व्यापार कुशल, मित्र द्वेषी, लंबकाय, दुबला, झुके नेत्र युक्त।

35. प्लव–चंचल, चपल, कामी पर सेवारत, कृषक, ठिगना होता है।

36. शुभकृत्–सुन्दर, शुभकर्मकर्ता, विद्या–धन परायण, दीर्घायु, धन–पुंत्र सम्पन्न।

37. शोभन–विजयी, कामी, सुन्दर, गुणी, दयालु।

38. क्रोधी–पिंगल वर्ण, नेत्र वाला, राजकोष पाने वाला, मंदमति, कामी, स्त्री लोलुप, पर कार्य नाशक।

39. विभावसु–शान्त स्वभाव, सम्पूर्ण गुण युक्त, दानी, मिष्टान्न भोजी, पवित्रात्मा, सन्तान सुखी।

40. पराभव–परस्त्रीगामी, शव, अपनों से शत्रुता, परायों से प्रेम, धन रहित।

41. प्लवंग–खल, पापी, दुष्ट, आचारहीन, अपवित्र, पापी।

42. कीलक–सामान्य रुप, कामी, भूखा–प्यासा, स्थूल हृदय, गुप्त कामी।

43. सौम्य–विद्वान्, धन भोगी, ब्राह्मण–देवता व अतिथि सेवक, तपस्वी, शरीर कृश करने वाला, सौम्य स्वभाव।

44. साधारण–नीच वृत्ति, पवित्र, काम रहित, परदेशवासी, देव–दर्शन में क्रोध करने वाला।

45. विरोधकृत–सभी से विरोध करने वाला, पितृ भक्ति रहित, सजाती, सेवक।

46. परिधावी–विद्वान्, कलाविद्, व्यापार–कुशल, बुद्धिमान, राज्य सम्मानित, दानी।

47. प्रमादी–कुटुम्बघाती, लोभी, पराया कार्य करने वाला, बंधु–विरोधी, दुष्ट।

48. आनन्द–अनेक स्त्रियों वाला, अत्यन्त चतुर, आनंद पाने वाला, क्षमाशील पुत्र, मित्र युक्त।

49. राक्षस–सर्वभक्षी, कृतघ्न, धर्माधर्म रहित, हिंसक, पर जन को कष्ट दाता।

50. नल–व्यापारी, धनी, बड़े कुटुम्ब वाला, पवित्र, जलाशयों का निर्माता।

51. पिंगल–टेढ़ी दृष्टि वाला, अल्प रोमावली, उद्यमी, कार्य सिद्धि के फल का त्याग करने वाला।

52. काल युक्त–परोपकारी, भक्ष्याभक्ष्य का विचार न करने वाला, रोगी होता है।

53. सिद्धार्थी–ऋद्धि–सिद्धि युक्त, नित्य भोग करने वाला, संगीत विशारद, मन्त्री, यशस्वी, उदासीन।

54. रौद्र–भयानक स्त्रीवाला, पापी, चुगलखोर, घात करने वाला, अल्पायु।

55. दुर्मति–मूर्ख, क्रूरता युक्त, कामी, अपने वचन का प्रिय, दान न करने वाला धनी।

56. दुन्दुभी–सदैव उत्साहित, पृथ्वीपति, हाथी–घोड़ा, धन–धान्य युक्त सुख–सम्पन्न।

57. रुधिरोद्गारी–कामी, लोभी, महादोषी, शस्त्र से पीड़ित, दुष्कर्मी, बुरे नख।

58. रक्ताक्षी–नेत्र रोगी, मंद दृष्टि, घमंडी, दुर्जन, अतिकामी।

59. क्रोधन–तपस्वी, निर्गुण, धातुवादी, भयंकर रूप, ठग, पाप बुद्धि।

60. क्षय–जन्म से रोगी, पर सेवारत, दुष्ट, धर्मरहित।

उत्तरायन–उत्तरायन में जन्म लेने वाला व्यक्ति स्त्री युक्त, सुखी, गुणी दीर्घायु, आचार–विचार वाला, बुद्धि कुशल, देव–ब्राह्मण–आचार्य के सेवक व यशस्वी होगा।

दक्षिणायन–वह व्यक्ति क्रूर, शठ, रोगी, पापी, चोर, कृश, परस्त्री आसक्त, क्रूर बुद्धि, अधिक निद्रा प्रिय होगा।

शिशिर ऋतु–शिशिर ऋतु में जन्म लेने वाला प्राणी बलवान, सुखी, गुणी, कांत, सत्यवादी, भोगी, सत्यवक्ता, दानी, यशस्वी होगा।

वसन्त ऋतु–दन्त रोगी, आभूषण प्रिय, बलवान, मिष्टान्न भोजी, दीर्घायु होगा।

ग्रीष्म ऋतु–कुआं, बावड़ी, तालाब, देवालय बनवाने वाला, शास्त्रज्ञ, ज्ञानोपदेशक होगा।

वर्षा ऋतु–देश–ग्राम–पुर का अध्यक्ष, कृषक, शास्त्र संग्रह में दक्ष होगा।

शरद ऋतु–व्यापार कुशल, मन्त्री, ज्वर पीड़ित, पंडित, गुणी, धैर्यवान होगा।

हेमन्त ऋतु–महलवासी, धर्मात्मा, सत्यवादी, मिष्टान्न प्रेमी होगा।

चैत्र–चैत्र मास में जन्म लेने वाला ब्रह्मचारी, वेदाध्ययन में तत्पर, गुरु–देव–ब्राह्मण भक्त।

वैशाख–सर्व लक्षण युक़्त, दीर्घदर्शी, कलाविद्, सात्त्विक स्वभाव, चिरंजीवी।

ज्येष्ठ–सर्व कार्यदक्ष, बुद्धिमान, परीक्षक, रोज क्रय–विक्रय करने वाला।

आषाढ़–निर्धन, बहुभक्षी, कुष्ठ रोगी, हलधर, व्याधियुक्त, मूर्ख होगा।

श्रावण–वेदकर्म दक्ष, पुत्र–स्त्री–धन युक्त, लोक पूज्य।

भाद्रपद–भोगी, दानी, कृश, दीर्घकाय, गौरवर्ण, कामी, अनेक स्त्रियों से सम्बन्ध रखने वाला, पुत्रवान, श्रीमन्त होगा।

आश्विन–ऐश्वर्यशाली, राजप्रिय, सेवक युक्त, स्त्रियों से अधिक संबंध, अनेक पुत्र वाला, अल्पजीवी।

कार्तिक–वाचाल, वक्र बुद्धि, कुंचित केश, आलसी, ब्रह्मचारी होगा।

मार्गशीर्ष–तीर्थाटन प्रेमी, मन्त्र दीक्षा में तत्पर, शास्त्र संचय करने वाला होगा।

पौष–दुखदायी, रोगी, पापकर्मी होगा।।

माघ–योगीश्वर, तपोनिष्ठ, वेदज्ञ, शान्त, दयालु चतुर।

फाल्गुन–सुकुमार शरीर, भोगी, कामी, स्त्री प्रिय, सुखी, वस्त्राभूषण–वाहन सम्पन्न।

शुक्ल पक्ष–शुक्ल पक्ष में जन्म लेने वाला व्यक्ति दीर्घायु, पुत्रवान अनेक का पालक, दानी, मित्रों का सम्मानकर्ता, स्त्री के वशीभूत रहता है।

कृष्ण पक्ष–कृष्ण पक्ष में जन्म लेने वाला प्राणी आलसी, मलिन, निंदक, गंवार भाषा बोलने वाला, धर्मविरोधी होगा।

प्रतिपदा–प्रतिपदा को जन्म लेने वाला यदि 3 दिन या 3 माह तक जीवित रह जाये तो फिर महातेजस्वी, अस्सी वर्षायु भोगता है।

द्वितीया–सत्यवादी, लोगों को आनंददायी, स्तुति योग्य, स्वकार्यरत होगा।

तृतीया–स्त्री लम्पट, कृपण, चंचल चित्त, व्रतोपवास करने वाला, मूर्ख, विवादी व बलवान होता है।

चतुर्थी–लोभी, चुगलखोर, प्रचण्ड साहसी, शूरवीर, चंचल, सुखी होगा।

पंचमी–दीर्घायु, महामति, स्थिर स्वभाव, शूरवीर, सत्यवादी, जितेन्द्रिय।

षष्ठी–शरीर में व्रण चिह्न युक्त, स्थिर स्वभाव, स्त्री लोलुप, सुंदर, विद्या व कीर्ति पाता है।

सप्तमी–घनी, गुणी, देव–गुरु–अतिथि भक्त, सदाचारी, दृढ़व्रती।

अष्टमी–स्वस्त्री आसक्त, बहुभाषी, चपल, चंचल, निष्ठुर।

नवमी–काम लोलुप, बलवान, गीत नृत्य में रुचि प्रधान, शत्रु–हन्ता, क्रोधी।

दशमी–स्त्रीजित्, शरीर पर शस्त्र या व्रण चिह्न, पवित्र, सुंदर, चंचल, बुद्धिमान।

एकादशी–लोक–व्यवहार में कुशल, कला–शास्त्रविद्, सत्यवादी, दृढ़व्रती।

द्वादशी–सदाचारी, अतिक्रोधी, रतिलोलुप, सुन्दर, वस्त्र–भोजन अर्जित करने में तत्पर होगा।

त्रयोदशी–स्त्रीजित्, ज्ञानी, व्रतोपवास में निरत, बुद्धिमान, गुणी।

चतुर्दशी–सभी कर्मों में शुद्ध, बुद्धिमान, व्याधिरहित, बंधु–बांधव युक्त।

पूर्णिमा–सदैव प्रसन्न रहने वाला, कामी, पूर्ण अंगों वाला, स्थिर चित्त, सुंदर होगा।

अमावस्या–इन्द्रियों के दुःख से दुःखी, सुखहीन, बलहीन, व्याकुल होगा।

रविवार–रविवार को जन्म लेने वाला जातक स्थिर मति, प्रचण्ड, शूरवीर, रक्त–श्याम वर्ण शरीर वाला, पवित्र, पित्त प्रकृति, अति चतुर होगा।

चंद्रवार–सोमवार को जन्म लेने वाला व्यक्ति सात्त्विक स्वभाव वाला, क्षय वृद्धि सम्पन्न, छोटा कद, गौरांग, बड़ी छाती, श्रेष्ठ बुद्धि वाला होगा।

मंगलवार–मंगलवार को जन्म लेने वाला व्यक्ति छात्रवृत्ति वाला, लाल आंखें, कम बोलने वाला अर्थात् अल्पभाषी, मधुरभाषी, क्षमाशील।

बुधवार–बुधवार को जन्म लेने वाला जातक अत्यन्त चतुर, गोल सिर, गोल पांव, कवि, सुन्दर, चंचल बुद्धि होगा।

गुरुवार–गुरुवार को जन्मा प्राणी श्रेष्ठ बुद्धि वाला, जग प्रसिद्ध, कला, शास्त्रविद्, पवित्र, प्रगल्भ, कुशल, धीरवान होगा।

शुक्रवार–शुक्रवार को जन्म लेने वाला व्यक्ति गुप्त कार्य करने वाला, श्रेष्ठ बुद्धिवाला, विद्वान, सुन्दर मुख, लोक प्रसिद्ध, कला मर्मज्ञ, शास्त्रज्ञ, पवित्र होगा।

शनिवार–शनिवार को जन्मा व्यक्ति रुक्ष व दुर्बल देह, मलिन, चंचल दृष्ट, भयानक, क्रोधी, उन्मत्त होगा।

तिथि क्षय या तिथि मल में जन्म लेने वाला जातक गुणहीन, धन नाशक, कुटिल, वंचक होता है।

नंदा तिथि (2/7/11) में जन्म लेने वाला मनुष्य महामानी, विद्वान देव भक्त, ज्ञानी, प्रियवत्सल होता है।

भद्रा तिथि (2/6/12) में जन्म लेने वाला जातक बन्धु जन में सम्मानित, राजसेवक, धनी, सांसारिक बन्धनों से डरने वाला, परमार्थ सेवी व परोपकारी होता है।

जया तिथि (3/8/13) में जन्म लेने वाला व्यक्ति राज्य में सम्मानित पुत्र–पौत्रादि युक्त, शूरवीर, शान्त, दीर्घायु व मनस्वी होता है।

रिक्ता तिथि (4/9/14) में जन्म लेने वाला व्यक्ति कुतर्की, प्रमादी, गुरु का निन्दक, शास्त्रज्ञ, अन्यान्य का घमण्ड चूर करने वाला, कामी होता है।

पूर्णा तिथि (5/10/15) में जन्म लेने वाला जातक धनाढ्य, यश, सत्यवादी, शुद्ध चित्तवाला, अनेक विषयों का ज्ञाता होता है।

दिन में जन्म लेने वाला सद्धर्म युक्त अनेक पुत्रों वाला, भोगी, अनेक मित्र युक्त, कामातुर, वस्त्रादि से परिपूर्ण, बुद्धिमान, सुन्दर होता है।

रात में जन्म लेने वाला कम बोलने वाला, अधिक कामी, क्षय रोगी, मलिन, क्रूर, गुप्त पाप करने वाला होगा।

नक्षत्रफल

अश्विनी–सुन्दर, भाग्यवान, चतुर, स्थूल काय, महाधनी, लोकप्रिय।

भरणी–निरोग, सत्यवादी, सत्य प्रतिज्ञ, दृढव्रती, सुखी, धनी,।

कृत्तिका–कृपण, पापी, क्षुधापीडित, रोज दुःखी, अकर्मकर्ता।

रोहिणी–धनी, कृतज्ञ, मेधावी, राजमान्य, प्रियभाषी, सत्यवादी, सुन्दर।

मृगशिरा–चपल, चतुर, धैर्यवान, नकली वस्तुएं बनाने वाला, स्वार्थी, अहंकारी, परद्वेषी।

आर्द्रा–कृतघ्न, घमण्डी, हीन स्वभाव, पापी, शठ, धनहीन।

पुनर्वसु–शान्त स्वभाव, सुखी, संभोग प्रिय, सुन्दर, लोकप्रिय, पुत्रवान होगा।

पुष्य–देव व धर्म उपासक, धनी, पुत्रवान, पंडित, शान्त, सुन्दर, सुखी।

आश्लेषा–सर्वभक्षी, क्रूर, कृतघ्न धूर्त, दुष्ट, मतलबी।

मघा–अनेक सेवकों वाला, धनी, भोगी, पितृभक्त, उद्यमी, सेनापति व राज सेवक।

पूर्वा फाल्गुनी–विधा, गौ, धन–युक्त, गंभीर, स्त्रियों को प्रिय, सुखी, विद्वानों में पूजित।

उत्तरा फाल्गुनी–जितेन्द्रिय, शूरवीर, मृदुभाषी, शस्त्रविद्या में निपुण, भारी योद्धा, लोकप्रिय।

हस्त–असत्य भाषी, ढीठ, सुरापायी, बन्धु–विहीन, चोर, परस्त्रीगामी।

चित्रा–स्त्री व पुत्र युक्त, सन्तोषी, सम्पन्न, देव–अतिथि–ब्राह्मण भक्त।

स्वाति–चतुर, धर्मात्मा, कृपण, लोकप्रिय, सुशील, देव भक्त।

विशाखा–लोभी, अभिमानी, निष्ठुर, कलहप्रिय, वेश्यागामी।

अनुराधा–पुरुषार्थी, प्रवासी, बन्धु जन का कार्य करने वाला, प्रसन्नचित्त।

ज्येष्ठा–मित्रों से सम्पन्न, प्रधान कवि, दानी, विलक्षण बुद्धिवाला, धर्मात्मा, शूद्रों में पूजित।

मूल–सुखी, धन–वाहन सम्पन्न, हिंसक, बलवान, स्थिर मति, प्रतापी, शत्रुहन्ता, विद्वान।

पूर्वाषाढ़ा–शरणागत का, हित चाहने वाला, भाग्यवान, लोकप्रिय, सभी कार्यों में चतुर होता है।

उत्तराषाढ़ा–मित्र सम्पन्न, दीर्घकाय, विजयी, सुखी, शूर, विनयी।

अभिजित–सुन्दर, कान्तिवान, सज्जनों को प्रिय, विनयी, यशस्वी, सुन्दर, देव–ब्राह्मण भक्त, स्पष्टवादी, कुल श्रेष्ठ।

श्रवण–कृतज्ञ, सुन्दर, दानी, गुणी, शुभ लक्षणी, धनी, अनेक सन्तान युक्त।

धनिष्ठा–संगीत प्रिय, बन्धुजनों से मान्य, स्वर्ण–रत्न–अलंकृत, सैकड़ों का पालक।

शतभिषा–कृपण, धनी, परस्त्री सेवक, विदेशवासी, कामुक।

पूर्वाभाद्रपद–श्रेष्ठ वक्ता, सुखी सन्ततिवान, अधिक निद्राप्रिय, व्यर्थ समय खोने वाला।

उत्तराभाद्रपद–गौर वर्ण, सत्यवान, धर्मात्मा, शत्रुजयी, साहसी।

रेवती–सब अंगों से पूर्ण, सज्जन, शूर, विचक्षण, धनी।

प्रथम चरण

नक्षत्र	प्रथम चरण	द्वितीय चरण	तृतीय चरण	चतुर्थ चरण
अश्विनी	चोर	अल्पकर्मी	भाग्यशाली	दीर्घायु
भरणी	त्यागी	धनी	क्रूरकर्मी	दरिद्री
कृत्तिका	तेजस्वी	शास्त्रज्ञ	ऐश्वर्यशाली	दीर्घायु, पुत्रवान
रोहिणी	सौभाग्यशाली	पीड़ित	डरपोक	सत्यवादी
मृगशिरा	राजा	चोर	भोगी	सम्पन्न
आर्द्रा	खर्चालु	दरिद्र	अल्पायु	चोर
पुनर्वसु	सुखी	विद्यावान	रोगी	मृदुभाषी
पुष्य	दीर्घायु	चोर	भोगी	बुद्धिमान
आश्लेषा	सन्तान रहित	परजन कार्य कर्ता	रोगी	सौभाग्यशाली
मघा	सन्तान रहित	पुत्रवान	रोगी	विद्वान
पू. फा.	सामर्थ्यवान	धर्मात्मा	राजा	क्रूर, अल्पायु
उ.फा.	पंडित	राजा	विजयी	धर्मात्मा
हस्त	शूरवीर	विवादी	सम्पन्न	श्रीमान्
चित्रा	चोर	चित्रकार	परस्त्रीगामी	पंडित
स्वाति	चोर	अल्पायु	धर्मात्मा	राजा
विशाखा	नीतिज्ञ	शास्त्रज्ञ	विवादी	दीर्घायु
अनुराधा	तेजस्वी	धर्मात्मा	दीर्घायु	व्यभिचारी
ज्येष्ठा	क्रूर	भोगी	विद्वान	पुत्रवान
मूल	भोगी	त्यागी	मित्र सम्पन्न	राजा
पूर्वाषाढ़ा	श्रेष्ठ पुरुष	राजप्रिय	विवादी	धनी
उ० षाढ़ा	राजा	मित्र विरोधी	मानी	धर्मात्मा
श्रवण	श्रेष्ठ मानी	गुणी	विद्वान	धर्मात्मा
धनिष्ठा	दीर्घायु	पीड़ित	डरपोक	श्रेष्ठ स्त्री
शतभिषा	वाणी चतुर	लक्ष्मीवान	सुखी	पुत्रवान्
पू० भाद्रपद	शूरवीर	चोर	श्रेष्ठ बुद्धि	भोगी
उ० भाद्रपद	राजा	चोर	पुत्रवान	सुखी
रेवती	ज्ञानी	चोर	युद्ध में क्षय	क्लेश युक्त

जो मनुष्य नक्षत्र के प्रथमांश में जन्म लेता है वह सर्वथा चतुर, सच्चा, इन्द्रियजित व विद्वान होता है। द्वितीयांश में जन्म लेने वाला धनवान, युद्ध में विजयी, नीतिज्ञ, स्त्री आसक्त होता है। तृतीय अंश में जन्म लेने वाला सभी भोग भोगने वाला, शास्त्रज्ञ, स्वधर्म पालक एवं पत्नी आसक्त तथा चतुर्थांश में जन्म लेने वाला स्त्रीजित्, सन्तानहीन माया में लिप्त, नपुंसक, वीर होगा।

योग

विष्कुंभ–विष्कुंभ योगोत्पन्न जातक साले से प्रेम करने वाला, पत्नी के अलावा अन्य स्त्रियों में आसक्त, चतुर होता है।

प्रीति–स्त्रियों का प्रिय, उत्साही, कृतज्ञ, परमार्थी होगा।

आयुष्य–नीतिज्ञ, स्थिर मति, दान प्रिय, सभी कार्यों में तत्पर, भोग भोगने वाला होता है।

सौभाग्य–वाचाल, सद्‌गुणी, धनी, निर्गुण, प्रियवादी, बुद्धिमान, सुगन्ध प्रिय, सुन्दर, भाग्यशाली होगा।

शोभन–बुद्धिमान, गुणवान, अकस्मात् शोकाकुल होने वाला, सुन्दर, निर्मल हृदय, निर्मल स्वभाव वाला होगा।

अतिगण्ड–दूसरों पर दोषारोपण करने वाला, शूरवीर, सत्यवादी, धर्मज्ञ, परस्त्रीगामी, कामी होगा।

सुकर्म–सभी कार्यों में दक्ष, धन–धान्य–गुण सम्पन्न, व्यवसाय में कुशल होगा।

धृति–सुगन्ध प्रिय, धनी, विवादी, आलसी, परस्त्रीरत होगा।

शूल–पराक्रमी, सत्कर्म कर्ता, गुणवान्, भाग्यवान होगा।

गण्ड–वाचाल, महापराक्रमी, गंभीर, गर्वशाली, श्रेष्ठ, शुभलक्षण युक्त होगा।

वृद्धि–महा बुद्धिमान, स्थिर स्वभाव वाला, शूरवीर, सत्यवादी, जितेन्द्रिय, स्व वचन पालक, यशस्वी होगा।

ध्रुव–स्थायी कार्य करने वाला, दृढ़ शक्ति वाला, दीर्घायु प्रियदर्शी, सदैव कर्मरत होगा।

व्याघात–मूर्ख, मलिन, चित्रकार निष्ठुर, घमण्डी होगा।

हर्षण–कुटिल, सुखी, मिष्टभाषी, बली, कृषि कर्म करने वाला होता है।

वज्रयोग–अदानी, धनी पर कृपण, गंवारू भाषा बोलने वाला, क्रूर, सन्तान रहित।

सिद्ध–भोगी, धनवान, सुखी, अल्पभाषी, सिद्ध कर्मा, सत्यवक्ता होगा।

व्यतीपात–अस्थिर स्वभाव वाला, सत्यरहित, कुमन्त्री, भोजन प्रिय, अस्थिर स्वभाव, कलाहीन, मूर्ख होता है।

वरीयान–अनेक द्वारा पूजनीय, धनी, स्वकार्यरत, लोगों को आनन्द दाता, प्रशंसनीय होता है।

शूल–दानी, दुराचारी, लोभी, साहसी, हठी, स्वकुल में बुद्धिमान होता है।

शिव–तीर्थाटन प्रेमी, सुपुत्रवान, धनवान, ब्रह्मचर्य पालक होगा।

सिद्धि–पंडित, गुप्त मंत्री, व्यवसायों का जानकार, श्रेष्ठ मति, नीतिज्ञ।

साध्य–अनेक व्यवसाय करने वाला, स्वामिभक्त, बुद्धिमान, सुगन्ध प्रिय, उदार, सुसाध्य होगा।

शुभ–सत्यवादी, शुभ कार्य कर्ता, क्रोधरहित, निर्मल चित्त, शरणागत का प्रिय रहेगा।

शुक्ल–सत्यवादी, सुन्दर, यशस्वी, वेदज्ञ, कलाविद् होंगे।

ब्रह्म–प्रियवादी, महापराक्रमी, ब्रह्मण्य, ब्राह्मणों को प्रिय, निर्मल, धीर स्वभाव वाला होगा।

ऐंद्र–विजयी, धावक, सर्व कार्य कुशल, धनी, ख्यात प्रियवादी होता है।

वैधृति–लोभी, चुगलखोर, वाचाल, चंचल रहेगा।

कारण

बव–महा घमंडी, उदार, सुखी, धनहीन व सेनापति होगा।

बालव–धैर्यवान, सुन्दर, त्यागी, बाल क्रीड़ाओं से प्रसन्न, सुखी, बालकों जैसे कार्य करने वाला होगा।

कौलव–पाप कर्म रत, सौख्य होगा।

तैतिल–साधक, सत्य सम्पन्न, स्थिर मति, महाप्रतापी, तामसी, मलिन, स्वयं में संतुष्ट रहने वाला होगा।

गर–मन्त्रज्ञ, नीतिवान, चतुर, कृषकाय, वाचाल, चपल, झगड़ालू होगा।

वणिज–वैश्यवृत्ति करने वाला, पुण्य कार्यकर्ता, वणिक वृत्तिकर्ता।

भद्रा–विष्टि–क्रूर, साहसी, प्रचण्ड, पापकर्मी, चंचल, सभी कार्यों का जानकार होता है।

शकुनि–उद्यमी, शान्त स्वभाव, भ्रमणशील, बुद्धिमान, शकुन विद्या का जानकार होता है।

चतुष्पद–कृषि कर्म व व्यवसाय करने वाला, उद्योगी, आलस्यहीन, खेद रहित, पराक्रमी।

नाग–धन व धातुओं का जानकार, स्वकर्म से गुणवान्, हस्ती पालक होगा।

किस्तुघ्न–कुछ धर्म कुछ पाप कर्म करने वाला, कछ रोगी होगा।

गुण

मनुष्य गण–मनुष्य गण में जन्म लेने वाला व्यक्ति अन्न दान करने वाला, धनी, सन्ततिवान, देव पूजक, श्रेष्ठ स्त्री का सुख पाने वाला होता है।

राक्षस गण–तामसी स्वभाव वाला, पापी, क्रोधी, घमण्डी, कलह प्रिय, निष्ठुर, गुप्त पापी होगा।

देवगण–गुरु–देव–ब्राह्मण–अतिथि पूजक, शास्त्रज्ञ, सुन्दर होता है।

योनि

अश्विनी व शतभिषा नक्षत्र की अश्व योनि, रेवती व भरणी की गज योनि, पुष्य व कृत्तिका छात्र, रोहिणी व मृगशिरा सर्प, भार्द्रा व मूल श्वान योनि, मघा व पू० फाल्गुनी मूषक, पुनर्वसु व आश्लेषा मार्जार योनि, उ० भाद्र पद व पू० फाल्गुनी गौ योनि, स्वाति व हस्त महिष, ज्येष्ठा व अनुराधा मृग, चित्रा व विशाखा व्याघ्र, पू० षाढ़ा व श्रवण वानर, धनिष्ठा व पू० भाद्रपद सिंह योनि, उ० षाढ़ा व अभिजित् नकुल योनि है।

अश्वयोनि–चपल, चंचल दृष्टि, शीघ्रगामी, युद्धप्रिय, बलवान, स्वामिभक्त।

गज योनि–मन्दगामी, बलशाली, बहुभोजी, राजप्रिय, सत्यवादी, ज्ञानवान।

छात्र–दुर्घट, दुर्लभ, कठिन स्थानों को भेदने वाला, मन में शंका न रखने वाला, बुद्धिमान होगा।

सर्प–स्व दर्शन से भय उत्पन्न करने वाला, प्रपंची, परगृह हरण कर्ता।

श्वान–सर्वभक्षी, बलवादी, दूतकर्मी, स्वामिहित साधन में तत्पर, वन में कष्ट न पाने वाला, शूरवीर होगा।

मार्जार–पिंगल वर्ण नेत्र वाला, सर्वभक्षी, चपल, द्वेषी, व्यर्थक्रोधी, डरपोक।

मूषक–धूर्त, स्व कार्य रत, पर कार्य विध्वंसक, शत्रु हन्ता।

गौ–अनेक गायों वाला, दूध–दही प्रिय, अति सुन्दर परोपकारी।

महिष–मंदगामी, स्थूलकाय, बलवान, धनी, घृत–दूध आहारी।

व्याघ्र–हिंसक, सर्वभक्षी, विद्यावान, कुशल, भय पैदा करने वाला।

मृग–गोट–वाद्य प्रिय, सुन्दर, सुदर्शन, धर्मात्मा, युद्ध भीरु।

वानर–पिंगल नेत्र, वन भ्रमणकर्ता, फलभक्षी, किसी का विश्वास न करने वाला।

नकुल–सुन्दर, स्वकार्येच्छुक, पराए कार्य भी करने में तत्पर, गहरे स्थान में रहने वाला, दीर्घायु।

सिंह–महाबली, पिंगल नेत्र, पतली कमर, भयानक, सर्वभक्षी होगा।

द्वादश लग्न फल

मेष–मेष लग्न में जन्म लेने वाला अत्यन्त अभिमानी, गुणी, क्रोधी, स्वजन विरोधी, दूसरों से मैत्री करने वाला, पराक्रम द्वारा यशस्वी, रोष युक्त होता है।

वृष–वृष लग्न में जन्म लेने वाला व्यक्ति गुणियों में अग्रगण्य, श्रेष्ठ धन से परिपूर्ण, गुरु भक्त, युद्ध प्रिय, धैर्यवान, शूर, प्रियवादी, प्रशान्त हृदय होता है।

मिथुन लग्न–भोगी, दाता, अनेक पुत्र व मित्र वाला, धनी, सुशील, राजा से सम्पर्क रखने वाला व राजकर्मी होता है।

कर्क लग्न–मिष्टान्न भोजी, स्वजनों की संगति करने वाला, विनम्र, चंचल, जल क्रीड़ा, प्रेमी, तत्त्व ग्रहण करने वाला होगा।

सिंह लग्न–कृशोदर, सुन्दर, पराक्रमी, भोगी, अल्प पुत्रवान, अल्प भोजी स्व बुद्धि पर गौरवान्वित् होता है।

कन्या–जल–क्रीड़ा कुशल, सद्‌गुणी, ज्ञानवान्, कार्य कुशल, सदैव प्रसन्न, धनवान होता है।

तुला–गुणी, व्यवसाय कुशल, अति धनी, स्थिर लक्ष्मी युक्त, कुल में श्रेष्ठ।

वृश्चिक–शूरवीर, तत्त्वज्ञ, अपने विचारों को कुमार्ग में प्रवृत्त करने वाला, सदैव झगड़ालू होता है।

धनु–विद्वान, कानूनविद्, दृढ़ प्रतिज्ञ, सुन्दर, कला विशेषज्ञ शास्त्रज्ञ।

मकर–कुरुप, शठ, मनमानी करने वाला, अनेक सन्तान युक्त, चतुर व लोभी।

कुंभ–चंचल, कामी, सुन्दर, मित्र हितैषी, धनादि युक्त, घमण्डी।

मीन–कुशल, अल्पभोजी, कामवासना में अधिक आसक्ति न रखने वाला, स्वर्ण रत्नादि युक्त, चपल, धूर्त, निर्माण कार्य में कुशल होता है।

नवांश फल

राशि के प्रथम नवांश में जन्म लेने वाला विनम्र, धर्मात्मा, सत्यवादी, दृढ़ प्रतिज्ञ, विद्या व्यसनी होता है।

द्वितीय नवांश में जन्म लेने वाला ऐश्वर्य का उपभोग करने वाला, युद्ध में ही हारने वाला, संगीत प्रिय, स्त्री प्रेमी, वेश्यागामी होता है।

तृतीय नवांश में जन्म लेने वाला स्त्री के वशीभूत, सन्तानहीन मायावी, अल्पवीर्य, युद्धादि विद्याओं का जानकार होता है।

चतुर्थ नावांश में जन्म लेने वाला अनेक स्त्रियों से संपर्क रखने वाला, पूज्य, जल–क्रीड़ा प्रेमी, धनी, राजसेवी, मंत्री होता है।

पंचम नवांश में जन्म लेने वाला अनेक मित्रों वाला, जन–नेता, बंधु–बांधवों–मित्रों के सुख से सम्पन्न, प्रतिष्ठित होता है।

षष्ठ नवांश में जन्म लेने वाला जातक शत्रु–हन्ता, वीर, मित्रता का दृढ़ता से निर्वाह करने वाला, मण्डलाधीश, सेनापति या उच्चाधिकारी होता है।

सप्तम नवांश में जन्म लेने वाला सर्वत्र अपने आदेशों का पालन करवाने में कुशल, राजा, कला कुशल, सेनापति होता है।

अष्टम नवांश में जन्म लेने वाला उदार चित्त, ख्याति प्राप्त, धन–धान्य व्यय करने में संकोच न करने वाला, क्रोधी, दुर्जनों से कष्ट पाता है।

नवम् नवांश में जन्म लेने वाला दीर्घ जीवी, प्रसन्न, विद्याभ्यासी, सदा सुखी, ज्ञानी, धर्मात्मा, लोक मान्य होता है।

गण्डांत फल

नक्षत्र, तिथि, लग्न, गण्डांत में जन्म लेने वाला मनुष्य क्रमशः पिता, माता, भाई का घाती होता है। यदि जन्म के समय तीनों प्रकार के गण्डान्त हों तो सम्पूर्ण कुल का नाश करने वाला होता है।

यदि किसी का जन्म अपने पिता या भाई के जन्म नक्षत्र में ही हुआ हो तो वह अपने पिता या बड़े भाई के लिए अरिष्ट कारक होता है। ऐसी स्थिति

में मूल शान्ति समान ही शान्ति कर्म करवाना चाहिए व ब्राह्मणों को यथा शक्ति भूमि, रत्न, स्वर्ण, अन्न दान देना चाहिए।

ज्येष्ठा नक्षत्र के अन्त की एक घड़ी व मूल की प्रारंभिक दो घड़ी को 'अभुक्त मूल' कहते हैं। इस समय जन्म लेने वाले बालक का मुंह आठ वर्षायु तक देखना पिता के लिए अशुभ होता है अतः दोष निवारणार्थ शान्ति विधान करायें। माता-पिता नौ रत्न, शतौषधि की जड़, सपृभृर्तिकी को 100 छिद्रों वाले पानी से भरे हुए घड़े में डालकर ब्राह्मणों द्वारा उस घड़े के छिद्रों से निकलते हुए जल से स्नान करके जप, होम, दानादि करें।

मूल चरण फल

बालक के जन्म के समय कृष्ण पक्ष की तृतीया या दशमी या शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी तथा मंगल, बुध या शनिवार से संयुक्त मूल नक्षत्र हो तो जातक कुल नाशक होता है। यदि जन्म दिन में हुआ हो तो पितृ कुल का, सन्ध्या काल में हो तो मातृ कुल का, रात्रि में हो तो पशु-धन का व प्रातःकाल का जन्म हो तो मित्र वर्ग का नाश करता है।

होरा फल

यदि बालक का जन्म चंद्रमा की होरा में हुआ हो व अनेक ग्रह दूसरे स्थान में हों तो जातक अति रूपवान, महाधनी व श्रेष्ठ होगा। यदि सूर्य की होरा में जन्म हो व कई ग्रह दूसरे घर में हों तो जातक मध्यम रूप, धन व मित्रों से युक्त होगा। यदि मेषलग्न की प्रथम होरा का जन्म हो तो लाल नेत्रों वाला, दक्षिण दृष्टि वाला, शूरवीर, धनवान, तोते जैसी नाक, श्रेष्ठ, स्त्री प्रेमी, पुष्ट, ऊंचा शरीर, चोर नायक होगा। मेष लग्न की द्वितीय होरा में चोर, प्रमादी, झूठा, कठोर पांव व हाथ की उंगलियां, स्निग्ध, विशाल नेत्र, चतुर, पुष्ट, श्रेष्ठ बुद्धि का होगा। वृष लग्न की प्रथम होरा में सौम्य स्वभाव, विशाल नेत्र, ललाट, वक्षस्थल, वाहन प्रेमी, वैश्य, स्थूलकाय, अति क्रोधी, द्वितीय होरा में भारी व पुष्ट देह, पराक्रमी, सुन्दर केश, टेढ़ी कमर, बैल समान मुख होगा। मिथुन लग्न की प्रथम होरा में मध्यम रूप, विशाल नेत्र, छोटा कद, दृढ़सिर व पांव, वीर, अच्छा वक्ता, बुद्धिमान, कामी तथा द्वितीय होरा वाला सुन्दर नेत्र, कामी, वीर, श्रेष्ठ वार्तालाप करने वाला, मनस्वी, सुन्दर होंठ व दांत वाला होगा। कर्क लग्न की प्रथम होरा वाला वर्तुलाकार शरीर, श्रेष्ठ सिर, प्रगल्भ, मंद स्वर, चंचल, शठ, सुन्दर देह,

कृतघ्न, आगे के दांत टूटे हुए, द्वितीय होने पर जुआरी, छोटा मुख, सम शरीर, कठोर देही व क्रोधी। सिंह लग्न की प्रथम होरा वाला रक्त वर्ण, कानों से युक्त, विशाल नेत्र, प्रगस्थ, दीर्घ देह, कपटी, अंतिमावस्था में सुखी, स्थिर पराक्रम, स्थिरकर्मी व द्वितीय होरा में अनेक स्त्रियों में रत, मिष्टान्न प्रेमी, श्रेष्ठ वस्त्रों का इच्छुक, अनेक चेष्टा युक्त, कठोर अंग, दानी, यात्रा प्रेमी, भोगी होगा। कन्या लग्न की प्रथम होरा से कोमल शरीर, कान्तिवान, सुन्दरवाणी, श्रेष्ठ स्त्री, संगीतज्ञों का साथी, मीठी चितवन, संगीतज्ञ, नम्र व सुन्दर तथा द्वितीय होरा वाला छोटा कद, सेवाभावी, संगीत प्रेमी, लिपि-शास्त्र का ज्ञाता, स्थूल सिर, विवादयुक्त, पाप कर्म से धनोपार्जन कर सुखी, तीर्थाटन करता है। तुला लग्न की प्रथम होरा वाला गोल मुख ऊंची नाक, चतुर, विलासी, धनी, श्रेष्ठ बुद्धि, मन्त्री, पुष्ट व विशाल शरीर, अस्थिसार युक्त, धनी, श्रेष्ठ मित्रवाला तथा द्वितीय होरा में जन्म लेने वाला धनी, स्थिर धनी, सुन्दर, कुंचित केश, शठ, गोलनेत्र, अतियात्रा प्रेमी होगा। वृश्चिक लग्न की प्रथम होरा पिंगल नेत्र लाल कोने, उत्साही, युद्ध विजयी दुष्ट स्वभाव, मित्रों को धन दायक, द्वितीय होरा वाला विशाल व पुष्ट शरीर, राज्य सेवी, ऋणी, मित्रयुक्त। धनु लग्न की प्रथम होरा वाला दलित पृष्ठ, मुख व वक्ष वाला, विशाल नेत्र, पुष्ट कपोल, गुरु त्यागी, तपस्वी व द्वितीय होरा वाला कमल दल नेत्र, लंबी श्रेष्ठ भुजाएं, शास्त्रज्ञ, नीतिज्ञ, श्रेष्ठ भाषी, सुन्दर, धर्मात्मा व यशस्वी। मकर की प्रथम होरा में जन्म लेने वाला सुन्दर, काले हिरणाक्ष धन्यमण, स्त्रियों द्वारा अविजित, सौम्य, प्रथमावस्था में शठ, मूढ, अतिभ्रमण करने वाला, अति क्रोधी, ऊंची नाक, द्वितीय होरा से लाल नेत्र, आलसी, पतला शरीर व लम्बे अंग, मूर्ख, वास्तविक आयु से छोटा दिखने वाला, अधिक रोम युक्त, जानकार, क्रूर। कुम्भ लग्न की प्रथम होरा में जन्म लेने वाला स्थिर मैत्री वाला, लाभ पाने वाला, कोमल, पराक्रमी, कम सन्तान। श्रेष्ठगुण युक्त, शूरवीर, लाल वर्ण, लाल नेत्र, पाप कर्म में रत व द्वितीय होरा वाला काला, कृशकाय, टेढ़े अंग, शठ, आलसी, किसी की बात न मानने वाला, विवादी, रहस्यमय, लाल नेत्रों वाला। मीन लग्न के प्रथम होरा वाला छोटा कद, बड़े व सुन्दर नेत्र, सुन्दर देह, बड़ा मस्तक, बड़ी छाती, स्त्रियों का प्रिय, यशस्वी, कार्य कुशल व द्वितीय होरा में जन्म लेने वाला श्रेष्ठ व स्थिर स्वभाव वाला, उत्तम बुद्धिमान, उदार स्त्री युक्त, राजप्रिय, सुन्दर मीठी वाणी, ऊंची नाक, सुदर्शन होता है।

द्रेष्काण फल

द्रेष्काण चक्र में उच्च ग्रह स्थिति होने पर राजा तुल्य ऐश्वर्यवान स्वक्षेत्री हो तो सेनापति, मित्र क्षेत्री हो तो श्रेष्ठ वक्ता होगा। प्रत्येक राशि के पूर्व–मध्य–अन्त–उक्त तीन–तीन द्रेष्काण होता है।

मेष द्रेष्काण–फल पूर्व–दानी, हिंसक, दीर्घदेह, क्षयोदयी, महापराक्रमी, मित्र विरोधी बंधुजन को दण्ड देने वाला।

मेष के मध्य द्रेष्काण–स्त्रियों में चपल, शास्त्रनिरत, स्त्री व मित्रों के धन का उपयोग करने वाला, मीठा बोलने वाला, सुन्दर शरीर, संगीत प्रेमी, मनस्वी।

मेष के अंतिम द्रेष्काण–गुणवान, छिद्रान्वेशी, बल–पराक्रम युक्त, राज्य सेवक, स्वजनों का प्रिय, धार्मिक बुद्धि, प्रियजनों का आदरणीय होगा

वृष द्रेष्काण

पूर्व–श्रेष्ठ मित्रों वाला, श्रेष्ठ भोजी, स्त्री वियोग से संतप्त, वस्त्राभूषण युक्त, स्त्री इच्छानुसार जीने वाला।

मध्य–सौम्य शरीर, स्त्री सौभाग्यवान, खूब धनी, सुन्दर, भोगी, बलवान, व भूषण प्रेमी, स्थिर, मनस्वी।

अंतिम–चतुर, यात्रा प्रेमी, स्थिर, लोक मान्य, गौर वर्ण, मलिन, डरपोक, कायर, धनहीन, दुष्चरित्र के कारण संतापी।

मिथुन द्रेष्काण

पूर्व–मोटा सिर, धनी, लंबकाय, धूर्त, गुणी, विलासी, राज्य से सम्मान प्राप्त, स्ववचन पालक।

मध्य–कोमल, सौम्य रूप, छोटा शरीर, छोटा मुंह, सूक्ष्म केश, पतली जांघ, धन, कोमल स्वभाव, बड़े–बड़े शत्रु युक्त, प्रतापी, यशस्वी।

अंतिम–स्निग्ध नेत्र, सुन्दर देह, बड़ा सिर, शत्रु युक्त, लम्बकाय, रूखे नख, कठोर पांव, चल धन को प्राप्त करने वाला, भ्रमणशील।

कर्क द्रेष्काण

पूर्व–देव–ब्राह्मण पूजक, चंचल, गौरवर्ण, स्त्रीजित्, अभिमानी, भ्रातृयुक्त, विलासी, चपल, रोगग्रस्त।

मध्य–धन–लोभी, दानी, स्वप्न द्रष्टा, सुन्दर, पुत्रवान।

अंतिम–व्यर्थ मूर्खता करने वाला, वन व जल में भ्रमण कर्ता, विदेशगामी, धनी, साधु जन व सुगन्धित पदार्थ में प्रीति।

सिंह द्रेष्काण

पूर्व–दानी, हिंसक, धनी, अनेक स्त्रियों वाला, अनेक शत्रु युक्त, राज सेवक, शत्रु विजयी, स्थिर मैत्री का निर्वाह करने वाला, पराक्रमी।

मध्य–श्रेष्ठ रुचि सम्पन्न, कामी, दानी, स्थिर स्वभाव, सुन्दर, आभूषण प्रेमी, सुखी, वेद–धर्म में रुचि, बुद्धिमान।

अन्तिम–लोभी, स्थिर स्वभाव, बड़ा शरीर, स्तब्ध पर जन का धन हरण करने वाला, बुद्धिमान, धूर्त, पुत्रयुक्त, स्त्री जातक का अहित कर्ता व प्रगल्भ होगा।

कन्या द्रेष्काण

पूर्व–सुन्दर, कोमल शरीरे, मधुमय नेत्र, मीठी वाणी, श्रेष्ठ, बुद्धिमान, नीतिज्ञ, स्त्रियों को अनिष्ट फल कारक, प्रगल्भ।

मध्य–युद्ध में विशेष पराक्रमी, विलासी, पुत्रवान, मुनियों जैसी गति, परदेशवासी, धैर्यवान, खर्चालु, अल्पकलाविद्, अल्पभाषी।

अंतिम–छोटा कद, सुन्दर शरीर, परधन का उपभोगी, संगीत प्रेमी, बड़े–बड़े नेत्र, राजाज्ञा पालक, त्यागी, स्थिर स्वभाव, सुन्दर, तीव्र स्वभाव।

तुला द्रेष्काण

प्रथम–नवीन अवस्था वाला, सेवा से कला ज्ञान प्राप्त करने वाला, व्यवसाय में कुशल, बुद्धिमान, मन्त्रज्ञ, कामदेव सम सुन्दर।

मध्यम–कमल दल समान बड़े नेत्र, सुन्दर रुप, राज मित्र, वाचाल, प्रसिद्ध, वंश वृद्धि करने वाला, भृत्य युक्त, चतुर।

अंतिम–चपल, शठ, कृतघ्ना कुरूप, बकवादी, छोटा कद, मित्र–यश धन का नाशक, अल्पज्ञ, भ्रमण कर्ता होगा।

वृश्चिक द्रेष्काण

पूर्व–गौरवर्ण, स्थिर स्वभाव, प्रचण्ड, रणोत्कट, विशाल नेत्र, स्थूल, लम्बा शरीर, कलह प्रिय।

मध्य–मिष्टान्न भोजी, पीने में कुशल, चंचल, गौरवर्ण, सुन्दर, पर धन युक्त, सरल।

अंतिम–श्रेष्ठ भुजाओं वाला, मधु पिंगल नेत्र, बड़ा पेट, दाढ़ी–मूंछ से रहित, भ्रातृ हीन, अपहरण कर्ता, हिंसक, काला वर्ण।

धनु द्रेष्काण

पूर्व–गोल आखें, गोल वक्षस्थल, गणों में प्रधान, धनी, साधु–सा आचरण, कोमल हृदय।

मध्य–शास्त्रार्थ का ज्ञाता, प्रवक्ता, यज्ञ कर्ता, ऐश्वर्यशाली, मंत्रियों में श्रेष्ठ, तीर्थाटन प्रेमी।

अंतिम–स्व बन्धुओं में प्रधान, चतुर, श्रेष्ठ जन से मैत्री, धर्मात्मा, मानी, परस्त्री से दूर रहने वाला, यशस्वी।

मकर द्रेष्काण

प्रथम–लम्बी भुजाओं वाला, कोमल शरीर, बड़े–बड़े नेत्र, बड़ा पेट, शठ, सुन्दर कांति वाला, स्मित भाषी, स्त्रियों से अविजित, सुन्दर चेष्टा, धनी।

मध्य–कोमल शरीर, शठ, अल्पभाषी, चंचल चित्त, परस्त्री व धन का हरण कर्ता, जांघों में बन्धन, चुगलखोर, दुष्टभाषी, प्रवासी।

अंतिम–सुन्दर नासिका, सुन्दर मस्तक, पापी, पतला–लम्बा शरीर, पितृ वियोगी, बार–बार विदेशाटन करने वाला, व्यसनी।

कुम्भ द्रेष्काण

प्रथम–स्त्री के मान में रत, लम्बा शरीर, स्थिर कर्म, सुखी, अधम, शत्रु युक्त, लाल वर्ण।

मध्य–हास्य क्रिया करने वाला, उत्कृष्ट वाणी श्रेष्ठ, चरित्र, संगीत–प्रिय, लोभी, मधु–श्वेत–पिंगल नेत्र, सामर्थ्यवान।

अंतिम–लम्बा शरीर, शठ, प्रलापी, कृश व छोटी बांह, श्रेष्ठ धन पाने वाला, स्तब्ध, विनम्रता रहित, झूठा, कपटी, बड़े–बड़े नेत्र, रति पंडित।

मीन द्रेष्काण

प्रथम–गौरवर्ण, मधुनेत्र, कृतज्ञ, ज्ञान पिपासु, सुखी, विनम्र, सुन्दर भाषी, ख्याति प्राप्त।

मध्य–धनिकों के उपचार का ज्ञाता, पर धन का उपभोग कर्ता, मिष्टान्न भोजन करने वाला, मुखर, सम्बन्धी जन का आदर करने वाला, ज्ञानी।

अंतिम–कोमल शरीर, बड़े हाथ–पांव, श्रेष्ठ अन्न को पाने वाला, मित्रों में श्रेष्ठ, हास्य कलाप्रिय होता है।

सप्तांश फल

सप्तांश से भाई का विचार किया जाता है। सप्तांश लग्न से तृतीय भाव का स्वामी क्रूर या शुभ ग्रह हो और वह शुभ या पाप ग्रहों से दृष्ट हो तो पाप ग्रहों से दृष्ट युक्त होने पर जातक भ्रातृहीन होता है तथा शुभ दृष्ट होने पर भाई युक्त होता है।

मेष सप्तांश

प्रथम–छोटी दाढ़ी वाला, प्रचण्ड, लाल नेत्र वाला, युद्ध में कुशल, चोर, कृश काय।

द्वितीय–भरा मस्तक व गंड स्थल वाला, बड़ा मुख, माथा छोटा, सुन्दर ठोड़ी, सुन्दर दृष्टि, भोगी, दान निरत, पुष्ट जंघा, गठग्रन्थि, कृश सन्धि।

तृतीय–चतुर, चोर, पापकर्मी, लेखक, शास्त्रज्ञ, कामी, सुन्दर, भ्रमणशील वक्ता, कोमल देह।

चतुर्थ–मोटे नेत्र, कपोल, उदर, हाथ, गोरा रंग, भारी, धार्मिक, सुगन्ध प्रेमी, स्वप्न द्रष्टा, आभूषण प्रेमी।

पंचम–तांबे जैसी कान्ति, प्रचण्ड, बड़ी–बड़ी भुजायें, क्रूर, सिर, मस्तक व नाक वाला, मधुवर्णी आंखें।

षष्ठ–विशाल शरीर, गौरवर्ण, सुन्दर, बड़े व मधुवर्णी नेत्र, धनी, श्रेष्ठ भाषी, बुद्धिमान, ज्ञानी, अध्ययनशील।

सप्तम–मोटा व काला शरीर, युद्ध प्रिय, विरल दांत व नख, मोटे केश, कठोर भाषी, प्रगल्भ, चुगलखोर।

वृष सप्तांश

प्रथम–मोटा मस्तक, गंड स्थलों वाला, बड़ी छाती, बड़े कंधे, कपोल उरु, भुजा वाला, आकर्षक, सूक्ष्म केश, टेढ़ी दृष्टि।

द्वितीय–स्निग्ध कांति, विशाल दृष्टि, मधुरभाषी, सुन्दर नेत्र, सुन्दर शरीर, कामी, ज्ञान व कला में निपुण।

तृतीय–चतुर, पति गौरवर्ण, कोमल दृष्टि, श्रेष्ठ अंग, रतिप्रिय, कोमल शरीर, छोटे केश, बात का पक्का।

चतुर्थ–उन्नत मुख, गंडस्थल, नासिका, घना, स्पष्ट दृष्टि, आवाज भारी, गौरवर्ण, लाल नख, टेढ़ी कमर, कठोर शरीर।

पंचम–ताम्ररंग, पिंगल नेत्र, सुकुमार, तीक्ष्णवाणी, पर धन इच्छुक, स्त्री वियोगी व रोगी।

षष्ठ–आकर्षक, सुन्दर, विशाल नेत्र, कार्यकुशल, अभिमानी, विपत्तियों से पीड़ित।

सप्तम–भ्रान्त मुख, श्वेत कोने वाले नेत्र, कोमल व कृश शरीर, शूरवीर, लोभी, क्रोधी, सुवक्ता, चंचल, थोड़ा पराक्रमी, भ्रमणशील, शठ।

मिथुन सप्तांश

प्रथम–वह मनुष्य ज्ञानी, कवि, स्ववचन परिपालक, कोमल कांत, सुन्दर देह, विलासी, पवित्र, प्रीति युक्त, गीतप्रिय, प्रसिद्ध होता है।

द्वितीय–धनी, शरीर मोटा, गौरवर्ण, मोटी आंख, चतुर, आलसी, कोमल, संगीत प्रेमी, धर्मरत।

तृतीय–बडे–बड़े नेत्र, विशाल मुख, बड़ी ठोड़ी, उदार, कर्मण्य, शूरवीर, अपहरण कर्ता, सुवक्ता, हास्य प्रेमी।

चतुर्थ–विस्तृत शरीर, सुन्दर दृष्टि, कोमल स्वरुप, व्यवसाय में दक्ष, शूरवीर, श्रेष्ठ अंग वाला, अल्पभाषी।

पंचम–लाल नख, लाल होठ, प्रचण्ड, सुवक्ता, शिथिल भुजा, रति प्रिय, चोर, कुटिल।

षष्ठ–विशाल नेत्र, गौर वर्ण, सुन्दर नाक, शास्त्र–काव्य–धर्म निरत, मधुरभाषी, श्रेष्ठ बुद्धि।

सप्तम–श्रेष्ठ स्त्री, कथा–वार्ता, जुए में रत, अल्प पराक्रमी, रोगी, भ्रमणशील, स्निग्ध शरीर, श्याम वर्ण, लम्बे अंग।

कर्क सप्तांश

प्रथम–बड़े–बड़े, केशों वाला, विस्तृत उरु व वक्षःस्थल, श्याम, वर्तुल शरीर, धैर्यवान, पंडित, बड़ी वस्ति, विशाल नेत्र, लम्बी भुजायें।

द्वितीय–मोटे होंठ, कंठ, वीर, ताम्र वर्ण, कान्ति युक्त, कृश शरीर, उन्नत व प्रफुल्लित मुख, पिंगल नेत्र, हास्य प्रिय।

तृतीय–विद्वान, छोटा शरीर, विशाल दृष्टि, संगीतज्ञ, कवि, चतुर, कोमल शरीर, सुन्दर।

चतुर्थ–बड़े–बड़े नेत्र, कोमल, सूक्ष्म केश, आलसी, सुन्दर नाक, संगीतज्ञ लम्बी भुजाएं।

पंचम–ऊंचा गंड स्थल, ऊंची नाक, लाल वर्ण, कृश शरीर, पिंगल दृष्टि, वीर, परस्त्री इच्छुक।

षष्ठ–लम्बा मुख, लम्बे नेत्र, लम्बी नाक, बड़े कान, बन्धु जनों से मान्य, गौरवर्ण, सुन्दर देह, वचन–कर्म से बुद्धिमान।

सप्तम–कठोर भाषी, केशों में कष्ट, लम्बा व कृश शरीर, श्याम वर्ण, दुष्ट, भ्रमणशील, तीव्र दृष्टि, ऊंची नाक।

सिंह सप्तांश

प्रथम–लाल वर्ण शरीर, रक्त वर्ण नेत्र, लम्बा, प्रचण्ड, चतुर, बड़ी नाक वाला अस्थिसार युक्त, खर रोम वाला व्यक्ति होगा।

द्वितीय–तीक्ष्ण नखों वाला, लम्बा, वक्ता, ढीठ, शास्त्रज्ञ, नीतिज्ञ, समझदार।

तृतीय–बड़े व पुष्ट शरीर वाला, विशाल आकार बड़ा मस्तक, बड़े नेत्र, बड़ा सिर, धन संचय कर्ता, धैर्यवान, पराक्रमी, स्त्री युक्त।

चतुर्थ–कलह प्रिय, दुःशील, पराक्रमी, टेढ़ी दृष्टि, कवि, सुखी, ऊंचा शरीर, लाल वर्ण शरीर, पुष्ट देह।

पंचम–उत्साह युक्त वचन बोलने वाला, स्थिर, यशस्वी, सम्मानित, सुन्दर दृष्टि, बड़ा सिर।

षष्ठ–शीतल, विशाल व गोल शरीर, छोटे–छोटे भ्रान्त नेत्र, भ्रमणशील, न्यास कर्म में श्रेष्ठ, बड़ी नाक।

सप्तम–कोमल, उच्च, गौरवर्ण, चतुर, छोटी नाक, श्रेष्ठ वाणी, सुन्दर नेत्र, संगीत व स्त्री में रत, सुन्दर।

कन्या सप्तांश

प्रथम–वक्ता, चतुर, विशाल दृष्टि, श्रेष्ठ वाणी, सुन्दर देह, बुद्धिमान, विनम्र परिपूर्ण, समवंश, सम नासिका।

द्वितीय–पुष्ट उरु, वंश, भुजा, वक्ष, उदर, अपने वचन का पक्का, कोमल, पूर्व मुख, सुकुमार शरीर, रति पंडित।

तृतीय–अभिमानी कुल वाला, चोरकर्मी, लाल वर्ण व नेत्र, छोटे रोम व मुख, छोटा मन।

चतुर्थ–शिल्पकार, वेदज्ञ, धर्मशास्त्र वर्णित कर्म करने वाला, बड़ी ठोड़ी, बड़े स्कन्ध व सिर वाला, प्राज्ञ, दानमय रुचि, प्रकट धन वाला, स्फुट वाणी युक्त।

पंचम–आलसी, भय युक्त वाणी, क्रोधी, पुष्ट ठोड़ी, लम्बा मुख, स्नायु स्पष्ट, हिरणाक्ष।

षष्ठ–पूर्ण ऐश्वर्यशाली, दृढ़ता से वेद वचनों में रत, धर्मात्मा, श्याम नेत्र, विशाल मुख, लम्बी–टेढ़ी भौंहें।

सप्तम–छोटे–छोटे पिंगल वर्ण केश, मधुवर्णी, विशाल नेत्र, मोटे ओष्ठ, गंडस्थल कंठ व दाठों वाला, उग्र, क्रोधी, ताम्रवणी–प्रभावान शरीर।

तुला सप्तांश

प्रथम–कमल मुख, ऊंची नाक, नव अंकुरित कोमल शरीर, दृढ, सुन्दर, सुवक्ता, धनोपार्जन में दक्ष, पालनहार।

द्वितीय–गोल मुख, कृषि कर्म कर्ता, यात्रा प्रिय, ऊंची नाक, उन्नत ओष्ठ, हिंसक वृत्ति, रक्त श्याम वर्ण।

तृतीय–धर्मज्ञ, धनोत्पादक, अस्त्र–शस्त्र, विद्याविद्, ऊंची नाक, बड़े केश, मोटा मुख, बडे नेत्र, मोटा शरीर।

चतुर्थ–श्याम वर्ण, कठोर–कटुवाणी, कठोर अंग, लम्बा मुख, चपल, उग्र कर्मी, उलटे नख।

पंचम–श्रेष्ठ भौंह, श्रेष्ठ मुख, सुन्दर नेत्र, कोमल, सुन्दर शरीर, कला कुशल, लम्बा मुख, श्रेष्ठ जनों द्वारा सेवित।

षष्ठ–झुकी–झुकी पलकें, काले नेत्र, सम मूर्ति, स्त्री की शक्ति वाला, श्रेष्ठ वाणी चतुर, सुन्दर मुख, सुभाषी, सुन्दर होंठ।

सप्तम–मोटे ओठ, मोटी हड्डियां व दांत, मधुपिंगल केश, छोटे नेत्र, वीर व कोमलांगी।

वृश्चिक सप्तांश

प्रथम–मनुष्य घाती, भेद कर्ता, मिथ्यावादी, युद्धरत, ऊंचा शरीर, रक्त पिंगल नेत्र, कठोर पिंगल केश, चपल शरीर।

द्वितीय–मोटे नेत्र, सूक्ष्म पांव, सुन्दर नाक, पीत रक्त कांति, शास्त्र विधिवेत्ता, कलाविद्।

तृतीय–अटक–अटककर बोलने वाला, चातुर्यपूर्ण वक्ता, वृद्ध तुल्य दृष्ट, श्याम वर्ण, कठोर अंग, निर्लज्ज।

चतुर्थ–बड़े गंडस्थल, बड़ी नाक, बड़ा पेट, वक्रोक्ति बोलने वाला, उद्धत वाणी, मानी, स्वहित प्रधान, बड़ी भुजायें।

पंचम–पतला पेट, बड़ी छाती, वक्ता, जुआरी, सुन्दर मुख, श्रेष्ठ भुजा सेवा भावी, अल्प चतुर।

षष्ठ–कोमल नेत्र, बुद्धिमान, सूक्ष्मांग, ऊंची नाक, अल्पभाषी, कोमल शरीर, धर्मात्मा, कोमल, स्वभाव, उदार, पराक्रमी।

सप्तम–युद्धेच्छुक, ऊंची नाक, बड़ा सिर, ऊंची कटि, मांसपिण्ड युक्त, पिंगल केश, पिंगल नेत्र, प्रसिद्ध, स्थिर बुद्धि, धैर्यवान।

धनु सप्तांश

प्रथम–मोटे होठ, गंडस्थल व नासिका, बड़ा उदर, वक्षःस्थल, पराक्रमी, मधु वर्ण नेत्र, उन्नत सिर, मोटे पांव।

द्वितीय–हिरणाक्ष, गोल जंघा, परधन हरणकर्ता, विशेष–विषम विंषयों का ज्ञाता, लम्बे हाथ, मोटे कान, मोटी नाक।

तृतीय–क्रोधी, वक्ता, त्यागी, कृश शरीर, स्त्रियों से कलहकर्ता, ईर्ष्यालु, लाल वर्णी देह, लाल नेत्र, छोटा कद, बकरे जैसी वाणी।

चतुर्थ–ऊंची व सुन्दर नाक, उन्नत कन्धे, मोटा शरीर, बड़ी ठोड़ी, हिरणाक्ष, ऊंचा सिर, संगीत प्रेमी।

पंचम–विशाल व कठोर शरीर, सुन्दर नाक, विशाल दृष्टि, इन्द्रिय निग्रही, काव्य कलाविद्।

षष्ठ–तपस्वी, कोमलवाणी, श्रेष्ठ कर्मी, मोण मुख, नेत्र, गुणी, मृणाल सम गौरटा मुख वर्ग, काले केश।

सप्तम–लम्बे होंठ, लम्बी नाक, बड़े नेत्र, सत्यवादी, शूरवीर, त्यागी, बड़ा मस्तक व कान, बड़े दांत।

मकर सप्तांश

प्रथम–छोटा कद, मोटी नाक, चिह्न, लम्बा मुख, यशस्वी, नवीनावस्था, कठोर, काला शरीर, मलिनवस्त्र, डरपोक।

द्वितीय–गौरवर्ण, सुन्दर, बड़ा शरीर, सुन्दर मुख, धनी, मस्तमौला, चतुर व चंचल, युद्धेच्छुक।

तृतीय–लाल वर्ण अंग, नेत्र, प्रचण्ड, कृशकाय, परस्त्री, पर धन से ही आनन्द भोगी, खोटा स्वभाव, सुन्दर।

चतुर्थ–हास्य युक्त, कोमल वचन, बुद्धिमान, बड़ा सिर, गंडस्थल, नाक, आंख वाला, स्त्री इच्छुक, कोमल पेट, कोमलांगी।

पंचम–गंधर्व विद्या व शिल्प विद्या में प्रवीण, युद्धप्रिय, सेवा प्रिय, मानी, लम्बा, काला शरीर।

षष्ठ–स्वर्ण वर्ण शरीर, विशाल बाहु, श्रेष्ठ जनों का प्रिय, कमल दल नेत्र, वेदज्ञ, कोमल स्वभाव।

सप्तम–वृद्ध तुल्य शरीर, बड़ा शरीर, प्रचण्ड, सन्तान हीन, लाल नेत्र, अभिमानी, बड़ा कंठ, मुख, नाक, भौंह व भ्रमणशील।

कुम्भ सप्तांश

प्रथम–नपुंसक, बलहीन, तीक्ष्ण, टेढ़ी दृष्टि, बड़ा शरीर, लम्बकाय, दबी हुई नाक।

द्वितीय–आंवले जैसी प्रभा, मोटा, अल्पभाषी, बड़ा मुख, बड़ी नाक, विशाल नेत्र, तृषातुर, शूरवीर, मनस्वी।

तृतीय–बिलौरी आंखें, चपल, ताम्रवर्णी देह, अल्प बुद्धि, मंद युद्ध, चोरी, असत्यभाषी, धूम्र कंपिल केश।

चतुर्थ–कोमल, अल्पभाषी, तृषातुर, ऊंची नाक, रक्त गौर वर्ण, हरिण नेत्र, नीले रंग के वस्त्र पहिनने वाला, चतुर, नीतिज्ञ।

पंचम–रुक्ष केश, व्यस्त अंग, गौर–श्याम वर्ण, स्वर्ण प्रभा तुल्य, श्रेष्ठ वाणी, विदेश में रुचि, शिल्प प्रेमी, मद्यपान में रुचि।

षष्ठ–श्वेत–गौर वर्ण, मोटा शरीर, सुन्दर मुख, सुन्दर नेत्र, नीतिज्ञ, वेदवृत्ति देवोपासक।

सप्तम–लम्बा शरीर, ताम्रवर्ण नेत्र, देह, प्रसिद्ध, महापराक्रमी, मोटी नाक, मोटे होठ, उद्धतवाणी, सुन्दर, पिंगल केश।

मीन सप्तांश

प्रथम–सुन्दर नेत्र, नाक, सुन्दर दांत, प्रभावान, श्रेष्ठ बुद्धि, वेदज्ञ, निर्मल स्वभाव।

द्वितीय–आम्र कोंपल रंग, लाल वर्ण, छोटे रोम, छोटा मुख, छोटा हाथ, शत्रु संहारक, दृढ़ पराक्रमी।

तृतीय–मोटा–सुन्दर मुख, वृद्ध तुल्य, व्यस्त अंग, संगीत का जानकार, नीतिज्ञ, सुन्दर नाक, सुन्दर केश।

चतुर्थ–मंत्री, अर्थ तत्त्व जानने वाला, गोल मुख, सुन्दर वाणी, श्रेष्ठ बुद्धिमान।

पंचम–गौर लाल वर्ण, नील कमल नेत्र, कोमल, पवित्र, चतुर, मांसल–पुष्ट मुख, क्षमाशील।

षष्ठ–धर्म युक्त, चतुर, कमलदल वर्ण, गोल शरीर, बड़ी आंखें, पुष्ट कंधे, दृढ़ दांत।

सप्तम–रुक्ष अंग, मलिन स्वरुप, दबी नाक, पवित्र दृष्टि, निष्कपट, शुद्ध वेष।

सूर्य सप्तांश फल–जो मनुष्य सूर्य के सप्तांश में जन्म लेता है वह वीर, शूर तेजस्वी, स्थिर बुद्धि, सभाकर्मी–प्रसिद्ध व बलवान होता है। **चन्द्रमा** के सप्तांश में जन्म लेने वाला, पवित्र, धर्म–कर्म कर्ता, नम्र, रति प्रेमी होता है। **मंगल** सप्तांश में जन्म लेने वाला महाक्रोधी, पराक्रम पर अभिमान करने वाला होता है। **बुध** के सप्तांश में कवि, कलाकार, शिल्पज्ञ, विद्यावान, श्रेष्ठ वचन कहने वाला, चतुर होगा। बृहस्पति के सप्तांश में जन्मा व्यक्ति चतुर, स्थिर, पराक्रमी, स्थिर बुद्धि, ज्ञानी जनों में श्रेष्ठ; **शुक्र** सप्तांश में जन्म लेने वाला जातक, कामी, विलासी, क्रीड़ा प्रेमी, हास्य, कौतुकी, गांधर्व विद्या में प्रीति रखने वाला होगा। **शनि** सप्तांश में जन्म लेने वाला मूर्ख, आलसी, अशुभ कर्म करने वाला, कपटी, पाप रत होता है।

चंद्र राशि फल

मेष–चंचल नेत्र, रोगी, धर्म व धन का उपार्जन करने वाला, स्थूल जंघा, कृतघ्न, पाप रहित, राज्य सम्मानित, स्त्री हृदय को आनन्ददायक, दानी, पानी से भयभीत, प्रचंड कार्य करने के बाद नम्र।

वृष–भोगी, दानी, पवित्र, दक्ष, बलवान, बुद्धिसागर, धनवान, विलासी, तेजस्वी व श्रेष्ठ मित्रों वाला होगा।

मिथुन–प्रियवादी, सुन्दर व चंचल दृष्टि, दयालु, मैथुन प्रेमी, संगीतज्ञ, कास रोगी, कीर्तिमान, धनी, गुणी, गौर वर्ण, लम्बकाय, कुशल वक्ता, मेधावी, दृढ़ प्रतिज्ञ, समर्थ, न्यायी होगा।

कर्क–कार्य पटु, धनी, शूरवीर, धर्मात्मा, गुरु भक्त, मस्तक रोगी, बुद्धिमान, दुर्बल शरीर, कुटिल होगा।

सिंह–क्षमाशील, क्रियासक्त, मद्य–मांस सेवी, भ्रमणकर्ता, ठंड से डरने वाला, श्रेष्ठ मित्र युक्त, नम्र, शीघ्र क्रोधी, मातृ–पितृ भक्त, व्यसनी, लोक विख्यात।

कन्या–विलासी, मित्रों को आनन्ददायक, सुन्दर, धर्मात्मा, दानी, दक्ष, कवि, वृद्ध सम, वेदज्ञ, सर्वजनप्रिय, संगीत व्यसनी, प्रवासी, स्त्री से दुःखी होता है।

तुला–अकारण व असमय क्रोधी, दुःखी, मृदुभाषी, कृपालु, चंचल नेत्र, अस्थिर धन, घर में पराक्रमी, व्यवसाय कुशल, देव पूजक, मित्रहितैषी, प्रवासी, बन्धु प्रिय होगा।

वृश्चिक–बाल्यकाल से ही प्रवासी, क्रूरात्मा, शूर, पिंगल नेत्र, परस्त्री गामी, मानी, निष्ठुर, साहसी, धनी, माता के प्रति दुर्बुद्धि, धूर्त, चोर कला में दक्ष।

धनु–शूर, सद्बुद्धि, सात्त्विक, आनन्ददायक शिल्पविज्ञानी, धनी, सुन्दर स्त्री वाला, मानी, सच्चरित्र, सुन्दर, प्रियभाषी, तेजस्वी, स्थूल।

मकर–अपने कुल में हीन, स्त्री वशीभूत, पंडितों से विवादी, निन्दक, स्त्रियों का प्रिय, पुत्रवान्, मातृ प्रेमी, धनी, त्यागी, श्रेष्ठ सेवकों से युक्त, दयालु, मित्र सम्पन्न, सुखदायक होता है।

कुम्भ–दानी, आलसी, कृतज्ञ, हाथी, घोड़ा, धन, सम्पन्न, शुभ दृष्टि, सौम्य स्वभाव, धन–विद्या हेतु निरन्तर प्रयत्नशील, पुण्यात्मा, स्नेहयुक्त, धनी, मेढक जैसा पेट, निडर।

मीन–गंभीर चेष्टा युक्त, वीर, वाक्पटु, श्रेष्ठ मनुष्य, क्रोधी, कृपण, ज्ञानी, गुण वश पूजनीय, कुल में प्रिय, देवाराधक, शीघ्रगामी, संगीतज्ञ, श्रेष्ठ चरित्र, बन्धु वत्सल जातक होता है।

जब चंद्रमा बली हो तब चंद्र राशिगत नवांश का फल होता है।

चंद्र राशिगत नवांश फल

मेष के प्रथम नवांश–गोल मुख, छोटी नाक, कृश शरीर, अल्प रोम, प्रचण्ड स्वर, संकुचित नेत्र।

द्वितीय नवांश–लम्बा मुख, लम्बा कंठ, कोमल अंग, पतली जंघा, विशाल नेत्र, बन्दर जैसा स्वर, स्थूल ललाट, कठोर हड्डी, बडे स्कन्ध।

तृतीय नवांश–खूब रोम युक्त, छोटा कद, छोटी भुजाएं, वाक्पटु, अधिक रोम युक्त कंधे, पतली जंघा, जानु व मस्तक पर अल्प केश।

चतुर्थ नवांश–भ्रान्त तुल्य मुख व दृष्टि, लंगड़ा, लाल वर्ण, छोटा मस्तक, छोटी नाक, भ्रमणशील, कठोर पांव पतली त्वचा।

पंचम नवांश–घोड़े जैसी आंख, हाथी सम सिर, पुष्ट गोल शरीर, क्रूर, अल्प केश, कठोर मुख, कठोर पांव, बड़ी नाक, कृश शरीर, यज्ञ अग्नि होत्रादि में चतुर।

षष्ठ नवांश–कोमल हृदय, सुन्दर शरीर, ऊंची नाक, बड़े कंधे, सुन्दर नाक, काले नेत्र, विलासी, धनी, स्वस्त्री रत, शान्त।

सप्तम नवांश–वानर जैसी देह, बकवादी, कठोर त्वचा, उन्नत शरीर, गुह्य रोगी, हिंसक, मिथ्यावादी, घातक, मित्रों को प्रिय, क्रूर स्वभाव।

नवम नवांश–लम्बा, टेढ़ा मुख, कृश शरीर, टेढ़ा मस्तक, टेढ़े ओठ, टेढ़े कान, गला, विवाह करने वाला, सरल, क्रोधी, विद्यावान होता है।

चंद्र राशि वृष नवांश

प्रथम नवांश–कृष्ण वर्ण, खोटी दृष्टि, लोभी, पर का काम करने वाला, नीच, पूर्वावस्था में सुख व स्वभाव का विरोधी।

द्वितीय नवांश–मोटा मुख, मोटे कान, गम्भीर दृष्टि, अल्प बुद्धि, झूठा, आलसी, स्त्री विरोधी, उलटे स्वभाव का।

तृतीय नवांश–गौर वर्ण, अनम्र नेत्र, बड़बोला, धनी, सुन्दर स्वभाव, धर्मवेत्ता, सेवक युक्त।

चतुर्थ नवांश–छोटा कद, भ्रमणशील, क्रोधी, भेड़ जैसे नेत्र, पिंगल वर्ण पर धन अपहरण कर्ता।

पंचम नवांश–गोल व विशाल नेत्र, सुन्दर शरीर, अनेक स्त्रियों में आसक्त, बड़बोला, खोटी स्त्री में अनुरक्त।

षष्ठ नवांश–कोमल हृदय, सुन्दर शरीर, कृश देह, ऊंची नाक, बड़े कंधे, यज्ञ व अग्निहोत्र कर्ता, कृश शरीर, चतुर।

सप्तम नवांश–नव यौवना पत्नी की मृत्यु हो जाती है। वह मीनावलम्बी, लम्बी नाक, समनेत्र, बन्धन को प्राप्त, मित्रों का दुश्मन, बड़े–बड़े पांव, सूक्ष्म केश।

अष्टम नवांश–क्रूर दृष्टि, सुन्दर रुप, ऊंची नाक, अल्पकर्मी, राक्षसी स्वभाव, कड़े नाखून, कठोर, कड़े केश।

नवम नवांश–हंसमुख, कम पराक्रमी, भीरु, समरुचि, धूर्त, अनिश्चित धनी, प्रसिद्ध, अधोभाग में कृश, अल्पभाषी, होता है।

चंद्र राशि मिथुन नवांश

प्रथम नवांश–रोम रहित बाहु, काले नेत्र, कृश पाद व हाथ, ऊंची नाक, श्याम वर्ण।

द्वितीय नवांश–घड़े जैसा सिर, कुकर्मी, घात करने का इच्छुक, चपटी नाक, वाचाल, अधिक चेष्टावान, युद्ध करने में प्रमुख।

तृतीय नवांश–गौर वर्ण, अतिलाल नेत्र, श्रेष्ठ नाक, सम देह, श्रेष्ठ बुद्धि, लम्बा मुख, काली भौंहें, वाक्पटु।

चतुर्थ नवांश–सुन्दर भौंहें, सुन्दर मस्तक, कामी, सुन्दर शरीर, बड़ी छाती, श्वेत दांत, हिरण मुख, श्रेष्ठ, रोमावली युक्त।

पंचम नवांश–मोटे नेत्र, बड़ी कटि, मांस पिंड युक्त, पुष्ट छाती, पुष्ट भुजाएं, दुष्ट, श्याम वर्ण, मोटा सिर, मायावी, श्वेत कमल नेत्र।

षष्ठ नवांश–मधुवर्ण नेत्र, प्रलापी, उलटी बुद्धि, उलटा हृदय, सम अंग, श्रेष्ठ शरीर, धूर्त, लाल ओठ, लाल दांत, पराक्रमी।

सप्तम नवांश–ताम्र वर्ण शरीर, बड़ा पेट, सुन्दर ऊंचे नेत्र, बड़ी छाती, शिक्षित, अस्त्र–शस्त्र ज्ञाता, शिल्पी, हास्य रत।

अष्टम नवांश–तरुण, भारी शरीर, मनस्वी, सुन्दर, मिष्टभाषी, उलटी बुद्धि, बड़ा शरीर, श्वेतरंगी बडे नेत्र, कलाविद्।

नवम नवांश–गोल व काले नेत्र, सुन्दर शरीर, स्निग्ध, बुद्धिमान, रति पंडित, विद्यावान, काव्य निरत, श्रेष्ठ पुरुष।

चंद्र राशि कर्क नवांश

प्रथम नवांश–गौर वर्ण, विशाल, नेत्र, सुन्दर केश, गोल मुख, उन्नत वक्षस्थल।

द्वितीय नवांश–लाल प्रभा युक्त, क्रूर, युद्ध प्रिय, बिलाव जैसा मुख, बैसे ही नेत्र, त्यागी, कृश, जानु व जंघा।

तृतीय नवांश–गौर वर्ण, सुन्दर नेत्र, सुवक्ता, विद्यावान, स्थूल स्त्री वाला, स्थूल अंग, बुद्धिमान, कोमल कर्मी, आलसी।

चतुर्थ नवांश–तरुण, प्रभावान, झुकी–झुकी भौंहें, विशाल पुष्ट उच्च देह, श्रेष्ठ नाक, श्रेष्ठ नेत्र, अग्र दंत विहीन, दानी, शठ।

पंचम नवांश–भारी कुक्षि वाला, क्रूर, वाहन स्वामी, कुकर्मी, घड़े समान सिर युक्त, नीचे झुका मुख, लम्बे नेत्र, चंचल–सुन्दर भौंहें।

षष्ठ नवांश–लम्बा, विशाल शरीर, श्रेष्ठ नेत्र, प्रतापी, गौर वर्ण, सुन्दर नाक, सुवक्ता, मोटे दांत।

सप्तम नवांश–बिखरे–बिखरे बाल, चंचल ठोड़ी, अधिक नाड़ियां, रोम युक्त जांघ, पर घर वासिन्दा, कालेआकृति वाला।

अष्टम नवांश–घड़े समान सिर, कुशिल्पी, कृश जानु व जंघा, कुबुद्धि, चपटी आंख–नाक, कृष्ण वर्ण।

नवम नवांश–गौर वर्ण, मस्त्य नेत्र, बड़ा पेट, मोटी–पुष्ट छाती, लम्बी ठोड़ी, लम्बे होंठ, बड़ा पेट, कृश जानु, कृश।

चंद्र राशि सिंह नवांश

प्रथम नवांश–मन्दोदर, प्रचण्ड, लाल नाक, बड़ी–नाड़ियां, देह, बड़े नेत्र, वीर, भुजाएं, उन्नत वक्षस्थल, बड़ी नाक।

द्वितीय नवांश–ऊंचा व बड़ा मस्तक, चतुष्कोण देह, विशाल देह, बड़े नेत्र, लम्बी भुजाएं, उन्नत वक्षःस्थल, बड़ी नाक।

तृतीय नवांश–अधिक रोम युक्त, विशाल भुजाएं, चकोर जैसे नेत्र, सुन्दर एवं चंचल शरीर, त्यागी, ऊंची नाक, स्निग्ध शरीर व भुजायें, गोल गला।

चतुर्थ नवांश–गोर वर्ण, लम्बे काले नेत्र, कोमल शरीर, भग्न स्वर, मोटे पांव, मेढक जैसी कुक्षि।

पंचम नवांश–घोड़े जैसा सिर, अल्प केशी, श्वेत नासिका, श्वेत नेत्र, ऊर्ध्वभाग में अधिक रोम, लम्बा उदर, प्रचण्ड व बड़ी दाढ़ें।

षष्ठ नवांश–सुस्त, ढीले–ढाले अंग, थोड़े–थोड़े रोम, स्निग्ध शरीर, सममूर्ति काले नेत्र, लम्बा कद, तरुण, स्त्रियों में चतुर, वाक्पटु श्रेष्ठ वाणी।

सप्तम नवांश–लम्बा मुख, बड़े केश, पुष्ट ठोड़ी, स्त्रियों में खोटे भाग्य वाला, कृष्ण वर्ण, पराक्रमी, अधिक रोम, कुकर्मी।

अष्टम नवांश–ढीठ, अधिक रोम, मित्र–विहीन, अल्प चेष्टावान, कृष्ण वर्ण, स्थिर व कठोर अंग, कुटिल।

नयम नवांश–लम्बी–लम्बी भुजाएं, कठोर मुख, काले नेत्र, दृढ़ जंघा, दृढ़ पार्श्व पीड़ित नेत्र, पीड़ामय शरीर, दूब समान वर्ण।

चंद राशि कन्या नवांश

प्रथम नवांश–टेढ़ा व ऊंचा मुख, पुष्ट अंग, हिरण जैसा मुख, धनी, दाता, भोगमय रुचि, तरुण स्वरुप।

द्वितीय नवांश–तरुण स्वरुप, घोड़े सम कुक्षि, चुगलखोर, कलह प्रिय, गूढ़ एवं श्रेष्ठ वचन बोलने वाला, चंचल स्त्री युक्त, बड़ा उदर।

तृतीय नवांश–बड़ी नाक, बड़ा मुंह, सुन्दर, गौर वर्ण, श्रेष्ठ भुजा व कंधे, श्रेष्ठ वाणी, मित्र भावी, गंभीर, समझदार, स्त्री से प्रीति, प्रसिद्ध।

चतुर्थ नवांश–सुन्दर व कोमल स्वरुप, मधुर भाषी, अल्प रोम, लम्बी–मोटी भुजाएं, ताम्र वर्ण, अधोभाग से कृश।

पंचम नवांश–मोटे ओठ, मोटी भुजायें, ऊंचा, पुष्ट, मोटा सिर, बड़ी नाड़ियां, बड़ी छाती, पराश्रित।

षष्ठ नवांश–स्निग्ध प्रभावान्, स्व:वचन पालक, ढीला–ढाला शरीर, शास्त्रज्ञ, बुद्धिमान, लेखक, कलाकार, मनमौजी।

सप्तम नवांश–छोटा मुख, उन्नत कंधे, कोमल शरीर, सुन्दर केश, बड़ा पेट, मोटे हाथ–पांव, पानी से भय।

अष्टम नवांश–सुन्दर–कोमल शरीर, गौरवर्ण, सुन्दर दृष्टि, प्रचण्ड मानी, सर्प सदृश्य लम्बी–मोटी भुजाएं, पिंगल वर्ण, रोम युक्त।

नवम् नवांश–प्रसिद्ध, कोमल, सुन्दर शरीर, बड़े नेत्र, निर्बल व कमजोर हृदय, चतुर, झुके–झुके कन्धे, लेखक, विद्वान।

चंद्र राशि तुला नवांश

प्रथम नवांश–गौर वर्ण, बड़े–बड़े नेत्र, योग्य, धन संचयी, बड़ी दाढ़ी, धर्मात्मा, भ्रमणशील, प्रसिद्ध।

द्वितीय नवांश–गोल नेत्र, विकराल दांत, मध्य भाग का शरीर कृश, प्रभायुक्त, ताम्र वर्ण, काली जंघा, मिली हुई भौंहें।

तृतीय नवांश–गौर वर्ण, घोड़े जैसे दांत, सुन्दर मुख, मधु वर्ण, उन्नत नेत्र, सुन्दर केश, धनी, लम्बे केश, लम्बी नाक, शरणागत रक्षक।

चतुर्थ नवांश–छोटे अंग, छोटी भुजायें, झुके–झुके दांत, हिरण दृष्टि, छोटी नाक, विषाद युक्त, तरुण स्वरुप, खोटा स्वभाव।

पंचम नवांश–गम्भीर दृष्टि, बड़े केश, मित्र प्रिय, बुद्धिमान, कठोर केश, कठोर त्वचा, कठोर दृष्टि, चपटी नाक।

षष्ठ नवांश–पुष्ट उरु, पुष्ट देह, बड़ी कुक्षि, सुन्दर नाक, श्रेष्ठ वंशोत्पन्न, स्निग्ध नख, नीतिज्ञ, शास्त्रज्ञ, शिक्षित।

सप्तम नवांश–गौर वर्ण, बुद्धिमान, भारी–मोटी देह, बड़ा मस्तक, अधोभाग निर्बल, यशस्वी।

अष्टम नवांश–उन्नत कन्धे, गंड स्थल उन्नत, भोगी, कठिन मोटी जांघ, काली भौंहें, निश्चित वचन कहने वाला, शान्त स्वभाव, पुष्ट छाती, श्रेष्ठ माथा।

नवम् नवांश–सुन्दर नेत्र, प्रसन्न मूर्ति, गौर वर्ण, सम सुन्दर देह, चतुर, कलाकार, हास्य कुशल, व्यवसायी स्वभाव।

चंद्र राशि वृश्चिक नवांश

प्रथम नवांश–छोटा कद, ऊंचे ओठ, ऊंची नाक, सुन्दर मस्तक, दृढ़ अंग, गौर वर्ण, मेढक जैसे लाल नेत्र, घड़े समान सिर।

द्वितीय नवांश–गौर वर्ण, विशाल हृदय, बड़ी भुजायें, लाल नेत्र, बलवानों पर विजयी, हठी, थोड़े केश।

तृतीय नवांश–चतुर, दृढ़ कंधे, दृढ़ भुजाएं, प्रसन्न मूर्ति, श्रेष्ठ कथक, दासी में रत, सुन्दर देह, चोर, लाल होंठ।

चतुर्थ नवांश–परस्त्री व पर द्रोहरत, धैर्यहीन लम्बा शरीर, तरुण रूप, श्यामल केश, श्याम नेत्र, प्रगल्भ, पुष्ट पेट, ऊंचा शरीर।

पंचम नवांश–गम्भीर, ताम्र वर्ण, चपटी नाक, उलटे, बड़े दृढ़ कंधे, विरोधी, अभिमान में चूर, क्रूर कर्मी, यशस्वी।

षष्ठ नवांश–सुन्दर, नीतिज्ञ, प्रचण्ड कर्मी, छोटे नेत्र, थोड़े केश, बड़ी भुजाएं, बड़ा मुख, बड़ा सिर, प्रकीर्ण दांत, नाड़ी, बन्धन युक्त अंग।

द्वितीय नवांश–बड़े–बड़े अंग, धनी, विदेशवासी, शठ, आलसी, टेढ़ी नाक, अधिक रोम, तरुण रूप, संगीत प्रेमी।

तृतीय नवांश–गंधर्व विद्या का ज्ञाता, प्रसिद्ध, गौरांग, निबद्ध दृष्टि, सुन्दर नाक, अनेक मित्र व भाई, बुद्धिमान, श्रेष्ठकर्मी।

चतुर्थ नवांश–लाल–काले–गोल नेत्र, बड़ा मस्तक, दुर्बल अंग, विकीर्ण केश, विरल दांत, विरल वाणी।

पंचम नवांश–बड़े गंड स्थल, खोटी स्त्री वाला, भोगप्रिय, श्रेष्ठ नाक, तरुण स्वरूप, गोल भुजायें, स्थिर।

षष्ठ नवांश–स्निग्ध, प्रभायुक्त, सुन्दर केश, काम प्रेमी, सूक्ष्म दांत, अल्पभाषी, बड़ी ठोड़ी, बड़ा मस्तक।

सप्तम नवांश–तरुण रूप, आलसी, अल्पभाषी, कुण्डल जैसे केश, बड़ा शरीर, कठिन अंग, कोमल हाथ–पांव, बुद्धिमान, श्रेष्ठ स्वभाव।

अष्टम नवांश–गंभीर नेत्र, बड़ी नाक, उलटा मुख, भिन्न नाखून, भिन्न केश, बंधी हुई–सी देह, सुन्दर वाचक, घड़े जैसा सिर।

नवम् नवांश–अनेक मित्र युक्त, अधिक मेदा, रक्त वर्ण शरीर, पूर्ण मुख, गीत नृत्य प्रेमी, मिष्टभाषी, श्रेष्ठ पराक्रमी, नीतिज्ञ।

चंद्र राशि कुंभ नवांश

प्रथम नवांश–तरुण स्वरूप, कोमल, कृश अंग, पीत वर्ण, काव्य शास्त्र का प्रेमी, कामी, प्रीतियुक्त, दानी।

द्वितीय नवांश–कठोर त्वचा व मुख, कठोर नेत्र, कठोर केश, दीन प्रिय, साधु लंबी गर्दन, लंबा मुख।

तृतीय नवांश–भोगी, पुष्ट शरीर, तेजस्वी, मोटे दांत, अल्पभाषी, लाल कोनों वाले बड़े नेत्र, बड़ी नाक।

चतुर्थ नवांश–स्त्री रत, गौरवर्ण, बड़ा मुख, शत्रु संहारक, गंभीर, धैर्यवान, पराक्रमी, भोगी, प्रीति युक्त।

पंचम नवांश–स्पष्टार्थ ज्ञाता, कला मर्मज्ञ, कठिन रोम, कठोर हाथ–पांव, कठिन केश, बड़ी नाक, काले केश।

षष्ठ नवांश–व्याघ्र मुख, प्रगल्भ, कुण्डल युक्त केश, दृढ़ निश्चयी, बाघ, हरिण, सर्प संहारक, राजप्रिय।

सप्तम नवांश–कृश शरीर, ठोढ़ी–दाढ़ी–मूंछ वाला, लंबा मुख, आगे से ऊंची नाक, विरल उंगलियां व दांत, ढीले–ढाले अंग।

अष्टम नवांश–बकरे जैसी आखें, क्रूर मुख, ऐश्वर्यभोगी, धनी, श्रेष्ठ भाग्यशाली, मोटे दांत, असुन्दर शरीर।

नवम नवांश–तरुण स्वरूप, काले दांत, सुख से विश्लेषित, धन-पुत्रस्त्री युक्त, सुन्दरभाषी, प्रसिद्ध, सामर्थ्यवान।

चंद्र राशि मीन नवांश

प्रथम नवांश–गौर वर्ण, निम्न अंग, चंचल, कोमल तथा स्त्री समस्वभाव युक्त, चलायमान चित्तवृत्ति, छोटी गर्दन, पतली कमर।

द्वितीय नवांश–मोटा-पुष्ट मुख, मोटी नाक, क्रिया चतुर, चतुरवक्ता, सुन्दर शरीर, वन पर्वतों में भ्रमण करने वाला, बड़ा सिर।

तृतीय नवांश–गौरवर्ण, शठ, सुन्दर नेत्र, ढीला-ढाला शरीर, धर्मात्मा, विद्वान वाक्पटु, नम्र, सुन्दर व चतुर।

चतुर्थ नवांश–गुणी, सुन्दर स्वभाव व अंग, वृद्धों का सेवक, क्रिया चतुर, पंडित, पराक्रमी, नीतिज्ञ, ऊंची नाक।

पंचम नवांश–लंबा शरीर, कृष्ण वर्ण, प्रतापी, श्रेष्ठ बुद्धि, छोटी नाक सुन्दर नेत्र, हिंसक, सौभाग्यशाली, तेजस्वी।

षष्ठ नवांश–लंबकाय, सुन्दर, प्रतापी, गुणी, श्रेष्ठ वेशधारी, घोड़े सम नाक, स्वाभिमानी, टेढ़ी दृष्टि, प्रसिद्ध, प्रियकथाओं में निपुण।

सप्तम नवांश–अभिमानी, धर्मात्मा, श्रेष्ठ मंत्री, चंचल-कुस्वभाव, शठ।

अष्टम नवांश–लंबा, बड़ा सिर, कृष्ण वर्ण, आलसी, कठोर दृष्टि, कड़े केश, कुपुत्रवान, यात्रा व युद्ध कुशल।

नवम नवांश–छोटा शरीर, कोमल, पंडित, विशाल वक्षस्थलं, बड़े नेत्र, बड़ी नाक, सुन्दर देह, श्रेष्ठ अंग, बुद्धिमान, गुणी प्रसिद्ध।

द्वादशांश फल–मेष के द्वादशांश में जन्म लेने वाला दुष्टात्मा, चोर व पापी। **वृष** में धनी व रोगी। **मिथुन** में जुआरी व सुशील। **कर्क** में दुष्ट आचार वाला, तपस्वी। **सिंह** में राज सेवी व शूरवीर। **कन्या** में द्यूत रत व स्त्री रत। **तुला** में व्यापारी व धनी। **वृश्चिक** में हत्यारा, चोर, स्वामी। **धनु** में देव-पितर-ब्राह्मण भक्त। **मकर** में कृषि स्वामी, श्रेष्ठ सेवक। **कुंभ** में दुष्ट व मीन के द्वादशांश में जन्म लेने वाला, धनी व विद्वान।

त्रिशांश फल–इससे शुभाशुभ मृत्यु का लक्षण विचार किया जाता है। त्रिंशांश लग्न से अष्टमेश शुभ हो, शुभ युक्त या दृष्ट हो तो तीर्थ स्थान में

और शुभ स्थान में दान–धर्म करते हुए मृत्यु होती है। यदि अष्टमेश क्रूर ग्रह हो, पाप ग्रह युक्त या दृष्ट हो तो अग्नि, जल द्वारा मृत्यु होती है। मंगल के त्रिंशांश में जन्म लेने वाला चपल, कठोर वक्ता व क्रूर बुद्धि होता है। शनि से भ्रमणशील व मलिन बुद्धि। गुरु से धनी, बुध से देव–गुरु पूजक, साधु भक्त व बंधु युक्त। शुक्र से कामी, सुन्दर शरीर व सुखी होता है।

ग्रह भाव फल

सूर्य

प्रथम भाव में–आलस्य प्रधान, अल्पकेश, महाक्रोधी, लम्बकाय, नेत्र रोग से पीड़ित, कठोर स्वभाव व वीर, क्षमाशील व निर्लज्ज होता है। कर्क लग्न में सूर्य हो तो कमल नेत्र, मेषलग्न हो तो शुभ स्थिति व सिंह राशि प्रथम भाव में हो तो रतौंधी रोग व तुला लग्न में सूर्य दरिद्रता व पुत्र नष्ट करता है।

द्वितीय भाव में–धन–पुत्र–वाहन रहित, अल्पबुद्धि, मित्र रहित पर घर यापन करता है।

तृतीय भाव में–जातक मधुरभाषी, धन–सुख, वाहन–सुख युक्त, श्रेष्ठकर्मी, भृत्य युक्त, अल्प भ्रातृवान व शक्ति सम्पन्न होता है।

चतुर्थ भाव में–जातक धन–वाहन–सुख रहित, पिता से विरोधी, घर से निरन्तर दूर–ही–दूर रहता है।

पंचम भाव में–अल्प संतति, दुर्गा व शिव का भक्त, सुख से हीन, श्रेष्ठ कर्म युक्त, श्रेष्ठ धनरहित, चित्त वृत्ति भ्रमित रहती है।

षष्ठ भाव में–सुखी जीवन, शत्रु–बलनाशक, महापराक्रमी, सुन्दर व श्रेष्ठ वाहन युक्त, महातेजस्वी, राज मंत्री होगा।

सप्तम भाव में–धन लक्ष्मी हीन, असुन्दर, भय युक्त रोगी, खोटा स्वभाव, राजकोप से दुःखी।

अष्टम भाव में–मंद दृष्टि, शत्रु युक्त, बुद्धिहीन, महाक्रोधी, अल्प धनी, कृश अंग।

नवम् भाव में–पूर्ण धार्मिक, धर्मरत, कर्मण्य, बुद्धिमान, पुत्र–मित्र–धन–भाग्य स्वास्थ्य से सम्पन्न, सुखी पर मातृ–विरोधी होगा।

दशम भाव में–बुद्धि सागर, वाहन से सम्पन्न, धन से सुखी, राज्य कृपा, सुपुत्रवान, साधु सेवा रत होता है।

एकादश भाव में–संगीत–प्रेमी, श्रेष्ठ कर्मों में रत, यशस्वी, महाधनी, सम्पन्न व ऐश्वर्यशाली, राज्य कृपा से लाभान्वित होगा।

द्वादश भाव में–मंद दृष्टि, पितृ विरोधी, जन समाज का विरोधी होगा।

चंद्र

प्रथम भाव में–लग्न स्व–चंद्र राशि या उच्च का अर्थात् कर्क या वृष का हो तो जातक अति सुन्दर, चतुर, धन से सम्पन्न, भोगी, श्रेष्ठ गुणी तथा अन्यान्य राशि में उन्मत्त, नीच कर्मी, बहरा, गूंगा होता है।

द्वितीय भाव में–धन–पुत्र–सुख सम्पन्न। क्षीण चन्द्रमा होने पर हकलाहट युक्त, धन रहित, बुद्धि न्यूनता युक्त होता है।

तृतीय भाव में–हिंसक, घमण्डी, लालची, कृपण, अल्पज्ञ, बंधु आश्रित, जीवन–यापन करने वाला, दया व भय रहित होता है।

चतुर्थ भाव में–जलाश्रय या समुद्री व्यवसाय से धनोपार्जन करने में समर्थ कृषि कर्म में दक्ष, स्त्री–वाहन सुख से पूर्ण होता है।

पंचम भाव में–ऐसा व्यक्ति इन्द्रियजित, सत्यवादी, प्रसन्न बदन, धन–पुत्र–सुख युक्त, श्रेष्ठ संग्रह कर्ता होता है।

षष्ठ भाव में–कब्ज का रोगी, दया धर्मरहित, क्रूर, महा आलसी, कठोर, दुष्ट, शत्रु–पीड़ित जातक होता है।

सप्तम भाव में–घोर अभिमानी, घमण्डी, काम पीड़ित, कृशकाय, धनहीन, नम्रता से दूर होता है।

अष्टम भाव में–रोगों से जर्जर शरीर, धनरहित, चोर–शत्रु–राज्य से पीड़ित उद्वेग युक्त व्याकुलता रहती है।

नवम् भाव में–स्त्री–पुत्र, धन–वाहन–भू सुख युक्त, धर्म–वेद–पुराण के श्रवण का प्रेमी, श्रेष्ठ कर्म रत, तीर्थाटन प्रेमी होता है।

दशम भाव में–राजा से प्राप्त धन से सुखी, यशस्वी, सुन्दर–बलिष्ठ देह, महापराक्रमी, सन्तोषी, स्थिर मति, लक्ष्मी सम्पन्न जातक होता है।

एकादश भाव में–सम्मानित, अनेक वाहनों का सुख पाने वाला, स्थिर, यशस्वी, गुणवान्, प्रसन्न मूर्ति होता है।

द्वादश भाव में–खोटे स्वभाव का दुष्ट मित्र रहित, नेत्र पीड़ित, शत्रु पीड़ित, अत्यन्त क्रोधी होगा।

मंगल

प्रथम भाव में–स्थिर हो तो जातक भ्रमित, घाव युक्त शरीर, उग्रवादी, हठी, क्रोधी, भ्रमणरत, साहसी होता है।

द्वितीय भाव में–ऐसा जातक निर्धन, कुबुद्धि, दया–धर्म रहित, गलत लोगों से संपर्क रखने वाला होता है।

तृतीय भाव में–राज्य कृपा से पूर्ण, सुख–साधन सम्पन्न, उदारमना, श्रेष्ठ बुद्धि वाला, पराक्रमी, धनी पर भ्रातृ सुखहीन होता है।

चतुर्थ भाव में–मित्रों से पीड़ित, वाहनों से चोट खाने वाला, विदेशवासी, महारोगी व निर्बल।

पंचम भाव में–कफ़ व वात रोगी, स्त्री–पुत्र–मित्र सुख में न्यूनता, अस्थिर बुद्धि वाला, दुःखी होता है।

षष्ठ भाव में–प्रबल जठराग्नि युक्त, महाक्रोधी, शत्रु बल नाशक, श्रेष्ठ जनों की संगति करने वाला, कामी होता है।

सप्तम भाव में–शरीर क्षीण, उपद्रवी, अनर्थकर्ता, चिन्तित, शत्रु बार–बार पीड़ित करते हैं, स्त्री से सन्तप्त व दुःखी।

अष्टम भाव में–नेत्र रोगी, रक्त विकार, नीच कर्म रत, बुद्धि में अन्धापन, श्रेष्ठ जनों का निंदक होता है।

नवम् भाव में–हिंसक वृत्ति का, राज्य से अल्प सम्मान पाने वाला, पुण्यों से क्षीण व धननाशक होता है।

दशम भाव में–राजा के समान ऐश्वर्य सम्पन्न व सम्मान पाने वाला, महापरोपकारी, कार्य के प्रति उत्साह पूर्वक प्रयत्नशील, सुन्दर, वस्त्राभूषण युक्त, धर्माधर्म से लाभ प्राप्त करता है।

एकादश भाव में–धातु लाभ, आभूषण लाभ युक्त, सुन्दर वाहन सम्पन्न, राज कृपा युक्त, बड़े–बड़े कौतुक व मंगलों को प्राप्त होता है।

द्वादश भाव में–अपनों से, मित्रों से विरोध, नेत्र पीड़ा युक्त, क्रोधी, दुर्बल अंग, धन हानि पाने वाला, बंधन युक्त, महातेजस्वी होता है।

बुध

प्रथम भाव में–शान्त स्वभाव वाला, नम्र, उदार, आचार–विचार वाला, महापंडित, विद्वान, कला मर्मज्ञ, अनेक पुत्र सम्पन्न होता है।

द्वितीय भाव में–जातक निर्मल स्वभाव युक्त, गुरु वत्सल, सकुशल, अत्यन्त सुखी, शोभायमान व उच्च्व पदासीन होता है।

तृतीय भाव में–जातक साहसी, स्वजनों से युक्त व प्रेमी, चित्त अशुद्ध, सुख विहीन, स्वेच्छा से शुभ कार्य करता है।

चतुर्थ भाव में–श्रेष्ठतम वाहनों से युक्त, धन–धान्य–मणि–माणिक्य वस्त्राभूषण सम्पन्न, संगीत–नृत्य में रुचिवान, विद्या प्राप्त करता है।

पंचम भाव में–पुत्र व मित्र सुख युक्त, यन्त्र–मन्त्र का जानकार, स्वभाव में श्रेष्ठ, लीला धारी होता है।

षष्ठ भाव में–वाद–विवाद व मुकद्दमेबाजी में रुचि रखने वाला होता है। रोग युक्त, कठोर हृदयी, उपद्रव पीड़ित, शुद्ध आचरण, व्याकुल चित्त होता है।

सप्तम भाव में–जातक सुन्दर, ऐश्वर्य सम्पन्न, सत्यवक्ता, स्वर्णाभूषण, स्त्री सन्तान से युक्त, सम्पन्न होता है।

अष्टम भाव में–भूतों की दया से सम्पन्नता पाने वाला, विरोधी, घोर अभिमानी एवं सप्रयास पर जन के कार्यों का अपहरण करता है।

नवम् भाव में–ऐसा जातक परोपकारी, विद्वानों में श्रेष्ठ, आदरकर्ता, सेवाभावी, धन–स्त्री, सन्तान सुख से युक्त, मोक्ष की कामना रखता है।

दशम भाव में–ज्ञानोपार्जन में दक्ष, श्रेष्ठ कर्म करने वाला पर अनेक सम्पदाओं, धन, ऐश्वर्य से युक्त, राज्य मान्य एवं सुन्दर लीलाओं से युक्त, वाग्विलास करने वाला रहता है।

एकादश भाव में–भोग–भाग्य से सम्पन्न, महाधनी व ऐश्वर्यशाली, नम्र एवं नित्य आनन्द को प्राप्त करने वाला, स्वभाव से श्रेष्ठ, बल युक्त और विद्याभ्यासी होता है।

द्वादश भाव में–दया–ममता से रहित, मित्रों से हीन, अपने निजी कार्यों में दक्ष तथा अपने पक्ष को जीतने वाला, धूर्त व मलिन स्वभाव वाला होता है।

बृहस्पति

प्रथम भाव में–अनेक विद्याओं से सम्पन्न, विद्याभ्यासी, राजाज्ञापालक, चतुर, कृतज्ञ, उदारमना एवं दैहिक रूप से सुन्दर होता है।

द्वितीय भाव में–रूप में श्रेष्ठ, विद्या, गुण, यश, धन से सम्पन्न, किसी से वैर–विरोध नहीं रखता, परोपकारी व त्यागी, स्वभाव में श्रेष्ठ एवं महाधनी होता है।

तृतीय भाव में–सुहृदयी, दयालु, गुणहीन, कृपण व कृतज्ञ, स्त्री एवं सन्तान से प्रेम नहीं होता, मंदाग्नि रोगी व कमजोर होता है।

चतुर्थ भाव में–ऐसा जातक सम्मानित, धन–वाहन–सुख से सम्पन्न और राज्य कृपा से संपत्ति प्राप्त करता है।

पंचम भाव में–सन्तान–मित्र की दृष्टि से श्रेष्ठ, श्रेष्ठ मन्त्रज्ञ, अनेक प्रकार के वाहनों से युक्त, भाग्यशाली, अनेक उपायों से धनोपार्जन करने में समर्थ, वाणी से कोमल व वाग्विलासी होता है।

षष्ठ भाव में–गीत एवं विद्या प्राप्ति से मन नहीं रमता, यश का इच्छुक शत्रुओं का बल नाश करने वाला, सौभाग्य वृद्धि के कार्यों में आलस्य करता है।

सप्तम भाव में–शास्त्र विद्या में चित्त लगाने वाला, नम्र, स्त्री धन का खूब सुख प्राप्त करता है। राजमंत्री एवं कवि हृदय होता है।

अष्टम भाव में–दूत कार्य में दक्ष, मलिन, दीन, विवेकहीन, नम्रता रहित, महा आलसी, कृशकाय जातक होता है।

नवम् भाव में–राजमन्त्री, धर्मात्मा, यज्ञ कर्ता शास्त्रविद्, व्रतोपवासी, ब्राह्मण हितैषी होता है।

दशम भाव में–श्रेष्ठ राज लक्षणों को धारण करने वाला, श्रेष्ठ वाहन सम्पन्न मित्र–पुत्र–स्त्री–धन सुख से युक्त व अनेक प्रकार से सुख पाता है।

एकादश भाव में–जातक खूब सामर्थ्यवान, धन लाभ पाने वाला, श्रेष्ठ वस्त्र व वाहनों वाला, राजा का कृपा पात्र होता है।

द्वादश भाव में–मन में उद्वेग, रोगी, क्रोधी, महापापी, आलसी, निर्लज्ज, बुद्धिहीन व सम्मानरहित होता है।

शुक्र

प्रथम भाव में–ऐसा जातक अनेक कलाओं का ज्ञाता, श्रेष्ठ व्यक्तित्व, निर्मल वाणी, श्रेष्ठ स्त्री से काम चेष्टाएं करने वाला, सम्मानित व धनवान रहता है।

द्वितीय भाव में–श्रेष्ठ अन्न, खान–पान के पदार्थों में रुचि रखने वाला, श्रेष्ठ वस्त्राभूषण, धन, वाहनादि युक्त और अनेक विद्याओं का जानकार होता है।

तृतीय भाव में–कृशकाय, कृपण, दुष्टमति, धनहीन, काम पीड़ित, श्रेष्ठ व्यक्तियों को कष्ट देने वाला, अशुभ व्यवहार करता है।

चतुर्थ भाव में–जातक को मित्र, भूमि, ग्राम, वाहन व अन्यान्य सुख व साधन प्राप्त होते हैं। देवार्चन करने वाला, नित्य आनन्द भोगता है।

पंचम भाव में–समस्त काव्य कलाओं का जानकार, अलंकृत, पुत्र, वाहन, धन–धान्य युक्त, उच्च राज्य सम्मान पाने वाला होता है।

षष्ठ भाव में–ऐसा जातक स्त्रियों को प्रिय नहीं होता, काम–कलाहीन, निर्बल, शत्रु भय से पीड़ित होता है।

सप्तम भाव में–कला कुशल, जल क्रीड़ा प्रेमी, रति विलास प्रवीण, बहुस्त्री भोगी, चंचल स्वभाव, स्त्री प्रेमी होगा।

अष्टम भाव में–पुत्र चिंता युक्त, प्रसन्न मूर्ति, राजा से सम्मानित, शठ, निःशंक बोलने वाला, घमण्डी, स्त्री चिंता युक्त होता है।

नवम् भाव में–अभ्यागत, गुरु, देव पूजार्चन करने वाला, मुनियों जैसा वेश धारण करने वाला, तीर्थाटन प्रेमी, धन–वाहन का निरन्तर सुख पाने वाला व क्रोध रहित होता है।

दशम भाव में–सौभाग्य व सम्मान युक्त, शोभायमान, स्नान, ध्यान, पूजन में चित्त लगाने वाला, धनी, स्त्री–पुत्र से विशेष प्रेम करता है।

एकादश भाव में–श्रेष्ठ गीत, नृत्य में प्रेम रखने वाला, नित्य यात्रा की चिन्ता, श्रेष्ठकर्मी, वेदाभ्यास व धर्म में चित्त रमाता है।

द्वादश भाव में–ऐसा जातक श्रेष्ठकर्मी को त्यागकर उनका विरोध करता है। काम देव का आराधक दया व सत्य से रहित होता है।

शनि

प्रथम भाव में–प्रथम भाव में तुला, मकर या कुंभ राशिस्थ हो तो जातक देश व पुर का स्वामी बनता है। अन्य राशि में होने पर जातक नीच, रोगी, दरिद्र होता है।

द्वितीय भाव में–ऐसा जातक व्यसनों से पीड़ित, स्वजनों से त्यक्त, विदेश में वाहन व राज सम्मान प्राप्त करता है।

तृतीय भाव में–राज्य सम्मानित, श्रेष्ठ वाहन प्राप्त करने वाला, पराक्रमी, ग्राम स्वामी, अनेकों का पालक होता है।

चतुर्थ भाव में–पित्त–वात रोगी, खोटा स्वभाव, आलसी, लड़ाई के कारण दुर्बल अंग वाला, धनहीन होता है।

पंचम भाव में–ऐसा जातक सदैव रोगी, क्षीण शरीर, धनहीन, काम शक्तिहीन, पुत्र को पीड़ा कारक होता है।

षष्ठ भाव में–शत्रु समूह को जीतने वाला, गुणवान, श्रेष्ठ कर्मों का ज्ञाता, अनेकों का पालन कर्ता, पुष्ट, निरोग, प्रबल जठराग्नि वाला, बलवान होता है।

सप्तम भाव में–रोग के कारण निर्बल, उपजीविका रहित, स्त्री, घर, अन्न की चिन्ता में लिप्त व दुःखी होता है।

अष्टम भाव में–जातक कृश शरीर, दाद–खाज–खुजली, चर्मरोग से पीड़ित, सन्तोष रहित, आलसी होता है।

नवम् भाव में–जातक धर्म–कर्म युक्त, व्याकुल, दुर्बुद्धि, कुतर्की, अपनी मनमानी करने वाला होता है।

दशम भाव में–राजा का मंत्री, नीति युक्त, विनम्र, श्रेष्ठ, ग्राम व पुर के समूह को भेद करने का अधिकार प्राप्त करने वाला, चतुर, धन से पूर्ण होगा।

एकादश भाव में–कृष्ण वर्ण, अश्व, नील इन्द्रमणि, ऊर्ण वस्त्र, हस्ति लाभ पाता है।

द्वादश भाव में–दयाहीन, धनहीन, खर्च से पीड़ित, महा आलसी, नीचों की संगति करने वाला, अंगहीन व सुखहीन होता है।

राहु

प्रथम भाव में–दुष्ट बुद्धि, दुष्ट स्वभाव, संबंधियों को ठगने वाला, शिरोरोग पीड़ित, विवाद में विजयी व रोगी होता है।

द्वितीय भाव में–कठोर कर्मी, धन नाशक, दरिद्र, भ्रमणशील होता है।

तृतीय भाव में–शत्रुओं के ऐश्वर्य को नष्ट करने वाला, लोक में यशस्वी, कल्याण व ऐश्वर्य पाने वाला, सुख व विलास को पाने वाला, भाइयों की मृत्यु करने वाला, पशु नाशक, दरिद्र, पराक्रमी होता है।

चतुर्थ भाव में–दुःखी, पुत्र–मित्र सुख रहित, निरन्तर भ्रमणशील रहता है।

पंचम भाव में–सुखहीन, मित्रहीन, उदर शूल–रोगी, विलास में पीड़ा, भ्रमित होता है।

षष्ठ भाव में–शत्रु–बल नाशक, द्रव्य लाभ पाने वाला, पशुओं को पीड़ा, कमर में दर्द, म्लेच्छों से समागम व जातक बलवान होता है।

सप्तम भाव में–स्त्री विरोधी, स्त्री नाशक, प्रचण्ड क्रोधी, स्त्री का पति, स्त्री से विवाद करने वाला, स्त्री रोगी प्राप्त करता है।

अष्टम भाव में–नाश करने वाला, गुदा में पीड़ा, प्रमेह रोग, अंड वृद्धि, शत्रुओं के कारण व्याकुल होता है।

नवम् भाव में–क्रोध में धन नष्ट करने वाला, अल्प सुखी, निरन्तर भ्रमणशील, दरिद्री, संबंधियों का अल्प सुख, शरीर पीड़ा युक्त।

दशम भाव में–पितृ सुख रहित, अभाग्यवान, शत्रु नाशक, रोगी, वाहनहीन, वात रोगी। दशम मीन राशि का हो तो कष्ट भोगने वाला।

एकादश भाव में–सभी प्रकार से धन, सुख का लाभ पाने वाला, राज्य वर्ण से सुख वस्त्राभूषण व पशु लाभ, यत्र–तत्र विजयी, मनोरथ सिद्धि को प्राप्त होता है।

द्वादश भाव में–नेत्र रोगी, पांव में चोर, प्रपंची, निश्चित प्रेम करने वाला, दुष्टों का स्नेही।

केतु

प्रथम भाव में–सूत्रकर्ता, रोग भय, व्यग्र, स्त्री–पुत्र की चिन्ता से युक्त, उद्वेगी वात् रोग, दुःखी।

द्वितीय भाव में–धन–धान्य का विनाश, कुटुम्बियों से विरोध, राजा से धन की चिन्ता, मुख रोगी।

तृतीय भाव में–शत्रु नाशक, शत्रुओं से विवाद, धन–भोग, ऐश्वर्य, तेज संपन्न भ्रातृ नाशक, बाहु–पीड़ा, उच्चस्थ हो तो सुख, संसार से उदासीन होता है।

चतुर्थ भाव में–मातृ सुखहीन, मित्र, पिता, भ्रातृ नाशक, वृश्चिक या सिंह का हो तो माता–पिता–मित्र का सुख मिलता है।

पंचम भाव में–पेट में आघात, संबंधियों का प्रेमी, अल्प पुत्र, कल्याणकारी एवं बलवान।

षष्ठ भाव में–शत्रु नाशक, ननिहाल से मान भंग, पशु–धन से सुखी, निरन्तर धन पाने वाला, व्याधि रहित।

सप्तम भाव में–निरन्तर यात्रा की चिन्ता, शत्रुओं के कारण धन–नाश, वृश्चिक का हो तो सदैव लाभ, स्त्री चिन्ता से चिन्तित।

अष्टम भाव में–गुदा में रोग, कन्या, वृश्चिक, मिथुन, मेष। वृष का हो बहुत धन प्राप्त करता है।

नवम् भाव में–क्लेश दूर होते हैं, पुत्रेच्छुक, म्लेच्छ के सहयोग से भाग्य वृद्धि, बाहु रोग, तपदान में श्रद्धा नहीं होती।

दशम भाव में–पितृ सुख हीन, खोटा भाग्य, शत्रु नाशक, रोगी, वाहन से पीड़ा, वायु विकार। कन्या का हो तो सुख–दुःख दोनों प्राप्त।

एकादश भाव में–सुन्दर बोलने वाला, विद्यावान, दर्शनीय रूप, श्रेष्ठ भोग वाला, तेजस्वी, श्रेष्ठ वस्त्र, गुदा रोगी, खोटी सन्तान।

द्वादश भाव में–पांवों–नेत्रों में पीड़ा, अत्यधिक खर्चीला, शत्रु नाशक, चित्त में अशान्ति, वस्ति व गुदा में रोग।

द्वादश भाव राशि फल

लग्न में **मेष** राशि हो तो जातक गौरवर्ण, कफ–प्रकृति, क्रोधी, कृतघ्न, मंद बुद्धि, स्थिरमना, स्त्री–नौकरों से पराजित होता है। लग्न **वृष** हो तो मानसिक रोगी, स्वजनों से अपमानित, मित्र वियोगी, कलह, दुःख, शस्त्र घात, धन हानि से कष्ट होता है। **मिथुन** लग्न हो तो गौर वर्ण, स्त्री आसक्त, राज पीड़ित, दूत कार्य करने वाला, प्रसन्न चित्त, प्रियवादी, नम्र, सुन्दर केश, संगीतज्ञ होता है। **कर्क** लग्न होने पर गौरांग, पित्त–प्रकृति, दानी, प्रौढ़, जल–क्रीड़ा प्रेमी, बुद्धिमान, पवित्र, क्षमाशील, धर्मात्मा, नौकरों से सुसेवित होता है। **सिंह** लग्न में पाण्डु वर्ण, पित्त–वात, प्रकृति, पीड़ित अंग, मांस प्रेमी, रम्य रसिक, तीक्ष्ण स्वभाव, वीर, प्रगल्भ, भ्रमणशील होगा। **कन्या** राशि लग्न में हो तो कफ़ पित्त–प्रकृति, सुशील, स्त्रीवत् स्वभाव, धनी स्त्री के वशीभूत, डरपोक, मायावी, काम पीड़ित अंग, **तुला** हो तो कफ़ प्रकृति, सत्यवादी, परस्त्री प्रेमी, राजमान्य, देवाराधक, **वृश्चिक** लग्न होने पर महाक्रोधी, वृद्ध जैसा दिखाई दे, राजमान्य, गुणवान, शास्त्र में रुचि, शत्रु–हन्ता, धनु लग्न में राज प्रिय, कार्य कुशल, ब्राह्मण व देवताओं का भक्त, अश्वारोहण प्रिय, घुड़जांघ होता है। **मकर** लग्न में जल प्रेमी, तीव्र स्वभाव, डरपोक, पापाचारी, धूर्त, कफ़–वात पीड़ित, लंब काय, ठग होता है। **कुम्भ** लग्न में स्थिर स्वभाव, वात प्रकृति, जल क्रीड़ा प्रेमी, छोटा शरीर, स्त्रियों को प्रिय, शिष्टाचार कुशल, लोकप्रिय व **मीन** लग्न में हो तो जल प्रेमी, विनम्र, सूरत प्रिय, पंडित, कृशकाय, अतिक्रोधी, पित्त प्रकृति, कीर्तिवान होता है।

धन भावगत राशि फल

जातक की कुण्डली में द्वितीय भाव में **मेष** राशि हो तो धार्मिक कार्यकर्ता, नीतिपूर्वक धनोपार्जन करने वाला, नीति, निपुण सन्तान, धन, बाहनादि से सम्पन्न व विद्वान होते हैं। **वृष** राशि होने पर कृषि कर्म से

धनोपार्जन करने वाला, पशु–लाभ युक्त, वस्त्राभूषण व रत्नादिक लाभ प्राप्त करता है। द्वितीय भव में **मिथुन** राशि होने पर जातक को स्त्रियों की सहायता से सोना, चांदी, पशु धन प्राप्त होता है। वह साधु संगति में प्रीति रखता है। **कर्क** राशि होने पर लकड़ी के व्यवसाय से लाभ, जल में डूबने का भय, नीतिपूर्वक कमाए धन का उपयोग मित्रगण करते हैं, पुत्र उसका भोग करते हैं। **सिंह** राशि द्वितीय भाव में होने पर वनोत्पन्न वस्तुओं, वन्य जन्तुओं, स्व पराक्रम से लाभ, धनोपार्जन करता है और धन परोपकार में खर्च होता है। **कन्या** राशि रहने पर राजा से स्वर्ण, चांदी, हीरा, मोती, घोड़े का लाभ होता है। तुला राशि होने पर जातक पुण्यात्मा, पुण्य प्रताप से धन कमाता है। पत्थर, चूना, मिट्टी, खान, आज के व्यापार से खूब लाभ होता है। द्वितीय भाव में **वृश्चिक** राशि हो तो जातक स्वधर्म में तत्पर, स्त्री प्रेमी, विचित्र विनोद पूर्ण बातें करने वाला, देव ब्राह्मण भक्त होता है। **धनु** राशि होने पर स्थिर कार्यों द्वारा पशु, चतुष्पद, रसोद्भूत वस्तुएं लाभ देती हैं। यश प्राप्त करता है। धर्म–कर्म हेतु धन संग्रह करता है। **मकर** होने पर प्रपंची, राजसेवा, कृषि, विदेशाटन से धन संग्रह करता है। **कुम्भ** होने पर फल–फूल–जलोत्पन्न वस्तु से धन प्राप्त कर साधुजनों को खिलाने वाला व परोपकारी होता है। द्वितीय भाव में **मीन** राशि होने पर व्रतोपवास विद्या के प्रभाव से भूमिगत द्रव्य की खोज से व माता–पिता द्वारा उपार्जित धन प्राप्त करता है।

तृतीय भावगत राशि फल

यदि तृतीय भाव में **मेष** राशि हो तो ब्राह्मण हितैषी, परोपकारी, श्रवण कर्ता (कथा वार्ता) पवित्र, अनेक विद्याओं का ज्ञाता व राज मान्य होता है। **वृष** होने पर राजा का मित्र, प्रतापी, दानी, यशस्वी, पंडित, कवि, ब्राह्मण भक्त होता है। **मिथुन** होने पर उत्तम वाहन युक्त, स्त्रियों का प्रिय, सत्यवादी, कुलीन, उदारमना, लोक पूज्य होगा। **कर्क** राशि होने पर व्यापारियों का मित्र, कृषिकर्मी, धर्मात्मा, सुशील, लोकप्रिय होता है। **सिंह** राशि तृतीय भाव में होने पर जातक शूर, कुत्सित मित्रों वाला, धन लोलुप, हिंसक, पाप कथा प्रेमी, कठोर वाणी युक्त, गौरवशाली, घमण्डी होता है। **कन्या** हो तो शास्त्रज्ञ, सुशील, मित्र हितैषी, मित्र सहायता से धन संग्रह करने वाला, ब्राह्मण प्रिय, देव–गुरु भक्त होता है। **तुला** होने पर पापी जनों का मित्र, चंचल चित्त वृत्ति, छोटे बच्चों से भी हंसी–मजाक करता है।

वृश्चिक हो तो पापियों व दरिद्रों से मित्रता करने वाला, कृतध्न, कलहकारी, अव्यवस्थित, लोक विरुद्ध आचरण करने वाला होता है। **धनु** हो तो राज-मित्रता युक्त, वीर, राजसेवक, आकर्षक वाणी बोलने वाला, धर्मयुक्त आचरण, प्रसन्न, दयालु और युद्ध कुशल होता है। **मकर** राशि होने पर प्रसन्न मुख, पुत्रवान, देवगुरु भक्त, महाधनी, अद्भुत विद्वान होता है। **कुम्भ** हो तो जातक व्रती, यशस्वी, क्षमाशील, सत्यवादी, सुशील संगीत प्रेमी, दुष्टों से मित्रता रखने वाला तथा तृतीय भाव में **मीन** राशि होने पर जातक धनवान, पुत्रवान, पुण्यात्मा, अतिथि सेवक व सर्वप्रिय होता है।

सुख भाव फल

चतुर्थ भाव में **मेष** राशि हो तो जातक पशुओं, स्त्रियों, धन, अन्न, भोग स्व उपार्जित धन से सुख भोगता है। **वृष** राशि होने पर सम्मानित, हर एक से सुखी, राज्य से, पराक्रम से सुख पाता है। **मिथुन** हो तो स्त्रियों से, जल-क्रीड़ा, वन, भ्रमण, पुष्प, वस्त्रादि का सुख पाता है। **कर्क** हो तो सुन्दर, भाग्यशील, सुशील औरतों का प्रिय, सर्वगुण युक्त विद्वान, सर्वप्रिय होता है। **सिंह** हो तो महाक्रोधी दुःखी रहता है। वह कन्या सन्ततिवान, दरिद्रों के साथ रहने वाला, शीलहीन होता है। **कन्या** हो तो धन पाकर दुष्टों का साथी, चुगलखोरों का साथी, चोरी, मारण, मोहनादि क्रियाओं के कारण दुःख पाता है। **तुला** राशि हो तो सरल स्वभाव, सत्कर्मी, कुशल, विद्या विनीत, सदा सुखी, प्रसन्न चित्त, धनी होता है। चतुर्थ भाव में **वृश्चिक** राशि हो तो जातक विपत्ति युक्त, तीक्ष्ण स्वभाव का, दूसरों से भयभीत, अनेक लोगों का सेवक, शत्रुओं द्वारा गर्वहीन किया हुआ, कार्य कुशल पर बुद्धिमानों से दूर रहता है। **धनु** राशि होने पर युद्ध कार्य, युद्ध चिन्तन, घुड़ सेवा, स्व प्रयासों से सुखी होता है। **मकर** राशि हो तो सदैव जल-विहार, वनोपवन में भ्रमण, मित्रों के उपचार, सुरत क्रिया से सुख पाता है। **कुम्भ** हो तो स्त्रियों के आश्रय से, मिष्टान्न, पान, फल, शाकादि से, उत्साह वर्धक कार्यों की चतुराई से सुख पाता है। चतुर्थ भावस्थ **मीन** राशि हो तो जातक सदैव सुखी व बलाश्रयी, देवताओं की कृपा से वस्त्र व ऐश्वर्य युक्त, सुखी, मंद गति से चलने वाला होता है।

पंचम भाव फल

यदि पंचम भाव में **मेष** राशि हो तो मित्र–पुत्र–प्रियजन व देव सेवा से सुख मिलता है साथ ही पाप सेवा में फंसकर व्याकुल होता है। **वृष** राशि होने पर सुन्दरी, सौभाग्यशाली, लावण्यमयी, पति परायण पर सन्तानहीन कन्या प्राप्त होती है। **मिथुन** होने पर जातक को प्रसन्न, सुखी, गुणी, सुशील बलवान सन्तान प्राप्त होती है। पंचम भावस्थ **कर्क** राशि होने पर जातक के पुत्र ख्याति प्राप्त, पिता को सुखदायक, यशस्वी, उदार, धनी और विनम्र होते हैं। **सिंह** हो तो जातक के पुत्र क्रूर, हिंसक स्वभाव के, सुन्दर नेत्र वाले, मत्स्य, मांस प्रिय, कन्या सन्तति वाले, तीव्र विदेशवासी और क्षुधा से आतुर होते हैं। **कन्या** राशि हो तो कन्या सन्तान अधिक होती है। वे भी पुत्रहीना, पतिव्रता, कार्य प्रवीण, निष्पाप, वस्त्राभूषण प्रिय होती हैं। पंचम भाव में **तुला** राशि हो तो पुत्रादि सुशील, सुन्दर, स्वकार्य दक्ष, सुन्दर नेत्र वाले होते हैं। **वृश्चिक** राशि हो तो जातक के पुत्र भाग्यवान, सुशील दोष रहित, विनीत, स्वधर्म तत्पर होंगे। **धनु** राशि यदि पंचम भावस्थ हो तो जातक के पुत्र वाहन सम्पन्न, शस्त्र विद्या निपुण, शत्रु–हन्ता, सेवा कार्य के जानकार, राज्य सम्मानित, सर्वगुणी होंगे। **मकर** हो तो सन्तान पापी, कुरूप, नपुंसक, दुष्ट, प्रभाव रहित, निष्ठुर, प्रेम रहित व **कुम्भ** राशि हो तो जातक के पुत्र स्थिर स्वभाव वाले, सत्यान्वेषी, ख्याति प्राप्त, कष्ट सहिष्णु, पुण्यात्मा, यशस्वी होंगे। पंचम भाव में यदि **मीन** राशि हो तो जातक के पुत्र सुन्दर, पितृ भक्त परन्तु यदि उसमें पाप ग्रह हो तो वे रोगी, कुरूप व स्त्री युक्त होंगे।

रिपु भाव गत राशिफल

यदि छठे भाव में **मेष** राशि हो तो जातक हर एक से शत्रुता मोल लिए रहता है। **वृष** राशि हो तो जातक अपनी सन्तान, मित्र, स्त्री, बन्धु से ही शत्रुता रखता है। **मिथुन** राशि होने पर अपनी पत्नी से, पापी जनों से, वैश्यों व नीच जनों से शत्रुता रखता है। **कर्क** होने पर अपने पुत्र के कारण तथा अन्यान्य के अनुरोध के कारण ब्राह्मण, राजा, विशिष्ट लोगों से शत्रुता होती है। **सिंह** राशि षष्ठ भाव में होने पर सन्तान व बन्धु जनों से शत्रुता होती है। परस्त्री के संग से सारी सम्पत्ति नष्ट हो जाती है। **कन्या** राशि होने पर किसी से शत्रुता नहीं होती पर दुराचारिणी, नीच या वेश्या के कारण धन नष्ट होता है। **तुला** राशि होने पर धन को गाड़कर रखता है। धर्म–कर्म, साधु–सेवा या परोपकार में धन खर्च करता है। इसी से घर वाले उनसे शत्रुता रखते

हैं। **वृश्चिक** राशि षष्ठ भाव में होने पर चुगलखोर, सर्प, बिच्छुओं, सरीसृपों, व्याघ्र, सिंह व चोरों से भय होता है, समाज के प्रतिष्ठित व विलासी लोगों से शत्रुता होती है। **धनु** राशि होने पर शस्त्र–धारियों से, रागी जनों से, हाथी, घोड़े तथा पुण्यात्मा लोगों से वैर–विरोध रहता है। **मकर** राशि होने पर धन के ही कारण अपने हितैषी लोगों से शत्रुता होती है। किसी सज्जन की सहायता करने के कारण भी घर के लोगों से शत्रुता हो जाती है। **कुम्भ** होने पर राजा से, जल जीव से, बड़े लोगों से शत्रुता व बावड़ी–तालाब आदि से भय लगता है। षष्ठ भाव में **मीन** राशि होने पर अपने स्वार्थ के कारण पुत्र, स्त्री, अन्य हितैषी जनों से शत्रुता होती है।

जाया भाव गत राशि फल

सप्तम भाव में **मेष** राशि होने पर स्त्री, क्रूर, दुष्ट, पापी, कठोर, निर्दयी, धन, लोलुप होती है। **वृष** राशि हो तो पत्नी सुन्दर, मधुरभाषी, गृह कार्य में दक्ष, शान्त चित्त वृत्ति, पतिव्रता, कलाविद्, देव–ब्राह्मण की भक्त होती है। **मिथुन** राशि हो तो स्त्री धनवती, सदाचारिणी, रूपवती, सर्वगुण सम्पन्न, कोमल होती हैं। **कर्क** राशि हो तो स्त्री सुन्दर, सौभाग्यवती, प्रसन्न, दयालु, लड़ाई–झगड़े से दूर, पति आज्ञाकारिणी होती है। **सिंह** होने पर स्त्री तीव्र स्वभाव वाली, क्रूर, दुष्ट, श्रृंगार विहीना, धन लोलुप, थोड़ा कार्य करने वाली, दुर्बल होती है। सप्तम भाव में **कन्या** राशि होने पर जातक की स्त्री सुन्दर, कन्या सन्तति युक्ता, सौभाग्यवती, भोगी, धनवती, प्रियवादिनी, प्रगल्भा व कार्य कुशल होती है। **तुला** राशि हो तो स्त्री गुण–गौरव मण्डिता, पुण्य कर्म करने वाली, धर्मपरायण, गुणी, पुत्रवती, क्षमाशीला, विनम्र होती है। **वृश्चिक** राशि हो तो अनेक कलाओं की जानकार, कृपण, सुशिक्षिता होकर भी विनय रहित, दुर्भाग्यशाली होती है। **धनु** राशि हो तो स्त्री दुष्टा, कुशीला, निर्लज्ज, पर दोष देखने वाली, झगड़ालू, दंभी, ईर्ष्यालु होती है। **मकर** हो तो स्त्री घमण्डी, अधम, निर्लज्ज, कृपण, दुष्टा, दुःखिता होती है। सप्तम भाव में **कुम्भ** राशि हो तो स्त्री दुष्ट स्वभाव वाली, देव–ब्राह्मण भक्त, सदैव प्रसन्न, दया–धर्म की पालक होती है तथा **मीन** राशि होने पर जातक की स्त्री विकार युक्त, पति से भिन्न मत रखने वाली, कुत्सित पुत्रों वाली, स्वधर्म–प्रेमी पर विनय रहित, धन पाने की इच्छुक होती है।

रन्ध्र भावगत राशि फल

अष्टम भाव में **मेष** राशि हो तो जातक रोग युक्त, परदेशवासी, बीती बातों को याद कर दुःखी होने वाला, धनी पर दुःखी होता है। अष्टमस्थ **वृष** राशि होने पर कफ़ विकार से, अधिक भोजन करने से, पशु प्रहार से, रात में दुष्टों का सम्पर्क करने से, अपने घर में ही मृत्यु को प्राप्त होता है। **मिथुन** राशि होने से जातक की मृत्यु शत्रु के संग लोभ, रस पदार्थ के सेवन से, गुदा रोग, प्रमेह के कारण होती है। **कर्क** राशि हो तो मृत्यु पानी में डूब कर, कीड़े के काटने, परदेश में अन्य मनुष्य के हाथों होती है! यदि **सिंह** राशि हो तो मृत्यु विषैले जन्तु के काटने से, सर्प दंश से, चोर द्वारा या पशु द्वारा होती है। **कन्या** में होने पर मृत्यु अधिक भोग विलास के कारण, मनमानी करने से, स्त्री की हिंसा के कारण, विषैला भोजन करने से या स्त्री हेतु से घर में ही होती है। **तुला** होने पर मृत्यु किसी मनुष्य द्वारा, अधिक उपवास के कारण, रात में, शत्रु क्रोध या सन्तापवश होती है। अष्टम भाव में **वृश्चिक** राशि होने पर रक्त विकार से, कीड़े से या विष के कारण अपने ही स्थान में होती है। **धनु** राशि होने पर शस्त्रघात से, गुप्त रोग से, पशु से या डूबने से होती है। **मकर** राशि होने पर जातक विद्वान, मानी, गुणी, कामी, शूरवीर, विशाल वक्षस्थल वाला शास्त्रज्ञ कला निपुण होता है। **कुम्भ** होने पर सारी सम्पत्ति अग्नि द्वारा नष्ट हो जाती है। अनेक व्रण, वायु विकार, परिश्रम की अधिकता से या पर घर में मृत्यु होती है। अष्टम भाव में **मीन** राशि होने पर जातक की मृत्यु अतिसार से, पित्त, ज्वर या जल, रक्त विकार या शस्त्रघात से होती है।

धर्म भावगत राशि फल

नवम भाव में **मेष** राशि हो तो जातक पशु पालक, पशु पर दयावान, पशुदानी, धार्मिक होता है। यदि **वृष** राशि हो तो स्वोपार्जित धन से, दान-अन्नदान, वस्त्रदान, आभूषण दान, गोदान करता है। **मिथुन** राशि हो तो सद्भावी, धर्माचरण करने वाला, अतिथि सत्कार, प्रेमी, ब्राह्मणों को भोजन कराने वाला, दीन, हितैषी, व्रतोपवासी, तीर्थाटन, तपस्वी होता है। **कर्क** राशि नवम भाव में हो तो व्रतोपवासी, तीर्थाटन प्रेमी व तपस्वी होता है। **सिंह** राशि हो तो जातक स्वधर्म त्याग परधर्म अपनाता है। व्यर्थ तीर्थों में घूमने वाला, स्वधर्म रहित, विनयहीन होता है। **कन्या** राशि हो तो वह

जातक स्त्रियोचित कार्य करने वाला, स्त्री–धर्म पालक, भक्तिहीन, पाखंडी व अन्य मतावलम्बी होता है। **तुला** हो तो स्वधर्म पालक, देव–ब्राह्मणों का सत्कार करने वाला, लोकानुराग से अद्भुत धर्म कर्ता होता है। **वृश्चिक** राशि हो तो पाखंडी, क्लेश कारक, यदा–कदा अन्यान्य का पालक फिर भी धर्महीन होता है। **धनु** राशि नवम भाव में हो तो ब्राह्मण व देवताओं का तर्पण, पूजनादि कर्ता, स्वेच्छानुकूल व शास्त्र–विहित धर्म पालक, तीनों लोक में प्रसिद्ध, धर्म करने वाला होता है। **मकर** राशि हो तो अपने पराभव को बढ़ाने के लिए अधर्म करता है, बाद में अत्यधिक विडम्बना के कारण विरक्त होकर कुल धर्म का आश्रय लेता है। **कुम्भ** राशि हो तो देव भक्ति, वृक्षारोपण, उपवन, कुआं, तालाब के निर्माण कर्ता, धार्मिक, कार्यकर्ता होता है तथा नवम भाव में **मीन** राशि हो तो जातक सज्जनों की सेवा, लोकसेवार्थ निर्माण कार्यकर्ता, तीर्थाटन, धार्मिक कार्य करता है।

कर्म भावगत राशि फल

दशम भाव में **मेष** राशि हो तो जातक विनयहीन, चुगलखोर, साधु द्वारा निन्दित कर्म करता है। **वृष** हो तो साधु उपकार में धन खर्च करने वाला, देव–गुरु ब्राह्मण अतिथि का सत्कार करने वाला, ज्ञानार्जन में खर्च करने वाला, साधु के प्रिय कार्य करने वाला होता है। **मिथुन** हो तो गुरु आदेशानुसार कार्य करने वाला, लोगों को प्रिय व यशदायी कार्यकर्ता तथा कृषि कर्म करता है। **कर्क** राशि हो तो बाग–बगीचा, कुआं तालाब, प्याऊ, बनवाने वाला, उपकार निमित्त निष्पाप कर्म करता है। दशम भाव में **सिंह** राशि हो तो रौद्र, पाप युक्त, विकृत, पराक्रम पूर्व, हिंसात्मक व निन्दित क्रूर कर्म करने वाला होता है। **कन्या** राशि हो तो मूर्खतापूर्ण कार्य करने वाला, स्त्री व राजा समक्ष अपमानित, अल्पकामी, निर्धन होता है। **तुला** राशि हो तो यत्न पूर्वक व्यवसाय करने वाला, धर्म व नीति सम्मत धनोपार्जन करने वाला, सज्जनों को प्रिय, पराये धन की वृद्धि करने वाला होता है। **वृश्चिक** राशि हो तो शास्त्र व लोक सम्मत कार्य करने वाला, गुरु व ब्राह्मणों के हित में खर्च करने वाला, निर्दयता व अनीतिपूर्ण कार्य करता है। **धनु** हो तो जातक सभी कार्यों में दक्ष, नित्य लाभान्वित, परोपकारी राजा का कार्यकर्ता, भूमि व यश सम्पन्न होता है। **मकर** हो तो उग्र, प्रतापी, कर्म प्रधान, दयारहित, बन्धु युक्त, धर्महीन, दुष्टों का प्रिय होता है। **कुम्भ** राशि हो तो कार्य कुशल, ठग, पाखंडी, लोभ वश अविश्वसनीय, जन विरोधी

आचरण करता है। दशम भावस्थ **मीन** राशि हो तो कुलानुरूप धर्म निहित धर्म–कर्म करने वाला, कीर्तिमान, आदर युक्त, ब्राह्मणों का सत्कार करने वाला, स्थिर मना होता है।

एकादश भावस्थ राशि फल

लाभ भाव में **मेष** राशि हो तो जातक को पशुओं से, राज सेवा से, देशान्तर से विशेष लाभ होता है। **वृष** हो तो स्त्रियों व साधुजनों से लाभ होता है। ब्याज व गऊ सेवा से लाभ होता है। **मिथुन** राशि हो तो सभी कार्यों से लाभ, स्त्रियों का प्रिय, उत्तम भोजन–पान करने वाला, पंडितों में प्रसिद्ध होता है। **कर्क** हो तो नौकरी या कृषि से लाभ, बाद में शास्त्र व साधुजनों से लाभ होता है। **सिंह** राशि हो तो जातक निन्द्य कर्म, जीव–जन्तुओं की हिंसा, व्यायाम, देशान्तर यात्रा से लाभ होता है। **कन्या** राशि एकादश भाव में हो तो, अनेक प्रकार से लाभ होता है। शास्त्र पुराणादि के अभ्यास, विनय व विवेक के कारण पूज्य व प्रतिष्ठित होता है। **तुला** राशि हो तो अनेक प्रकार के व्यवसायों से लाभ, साधु सेवक, विनम्रता के कारण लोक में प्रशंसित व सुख भागी होता है। **वृश्चिक** राशि हो तो छल, कपट, मिथ्या भाषण, चुगली कर लाभ पाता है। **धनु** राशि हो तो जातक राजा के साथ विलास करने वाला, साधु सेवी, पुरुषार्थ से लाभ पाता है। **मकर** हो तो नौका, जहाज द्वारा, विदेशाटन, राज्य सेवा से धन लाभ पाता है और शीघ्र ही उसे खर्च भी कर देता है। **कुम्भ** हो तो कुत्सित कर्म, ब्याज, धैर्य, पराक्रम, विद्या से लाभ पाता है। एकादश भाव में यदि **मीन** राशि हो तो अनेक प्रकार से, राज्य प्रदत्त सम्मान, कथा–पुराणों से, मित्रों से, विनय से लाभ पाता है।

व्यय भावगत राशि फल

बारहवें भाव में **मेष** राशि हो तो भोजन–वस्त्राभूषण से सुखी, पशु पालन में उपार्जित धन खर्च करता है। **वृष** राशि हो तो अनेक वस्त्रों, स्त्रियों के संयोग, प्रेम लीला में धन खर्च करता है। **मिथुन** राशि हो तो स्त्रियों के साथ की गई काम केलि, नौकरों में, दुष्ट जनों के साथ, कुत्सित कार्यों में धन खर्च करता है। **कर्क** राशि हो तो देव ब्राह्मण की आराधना में, यज्ञ में, साधु सेवा में धन खर्च करता है। **सिंह** हो तो जातक तमोगुणी, स्वरूप जन्म व क्रिया से निन्दनीय होता है। धन राज्य या चोरी में जाता है। **कन्या** राशि

व्यय भाव में हो तो जातक स्त्रियों के लिए, विवाहादिक मांगलिक कार्यों, साधु संगति में धन खर्च करता है। **तुला** राशि हो तो जातक देवता, ब्राह्मण, बन्धु जन, वेद-शास्त्र कार्यों में खर्च करता है। नियम व्रत पालन, श्रेष्ठ जनों की संगति से प्रसिद्धि प्राप्त होती है। **वृश्चिक** हो तो धन अनेक विडम्बनाओं से दान में, कपटी मित्रों में, दुर्बुद्धि, चोरी में खर्च होता है। संसार में उसकी निंदा होती है। **धनु** हो तो पापी जनों की संगति में पड़कर, अन्यान्य की ठगने में, अधिकारियों की खुशामद में, कृषि कार्य में, पराधीनता में खर्च होता है। **मकर** राशि हो तो निंद्य चीजों के भोजन में, मनुष्य सत्कार में खर्च होता है। जातक थोड़ी कृषि करने वाला, धनहीन, लोक निन्दित होता है। **कुम्भ** हो तो धन, देवता, ब्राह्मण, तपस्वी, मुकद्दमे, विदेशाटन में खर्च होता है। द्वादश भाव में **मीन** राशि हो तो धन नौकादि बनाने में, वादापवाद में, विदेश यात्रा में खर्च होता है।

भावेश फल

लग्नेश, लग्न में हो तो जातक निरोग, स्वस्थ दीर्घायु, शक्तिमान, बलिष्ठ, राजा या भूमिपति होता है। **द्वितीय भाव** में हो तो धनवान, पूर्णायु, स्थलकार्य, महाबलशाली, राजा तुल्य ऐश्वर्यशाली, धर्मात्मा होता है। **तृतीय भाव** में उत्तम बन्धु और मित्र युक्त, धर्मात्मा, दानवीर, शूर, बलवान होता है। **चतुर्थ भाव** में राजा का प्रिय, दीर्घायु, पिता से धन पैतृक रुप में पाने वाला, मातृ-पितृ भक्त, अधिक भोजन करने वाला होगा। लग्नेश **पंचम भाव** में हो तो सुन्दर, श्रेष्ठ पुत्र युक्त, दानी, राजा, ख्याति प्राप्त, दीर्घायु सुकर्मी होता है। **षष्ठ भाव** में हो तो निरोग, भूमि का स्वामी, बलवान, शत्रुओं पर विजयी, सत्कर्म करने वाला, धनी होता है तथा **सप्तम भाव** में हो तो तेजस्वी, शोकातुर, पत्नी सुशील, सुन्दर तेजस्वी होती है। **अष्टम भाव** में हो तो कृपण, धन संग्रही, दीर्घायु, लग्नेश पाप ग्रह हो तो क्रूर और शुभ ग्रह हो तो सौम्य स्वभाव होता है। **नवम् भाव** में हो तो कई भाइयों वाला, पुण्यात्मा, मित्र हितैषी, ज्ञानी, सुशील, ख्याति प्राप्त होता है। **दशम भाव** हो तो राज्य पक्ष से लाभान्वित, पंडित, सुशील, देव-गुरु, माता-पिता का भक्त, प्रसिद्ध होता है। **ग्यारहवें भाव** में हो तो सुखी, चिरंजीवी पुत्रवान, प्रसिद्ध, तेजस्वी, बलवान, वाहन युक्त होता है तथा **द्वादश भावस्थ** हो तो सुकर्मी, परदेशी, नीच बन्धुओं में माननीय, परदेशवाली और दूसरों का दिया अन्न खाने वाला होता है।

धनेश फल–द्वितीयेश यदि **लग्नस्थ** हो तो जातक कृपण, व्यवसाय प्रेमी, सत्कर्म इच्छुक, धनी, पूंजीपतियों में प्रसिद्ध, विपुल सुख भोगी होता है। धनेश, धनस्थ होने पर व्यवसाय द्वारा लाभान्वित, सत्य को छुपाने वाला, नीच व बांध बनाने वाला, उद्वेगी होगा। **तृतीय भाव** में होने पर पाप ग्रह हो तो भ्रातृ प्रेमी और शुभ ग्रह भ्रातृ द्वेषी व मंगल हो तो चोर बनाता ही है। **सुखस्थ** होने पर पितृ धन का भोगी, दया सागर, सत्यवादी व पूर्णायु होता है पर धनेश पाप ग्रह होकर **चतुर्थ** में हो तो मृत्यु का कारण हो जाता है। **पंचम भाव** में पुत्र सुख युक्त, कठिन कर्मण्य, कृपण व दुःखी होता है। **षष्ठ भाव** में हो तो धन का खूब संग्रह करने वाला व शत्रुजयी पर धनेश शुभ ग्रह हो तो भूमि लाभ पर पाप ग्रह निर्धन करता है। **सप्तम भाव** में होने पर शुभ हो तो स्त्री सुशीला, विलास प्रिय, भाग्यवान, धनेच्छुक व पाप गृही हो तो स्त्री बांझ होती है। धनेश **अष्टम भाव** में होने पर हर कार्य में असफल, आत्मघाती, प्राप्त सुख का उपयोग करने वाला, विलासी, पर धन हारी व भाग्यवादी होता है। द्वितीयेश **नवम् भाव** में हो तो, शुभ ग्रह होने पर दानी, स्ववचन परिपालक और पाप ग्रह होने पर दरिद्र, भोगवादी, विडम्बना युक्त होता है। **दशमस्थ** हो तो राज्य मान्य, राज से धनोपार्जन कर्ता, शुभ ग्रह की राशि में होकर दशम हो तो माता–पिता का भला होता हैं **एकादश** में हाने पर ज्योतिष से सम्पत्ति उपार्जित करने वाला, ख्यात, अनेकों का पालन हार व द्वादशस्थ पापी, ग्रह कृपण, निर्धन व शुभ ग्रह, लाभ–हानि समानरूपेण देता है।

धनेश फल–द्वितीयेश यदि **लग्नस्थ** हो तो जातक कृपण, व्यवसाय प्रेमी, सत्कर्म इच्छुक, धनी, पूंजीपतियों में प्रसिद्ध, विपुल सुख भोगी होता है। धनेश, **धनस्थ** होने पर व्यवसाय द्वारा लाभान्वित, सत्य को छुपाने वाला, नीच व बांध बनाने वाला, उद्वेगी होगा। **तृतीय भाव** में होने पर पाप ग्रह हो तो भ्रातृ प्रेमी और शुभ ग्रह भ्रातृ द्वेषी व मंगल हो तो चोर बनता है। **सुखस्थ** होने पर पितृ धन का भोगी, दया सागर, सत्यवादी व पूर्णायु होता है पर धनेश पाप ग्रह होकर **चतुर्थ** में हो तो मृत्यु का कारण हो जाता है। पंचम भाव में पुत्र सुख युक्त, कठिन कर्मण्य, कृपण व दुःखी होता है। **षष्ठ भाव** में हो तो धन का खूब संग्रह करने वाला व शत्रुजयी पर धनेश शुभ ग्रह हो तो भूमि लाभ पर पाप ग्रह निर्धन करता है। **सप्तम भाव** में होने पर शुभ हो तो स्त्री सुशीला, विलास प्रिय, भाग्यवान, धनेच्छुक व पाप गृही हो तो स्त्री बांझ होती है। धनेश **अष्टम भाव** में होने पर कार्य में असफल,

आत्मघाती, प्राप्त सुख का उपयोग करने वाला, विलासी पर धन हारी व भाग्यवादी होता है। द्वितीयेश **नवम भाव** में हो तो, शुभ ग्रह होने पर दानी, स्ववचन परिपालक और पाप ग्रह होने पर दरिद्र, भोगवादी, विडम्बना युक्त होता है। **दशमस्थ** हो तो राज्य मान्य, राज से धनोपार्जन कर्ता, शुभ ग्रह की राशि में होकर दशम हो तो माता–पिता का भला होता है। एकादश में होने पर ज्योतिष से सम्पति उपार्जित करने वाला, ख्यात, अनेकों का पालन हार व द्वादशस्थ पापी, ग्रह कृपण, निर्धन व शुभ ग्रह, लाभ–हानि समानरुपेण देता है।

सहजेश फल

तृतीय भाव का स्वामी यदि **लग्नस्थ** हो तो जातक बकवासी, धूर्त, चालाक, लम्पट, स्व परिवार में भेद रखने वाला, नौकरी युक्त, कुमित्री, नकली वस्तु निर्माण कर्ता होगा। **द्वितीयस्थ** हो तो व पाप ग्रह होने पर भिक्षुक, निर्धन, अल्पायु, बंधु विरोधी व शुभ ग्रह धनवान बनाता है। **तृतीय भाव** में होने पर बलवान, श्रेष्ठ मित्र युक्त, देव–गुरु, भक्त व राज्य से धनो–पार्जन करता है **चतुर्थ भाव** होने पर पिता, बंधु, सहोदरों से सुखी, मातृ शत्रु, पितृ धन रक्षक होगा। **पंचमस्थ** होने पर पुत्र, बांधव, भाइयों से पालित, दीर्घायु, परोपकारी होता है। **षष्ठ भाव** में होने पर बंधु–विरोधी, नेत्र रोगी, भूमि उपार्जित करने वाला, यदा–कदा रोग पीड़ित होता है। **सप्तम भाव** में होने पर व शुभ ग्रह पर जातक की स्त्री सौभाग्यवती व सुशील तथा क्रूर ग्रह हो तो वह पति को त्याग कर देवर संग रहती है। **तृतीयेश** यदि **अष्टम भाव** में हो तो शुभ ग्रह हो तो सगा भाई–बहन नहीं होता व पाप ग्रह हो तो जातक अंगहीन या अल्पायु होता है। **नवम भाव** होने पर एवं पाप ग्रह हो तो बन्धुहीन व शुभ ग्रह हो तो सद्बंधु युक्त, पुण्यात्मा, भाई बहनों का प्रेमी होता है। **दशम भाव** में हो तो जातक राजमान्य, माता–पिता–बंधु जनों से प्रेम करने वाला, सद्बुद्धि युक्त होता है। **एकादशस्थ** हो तो श्रेष्ठ बंधु–बांधव युक्त, राजा का स्नेह पात्र, भोगी तथा **द्वादश भावस्थ** होने पर मित्र विरोधी भाइयों को सन्तापदायक, परदेशवासी होगा।

सुखेश फल

यदि **चतुर्थेश** अर्थात् **सुखेश** लग्न में हो तो जातक पितृ प्रेमी, पितृ भक्त, कुल दीपक, प्रसिद्ध होता है। **द्वितीय भाव** में हो तो पाप ग्रह होने

पर पितृ विरोधी, शुभ ग्रह पितृ भक्त बनाता है। पिता उनके उपार्जित धन का भोग करता है। **तृतीय भाव** में होने पर माता–पिता से भेद रखने वाला, पिता से कलह, पितृ बंधुओं के लिए घातक होता है। **चतुर्थेश, चतुर्थ भाव** में होने पर जातक का पिता राज्य सम्मानित होता है। जातक विख्यात, पितार्थ लाभप्रद, धर्मात्मा, सुखी, अतिधनी होता है। **पंचम** हो तो पितृ धन का भोगी, दीर्घायु, स्व कर्म से प्रसिद्ध, सन्ततिवान, पुत्र पालक होता है। **षष्ठ** हो तो पितृ धन का वह जातक नाश करता है। शुभ ग्रह होने पर धन संचयी, पाप ग्रह हो तो पिता को दोष लगता है। **सप्तम** भावस्थ होने पर शुभ ग्रह पत्नी श्वसुर की सेवा करने वाला व पाप ग्रह पिता को कष्ट अर्थात् श्वसुर को कष्ट देती है। यदि मंगल या शुक्र हो तो जातक की पत्नी कुलीन होती है। **सुखेश**, **अष्टम भाव** में हो तो जातक क्रूर, रोगी, दरिद्र, कुकर्मी, मृत्युप्रिय होता है। **नवम** में होने पर पिता से दूर, अलग रहने वाला, सभी विद्याओं का ज्ञाता, पितृ धर्म पालक, पिता की कभी उपेक्षा नहीं करता। **दशम भाव** में होने पर, शुभ ग्रह होने पर जातक का पिता परोपकारी व पाप ग्रह हो तो माता का त्यागी व विमाता कर लेता है। **ग्यारहवें भाव** में हो तो धर्मात्मा, परिजन पालक, सुकर्मी, पितृभक्त, दीर्घायु, निरोग रखता है। **द्वादश भाव** में हो व शुभ ग्रह हो तो जातक का जन्म पिता के परोक्ष में या पिता की मृत्यु उपरान्त होना समझें पर पाप ग्रह होने पर पर पुरुषोत्पन्न जारज सन्तान समझना चाहिए।

पुत्रेश फल

यदि **पंचमेश** लग्न में हो तो ख्याति प्राप्त, अल्प संततिवान, शास्त्रज्ञ वेदज्ञ व सुकर्मी होता है। **द्वितीय भावस्थ** हो तो पाप ग्रह निर्धन, संगीतज्ञ कष्ट से अर्थोपार्जन कराने वाला व शुभ ग्रह सुखी करता है। **तृतीय भाव** में होने पर मधुरभाषी, लोक, प्रसिद्ध, योग्य सन्तान व पितृ परिवार का रक्षक होता है। **पंचमेष** यदि **चतुर्थ भावस्थ** हो तो पितृ कर्मी, पिता द्वारा पालित, मातृ भक्त होता है। परन्तु उक्त पाप ग्रह होने पर मातृ–पितृ विरोधी बनाता है। **पंचमेश, पंचम भाव** में होने पर बुद्धि सागर, माननीय, सुपुत्रवान, विख्यात, समाज का अगुआ होता है। **षष्ठ भाव** में होकर व शुभ ग्रह होने पर शत्रु युक्त व मान हानि कारक व पाप ग्रह रोगी व निर्धन बनाता है। **सप्तम** में होने पर सुन्दर पुत्र, देव–गुरु–भक्त, अर्थात पत्नी प्रेमी, भक्ति वाली नम्र होती है। **अष्टमस्थ** होने पर जातक स्त्रीविहीन व जीवित रहे तो कटु

भाषिणी, अंगहीना होगी, उसके भाई व पुत्र भी क्रोधी व अंगहीन होते हैं। **नवम भाव** में पंचमेश होने पर जातक बुद्धिमान, कवि, संगीतप्रेमी, नाटक प्रिय, सुन्दर व राजमान्य तथा **दशमस्थ** होने पर राज्य कर्मचारी, राजमान्य, सत्कर्मी, माता–पिता को सुखदायक होता है। **ग्यारहवें भाव** में हो तो वह व्यक्ति वीर, सुपुत्रवान, सत्यप्रिय, संगीत का जानकार, राज सम्मानित और **द्वादश भाव** में होने पर पुत्रवान पर पुत्र से सन्ताप होता है और वह परदेशवासी होता है। अशुभ ग्रह पुत्रहीन रखता है।

षष्ठेश फल

यदि **छठे भाव** का स्वामी लग्न में हो तो जातक निरोग, बलशाली, कुटुम्ब को कष्टदायक, अनेक को अपने वशीभूत रखने वाला, शत्रुओं पर सदैव विजयी, स्वच्छन्द होता है। **द्वितीयस्थ** होने पर जातक दुष्ट, धूर्त, चतुर, धन संग्रह करने वाला, उत्तम जगह रहने वाला, मित्रहीन, रोग ग्रस्त होता है। **तृतीय भाव** में होने पर लोगों को कष्टदायक, नीच आचरण, झगड़े–टण्टों से कष्ट पाता है। **चतुर्थ भाव** में होने पर पितृ शत्रु, पिता रोगी, स्वयं पुत्रहीन पर सम्पत्तिवान होता है। **षष्ठेश पंचम भाव** में होने पर पुत्र से शत्रुता, पुत्र के कारण ही मृत्यु होती है। यदि षष्ठेश शुभ ग्रह हो तो निर्धन, दुष्ट, कपटाचारी होता है। **षष्टम भावस्थ** होने पर रोगरहित, अकारण शत्रुता रखने वाला, कृपण, सुखी, खिन्नता रहित, बुरे स्थान में वास करता है। षष्ठेश, **सप्तम भाव** में हो एवं पाप ग्रह हो तो पत्नी विरुद्ध आचरण करने वाली, क्रूर, संतापदायी, चण्डी स्वभाव व शुभ ग्रह, वन्ध्या या नष्ट गर्भा होती है। **अष्टम भाव** में हो तो व शनि हो तो जातक की मृत्यु संग्रहिणी रोग से, मंगल हो तो जीव–जन्तु से, बुध हो तो विष से, चंद्र हो तो आकस्मिक, सूर्य हो तो जानवर से होती है तथा गुरु दुष्ट बुद्धि, शुक्र नेत्र रोग देता है। **नवम्** होने पर भोरवाढ़ी बनाता है। पाप ग्रह लंगड़ा, बन्धु–विरोधी करता है। **षष्ठेश, दशम भावस्थ** हो तो जातक धर्म व सन्तान का पालन कर्ता पर मातृ दोष मुक्त करता है। पाप ग्रह माता का शत्रु व दुष्ट होगा। **ग्यारहवें भाव** में हो तो चोरों को, शत्रुओं को नष्ट करने वाला, पशु धन से लाभान्वित पर पाप ग्रह हो तो उसकी मृत्यु शत्रु द्वारा होती है। **द्वादश भावस्थ** होने पर धन की हानि, यात्रा से लाभ, भाग्यवादी होता है।

जायेश फल

सप्तमेश यदि **लग्न** में हो पर स्त्रीगामी, कामी, भोगी, सुन्दर पत्नी प्रेमी होता है। **द्वितीय भाव** में होने पर पत्नी दुष्टा, पुत्रेच्छुक होती है। जातक उस स्त्री से धन लाभ प्राप्त करता है। वह लम्बे समय तक स्त्री संयोग से दूर रहता है। **तृतीय भाव** में हो तो आत्मबली, बंधु प्रेमी, पर पाप ग्रह होने पर स्त्री सुन्दर तथा देवर या पति के मित्रों के घर में रहती है। **चतुर्थ भाव** में हो तो स्वभाव चंचल, पितृ–शत्रुजनों से प्रेम करने वाला होता है, पिता कटुभाषी होता हैं, स्त्री मायके ही रहती है। **पंचम भाव** में सप्तमेश होने पर सौभाग्यशाली, पुत्रवास, साहसी पर दुष्टबुद्धि व पत्नी का पालन उसके सन्तानें करती हैं। **षष्ठ भाव** में सप्तमेश होने पर जातक स्त्री विरोधी, रुग्णा पत्नी, स्त्री संग से रहित, पाप ग्रह हो तो उसकी मृत्यु हो जाती है। **सप्तम भाव** में हो तो जातक दीर्घायु, स्त्री प्रेमी, सुशील तेजस्वी होता है। **अष्टम भाव** में हो तो जातक का विवाह नहीं होता, वह वेश्यागामी, चिन्तित, दुःखी रहता है। **नवम् भाव** में होने पर जातक तेजस्वी, सुशील व पत्नी भी सुशील होती है। पाप ग्रह हो तो जातक नपुंसक व कुरूप होता है। सप्तमेश पर लग्न की दृष्टि हो तो नीतिशास्त्र का पंडित होता है। **दशम भाव** में हो तो जातक राज दोषी, लम्पट, कपटी व पाप ग्रह हो तो दुःखी व पराजित होता है। **एकादश भाव** में हो तो पत्नी पतिव्रता, सुन्दर, सुशील, स्नेही होती है। सप्तमेश यदि **द्वादशस्थ** हो तो जातक स्व. घर के बन्धु–बान्धवों के कार्यों में रत होता है पर उसकी पत्नी नवीना, चंचल, दुष्ट जनों से प्रीति करने वाली, पति का त्याग कर पर पुरुष के साथ चली जाती है।

अष्टमेश फल

अष्टमेश यदि **लग्न** में हो तो जातक अनेक विघ्न–बाधाओं से युक्त, लम्बे समय तक रोगी, विवाद प्रिय व राज कृपा से धनोपार्जन करता है। **द्वितीय भाव** में होने पर पापी ग्रह हो तो अल्पायु, शत्रु युक्त व चोर होता है। शुभ ग्रह अत्यंत शुभत्व देता है। पर मृत्यु राजा द्वारा संभव है। **तृतीय भाव** में होने पर बन्धुओं व मित्रों का विरोधी, अंगहीन, कुटुभाषी, चंचल, सहोदर रहित होता है। **चतुर्थ भाव** में होने पर पितृ शत्रु, उनका धन छीन लेता है व पिता से कलह करता है। पिता रोगी होता है। **पंचम भाव** में हो तो जातक पुत्र हीन पर शुभ ग्रह एक पुत्र देता है। पर वह जीवित नहीं रहता, जीवित रहने पर धूर्त होता है। **षष्ठस्थ** होने पर व सूर्य हो तो राज विरोधी, गुरु हो तो रोगी, शुक्र हो तो नेत्र रोगी, चन्द्र हो तो रोगी, मंगल हो तो क्रोधी, बुध हो

तो कायर व मुख रोगी, शनि हो तो कष्ट, अष्टमेश पर चन्द्र–बुध की दृष्टि हो तो विशेष कष्टप्रद है। **सप्तम भाव** में होने पर उदर रोगी, दुःशीला पत्नी, दुष्ट स्वभाव वाला व पाप ग्रह हो तो पत्नी द्वारा मृत्यु होती है। **अष्टमेश, अष्टम** में होने पर जातक उद्योगी, रोग–रहित, धूर्तों के घर में जन्म लेने वाला, स्वयं भी धूर्त होता है। **नवम भाव** में होने पर अंगहीन, जीवघाती, पापी, बन्धुहीन, प्रेम रहित, शत्रुओं में मान्य, मुख में किसी अंग की कमी होती है। **दशम भाव** में होने पर राज कर्मचारी, नीच कर्मी, आलसी, क्रूर, अष्टमेश पाप ग्रह होने पर माता की मृत्यु हो जाती है। शुभ ग्रह से दीर्घायु, पाप ग्रह हो तो अल्पायु होती है। **एकादशस्थ** हो तो सुखी व **द्वादश** हो तो जातक कटुभाषी, तस्कर, शठ, निर्दयी व स्वेच्छाचारी होता है व मृत्यु के बाद दुर्गति होती है।

भाग्येश फल

लग्नेश नवम भाव में हो तो देव–गुरु भक्त, बलवान, कृपण, राजकर्मचारी, अल्पाहारी, बुद्धिमान होता है। **द्वितीय भाव** में हो तो प्रसिद्ध, धर्मात्मा, सुशील, प्रिय वत्सल, पुण्यात्मा, मुखरोगी, शत्रु पीड़ित होगा। **तृतीयस्थ** हो तो श्रेष्ठ स्त्री, बन्धु से स्नेह युक्त, उनका रक्षक होता है। **चतुर्थ** होने पर जातक पितृ भक्त, पितृ कार्य कर्ता, प्रसिद्ध व पुण्यवान होता है। **पंचम भावस्थ** हो तो देव–गुरु का भक्त व सुन्दर व उनकी सन्तान पुण्यात्मा होती है। **षष्ठ** होने पर शत्रुओं के समक्ष नतमस्तक, कार्य अधूरा छोड़ने वाला, दर्शनशास्त्र की निंदा करता है, **सप्तम भाव** में हो तो पत्नी सत्यवादिनी, सुन्दर, सुशील, संपत्तिवान, पुण्यात्मा होगी। **अष्टम** में हो तो दुष्ट, हिंसक, घर व बन्धु रहित, पुण्यहीन होता है। पाप ग्रह **नवमेश** नपुंसक करता है। भाग्येश भाग्य भाव में हो तो बन्धु–प्रेमी, दानी, देव–गुरु–सज्जन स्त्री प्रीतिकर्ता होता है। **दशमस्थ** होने पर राज कर्मचारी, शूरवीर, माता–पिता का भक्त, धर्मात्मा तथा **एकादश** में होने पर दीर्घायु, धर्मात्मा, लोक स्नेही, राजा से लाभान्वित, विख्यात, पुण्यात्मा, श्रेष्ठ पुत्रवान होता है। **नवमेश, द्वादश भाव** में हो तो देशान्तर में सम्मानित, सुन्दर, विद्वान व पाप ग्रह हो तो धूर्त होता है।

राज्येश फल

दशमेश यदि **लग्न** में हो तो जातक माता का शत्रु व पितृ भक्त होता है। पिता के मरने पर माता पर पुरुष के साथ रहने लगती है। **द्वितीय भाव** में होने पर मातृ पालित होने पर भी मातृ द्वेषी, अल्पाहारी, वेदज्ञ, सुकर्मी पर लोभी होता है। **तृतीयस्थ** होने पर सज्जन, स्वजन विरोधी, सेवक, कार्य करने पर अक्षम, मामा से पालित होता है। **चतुर्थ भाव** में होने पर सुखी, सदाचारी, मातृ-पितृ भक्त, राज्य मान्य होता है। **पंचम भाव** में होने पर सुकर्म में विडम्बना करने वाला, राज्य पक्ष से अर्थोपार्जन करने में समर्थ, संगीत प्रेमी व मातृ पालित होता है। **षष्ठस्थ** होने पर शत्रुओं से भयभीत, कलह प्रेमी, कृपण, दयाहीन व रोग रहित होता है। **सप्तम भाव** में होने पर जातक की पत्नी पुत्रवती, सुन्दर, पतिप्रिय, सेवापरायण, शुभ होती है। **अष्टम भाव** में होने पर कुटिल, अल्पायु, शूर, झूठ का पालक, दुष्ट, मातृ कष्ट कारक होता है। **भाग्य भाव** में होने पर सुशील, बन्धु प्रेमी, सद्बुद्धि, श्रेष्ठ मित्र युक्त, माता सुशील, पुण्यात्मा, सत्यवादी होती है। **दशमेश** यदि **दशम भाव** में हो तो माता को सुखदायक, माता से सुख पाने वाला, चतुर होता है। **ग्यारहवें भाव** में हो तो स्वाभिमानी, धनी, माता उसकी रक्षक, सुख युता होगी, दीर्घायु होगा। **द्वादश भाव** में हो तो बाल्यावस्था में ही माता से त्यक्त होकर स्व बाहुबल से सुकर्म करने वाला व राज्य कर्मचारी होता है। पाप ग्रह परदेश में वास देता है।

लाभेश फल

ग्यारहवें भाव का स्वामी यदि **लग्न** में हो तो जातक अल्पायु, वीर, दानी, लोकप्रिय, सुन्दर होता है। मृत्यु तृष्णा दोष से होती है। **द्वितीय भाव** में हो तो प्राप्त सुख भोगी, अल्पाहारी, अल्पायु, पाप ग्रह होने पर अष्टकपाली व रोगी होता है। शुभ ग्रह धनी बनाता है। **तृतीय भाव** में होने पर जातक बन्धु व स्त्री पालक, श्रेष्ठ भ्रातृवान, सुन्दर व बन्धु के शत्रुवंश का संहार करता है। **चतुर्थ भाव** में हो तो जातक दीर्घायु, पितृभक्त, क्रमशः एक-एक कार्य करने वाला, स्वधर्म पालक व लाभान्वित होता है। **पंचम भाव** में हो तो पितृ सम रूप-गुण युक्त, पिता-पुत्र में अटूट प्रेम, अल्पायु होता है। **षष्ठ भावस्थ** लाभेश हो तो दीर्घ रोगी, शत्रु युक्त, पाप ग्रह हो तो परदेश में तस्करों द्वारा मृत्यु को प्राप्त होता है। **सप्तम भाव** में हो तो तेजस्वी, धनाढ्य, सुशील, नम्र, राज्य में उच्च पदाधिकारी, दीर्घायु, एक पत्नी व्रती, धर्मपालक होता है। **अष्टम भाव** में होने पर जातक अल्पायु व

रोगी, पाप ग्रह जीवन भर मृत्यु समान कष्ट देता है। **नवम भाव** में होने पर जातक अनेक विषयों का ज्ञाता, शास्त्रज्ञ, धर्मात्मा, देव–गुरु भक्त होता है। पाप ग्रह हो तो धर्म विरोधी होता है। **दशम भाव** में हो तो जातक माता का भक्त, पितृ द्वेषी, दीर्घायु, धनी, मातृ पालक होता है। यदि **लाभेश**, लाभ भाव में ही हो तो दीर्घायु, अधिक पुत्र–पौत्र, सुकर्मी, सुशील, लोक में ख्याति प्राप्त, सुन्दर तथा **द्वादश** होने पर प्राप्त सुख को भोगने वाला, स्थिर चित्त, रोगी, उत्पात निरत, मानी, दानी, सदासुखी होता है।

व्ययेश फल

द्वादशेश यदि **लग्न** में हो तो जातक परदेशवासी, प्रियवक्ता, सुन्दर, नीच जनों का साथी, अविवाहित या नपुंसक होता है। **धनस्थ** हो तो कृपण व कटुभाषी होता है। व्ययेश, शुभ ग्रह हो तो राजा, चोर, अग्निभय से मृत्यु होती है **तृतीय भाव** में हो तो एवं पाप ग्रह होने पर जातक बन्धुविहीन व शुभ ग्रह हो तो धनी, थोड़े भाइयों वाला, कुटुम्ब से अलग रहता है। **चतुर्थ भाव** में होने पर कृपण, रोगी, सुकर्मी, दुःखी, पुत्र द्वारा मृत्यु को प्राप्त होता है। **पंचम भाव** में होने पर पापी ग्रह सन्तानहीन रखता है, शुभ ग्रह पुत्रवान्, पितृ धन का उपयोग करने वाला, समर्थ्यवान् बनाता है। **षष्ठस्थ** व पाप ग्रह हो तो कृपण, नेत्र रोगी या नेत्रहीन या बाल मृत्यु देता है। **सप्तमस्थ** होकर दुष्ट, चरित्रहीन, वाक्पटु, पाप ग्रह होकर जातक स्वस्त्री द्वारा व पाप ग्रह हो तो वेश्या द्वारा मृत्यु प्राप्त करता है। **अष्टम** होने पर पाप ग्रह, अष्टकपाली, कार्यहीन, लोक द्रोही एवं शुभ ग्रह धन संग्रह कराता है। **व्ययेश**, **नवम** होने पर तीर्थाटन कराता है पर पाप ग्रह अपव्ययी होता है। **दशम** होने पर परस्त्री विमुख, पवित्र हृदय व सुपुत्रवान, धन संग्रही पर पाप ग्रह माता को कटु बनाता है। **एकादशस्थ** धनी, चिरंजीवी, उत्तम जीवन, दानी, प्रसिद्ध, सत्यवादी व व्ययेश, व्यवस्थ हो तो संपत्तिवान, ग्रामवासी, कृपण, पशु प्रेमी बनाता है।

चंद्र कुण्डली भाव फल-सूर्य

जन्म लग्न में सूर्य–चंद्र युति हो तो जातक परदेशवासी, सुखी, कलह प्रिय होता है। चंद्र से सूर्य **द्वितीय** हो तो नौकर–चाकर युक्त, यशस्वी एवं राज्यमान, **तृतीय** हो तो स्वर्णाभूषण युक्त, पवित्र हृदय, सुखी, **चतुर्थ** सूर्य हो तो माता–पिता का विनाशक या उनकी भक्ति रहित होता है। **पंचम**

भाव में चंद्र से सूर्य हो तो कन्याओं से दुःखी, अनेक पुत्र वाला, **षष्ठस्थ** हो तो शत्रुओं पर विजय पाने वाला, वीर क्षत्रियोचित कार्य करने वाला होता है। **सप्तम** सूर्य हो तो पत्नी सुशील व सुन्दर, स्वयं शीलवान व राज मान्य, **अष्टम**, सूर्य क्लेश युक्त, रोगी, **नवम** हो तो धर्मात्मा, सत्यवादी, बन्धु द्वेषी व दशम हो तो महाधनी, **एकादश** में हो तो राजगौरव को प्राप्त, अनेक विषयों का ज्ञाता, प्रसिद्ध, कुल नायक व **द्वादश** हो तो काना या क्षीण दृष्टि होता है।

चंद्र से मंगल भाव फल

चंद्र-मंगल एक ही भाव में हो तो जातक लाल नेत्र वाला, रक्त वर्ण, अर्श रोग पीड़ित होता है। द्वितीय भाव में हो तो जातक का पुत्र भूमि पति, कृषि कर्म कर्ता, तृतीय हो तो चार भाई व वह सुशील व सुख भोगी, चतुर्थ हो तो सुखहीन, दरिद्र, विधुर होता है। पंचम मंगल पुत्रहीन यदि पत्नी की कुण्डली में भी ऐसा ही योग हो तो निश्चय ही पुत्रहीन होता है। षष्ठस्थ चंद्रमा से मंगल हो तो अधर्म से विमुख व रक्त दोषी, सप्तम हो पत्नी दुष्टा, अप्रियवादी, अष्टम हो तो जीवघाती, महापापी, शील, सत्य रहित, नवम मंगल सम्पत्तिवान व वृद्धावस्था में पुत्र सुख पूर्ण, दशम हो तो महाधनी, ग्यारहवें हो तो राज दरबार में प्रसिद्ध, यशस्वी, सुन्दर व चन्द्रमा बारहवें भाव में मंगल हो तो माता को दुःखदायी व सबको कष्टदायी होता है।

चंद्र से बुध भाव फल

यदि जन्म कुण्डली में चंद्रमा व बुध एक साथ हो तो जातक सुखी, सुन्दर, मिथ्यावादी पर द्वेषी, कुटुम्बियों को प्रिय होता है। चंद्र से दूसरे भाव में हो तो धन-धान्य सम्पन्न, घर-परिवार का लाभ पाता है। मृत्यु शीत रोग से होती है। तृतीय हो तो धन, सम्पत्ति, राज्य से लाभ पाने वाला व महापुरुषों का साथ करता है। चतुर्थ हो तो सदा सुखी, ननिहाल से विशेष लाभ, आनन्दमय जीवन जीता है। पंचम हो तो विलक्षण, बुद्धिमान, सुन्दर, कामी, कटुवादी होता है। षष्ठ हो तो कृपण, कातर, विवाद से डरने वाला, अधिक रोम युक्त, बड़े नेत्र वाला होता है। सप्तम हो तो जातक स्त्री वशीभूत, धनी, कृपण, दीर्घायु, अष्टम होने पर शीत से भय, राजाओं में प्रसिद्ध शत्रुओं के लिए भयंकर, नवम होने पर धर्म विमुख, पर धर्मसेवी, लोक विरोधी, दारुण स्वभाव, दशम हो तो राजयोगी, कर्क का यदि चंद्र

हो तो कुल में श्रेष्ठ, चंद्र से एकादशस्थ बुध हो तो हर एक कार्य में लाभ, विवाहोपरान्त भाग्योदय, द्वादश होने पर कृपण, पुत्रों की जीत कभी नहीं होती।

चंद्र से गुरु भाव फल

यदि जन्म कुण्डली में चंद्रमा और गुरु एक ही भाव में हों तो जातक दीर्घ जीवी, स्वस्थ, वीर, अर्थ सम्पन्न होगा। द्वितीय भाव में हो तो राजमान्य, पूर्णायु, अति उग्रवादी, प्रतापी, धर्मात्मा, पाप रहित होगा। तृतीय हो तो जातक जनप्रिय 17 वर्ष से ही पिता के धन की वृद्धि, चतुर्थ हो तो सुख हीन, मातृ पक्षार्थ कष्टकारक, पराए घरों में वह काम करता है। पंचम हो तो दिव्य दृष्टि, सम्पन्न, तेजस्वी, पुत्रवान, उग्र, धनी होता है। षष्ठ हो तो उदासीन, गृह रहित, दीर्घायु, भिक्षावृत्ति से जीवन–यापन करता है। सप्तम में गुरु हो तो दीर्घायु, मितव्ययी, स्थूलकाय, नपुंसक, पांडु रोगी, घर का प्रधान होता है अष्टम होने पर रोगी, श्रेष्ठ पिता के होते हुए भी क्लेशी, दुःखी ही रहता है। नवम हो तो धर्मात्मा, धनी, सुमार्गी, देव–गुरु भक्त होता है। दशम हो तो स्त्री–पुरुष को त्यागकर तपस्वी होता है। एकादशस्थ होने पर वाहन सुख से सम्पन्न, राजा तुल्य ऐश्वर्यभोगी तथा चंद्रमा से बारहवें गुरु होने पर अपने कुटुम्ब का विरोधी व शत्रुओं को सुखदायक होता है।

चंद्र से शुक्र भाव फल

यदि जन्म कुण्डली में चंद्रमा और शुक्र एक ही राशि में हो तो जातक की मृत्यु जल, सन्निपात या हिंसा में होती है। द्वितीय भाव में हो तो वह जातक अतिधनी, ज्ञानवान, ऐश्वर्यशाली होता है। तृतीय होने पर धर्मात्मा, बुद्धिमान, म्लेच्छों से धनोपार्जन करता है। चतुर्थ होने पर कफ़–प्रकृति, कमजोर शरीर, वृद्धावस्था में धन से पूर्ण होता है। पंचम होने पर अनेक कन्याओं वाला, धनी होकर भी अपयशी होता है। षष्ठ हो तो निन्दित कार्यों में धन व्यय करने वाला भयकर व युद्ध में पराजित होता है। सप्तम होने पर लोक प्रसिद्ध, योद्धा, दानी, भोगी, महाधनी होता है। अष्टम होने पर पुरुषार्थ हीन, शंकालु होता है। नवम हो तो अनेक भाई–बहन व मित्रों से युक्त। दशम हो तो सुखी, माता–पिता से प्रसन्न, दीर्घायु, ग्यारहवें हो तो जातक दीर्घायु, शत्रु व रोग रहित तथा बारहवें होने पर स्त्री गामी, लम्पट व ज्ञानहीन होता है।

चंद्र से शनि भाव फल

यदि चंद्रमा और शनि एक ही भाव में हो तो जातक रोगी, धन हीन, बन्धुहीन होता है। द्वितीय हो तो माता को कष्ट, शैशवावस्था में माता का दूध पीने को नहीं मिलता। तृतीय होने पर कन्याएं अधिक होती हैं एवं वे मर जाती हैं। चतुर्थ होने पर वह पौरुषवान व शत्रुहन्ता होता है। पंचम होने पर स्त्री श्यामवर्णा व प्रियवादिनी, षष्ठ हो तो महा क्लेशी, कपटी व अल्पायु, सप्तम होने पर जातक धर्मात्मा, दानी, अनेक विवाह करने वाला होता है। अष्टम होने पर पिता को कष्टदायक पर खूब दान करने पर उसका कल्याण होता है। नवम होने पर शनि की दशा–अन्तर्दशा में धर्म की हानि होती है। दशम होने पर धनी पर कृपण, ग्यारहवें होने पर पशु धन युक्त, दीर्घायु व सुखी तथा चंद्रमा से द्वादश भावस्थ शनि हो तो धन हीन, भिक्षुक व पापी होता है।

चंद्र से राहु भाव फल

चंद्रमा से 1/10/9वें राहु बाल्यावस्था में सुखी, वृद्धावस्था में धनी बनाता है। 3/6/11 हो तो जातक राजा या राज मंत्री व धन–धान्य से परिपूर्ण होता है। 4/7 हो तो माता–पिता पत्नी को कष्ट तथा 2/8/12वें राहु कभी सुखी नहीं रहने देता। 5वें राहु जल से मृत्यु सम्भावना बढ़ाता है। पग–पग पर विपत्तियां आती हैं।

मेष का चंद्र

जातक धनवान, पुत्रवान, उग्र, परोपकारी, कार्य कुशल, विनम्र, राजप्रिय, गुणी, देव–ब्राह्मण, भक्त, कुछ उष्ण व शाकादि का आहार करने वाला, ताम्रवर्णी नेत्र, शूर, प्रमादी, कामी, घुटने दुर्बल, शिर पर व्रण, दानी, असुन्दर नख, नौकरों पर स्नेह, दो स्त्रियां, युद्ध में कायर, चपल, 1/7/13वें वर्ष ज्वर पीड़ा 16/17वें वर्ष विषूचिका, 3/12वें वर्ष जल भय, 25वें वर्ष सन्तान प्राप्ति, रतौंधी का रोग, 32वें वर्ष शस्त्र घात का भय, स्वकार्य प्रशंसक, विदेशाटन करने वाला, कृश अंग, शीघ्रगामी, मानी, सुलक्षणा, वायु तत्त्व प्रधान, शुभ दृष्ट चंद्र हो तो 90 वर्ष की आयु। कार्तिक, कृष्णा 9, बुधवार, मध्य रात्रि में मस्तक रोग से मृत्यु सम्भव है।

वृष राशि का चंद्र

ऐसा जातक कम तेजस्वी, स्तब्ध, शुद्धकर्मी, सच्चा, धनी, कामी, स्त्री वशीभूत, पूर्णायु, थोड़े केश, परोपकारी, देव-गुरु-मातृ-पितृ भक्त, राजप्रिय सभा चतुर, सन्तोषी होता है। पहले वर्ष कष्ट, तीसरे वर्ष अग्निभय, 7वें वर्ष विषूचिका, 9वें व्यथा, 10वें रक्त की उलटी, 12वें गिरने का भय, 16वें सर्प दंश भय, 19वें पीड़ा, 25वें जल भय, 30 व 32वें पीड़ा होती है। वह कफ़-प्रकृति, शान्त, वीर, सहिष्णु, बुद्धिमान होता है। शुभ दृष्ट चंद्र होने पर 96 वर्षायु होती है माघ शुक्ला 9वीं शुक्रवार, रोहिणी नक्षत्र में मृत्यु होना सम्भव है।

मिथुन राशि का चंद्र

जातक ग्राम्य लोगों में सर्वाधिक चतुर, विद्वान, मित्र हितैषी, मिष्टान्न प्रिय, सुशील, अल्पभाषी, चंचल नेत्र, कुटुम्ब पालक, कामी, रति प्रिय, बचपन में सुखी, युवावस्था में मध्यम सुख, अंतिमावस्था दुःखमय व्यतीत होती है। दो स्त्रियां, थोड़ी सन्तान, गुणी, गुरु भक्त, 5वें वर्ष वृक्ष पतन से भय, 16वें वर्ष शत्रु भय, 18वें वर्ष कर्ण रोग, 20वें अधिक कष्ट, 38वें मृत्यु सम कष्ट होता है। जातक भोगी, दानी, धर्मपरायण, सुन्दर, विषयासक्त, नृत्य-गीत-वाद्य-प्रेमी, बुद्धिमान, शास्त्रज्ञ, प्रियवादी, 80 वर्ष आयु प्राप्त कर वैशाख शुक्ल द्वादशी बुधवार मध्याह्न हस्त नक्षत्र में मृत्यु होती है।

कर्क राशिस्थ चंद्र

वह जातक परोपकारी, वस्तु संग्रही, पुत्रवान, गुणी, सज्जन, मातृ-पितृ भक्त, स्त्री वशीभूत, अल्पायु, जीवन के प्रारम्भ में निर्धन, मध्यायु में सुखी, वृद्धावस्था में धर्म तत्पर, तीर्थाटन करता है। ललाट के मध्य में एक छोटी-सी रेखा होती है। वामांग में अग्नि भय, मस्तक रोग से पीड़ित, बन्धु युक्त, अनेक स्त्रियों वाला, ज्योतिष का ज्ञाता, मित्रसम्पन्न, प्रियभाषी, जीवन के प्रथम वर्ष में रोग, तीसरे लिंग पीड़ा, 31वें सर्प भय, 32वें वर्ष अनेक पीड़ाएं, आयु 86 या 96 वर्ष, माघ शुक्ला 9वीं शुक्रवार, रोहिणी नक्षत्र में मृत्यु होना सम्भव है।

सिंह राशि में चंद्र

जातक धन सम्पन्न, श्रीमन्, युद्ध प्रिय, विज्ञान, कलाविद्, विदेशाटन प्रेमी, विशाल शरीर, पिंगल वर्ण नेत्र, क्रोधी, अल्प पुत्रवान, शत्रु नाशक, शिरोरोगी, निष्ठुर, जन्म के प्रथम वर्ष भूत–बाधा, 5वें अग्नि भय, 7वें वर्ष ज्वर व विषूचिका, 20वें सर्प दंश, 31वें वर्ष कष्ट, 28वें वर्ष लोकोपवाद, 32वें वर्ष उदर के वामांग में रोग। जातक सुशील, कृपण, सत्यवादी, विचक्षण बुद्धि युक्त, शुभ द्रष्ट चंद्र हो तो 100 वर्षायु भोगता है। फाल्गुन मास कृष्णा पंचमी, मंगलवार मध्याह्न में जल के समीप मृत्यु होना सम्भव है।

कन्या राशिस्थ चंद्र

जन्म–कुण्डली में कन्या राशिस्थ चंद्रमा हो तो जातक स्वजनों को आनन्दप्रद, धन सम्पन्न, भृत्य–भूमि–भवन–वाहन युक्त, प्रवासी, कलाविद् एवं प्रियभाषी, देव ब्राह्मण भक्त, धार्मिक तथा मनुष्यों में अत्यन्त श्रेष्ठ, कम कन्या, अधिक पुत्र सन्ततिवान, शिश्न व कण्ठ में चिह्न युक्त, 3½ वर्ष अग्नि–पीड़ा, 5वें वर्ष नेत्र रोग, 9-13 में गुदा में पीड़ा, 15वें वर्ष सर्प भय, 21वें वर्ष वृक्ष से गिरने या दीवार से गिरने का भय, 30वें शस्त्राघात का भय, चन्द्रमा पर शुभ दृष्टि हो तो 80 वर्ष की आयु, चैत्र कृष्णा 13 रविवार को मृत्यु होना संभव है।

तुला राशिस्थ चंद्र

जातक सर्वत्र सम्मानित, संग्रहणीय प्रवृत्ति, भोगी, धर्मभीरु, श्रीमन्, भृत्य युक्त, पंडित, कुआं, तालाब, बावड़ी बनवाने वाला, कलाविद्, राजप्रिय, मधुर अन्न, रस प्रेमी, दो स्त्रियों वाला, पितृ भक्त, अल्प संतति, अल्प भाई, कृषि निपुण, क्रय–विक्रय से सम्पत्तिवान, देव–ब्राह्मण पूजक, स्त्री सलाह मानने वाला, जीवन में 7वें वर्ष अग्नि भय, 8वें ज्वर पीड़ा, 12वें जल भय, 20वें घोड़े या वृक्ष से गिरने का भय या सर्प भय 31 वें अनेक प्रकार के कष्ट, शुभ दृष्ट चंद्रमा हो तो आयु 85 वर्ष की व वैशाख शुक्ल 8 आश्लेषा नक्षत्र, शुक्रवार, प्रथम प्रहर में मृत्यु संभव है।

वृश्चिक राशि का चन्द्रमा

ऐसा जातक परजन को संतापदायी, क्रोधी, विद्वेषी, कलही, विश्वासघाती, मित्र द्रोही, विलक्षण बुद्धि, असन्तोषी, राज सम्मानित, पर

कार्य में विघ्नकर्ता, शुभ लक्षणी, गुप्त पापी, पराक्रमी, नौकर–चाकर युक्त, 4 भाई 2 स्त्रियों वाला, जीवन के प्रथम वर्ष में ज्वर, 3½ अग्नि भय 5-15वें ज्वर भय, 25वें वर्ष विशेष पीड़ा, शुभ दृष्ट चंद्रमा हो तो 90 वर्ष की आयु व ज्येष्ठ शुक्ल 10 बुधवार, हस्त नक्षत्र, मध्य रात्रि में मृत्यु संभव है।

धनु राशिस्थ चंद्र

जन्म–कुण्डली में धनु राशिस्थ चन्द्रमा होने पर जातक विद्वान, धर्मात्मा, सुपुत्रवान, राजमान्य, जनप्रिय, देव–ब्राह्मण भक्त, वस्तु संग्रहकर्ता, भाषणकर्ता, सुन्दर नख, सुबुद्धि, पवित्र, मोटे दांत, होंठ, कण्ठ, गर्दन, कवि, प्रगल्भ, कुलीन, दानी, सौभाग्यशाली, दृढ़ मैत्री, गहरे पद तल, क्लेश युक्त, साहसी विनयशील, शान्त पर शीघ्र क्रोधी, तपस्वी, स्वल्पाहारी, थोड़ी सन्तान, अच्छे भाई, पूर्वावस्था में धनी, जन्म से प्रथम वर्ष में बाधा 13वें वर्ष विशेष कष्ट, शुभ दृष्ट चन्द्रमा हो तो शतायु अषाढ़, कृष्णा 5 शुक्रवार, हस्त नक्षत्र राशि में मृत्यु होती है।

मकर राशिस्थ चन्द्र

वह जातक धीर, विलक्षण, क्लेश युक्त, पुत्रवान, राजप्रिय, कृपालु, सत्यवादी, दानी, सुन्दर, आलसी, कृष्ण वर्ण का तालु, विस्तीर्ण कटि प्रदेश, 5वें वर्ष पीड़ा, 6वें वर्ष जल भय, 10वें वृक्ष से गिरने का भय, 12वें वर्ष शस्त्र पीड़ा, 20वें वर्ष ज्वर, 25वें वर्ष अंग पीड़ा 35वें वर्ष बाएं अंग में अग्नि भय, आयु 87 वर्ष व श्रावण शुक्ला 10 मंगलवार ज्येष्ठा नक्षत्र में मृत्यु होती है।

कुंभ राशिस्थ चंद्र

दानी, मिष्टान्न प्रेमी, धर्म–कर्म में शीघ्रता, प्रियवक्ता, क्षीण देह, अल्प सन्तति, दो पत्नी, कामी, धनहीन, बाएं हाथ में चिह्न, जन्म के प्रथम वर्ष में पीड़ा, 5वें वर्ष अग्नि भय, 12वें सर्प या जल भय, 28वें वर्ष चोर से हानि, पूर्णायु, 90 वर्ष भाद्रपद कृष्ण 4 शनिवार, भरणी नक्षत्र में मृत्यु होती है।

मीन राशि में चन्द्रमा

मेष के 10 वृष के 6, मिथुन के 20, कर्क 5, सिंह 8, कन्या 2, तुला 20, वृश्चिक 6, धनु 10, मकर 14, कुंभ 3, व मीन के 4 ध्रुवांक हैं। सूर्यादि ग्रह जन्म कुण्डली में जिस राशि में हों उन सबको जोड़ने पर जातक की आयु ज्ञात होती है।

जिस भाव पर अपने स्वामी की या मित्र ग्रह की दृष्टि हो या योग हो उस भाव की वृद्धि हो उसकी हानि होती है।

दृष्टि फल सूर्य पर

मेष या **वृश्चिक** सूर्य पर **चन्द्रमा** को दृष्टि हो तो जातक दानी, स्थित धर्मात्मा भृत्यं युक्त, कोमल-सरल स्वभाव, निर्मल शरीर, गृह सज्जा प्रेमी होगा। **मंगल** की दृष्टि होने पर जातक क्रूर, संग्राम प्रेमी, लाल वर्ण के नेत्र व चरण, बलवान होगा। **बुध** की दृष्टि हो तो सुख, बल, धन से हीन, परदेश में नौकरी, मलिन हृदय, पराए वशीभूत होगा। **गुरु** की दृष्टि होने पर दानी, दयालु, अत्यन्त धनी, राजमंत्री, कुल में श्रेष्ठ होगा। **शुक्र** की दृष्टि होने पर कुलटा स्त्री से प्रीति, धन हीन, दुष्टों से मित्रता, चर्म रोगी तथा **शनि** की दृष्टि होने पर उत्साह हीन, मलिन, दरिद्र, दुःखी व कुबुद्धि होगा।

वृष या **तुला** राशिस्थ **सूर्य** पर **चन्द्रमा** की दृष्टि हो तो जातक वेश्या प्रेमी, अनेक पत्नियों वाला, जल से आजीविका चलाता है। **मंगल** की दृष्टि हो तो विजयी, बलवान, साहसिक कार्यों से धनोपार्जन करने वाला, कृशकाय होता है। **बुध** की दृष्टि होने पर संगीत-काव्य-लेखन में निपुण, प्रसन्न मुख, **गुरु** दृष्टि होने पर कुलानुसार राजमंत्री आदि उच्च पदाधिकारी, वस्त्राभूषण, धन सम्पन्न पर भीरु स्वभाव होगा। **शुक्र** की दृष्टि होने पर सुन्दर नेत्र, सुन्दर शरीर, लोक में प्रधान, अधिक मित्र, अधिक शत्रु चिन्तित रहता है। **शनि** की दृष्टि हो तो दीन, धन हीन, आलसी स्त्री विरोधी, अनुचित व्यवहार कर्ता व रोगी होता है।

मिथुन या **कन्या** राशिस्थ, सूर्य पर **चन्द्रमा** की दृष्टि हो तो मित्र व अमित्र दोनों से कष्ट पाने वाला, विदेशाटन करने पर भी धन हीन व उद्वेगी रहता है। **मंगल** की दृष्टि रहने पर शत्रु पक्ष से परेशान, सर्वत्र पराजित, लज्जावान, आलसी होता है। **बुध** की दृष्टि हो तो राज सम्मानित धनपाने वाला, सन्तान से सुखी, शत्रु से भी धन प्राप्त करता है। **गुरु** की दृष्टि हो तो स्वविचार गुप्त रखने वाला, स्वतन्त्र, स्त्री-सन्तान-मित्र-कुटुम्बी जनों से सुखी होता है। **शुक्र** की दृष्टि हो तो परदेशवासी, चंचल, विलासी, विष,

अग्नि या शस्त्र से घायल तथा **शनि** की दृष्टि होने पर धूर्त, नौकरी करने वाला, बुद्धिहीन, उद्विग्नचित्त रहता है।

यदि **कर्क** स्थित **सूर्य** पर **चन्द्रमा** की दृष्टि हो तो वह जातक जलोत्पन्न पदार्थों का व्यवसाय कर महाधनी, राजा या मन्त्री होता है। **मंगल** की दृष्टि होने पर जातक स्वबंधु वर्ग से उदासीन तथा भगन्दर रोग से पीड़ित रहता है। **बुध** की दृष्टि हो तो जातक विद्वान, तपस्वी, सम्मानित, राजकृपा से धनोपार्जन करने वाला व शत्रु रहित होता है। **गुरु** की दृष्टि हो तो स्वकुल में श्रेष्ठ, निर्मल कीर्ति, राजा द्वारा सभी पदार्थ पाता है। **शुक्र** की दृष्टि होने पर स्त्री के द्वारा वस्त्राभूषण व धन पाने वाला, ईर्ष्यालु होता है। **शनि** दृष्टि होने पर कफ़-वात-पीड़ित, चुगल खोर, विघ्नोत्पन्न, चंचल व कष्ट युक्त होता है।

सिंह राशि स्थित **सूर्य** पर **चंद्रमा** की दृष्टि हो तो वह धूर्त, राज से मान्य, गम्भीर, धनोपार्जन में समर्थ, ख्याति प्राप्त होगा। **मंगल** की दृष्टि हो तो अनेक स्त्रियों का प्रेमी, धूर्त, कफ़-प्रकृति प्रधान, वीर व उद्यमी होगा। **बुध** से दृष्ट होने पर धूर्त, राजानुचर, बली, विद्वान, प्रेमी, लेखक होगा। **गुरु** दृष्ट **सूर्य** देवालय, बाग, बगीचा, कुआं, तालाब, बावड़ी का निर्माता, बन्धु प्रेमी होता है। **शुक्र** दृष्टि हो तो चर्मरोगी, क्रोधी, धूर्त, अपयशी, उत्सवहीन, स्वजनों से परित्यक्त, दया-ममता रहित होता है तथा **शनि** की दृष्टि होने पर शठ, विघ्न कर्ता, स्वजनों को सन्ताप देता है।

धनु या **मीन** राशि स्थित **सूर्य** पर **चंद्रमा** की दृष्टि हो तो जातक सुन्दर, कान्त, पुत्रों से सुखी, वाक्पटु, कुलीन होगा। **मंगल** की दृष्टि हो तो युद्धजयी, वाक्-चतुर, विरक्तों का साथी, स्थिर, आश्रमी होगा। **बुध** दृष्टि हो तो धातु क्रिया में कुशल, काव्य-कला दक्ष, सच्चा, विचारों को गोपनीय रखने वाला, सज्जनों को प्रिय होगा। **गुरु** की दृष्टि हो तो मंत्री, कुल में श्रेष्ठ, कला मर्मज्ञ, धन सम्पन्न, **शुक्र** की दृष्टि हो तो पुष्प, चंदन, केशर, सुगन्ध, वस्त्राभूषण आदि भोज्य पदार्थों से युक्त होता है। **शनि** दृष्टि हो तो परान्न भोजी, नीचकर्मी एवं पशु पालक होता है।

मकर या **कुंभ** राशि स्थित **सूर्य** पर **चंद्र** की दृष्टि हो तो जातक स्त्रियों के प्रेम में पड़कर धन नष्ट करने वाला, कपटी, चंचल स्वभाव का होगा। **मंगल** की दृष्टि हो तो पराए झगड़े में धन नष्ट करने वाला, रोग व शत्रु से पीड़ित, विकल देह, चिन्तातुर होता है। **बुध** की दृष्टि हो तो नपुंसक स्वभाव पर शूरवीर, पर धन अपहरण कर्ता, साधु जनों से परित्यक्त होता है। **गुरु**

की दृष्टि हो तो अनेक का पालन कर्ता, यशस्वी, मनस्वी होता है। **शुक्र** की दृष्टि हो तो शंख, रत्न मूंगादि तथा स्त्रियों से धन लाभ पाता है। **शनि** की दृष्टि होने पर स्वपराक्रम से शत्रुजयी, राजा का कृपा पात्र, प्रतिष्ठित एवं प्रसन्नचित्त होता है।

दृष्टि फल चंद्रमा पर

मेष के चंद्रमा पर–सूर्य दृष्टि–उग्रस्वभाव का होते हुए भी विवेकीजनों के समक्ष विनम्र, धीर, राजा से सम्मान पाने वाला, लड़ाईं झगड़े से दूर, **मंगल** की दृष्टि–विष, अग्नि, वायु, शस्त्र भय, मूत्र–कृच्छ, दन्त व नेत्र रोग, बड़े आदमी का आश्रय पाता है। **बुध** संसार में निर्मल यश प्राप्त कर्ता, अनेक विद्याओं का ज्ञाता, धनी, **गुरु**–राजा या राजमंत्री, सेनापति, कुल वैभवयुक्त–**शुक्र**–वस्त्राभूषण, धन–स्त्री पुत्र सुख युक्त, भोगी, वक्ता, अक्रोधी; **शनि**–रोगी, दृढ़ चित्त, निर्धन, मिथ्यावादी, लोक में अनादर पाता है।

वृष स्थिति चंद्रमा पर–सूर्य की दृष्टि हो तो कृषि कार्य निपुण, विधिज्ञाता मान्त्रिक, वाहन, धन युक्त, चतुर, कार्य सिद्धि में प्रवीण; **मंगल** की–कामातुर, स्त्री मनहर्ता, सज्जनों का मित्र, पवित्र, प्रसन्न; **बुध** की–पंडित, व्यवहार कुशल, दयालु, प्रसन्न, परहित में संलग्न, गुणी; **गुरु** की–स्त्री सन्तान से सुखी, कीर्तिवान, धर्मज्ञ, मातृ–पितृ भक्त, सुखी; **शुक्र** की–वस्त्राभूषण–गृह आसन, पद, शय्या–गंध–मालार भोग्य वस्तु, पशु सुख युक्त और **शनि** की दृष्टि हो तो माता–पिता की मृत्यु पूर्वार्द्ध व उत्तरार्द्ध चंद्रानुसार होती है।

मिथुन स्थित चंद्रमा पर–सूर्य की दृष्टि हो तो जातक विद्वान, सुशील, धन हीन, कष्टमय जीवन, सबको प्रसन्न करने वाला; **मंगल** की–पत्नी उदार हृदया, स्वयं चतुर, शूरवीर, पंडित, विवेकी, धन वाहन सम्पन्न; **बुध** की–धीर, सदाचारी, उदार हृदय, राज्य से धन लाभ पाने वाला; **गुरु** की–विद्वान, विनम्र, धनी, ख्यात, पुण्यात्मा, **शुक्र** की–वस्त्र, सुगन्ध, माला, धन–धान्य, स्त्री–वाहन, आभूषण से सुखी, सम्पन्न; **शनि** की दृष्टि हो तो स्त्री, धन, वाहनरहित होता है।

कर्क स्थित चंद्रमा पर–सूर्य की दृष्टि हो तो लोगों को अकारण कष्ट दायक, राज्याश्रय पाकर दुर्गा का अधिपति या प्रबन्धक, **मंगल** की–कार्य कुशल, शूर वीर, मातृ विरोधी, कृशकाय, **बुध** की–स्त्री–पुत्र, धन–

धान्यादि से सुखी, नीतिज्ञ, सेनापति, मंत्री; **गुरु** की–राजा का विश्वास पात्र, अधिकारी, गुणवान, नीतिज्ञ, सुखी, पराक्रमी, **शुक्र** की–रत्नाभूषण, स्वर्ण, स्त्री सुख सम्पन्न व **शनि** की दृष्टि हो तो जातक मिथ्यावादी, मातृ–विरोधी, व्यर्थ भ्रमण, पापी व धनहीन होता है।

सिंह राशि स्थित चंद्रमा पर–सूर्य की दृष्टि हो तो जातक गुणी, राज्य प्रिय, उच्च पदासीन परसन्तान सुखहीन, **मंगल** की हो तो धन, पुत्र, स्त्री, वाहन सुख सम्पन्न, **बुध** की हो तो धन स्त्री, वाहन, सन्तान सुख युक्त, **गुरु** की हो तो सभी विषयों का जानकार, सज्जन, सुविख्यात, राज सहयोगी, उच्च पदासीन, **शुक्र** की हो तो श्रेष्ठ स्त्री, धन युक्त, गुणवान, गुणग्राही व्यवहार कुशल व **शनि** की दृष्टि हो तो स्त्री हीन, कृषि कर्म कर्ता, दुर्गाधिकारी व अल्प धनी होता है।

कन्या स्थित चंद्रमा पर–सूर्य की दृष्टि हो तो कोषाध्यक्ष, सदाचारी, स्त्री रहित, गुरु भक्त, **मंगल** की हो तो हिंसक, वीर, क्रोधी, राज्याश्रित व शत्रु हन्ता, **बुध** की हो तो ज्योतिषी, संगीतज्ञ, शास्त्रज्ञ, यशस्वी, युद्ध जयी, नम्र, स्वाभिमानी, **गुरु** की हो तो भाई–मित्र सम्पन्न, राज प्रिय, सदाचारी, कीर्तिवान, **शुक्र** की हो तो स्त्रियों के साथ विलास करने वाला, पत्नी प्रिय, राजा से धन लाभ तथा **शनि** की दृष्टि हो तो अकिंचन, बुद्धिहीन, स्त्री से धन लाभ व मातृहीन होता है।

तुला राशि स्थित चंद्रमा पर–सूर्य की दृष्टि हो तो भ्रमणशील, सुखी, धन स्त्री, पुत्र से हीन, मित्रामित्रों से संतृप्त, **मंगल** से पर हित न करने वाला, मायावी, विषयासक्त, **बुध** से कलाविद्, धन–धान्य युक्त, सुवक्ता व विद्वान, धनी, **गुरु** से चतुर, वस्त्राभूषण, क्रय–विक्रय प्रवीण, **शुक्र** से पंडित उद्यमी व धनी, राज प्रिय, बलवान देह, **शनि** की दृष्टि हो तो धन–धान्य, वाहन से सुखी व विरक्ति का भाव प्रधान होता है।

वृश्चिक राशि चंद्रमा पर–सूर्य की दृष्टि हो तो श्रेष्ठ, व्यवहार रहित, धनी, लोगों में अप्रिय, परिश्रमी, सेनाधिकारी, **मंगल** की हो तो युद्धजयी गम्भीर, गौरव युक्त, राज्य कृपा से धन लाभ, **बुध** की हो तो वाक्पटु, युद्ध प्रिय, गीत–नृत्य का ज्ञाता, कूटनीतिज्ञ, **गुरु** की हो तो लोकप्रिय, सुन्दर, सदाचारी, धन वस्त्राभूषण प्राप्त, **शुक्र** से प्रसन्नचित्त, उदार, यशस्वी, कूटनीति का जानकार, धन–वाहन युक्त, स्त्री हेतु धन खर्च व **शनि** की दृष्टि हो तो स्थान भ्रष्ट, दीन–हीन–दुःखी, अधम सन्तान वाला, यक्ष्मा रोग पीड़ित होता है।

धनु राशि स्थित चंद्रमा पर–सूर्य की दृष्टि हो तो जातक प्रतापी, यशस्वी धन वाहन युक्त, विजयी, सर्वप्रिय, **मंगल** की सेनापति, अति प्रतापवान, सर्व सम्पत्ति युक्त, वस्त्राभूषण युक्त, **बुध** से प्रियवादी, सेवक सम्पन्न, ज्योतिषी, शिल्पी, **गुरु** से उच्च पदासीन, धनी, सदाचारी, सुन्दर, **शुक्र** से सन्तान, धन, धर्म युक्त, सदा सुखी व **शनि** की दृष्टि हो तो बलवान, शास्त्र अनुरक्त, सत्यवादी, प्रचण्ड स्वभाव का होता है।

मकर राशि स्थित चंद्रमा पर–सूर्य की दृष्टि हो तो धनहीन, मलिन व्यर्थ भटकाव, बुद्धिहीन, दुःखी, मंगल से प्रचण्ड, धन–वाहन युक्त, विद्वान् स्त्री सन्तान से सुखी, वैभव सम्पन्न, **बुध** से बुद्धिहीन, निर्धन, गृह रहित स्त्री–सन्तान से त्यक्त, **गुरु** से राजकुलोत्पन्न, सत्यवादी, गुणग्राही व स्त्री–पुत्र सुख सम्पन्न, **शुक्र** से सुन्दर नेत्र, धन–वाहन युक्त, स्त्री–सन्तान, वस्त्राभूषण युक्त व सम्पन्न तथा **शनि** की दृष्टि हो तो महाआलसी, अल्प धनी, असत्यवादी, मलिन, व्यसनी होता है।

कुंभ राशि स्थित चंद्रमा पर–सूर्य की दृष्टि हो तो कृषि कर्मी, धूर्त, राज्याश्रित, धर्मात्मा, **मंगल** से धन–भूमि–भवन–माता–पिता रहित, विषम पदार्थ उत्पन्न करने वाला, वाचाल, मलिन, धूर्त, **बुध** से विषयासक्त, भोजन प्रिय, पवित्र हृदय, मधुरभाषी, **गुरु** से कृषि, नगर, ग्रामादि से सुखी, भोगी, साधु प्रेमी, श्रेष्ठ पुरुष, **शुक्र** से मित्र–पुत्र–स्त्री–गृह सुख रहित, दीन, दुःखी, लोक निन्दित, **शनि** की दृष्टि हो तो गदहा, ऊंट, हरिण, खच्चर, पशु, व्यवसाय से लाभान्वित, दुष्टा से प्रेम, धर्म विरुद्ध आचरण करने वाला होता है।

मीन राशि स्थित चंद्रमा पर–सूर्य की दृष्टि हो तो कामी, सुखी, सेनापति, धनी स्व कार्य दक्ष, **मंगल** से शत्रुओं से पराजित, कुलटा से प्रेम, सुख से हीन, पापी, **बुध** से श्रेष्ठ स्त्री–पुत्रादि से सुखी, धनी, मानी, राजप्रिय, **गुरु** से उदार, कोमल देह, सुशील स्त्री, सुपुत्रवान, धन से सुखी, **शुक्र** से संगीत वाद्यनिपुण, सदाचारी, गुणी स्त्री का संग, विलासिनी स्त्रियों से विलास कर्ता व **शनि** की दृष्टि हो तो जातक कामातुर, स्त्री–पुत्र–सुख हीन, नीच स्त्री से प्रेम व पराक्रम हीन होता है।

मंगल

मेष-वृश्चिक स्थित राशिस्थ मंगल पर–सूर्य की दृष्टि हो तो जातक

विद्वान, सुवक्ता, मातृ–पितृ भक्त, धनी, प्रधान पदासीन, उदार होता है। **चंद्र** से परस्त्रीगामी, वीर, दया रहित, चोरों को नष्ट करता है। **बुध** से वेश्यागामी, उन्हें वस्त्राभूषण देने वाला, चतुर, पर धन हरण कर्ता होगा। **गुरु** से कुल श्रेष्ठ, धनी, क्रोधी, राज सम्मान युक्त, चोर मित्र, **शुक्र** से बार–बार भोजन करने का इच्छुक, स्त्री–वाहन हेतु चिन्तित, पुण्य कर्मों में प्रीति, कुटुम्ब विरोधी व ईर्ष्यालु, **शनि** से मित्र–माता वियोग से दुःखी कृश शरीर होता है।

वृष या तुला स्थित मंगल पर–सूर्य की दृष्टि हो तो पत्नी से अल्प प्रेम, वन प्रदेश में भ्रमण कर्ता, लोक प्रतिकूल व्यवहार, अति क्रोधी, चंद्रमा से मातृ विरोधी, भीरु, अनेक स्त्रियों में आसक्त, बुध से शास्त्रज्ञ, झगड़ालू, वाचाल, अल्पधनी, सुन्दर शरीर, गुरु से बन्धुप्रिय, भाग्यशाली, गीत–नृत्यादि ज्ञाता, शुक्र से यशस्वी, राज मंत्री, सेनापति, सूर्य सुख युक्त व शनि की दृष्टि हो तो लोक विख्यात, विनयी, धनी, मित्र सम्पन्न, बुद्धिमान, शास्त्रज्ञ, ग्राम्याधिपति होता है।

मिथुन या कन्या के मंगल पर–सूर्य की दृष्टि हो तो विद्या, धन, प्रभुता पराक्रम सम्पन्न, पर्वत विहारी, चंद्रमा से राज नियुक्त संरक्षक, सुरक्षाधिकारी–स्त्री प्रेमी, बलवान, सन्तोषी, बुध से वाचाल, गणितज्ञ, काव्य–प्रेमी, असत्य प्रियभाषी, दूत कर्म कुशल, गुरु से परदेशवासी, व्यसनासक्त, शुक्र से वस्त्राभूषण, अन्न–पानादि सुख सम्पन्न, स्त्री आसक्त, महाधनी व शनि की दृष्टि हो तो जातक शूरवीर, मलिन, आलसी, दुर्ग, पर्वत में विचरण करने वाला होगा।

कर्क राशिस्थ मंगल पर–सूर्य की दृष्टि हो तो पित्त–विकार पीड़ित, धैर्यवान, दण्डाधिकारी, बलवान होगा। चंद्रमा से जातक रोग–पीड़ित, खोयी वस्तु के शोक से दुःखी, कुत्सित वेश, अनाचारी, बुध से मित्र–विहीन, थोड़ा कुटुम्ब, दुराचारी, दुष्ट चित्त वृत्ति, गुरु से जातक मंत्री, गुण–गौरव युक्त, लोक मान्य, प्रसिद्ध, शुक्र से दुर्व्यसनों से धन नष्ट, निरन्तर अनुचित कार्य कर्ता, शनि दृष्टि से दूध, दही, धान्यादि सम्पन्न, सुन्दर व राज्य से लाभान्वित होता है।

सिंह राशिस्थ मंगल पर–सूर्य की दृष्टि हो तो लोक हितकारी, शत्रु नाशक, वन भ्रमण प्रेमी, चंद्रमा से पुष्ट देह, कठिन प्रकृति, मातृ–भक्त, सर्व कार्य कुशल, तीक्ष्ण स्वभाव, बुद्धिमान, बुध से काव्य–शिल्प निपुण, विद्वान्, लोभी, चंचल प्रकृति, सर्व कार्य साधन कुशल; गुरु से कुशाग्रबुद्धि,

राजप्रिय, सेनापति सर्वप्रिय, विद्या-प्रवीण, शुक्र से गौरवान्वित, सुन्दर, अनेक स्त्री भोगी, सम्पत्तिवान एवं शनि की दृष्टि हो तो पर घर वासी, चिन्तित, युवावस्था में वृद्ध तुल्य और निर्धन होता है।

धनु या मीन के मंगल पर-सूर्य की दृष्टि हो तो बनवासी, दुर्गवासी, क्रूर पर भाग्यशाली, लोक में आदर पाता है। चंद्रमा से-विद्वान, व्यवहार कुशल, राजा को अप्रिय, कलही, सबसे अलग रहने वाला, बुद्धिमान। बुध से-विद्वान, शिल्पज्ञ, सुशील, सर्वविद्याविद्, विनय। गुरु से-स्त्री हेतु चिन्तित, शत्रु संग कलह निरत, पदावनति। शुक्र से-उदार हृदय, विषयासक्त, वस्त्राभूषण युक्त, भाग्यशाली, सज्जन एवं शनि की दृष्टि हो तो कान्तिहीन देह, भ्रमणप्रिय नौकरी कर्ता होता है।

मकर या कुंभ के मंगल पर-सूर्य की दृष्टि हो तो स्त्री पुत्रादि से सुखी, श्याम वर्ण, तीव्र स्वभाव, वीर; चन्द्र से-वस्त्राभूषण, वाहन सम्पन्न, मातृ सुखहीन, स्थान च्युत, अस्थिर मैत्री, उदार हृदय, बुध से प्रियवादी, भ्रमण से लाभ, बलवान, कपटी, निर्भय; गुरु से-दीर्घायु, राजकृपा पात्र, गुणी, बन्धुप्रिय, सुन्दर, कार्य सम्पादन कुशल; शुक्र से-भाग्यवान, भोग्य वस्तु सुख युक्त, स्त्री प्रेमी, कलही; शनि की दृष्टि हो तो राजा से धन प्राप्त कर्ता, स्त्रियों का विरोधी, बहुश्रुत, अति बुद्धिमान, कष्ट युक्त, युद्ध प्रिय होता है।

बुध

मेष या वृश्चिक राशि स्थित बुध पर-सूर्य की दृष्टि हो तो बंधुप्रिय, सत्यवादी, राज मान्य युक्त, प्रतिष्ठित, चन्द्र से संगीत-नृत्य में रुचि, स्त्रियों का प्रेमी, वाहन व सेवक युक्त, कुटिल, मंगल से राजप्रिय, धनी, वीर, कलाकार, कलह प्रिय, क्षुधित, गुरु से सर्व सुख सम्पन्न, प्रियवादी, स्त्री-पुत्र सुख युक्त, सदैव प्रसन्न, शुक्र से स्त्री से सुखी, गुणी, प्रतिष्ठित, मित्र हितैषी, बुद्धिमान, विनम्र तथा शनि की दृष्टि होने पर साहसी, उग्र बंधुओं से कलह व अनाचारी होता है।

वृष या तुला स्थित बुध पर-सूर्य की दृष्टि हो तो दरिद्रतावश दुःखी, रोगी परोपकारी, शान्त चित्त, पवित्र हृदय, चन्द्रमा से प्रपंची, पूर्ण धनी, दृढ़ प्रतिज्ञ, उच्च्य पदाधिकारी, लोक विख्यात मंगल से राज्य से अपमानित, रोग पीड़ित, मित्रों से व्यक्त, विषय सुखहीन, गुरु से देश-ग्राम-नगराधिकारी, विद्वान, गुणग्राही व सुशील नेता, शुक्र की दृष्टि हो तो

सुन्दर, वस्त्राभूषण युक्त, स्त्रियों का प्रिय, अत्यन्त चतुर, उदार, भाग्यशाली व शनि की दृष्टि हो तो वह स्त्री, पुत्र, मित्र, वाहन से कष्ट व धन–सुख से रहित होता है।

मिथुन या कन्या राशिस्थ बुध पर–सूर्य की दृष्टि हो तो जातक सत्यवादी, श्रेष्ठ हास्य युक्त, राज सम्मानित, उन्नत जीवन, कृश शरीर, चंद्रमा से सत्यवादी, अधिक पर प्रियभाषी, कलहकारी, राजा का समीपवर्ती, मंगल से प्रसन्न, कुटिल, कला मर्मज्ञ, राज कार्यकर्ता, लोक प्रिय, गुरु से अत्यन्त धनी, बलवान, राज सम्मान अधिकारी, शुक्र से राजदूत, शत्रुजयी, संधि करने में कुशल, वेश्या प्रेमी, शनि से किसी भी कार्य को प्रारम्भ कर सफलता पाने वाला, विनयी, वस्त्राभूषण से सुखी होता है।

कर्क राशिस्थ बुध पर–सूर्य की दृष्टि हो तो जातक स्त्री से अपमानित, धन खर्च चिन्ता से परेशान, उत्पातों से पीड़ित, चंद्रमा से वस्त्रों की स्वच्छता, रत्नों का संग्रही, गृह निर्माण, पुण्य कार्यकर्ता, मंगल से अल्प विद्वान, धनसंग्रह में तत्पर, शूरवीर, प्रियवादी, नकली वस्तुएं बनाने में कुशल, गुरु से विद्वान, व्यवहार कुशल, भाग्यवान, प्रिय व सत्यवादी, राज्यमान्य, शुक्र से प्रियवादी, सुन्दर शरीर, संगीत कुशल, वाक्चातुर्य युक्त, शनि की दृष्टि हो तो गुणहीन, स्वजन रहित, मिथ्यावादी, दम्भी, कृतघ्न होता है।

सिंह राशिस्थ बुध पर–सूर्य की दृष्टि हो तो जातक दयारहित, क्रूर, चंचल ईर्ष्यालु, हिंसक, भयानक, क्षुद्र हृदय का, चन्द्रमा की दृष्टि हो तो सुन्दर, बुद्धिमान, विनयी। संगीत व नृत्य कुशल, सदाचारी, मंगल से काम वासना रहित, घायल शरीर, बुद्धिहीन, दुःखी, गुरु से कोमल, निर्मल शरीर, कुल में श्रेष्ठ, सुन्दर नेत्र, सामर्थ्यवान्, श्रेष्ठ, धन–वाहन युक्त, शुक्र से सुन्दर, प्रियवादी, राज्याश्रित, धन–वाहन सम्पन्न शनि से दृष्ट हो तो स्वेद युक्त दुर्गन्धित शरीर, विशाल देह, असुन्दर, उग्र व सुखहीन होगा।

धनु या मीन राशिस्थ बुध पर–सूर्य की दृष्टि हो तो पथरी, शूल, प्रमेह रोग पीड़ित, संगहीन, शान्त स्वभाव, चन्द्रमा से लेखक, कुशल, साधु–संगी, सदैव सुखी, मंगल से वंश परंपरागत चोर, वनवासी, लेखक, धन रहित, गुरु से विज्ञान वेत्ता, स्वकुल श्रेष्ठ, कोषाध्यक्ष, पालन हार, शुक्र से मंत्री, प्रलेखाधिकारी, चोर बुद्धि, सुकुमार देह, धनी व शनि की दृष्टि हो तो भोजन भट्ट, मलिन, अनाचारी, बनाचारी, हर कार्य में अनुपयुक्त होता है।

मकर या कुंभ राशिस्थ बुध पर–सूर्य की दृष्टि हो तो हर कार्य पूर्ण करने वाला, युद्ध कला में दक्ष, सुशील, कुटुम्बी, चन्द्र से जलोत्पन्न वस्तु से आजीविका चलाने वाला, धनी, डरपोक, कन्द–मूल–फल का व्यवसायी, मंगल से लज्जा व आलस्य से पूर्ण, सौम्य स्वभाव, वाक् चपल, धनी, गुरु से धन–धान्य, सवारी से सुखी, नगर प्रधान, बुद्धिमान, शुक्र से अधिक संतान वाला, कुरूप, बुद्धिहीन, नीच संगी, कामी व शनि की दृष्टि हो तो वह जातक सुखहीन, पापी, अकिंचन, दरिद्र, नीच–संगति करने वाला होता है।

गुरु

मेष या वृश्चिक के गुरु पर–सूर्य की दृष्टि हो तो जातक असत्य से भयभीत, धर्मात्मा, ख्याति प्राप्त, भाग्यवान व विनयी होता है। चन्द्रमा से लोक विख्यात, नम्र, स्त्री आसक्त, सज्जनों को प्रिय, धर्मात्मा व शान्त, मंगल से क्रूर, धूर्त, शत्रु कार्यहर्ता, राज्याश्रय से आजीविका करने वाला, अनेक का पालक, बुध से सदाचार, सत्य–प्रिय वचन रहित, पर अवगुण द्रष्टा, विनम्रता से वशीभूत, शुक्र से पुष्प, चन्दन, माला, शय्या, आसन, आभूषण, स्त्री, वस्त्र, गृह सुख–सम्पन्न, शनि की दृष्टि हो तो जातक लोभी, भयानक, साहसी, मित्र–सन्तान सुख रहित, निष्ठुर होता है।

वृष या कन्या राशिस्थ गुरु पर–सूर्य की दृष्टि हो तो संग्राम जयी, शस्त्र आदि के प्रहार से घायल, रोगी, सेवक, वाहन युक्त, राजमंत्री होता है। चन्द्रमा से सत्यभाषी, विनयी, परोपकारी, पवित्र, भाग्यवान, मंगल से भाग्यशाली सन्तान से सुखी, प्रियवादी, सदाचारी, राज सम्मानित, बुध से मंत्र विद्या निपुण, महाभाग्यशाली, राज्य से धन प्राप्ति, कलाविद्, शुक्र से धन–धान्य–वस्त्राभूषण युक्त, सदाचारी, वैभव व शनि की दृष्टि हो तो सुपुत्रवान, साध्वी स्त्री से सुखी, पंडित, नगर–ग्राम्य उत्सवों से सुखी व सभा चतुर होता है।

मिथुन या कन्या राशिस्थ गुरु पर–सूर्य की दृष्टि हो तो जातक के श्रेष्ठ पुत्र, स्त्री, धन, मित्र से सुखी, प्रतिष्ठित, चंद्रमा से गुणी, गांव या नगर का उपकारी, गौरवशाली, मंगल से शत्रुहन्ता, युद्ध में जय, शस्त्र–आघात से विक्षिप्त शरीर, धन व बल से युक्त, बुध से श्रेष्ठ मित्र, स्त्री, पुत्र, धन से सुखी, कार्य कुशल, ज्योतिषी, शिल्पी, सत्यवादी, शुक्र से धन, स्त्री, पुत्र से सुख पाने वाला, पक्के मकान, तालाब, कुआं, बावड़ी बनवाने वाला, कृषि

कर्ता, प्रसन्न चित्त व शनि की दृष्टि हो तो राज्य सम्मानित, नित्य उत्सव मनाने वाला, सर्वगुण सम्पन्न व मुखिया होता है।

कर्क राशिस्थ बृहस्पति पर–सूर्य की दृष्टि हो तो पूर्वायु में स्त्री–पुत्र धन से अल्प सुख, फिर विशेष सुख, चन्द्रमा से कोषाध्यक्ष, सुन्दर, कान्तिवान, वाहन, धन से सुखी, सदाचारी, मंगल से सुपुत्र, स्त्री, वस्त्राभूषण से सुखी, गुण ग्राहक, शूरवीर, पंडित, क्षत अंग, बुध से मित्र सहायता से कार्य सिद्धि में सफल, सदाचारी, प्रतापी, मन्त्री, शुक्र से अनेक स्त्रियों, पुत्रों, वैभव, नाना सुखों से युक्त व शनि की दृष्टि हो तो लोक में आदरणीय वस्त्रालंकार से युक्त, सुशील, सेनापति या नगराध्यक्ष, वाचाल होता है।

सिंहस्थ गुरु पर–सूर्य की दृष्टि हो तो जातक खर्चीला, प्रसिद्ध, धूर्त, राज्य कर्मचारी, शुभकार्य कुर्ता, चन्द्रमा से प्रसन्न चित्त, शंकाशील, स्त्री से धन–लाभ व दानी, मंगल से गुरुजनों से सम्मानित, गुण–गौरव युक्त, सत्कर्म युक्त, बुध से ग्रह निर्माण में प्रवीण, गुणियों में श्रेष्ठ, राजमंत्री, प्रियवादी व कार्य कुशल तथा शनि की दृष्टि हो तो सुखहीन, मलिन, प्रियवादी, कृशकाय व आनन्द रहित होता है।

धनु या मीन राशिस्थ गुरु पर–सूर्य की दृष्टि हो तो जातक राजा का विरोधी, मित्रों से वैमनस्य, अनेक शत्रु युक्त, चन्द्र से धन–वैभव, भाग्य से गर्वित, अपने हिताहित से सभी को प्रिय, सुखी, विनम्र, मंगल से व्रण, शरीर, युद्ध कुशल, हिंसक, कुटिल व परोपकारी, बुध से उच्चाधिकारी, स्त्री–धन–सन्तान से सुखी, परोपकारी, शुक्र से सुखी, धनी, प्रसन्न चित्त, पंडित, ऐश्वर्यशाली व शनि की दृष्टि हो तो वह जातक स्थान हीन, सुख–धन आनन्द रहित, पराजित, दीन–दुःखी होता है।

मकर या कुंभ स्थित गुरु पर–सूर्य की दृष्टि हो तो जातक प्रसन्नमूर्ति, प्रियवादी, परोपकारी, कुल में श्रेष्ठ, चन्द्रमा से कुल पोषक, तीव्र बुद्धि, सुशील, धर्मात्मा, उदार, अभिमानी, मातृ–पितृ भक्त, मंगल की दृष्टि हो तो राज्य–कृपा से कार्य सिद्ध करने वाला, यशस्वी, सुखी, बुध से स्वभाव से शांत, स्त्री प्रिय, धर्म में तत्पर, शुक्र से विद्या, विवेक व धन युक्त, गुणवान, राज्याश्रय से अभीष्ट सिद्धि व शनि की दृष्टि हो तो वह जातक कामी, गुणी, घर घन–धान्य युक्त, ख्याति प्राप्त व विनीत होता है।

शुक्र

मेष या वृश्चिक राशिस्थ शुक्र पर–सूर्य की दृष्टि हो तो जातक शासन की कृपा प्राप्त करता है। स्त्री से कष्ट पाता है। चन्द्रमा से अत्यन्त प्रतिष्ठित, चंचल, कामातुर, मंगल से धन–मान, सुखहीन, दीन, दुःखी, मलिन, बुध से दुराचारी, धन व परिजनों से हीन, निर्बुद्धि, पर धन अपहरण कर्ता, क्रूर, गुरु से स्त्री–पुत्रादि से सुखी, सुन्दर, विनयी, उदारचित्त तथा शनि की दृष्टि हो तो धन को गुप्त रखने वाला, शान्त स्वभाव, लोक मान्य, दान, स्वजनों के अनुकूल चलता है।

वृष या तुला के शुक्र पर–सूर्य की दृष्टि हो तो वेश्याओं व धन–वाहन सुख में खूब खर्च, चन्द्रमा से स्त्रियों के संग विलासी, कुल में श्रेष्ठ, निर्मल बुद्धि, सुशील, प्रियवादी, मंगल से गृह सुख रहित, झगड़े में हार, दुःखी, बुध हो तो गुणवान, सुन्दर, सौम्य, बलवान, धैर्यवान, गुरु से उत्तम गृह, स्त्री, पुत्र, मित्र, धन, सम्पति से सुखी, शनि से रोज पीड़ित, दुराचारी, सुख व धनहीन व दुःखी होता है।

मिथुन या कन्या के शुक्र पर–सूर्य की दृष्टि हो तो अन्तःपुर अधिकारी, नम्र, गुणी, शास्त्रज्ञ, चन्द्रमा से उत्तम अन्न–वस्त्रादि से पूर्ण सुखी, सुन्दर नेत्र, मंगल से भाग्यवान, भोग–विलासी, स्त्री के लिए विशेष खर्च, बुध से पंडित, उत्तम सवारी, धन युक्त, सेनाधिकारी, परिवार पोषक, गुरु से बुद्धिमान, धन–संपत्ति युक्त, प्रसन्न, शनि से शत्रु द्वारा पराजित, चंचल निर्जन स्थान में वास, दुःखी, सभी से परित्यक्त होता है।

कर्क राशि स्थित शुक्र पर–सूर्य की दृष्टि हो तो क्रोधी स्त्री से दुःखी एवं शत्रुओं से पराजित; चन्द्रमा से प्रथम कन्या फिर पुत्र, सुख, सौतेली माता से सुख, लोक में महत्त्व, मंगल से कला–कुशल, शत्रुहन्ता, बुद्धिमान, सुखी, स्त्री हेतु चिन्तित, बुध से विद्या प्रवीण, गुणी, गुणज्ञ, स्त्री पुत्र से कष्ट, स्वजनों से त्यक्त, कवि, गुरु से चतुर, उदार, सदाचारी, विनम्र, धनी, स्त्री–पुत्र से सुखी, प्रियवादी तथा शनि की दृष्टि हो तो अनाचारी, सुखहीन, निर्धन, उद्योग में असफल, स्त्री से पराजित व स्थान भ्रष्ट होता है।

सिंहस्थ शुक्र पर–सूर्य दृष्टि हो तो स्पर्धा कर मनोरथ सफल करने वाला, स्त्री के सहारे धन–वृद्धि, ऊंट सवार, चन्द्रमा से माता की मौत होती है, स्व पत्नी से विरोध पर धन–धान्य से पूर्ण, मंगल से राज्य प्रिय,

सम्पत्तिवान, कामातुर, बुध से धनी संग्रही, लोभी, कामी, लोक में निंदित, गुरु से राजमंत्री, धन, वाहन युक्त, स्त्री–पुत्र–सेवक सुखी एवं प्रसिद्ध कीर्ति वाला तथा शनि की दृष्टि हो तो राजा समान सर्व सुख भोगी व न्यायाधीश होता है।

धनु या मीन राशिस्थ शुक्र पर–सूर्य की दृष्टि हो तो जातक क्रोधी, सुन्दर, पंडित, भाग्यशाली, बलशाली, धनी, भ्रमणशील होता है। चंद्रमा से राज्यादर युक्त, ख्यात, यशस्वी, विनयी, भोगी, धीर, गम्भीर, मंगल से शत्रु जनों को भीत करने वाला, धनी, प्रसन्न चित्त, स्त्री प्रेमी, पुण्यवान, श्रेष्ठ सवारी युक्त, बुध से श्रेष्ठ वाहन, धन–वस्त्राभूषण सुखी, गुरु से उत्तम वाहन वस्त्राभूषण, सुन्दर स्त्री से सुखी तथा शनि की दृष्टि हो तो स्थिर प्रकृति, ऐश्वर्य सम्पन्न, महाधनी व बलवान होता है।

मकर या कुंभ राशिस्थ शुक्र पर–सूर्य की दृष्टि हो तो स्थिर प्रकृति, ऐश्वर्य सम्पन्न, महाधनी व बलवान, चंद्रमा से तेजस्वी, सुंदर शरीर, बली, धन–वाहन से सुखी, मंगल से परिश्रम व रोग से पीड़ित, अकार्य कर धन हानि, बुध से विद्वान, व्यवहार कुशल, धनी, सन्तोषी, प्रपंची व वाक्पटु होता है। गुरु से पुण्य, चंदन, सुगन्ध, माला, वस्त्राभूषण से सुखी, संगीत–वाद्य निपुण व पवित्र तथा शनि से दृष्ट हो तो प्रसन्न मुख, अनेक प्रकार से लाभान्वित, धन–वाहन स्त्री से सुखी होता है।

शनि

मेष–वृश्चिक राशि स्थित शनि पर–सूर्य की दृष्टि हो तो पशु व्ययसाय से धनोपार्जन व कृषि कर्म निपुण, चंद्रमा से नीच संगति, चंचल, दुष्ट, खल सुख, जन धन रहित, मंगल से वाचाल, उत्तम पदार्थों से वंचित, कार्य असफल, धन–हानि कर्ता, बुध से चोरी व झगड़ा करने में तत्पर एवं स्त्री सुख से वंचित, गुरु से सुखी, धनी, मंत्री, राजा का प्रिय पात्र, शुक्र से यात्रा प्रेमी, कान्तिहीन, दुष्ट स्त्री में आसक्त, आनन्दरहित होता है।

वृष अथवा तुला स्थित शनि पर–सूर्य की दृष्टि हो तो विद्या में चतुर, अतिवक्ता, परान्त भोगी, धनहीन, शान्त स्वभाव, चंद्रमा से राज्य कृपा से उच्च पद प्राप्त, स्त्री व वस्त्राभूषण से सुखी, बलवान, मंगल से संग्राम, निपुण, वाचाल, अति प्रसन्न, बुध से स्त्री में आसक्त, नीच जनों का साथी, हास्य–विनोद में सुखी, धनी, नपंसुकों का मित्र, गुरु से परोपकार में तत्पर,

पर दुःख से दुःखी, दानी, उद्योगी, सर्व प्रिय व शुक्र की दृष्टि हो तो रत्नादिक से लाभ, स्त्री विलासी, बलवान, राज्य से आदर पाता है।

मिथुन या कन्या राशि स्थित शनि पर–सूर्य की दृष्टि हो तो जातक सुख से हीन, नीच संगी, क्रोधी व धर्म विरोधी, पर द्रोही पर धीर, चंद्र से प्रसन्न मुख, उच्च पदासीन, उन्नतिशील, योग्याधिकारी, मंगल से तीव्र बुद्धि, व्यवहार कुशल, विख्यात एवं गंभीर, बुध से धनी, बुद्धिमान, नम्र, संगीत प्रेमी, युद्ध कुशल व शिल्पज्ञ, गुरु से राज्याश्रित, गुणवान, सज्जनों का प्रिय, गुप्त धन रखने वाला व मनस्वी होता है। शुक्र से स्त्रियों के अलंकरण निर्माण में प्रवीण, सत्कर्म व धर्म में निरत, स्त्री आसक्त होता है।

कर्क राशि स्थित शनि पर–सूर्य की दृष्टि हो तो स्त्री–पुत्र–धन से सुखी, श्रेष्ठ भोजन से रहित, माता को कष्टदायी, चंद्र से स्वबंधुओं व माता को कष्टदायी, धन वृद्धि करने वाला, मंगल से बलहीन, कृश–शरीर व राज्य धन भोगी, कटुवादी, भ्रमणशील, अनेक व्यवसाय व उद्योग कर्ता, दम्भी व चतुर, गुरु से भूमि, गृह, स्त्री आभूषण, पुत्र वाहन से सम्पन्न व सुखी, शुक्र से धन–धान्य, वाहन, उदारता, गौरव सम्मानरहित, सौंदर्य व प्रिय भाषण से रहित होता है।

सिंह राशि पर स्थित शनि पर–सूर्य की दृष्टि हो तो धन–धान्य–वाहन सदाचार रहित, चंद्रमा से स्वर्ण, रत्न, भूषण, वस्त्र, यश, पुत्र, मित्र से सुखी, सौंदर्य से सदैव प्रसन्न, मंगल से युद्ध कुशल, दया रहित, क्रोधी, क्रूर, बुध से धन, स्त्री, पुत्रादि रहित, दरिद्र, नीच कर्मी, गुरु से मित्र–पुत्रादि से सुखी, गुणी, प्रसिद्ध, सदाचारी, नम्र ग्राम्याधिपति तथा शुक्र की दृष्टि होने पर जातक धन–धान्य–वाहन से सुखी, स्त्री से अपमानित होकर दुःखी होता है।

धनु या मीन शनि पर–सूर्य की दृष्टि हो तो जातक प्रसिद्ध, धनी, गौरवशाली, पर पुत्र से प्रेम करने वाला, चंद्रमा से सदाचारी, मातृहीन, दो नाम वाला, स्त्री–सन्तान, धन से सुखी, मंगल से वात रोगी, लोक विरोधी, विदेशवासी, दीन–हीन, बुध से गुण सम्पन्न, अति धनी, राज्याधिकारी, सदाचारी, गुरु से मंत्री, सेनापति, सम्पत्ति युक्त, बलवान, सुशील और शुक्र की दृष्टि हो तो विदेशवासी, अनेक कार्यों में रुचि, दत्तक, पवित्र चरित्र होता है।

मकर या कुंभ स्थित शनि पर–सूर्य की दृष्टि हो तो कुरुपा पत्नी, परान्त भोगी, अनेक प्रयास व रोगों से दुःखी, चंद्रमा से धन व स्त्री से दुःखी, पापाचारी, चंचल, मातृ विरोधी एवं कामी, मंगल से शूरवीर, क्रूर, साहसी

उत्कृष्ट गुणों वाला, सदैव प्रसन्न, बुध से उत्तम वाहन, साहस, बल युक्त, धैर्यवान, अनेक कार्यों में रुचि, गुरु से गुणवान, राजमंत्री, निरोग, सुन्दर तथा शुक्र की दृष्टि हो तो जातक कामी, नियम भंजक, भाग्यवान सुखी, धनी व भोगी होता है।

योग

1. **रज्जु योग**–यदि सभी ग्रह चर राशि में स्थित हों।

वह जातक सुन्दर, क्रूर, उत्साही, धनोपार्जन वास्ते विदेशाटन करता है।

2. **मूसल योग**–यदि सभी ग्रह स्थिर राशि में हों।

वह जातक सर्वत्र सम्मानित, ज्ञान, धन, पुत्र सभी सुख–सम्पत्ति युक्त, राजा के समान तेजस्वी, राज्याश्रित, हर्ष व उत्कर्ष पाने वाला होगा।

3. **नल योग**–यदि सभी ग्रह द्विस्वभाव राशि में हों।

सदैव न्यूनाधिक रत्नों से घर भरने वाला, राजा का प्रिय पात्र, पुण्यवान, यशस्वी व देव पूजक होता है।

4. **माला योग**–सभी ग्रह तीन केन्द्रों में हों तो माला योग होता है।

पुत्र, मित्र, धन–धान्य, वस्त्राभूषण एवं वाहन, सुन्दरियों का साथ, सुखी, महा–क्रोधी, अभद्र, दुर्धर्ष, परोपकार करने में सर्प समान होता है।

5. **सर्प**–तीन केन्द्रों में सभी पाप ग्रह हों।

परान्न भोजी, क्रूर, भयानक, दरिद्र, निद्राप्रिय, क्रोधी, अभद्र, अपरोपकारी।

6. **गदा योग**–यदि समीप व दो केन्द्रों जैसे 1/4, 4/7, 7/10, 11/9 में सभी ग्रह हों।

शास्त्रज्ञ, यन्त्र–मन्त्र–तन्त्र में अनुरक्त, संगीत–वाद्य में निपुण, यज्ञकर्ता, रौद्र वेष, पर द्वेषी, स्त्री–आभूषणादि युक्त होता है।

7. **शकट योग**–सभी ग्रह लग्न व सप्तम भावस्थ हों।

दीन, ऐश्वर्य रहित, कृशकाय, मित्र–रहित, दुष्टा स्त्री के कारण दुःखी।

8. **विहग योग**–सभी ग्रह 4/10 भावस्थ हों।

सुख–भोग–ऐश्वर्य रहित, व्यर्थ भटकाने वाला, परदेशवासी, डींग हाकने वाला, अभावपूर्ण जीवन।

9. **श्रृंगाटक योग**–लग्न से त्रिकोण तक 1/5/9 में सभी ग्रह हों।

नित्य उत्कर्ष पाने वाला, साहसी, युद्ध प्रिय, बुद्धि सागर, प्रथम स्त्री से प्रेम, द्वितीय से द्वेष रहता है।

10. **हल योग**–सभी ग्रह 2/6/10 भावस्थ, या
3/7/11 भावस्थ, अथवा
12/4/8 भावस्थ हों।

दूत कार्य करने वाला, साधुप्रिय, मित्र युक्त, कृषि कर्म द्वारा जीविकोपार्जन, दुःखी, बहु भोजी, अर्थाभाव से कष्ट।

11. वज्र योग–1/7 भावस्थ सभी शुभ ग्रह हों या
4/10 भावस्थ सभी शुभ ग्रह हों।

बाल्यावस्था व अंतिमावस्था में भाग्योदय, सुख भोग मध्यायु में भाग्य व सुख में न्यूनता।

12. यव योग– 1/7 भाव में सभी पाप ग्रह या
4/10 भाव में सभी शुभ ग्रह हों।

युवावस्था से धनादि से सुखी, विनयी, सुयशी, उत्साही, दानी, शान्त, सद्गुणी, बाल्यावस्था व वृद्धावस्था में दुःखी।

13. कमल योग–लग्न व सप्तम या चतुर्थ, दशम भाव में शुभ व पाप ग्रह दोनों हों।

नित्य आनन्द, उत्कर्ष, बलवान, मनोहर, सुन्दर, विख्यात, यशस्वी, राजवंशी, दीर्घ जीवी।

14. वापी योग–यदि चारों केन्द्रों को छोड़ अन्यत्र ग्रह हों।

दीर्घायु, कुल भूषण, सर्व सुखी, धैर्यवान, विद्वान, प्रियवादी, मनस्वी व प्रतापी।

15. यूप योग–लग्न से लगातार चार स्थानों में सभी ग्रह हों।

धीर–गम्भीर, उदार, यज्ञकर्ता, अनेक विद्याओं का ज्ञाता, विवेकशील, सर्व सम्पत्ति युक्त।

16. शर–चतुर्थ से लगातार चार स्थानों में सभी ग्रह हों।

हिंसक, शिल्प कार्य कर दुःखी, वन में आनन्द पाने वाला, वाण–शर आदि का निर्माता, जन्म से ही दुःखी।

17. शक्ति योग–7वें भाव से लगातार चार भावों में सभी ग्रह हों, छोटे–बड़े सभी का प्रेमी, आलसी, सुख व धन से हीन, बलहीन, वाद–विवाद श्रेष्ठ, बुद्धि, गृह सुख रहित।

18. दण्ड योग–दशम से निरन्तर चार भाव में सभी ग्रह हों।

दीन, नीच, उन्मत्तों का साथी, दूत कर्मकर्ता, स्वजनों से वैर, स्त्री–पुत्र, धनरहित, बुद्धिरहित।

19. नौका योग–लग्न से 7 भाव तक लगातार सभी ग्रह हों।

प्रसिद्ध, कृपण, सुख–भोग रहित, कष्टमय जीवन, चोरी का धन खाता है।

20. कूट योग–चतुर्थ से 7 भावों तक निरन्तर सभी ग्रह हों।

वन–पर्वत–दुर्ग में वास करने वाला, मल्ल भीलों का प्रेमी, निर्धन, निन्द्य कर्म करने वाला, धर्माधर्म ज्ञान रहित, कूट कर्मी, झूठी साक्षी, नकली वस्तुएं बनाने वाला।

21. छत्र योग–सप्तम से सात भाव में लगातार सभी ग्रह हों।

पंडित, राज्य कर्मचारी, दयालु, प्रारम्भ से अन्त तक सुखी, राज्य चिह्न धारण करने वाला।

22. धनुष योग–दशम से 7 भाव तक सभी ग्रह हों।

पूर्व व अन्तिम आयु में सुखी, वन–विहारी, गौरवशाली, धनुर्विद्या का जानकार।

23. अर्द्ध चंद्र–1/4/7/10 के अतिरिक्त किसी स्थान से प्रारंभ लगातार 7 स्थानों में सभी ग्रह हों।

राजा द्वारा सम्मानित।

24. चक्र योग–लग्न से एक–एक भाव को छोड़कर विषम भावों में सभी ग्रह हों।

जातक अति सुन्दर, प्रतापी, उपहारों से युक्त, पृथ्वीपालक।

25. समुद्र योग–द्वितीय भाव से प्रारम्भ कर 1-1 भाव छोड़ सम भावों में भी ग्रह हों।

दानी, धीर, सुशील, दयालु, राज्य से सुख युक्त, यशस्वी, कुलीन।

26. गोल योग–सूर्य से शनि–उक्त सातों ग्रह एक ही राशि में हों।

विद्या, बल, उदारता, सामर्थ्य से हीन, विफल प्रयत्न, परदेशवास का इच्छुक, असत्य भाषण, अनीतिवान।

27. युग योग–दो भावों में 7 ग्रह उक्त हों

पाखण्डी, किसी से प्रेम न करने वाला, निर्लज्ज, धर्म–कर्म रहित, पुत्र–धन से हीन, अनुचित–उचित के विवेक से शून्य।

28. शूल योग–3 भावों में सभी ग्रह हों–

युद्ध व विवाद में तत्पर, शूर, कठोर, क्रूर, निर्धन, लोकार्थ कंटक।

29. केदार योग–चार राशियों में सभी ग्रह हों–

सत्यवादी, धनी, नम्र, कृषिकर्मी, परोपकारी, सम्मान करने वाला, सदाचारी।

30. पाश योग–पांच स्थान में ग्रह हों–

दीन–हीन का उपकारी, बंधन के कारण दुःखी, अनेक बिस्तर रखने वाला, घमण्डी, अनर्थों से युक्त, वनवास प्रिय।

31. दामिनी योग–6 स्थानों में सभी ग्रह हों।

स्त्री, पुत्र, धन से सुखी, धीर, विद्वान, रत्नादि से परिपूर्ण कोष से संतुष्ट, सुशील, उदार, श्रेष्ठ।

32. वीणा–7 भावों में सभी ग्रह हों–

सब संपत्तियों से सम्पन्न, शास्त्र व संगीत का ज्ञाता, अनेक का पालक, सर्वसुख सम्पन्न।

सूर्य योग

1. वेशि योग–चंद्रमा के अलावा कोई भी ग्रह सूर्य से द्वादश में हो, द्वितीय भाव में हो। वेशि योग यदि द्वितीय और द्वादश दोनों भाव में हो तो उभयचारी योग होता है।

वेशि योग से मंद दृष्टि, अनेक कार्यकर्ता, नीची दृष्टि कर चलने वाला, मिथ्या व्यवहार, वेशि योग वाला दयालु, स्थूल, वाक्पटु, आलसी व तिरछी दृष्टि तथा उभय चारि योग वाला क्षमावान, स्थिर, संपत्तिवान, बलवान, समान दैहिक अवयव, अधिक उन्नत नहीं, सरल दृष्टि, अचल संपत्ति युक्त होता है।

चंद्र योग

(i) **सुनफा योग**–सूर्य के अलावा कोई ग्रह चंद्रमा के द्वितीय भाव में हो स्व वाहुबल के धन, मान अर्जित, परम यशस्वी, बुद्धिमान, सुखी, राजमंत्री, पुण्यवान व पंडित।

(ii) **अनफा योग**–सूर्य के अतिरिक्त कोई ग्रह चंद्रमा के द्वितीय भाव में हो–जातक उदार, गुणवान, यशस्वी, सुन्दर, प्रियभाषी, सदाचारी, विनयशील, राजा सम ऐश्वर्य सम्पन्न।

(iii) **दुरधरा योग**–सूर्य के अतिरिक्त कोई ग्रह चंद्रमा के 2 व 12 भाव में हो। जातक धन, वाहन, भूमि, बन्धु, संपत्ति युक्त, शत्रुजयी, सुन्दर स्त्रियों का सुख।

(iv) **केमद्रुम योग**–यदि चंद्रमा से 2 व 12 भाव में कोई भी ग्रह न हो–जातक विरुद्ध आचरण करने वाला, मलिन, कुरूप, दूत

कर्मकर्ता, विदेशवासी, स्त्री, मित्र, धन, रहित होता है।

सूर्य से चंद्रमा केंद्रस्थ हो तो धन, जन, विद्या, यश, निपुणता प्राप्त, पणकर में हो तो उक्त फल मध्यम, आपोक्लिम में हो तो अल्प फल मिलता है।

(v) **केमद्रुम भंग**–यदि चंद्रमा पर सभी ग्रहों की दृष्टि हो।

(i) जातक चिरंजीवी, सुखी, सार्वभौम राजा।

(ii) यदि चारों केंद्रों में ग्रह हो।

सर्व सुखदायी।

(iii) यदि जन्म समय मंगल व गुरु तुला में, सूर्य कन्या, चंद्रमा मेष में हो व उस चंद्रमा पर अन्य ग्रहों की दृष्टि न भी हो तो भी, राजा तुल्य ऐश्वर्य भोगी।

(iv) जिसके जन्म समय चंद्रमा से दूसरे मंगल हो–वह अति पराक्रमी, धनी, निष्ठुर वचन, सेनापति, प्रचंड, हिंसक, बाल विरोधी।

(v) चंद्रमा से द्वितीय बुध हो–वेदज्ञ, शास्त्रज्ञ, संगीतज्ञ, धर्मात्मा, कवि, मनस्वी, स्त्रीहित, सुन्दर।

(vi) चंद्रमा से द्वितीय गुरु हो–अनेक विद्याओं का जानकार, प्रसिद्ध, राज्यश्री युक्त, श्रेष्ठ कुटुम्ब, धन–समृद्धि युक्त।

(vii) चंद्रमा से द्वितीय शुक्र हो–स्त्री व क्षेत्र युक्त, श्रेष्ठ वेश, गृहपति चतुष्पद जीवी, पराक्रमी, राज सम्मानित, चतुर।

(viii) चंद्रमा से द्वितीय शनि हो–चतुर, बुद्धिमान, ग्राम/पुर में मान्य, धन–समृद्धि वाला, गुप्त क्रिया वाला, मलिन वेष।

(ix) चंद्रमा से बारहवें मंगल हो–चोरों का स्वामी, धनी, मानी, युद्धेच्छुक, ईर्ष्यालु, क्रोधी, सुन्दर।

(x) चंद्रमा से 12वें बुध हो–गंधर्वविद्या का ज्ञाता, लेखन चतुर, कवि, वक्ता, राज सम्मानित, सौभाग्यशाली, नीतिज्ञ।

(xi) चंद्रमा से 12वें गुरु हो–गंभीर, सत्त्वान, सेवा कार्य में निपुष, बुद्धिमान, यशस्वी, कवि।

(xii) चंद्रमा से बारहवें शुक्र हो–स्त्रियों के सौभाग्यवाला, राज स्नेही, गौ स्वामी, सुन्दर, स्वर्ण समृद्धि युक्त।

(xiii) चंद्रमा से बारहवें शनि हो–विस्तृत भुजाएं, सुन्दर, वचन पालक, पशु धन से समृद्ध, दुष्टाओं के साथ भोग, गुणी, पुत्रवान।

(xiv) यदि जन्म कुण्डली में चंद्रमा मंगल–बुध के मध्य हो–मिथ्यावादी, धनी चतुर, गुणी, लोभी, वृद्धा स्त्री में आसक्त, कुल में प्रमुख।

(xv) यदि चंद्रमा मंगल–गुरु के मध्य हो–प्रसिद्ध कर्म करने वाला, धूर्त, खूब धनी, अनेक शत्रु युक्त, क्रोधी, ढीठ, रक्षक, संग्रहकर्ता।

(xvi) यदि चंद्रमा मंगल–शुक्र के मध्य हो–श्रेष्ठ भाग्यशाली, विषादयुक्त, शस्त्रास्त्र ज्ञाता, शूरवीर, युद्ध प्रिय।

(xvii) यदि चंद्रमा मंगल–शनि के मध्य हो–निंद्य स्त्री संग रमण, संचयी, वायु से तप्त, क्रोधी, चुगलखोर, शत्रु युक्त।

(xviii) यदि चंद्रमा बुध–गुरु के मध्य हो–धर्म में तत्पर, शास्त्रज्ञ, वाचाल, श्रेष्ठ कवि, राजा या त्यागी प्रसिद्ध।

(xix) यदि चंद्रमा बुध–शुक्र के मध्य हो–मधुरभाषी, भाग्यशाली, सुन्दर, गीत–नृत्य की विक्रेता, अनेक मनुष्यों का स्वामी, ईर्ष्यालु, मंत्री, शूरवीर।

(xx) यदि चंद्र बुध–शनि के मध्य हो–देश–विदेश में भ्रमण करने वाला, धनी, अल्प विद्यावान, मित्र विरोधी, लोक पूज्य।

(xxi) यदि चंद्रमा गुरु–शुक्र के मध्य हो–धीर बुद्धि, सुखी, नीतिज्ञ, स्वर्ण रत्नों से परिपूर्ण, प्रसिद्ध, राजकाज में दक्ष।

(xxii) यदि चंद्रमा गुरु–शनि के मध्य हो–सुख–नीति–विद्या युक्त, मधुरभाषी विद्वानों को प्रिय, सम्मानित, धनी, सुन्दर।

(xxiii) यदि चंद्रमा शुक्र–शनि के मध्य हो–वृद्धा स्त्री वाला, कुल में प्रधान, चतुर, स्त्री प्रिय, धन की समृद्धि वाला।

केमद्रुम विशेष फल

(1) जिसके जन्म समय चंद्रमा सप्तम गुरु दृष्टि रहित हो तो केमद्रुम होता है। सभी ग्रह अष्टक वर्ग में चार बिन्दुओं से हीन हों, षड्बल में पंचरूप से हीन हो। चंद्रमा सूर्य से युक्त वृश्चिक में तथा पापी ग्रह के नवांश में हो, क्षीण चन्द्र व रात का जन्म हो, जन्म लग्न से आठवें हो व पापी ग्रहों से दृष्ट हो। राहु से लेकर पाप ग्रहों द्वारा चंद्रमा पीड़ित हो व पाप ग्रहों से दृष्ट भी हो। लग्न या चंद्र से केंद्र स्थानों में (1/4/7/10) पाप ग्रह हो राहु से लेकर

पाप ग्रहों से चंद्रमा युक्त हो व पराजित शुभ ग्रहों से दृष्ट हों, तुला का चंद्र शुभ वर्ग में हो व नीच ग्रहों व शत्रुओं से दृष्ट हो तो। केन्द्र या त्रिकोणस्थ चंद्रमा नीच या शत्रु के वर्ग में हो व चंद्रमा से 6/8/12वें गुरु हो तब। यदि चर राशि, चर नवांश या पाप नवांश में स्थित चंद्रमा पर शत्रु ग्रह की दृष्टि हो, गुरु की दृष्टि न हो–महादारिद्रय योग होता है। नीच, शत्रु या पाप ग्रह के वर्ग, स्थित शनि–गुरु परस्पर देखते हों या युति हो तो राजवंश में जन्म लेकर भी केमद्रुम योग होता है। जन्म काल में पाप ग्रह की राशि या पाप ग्रह से युक्त चंद्रमा हो, या पाप नवांश में चंद्रमा रात्रि के जन्म में हो तथा वह हीन बली हो उस पर नवमेश की दृष्टि हो। रात का जन्म व क्षीण चंद्र वृश्चिक में हो तो उक्त योग होता है।

चंद्रमा या शुक्र केंद्र में हों व उस पर गुरु दृष्टि हो तो दरिद्र योग नहीं होता। और यदि चंद्रमा अधिमित्र, शुभ ग्रह युक्त या शुभ ग्रहों में मध्य गुरु से दृष्ट हो तब भी दरिद्र योग नहीं होता। चंद्रमा अधिमित्र या उच्च या नवांश में हो, उस पर गुरु की दृष्टि हो या पूर्ण चंद्र शुभ ग्रह युक्त बुध की उच्च राशिस्थ व गुरु से दृष्ट हो तो दरिद्र योग नहीं होता।

(1) रुचक योग–यदि मंगल उच्च का होकर केंद्र में हो।

जातक दीर्घायु, मनोहर, रुधिरबली, साहसी, सुन्दर भौंह, काले केश, समान हाथ–पांव, मन्त्र विद्या का ज्ञाता, यशस्वी, रक्त–श्याम वर्ण, अति वीर, शत्रुजयी, शंख जैसा कंठ, उग्र, देव–भक्त, गुरु सेवक, पतले घुटने, लम्बी जांघ, हाथ–पांवों में खाट, पाश, वृष, धनुष, चक्र, वीणा के चिह्न होंगे। मारण, मोहन कार्यों में कुशल 100 वर्षायु देवालय के समीप मृत्यु होती है।

(2) भद्र योग–बुध उच्च का होकर केन्द्र में हो।

सिंह सदृश्य पराक्रमी, हस्तिचाल, विशाल जंघा व छाती, आजानु लम्बी व गोल बांह, समान लम्बाई–चौड़ाई, कामी, कोमल–होड़ी दाढ़ी व केश, पंडित, कमल समान हाथ–पांव, योगी, हाथ–पांवों में शंख, खड्ग, हाथी, गदा, पुष्प, शेर, ध्वजा, चक्र, कमल हल के चिह्न, कुसुम समान सुगंधित देह, गंभीर शब्द वाला होता है। 80 वर्षायु।

(3) हंस योग–गुरु उच्च का होकर केंद्र में हो–

वह जातक रक्त कमल जैसा मुख, उन्नत नाक, सुन्दर पांव, प्रसन्नेन्द्रिय गौरवर्ण, पुष्प फूले कपोल, लाल नख, मधुर वाचा, कफ़ प्रकृति, हाथ–पांवों में शंख, कमल, अंकुश, मत्स्य, रज्जु, खाट, कलश जैसे चिह्न होते

हैं। नेत्र मधुवर्ण, मस्तक गोल, जलाशय प्रेमी, कामी, स्त्रियों से तृप्त न होने वाला, ऊंचाई 86 अंगुल व 96 वर्ष तक जीवित रहता है। वन भाग में मृत्यु होती है।

(4) मालव्य योग–शुक्र यदि उच्च का होकर केन्द्र में हो–

पान समान पतले–पतले ओष्ठ, विषम अंग, पुष्ट देह, संधि युक्त देह, पतली कमर, दर्शनीय कान्ति, लम्बी नाक, सुन्दर–पुष्ट कपोल, तेजस्वी नेत्र, श्वेत व समान दांत, आजानु भुजा, मुख मंडल 13 अंगुल लम्बा होता है।

(5) शशक योग–शनि उच्च का होकर केन्द्र में हो–

छोटे–छोटे दांत, मोटा नहीं छोटा मुख, अद्भुत चाल, क्रोधी, शठ, वीर, निर्जन में विहार, वन पर्वत–नदी–नद से प्रीति, अतिथि प्रेमी, मध्यम कद, लोक विख्यात, सैन्याधिकारी, उन्नत दांत, धातु क्रिया कुशल, चंचल छोटी आंखें, स्त्री आसक्त, पर धन लोभी, मातृ भक्त, सुन्दर जंघा, पतली कमर, बुद्धिमान, शत्रु नाशक, खाट, शर, शस्त्र, मृदंग माला, वीणा के चिह्न युक्त 70 वर्षायु भोगता है।

दो ग्रहों की युति

सूर्य और चंद्रमा

जन्म काल में सूर्य और चन्द्रमा की युति (हो तो अर्थात ये दोनों ग्रह किसी एक भी भाव में बैठे हों! ऐसा जातक अभिमानी दुष्ट क्रियाओं को करने में चतुर, कपटी, विनय रहित, पराक्रमी, क्षुद्र हृदय वाला, कार्य करने में दक्ष, स्त्री के वश में रहने वाला, विषयासक्त तथा पत्थर की वस्तुओं का क्रय–विक्रय करने वाला होता है।

सूर्य और मंगल

जन्म काल में सूर्य और मंगल की युति हो तो जातक तेजस्वी, श्रेष्ठ कर्म–धर्म तथा धन से रहित, सदैव क्लेश करने वाला, क्रोधी, पापबुद्धि, मिथ्यावादी मूर्ख, बलवान, परन्तु अपने बन्धु–बान्धवों से प्रेम रखने वाला होता है।

सूर्य और बुध

जन्म काल में सूर्य और बुध की युति हो तो जातक श्रेष्ठ बुद्धिमान, विद्वान–यशस्वी, राज्य द्वारा सम्मान प्राप्त, स्थिर धन वाला, सेवा कर्म करने में पटु, प्रियवादी, मंत्री तथा राजा की सेवा द्वारा धन कमाने वाला है। वेदज्ञ गीति–वाद्य तथा काव्य आदि कलाओं में कुशल होता है।

सूर्य और गुरु

जन्म काल में सूर्य और गुरु की युति हो तो जातक धर्मात्मा, धनवान, शास्त्रज्ञ, लोक में प्रसिद्ध, मित्रवान, राजमान्य, राजा का मंत्री, पुरोहित कर्म करने में कुशल, चतुर तथा परोपकारी होता है।

सूर्य और शुक्र

जन्म काल में सूर्य और शुक्र की युति हो तो जातक बुद्धिमान, मनुष्यों में श्रेष्ठ, बलवान, नाट्यकार, संगीत–वाद्य तथा शस्त्र विद्या में कुशल, स्त्रियों का प्रिय, मित्रवान, क्षीण दृष्टि वाला, कार्यक्षम तथा स्त्री द्वारा धन प्राप्त करने वाला होता है।

सूर्य और शनि

जन्म काल में सूर्य और शनि की युति हो तो जातक विद्वान, कार्यकुशल, श्रेष्ठ बुद्धि वाला, गुणवान, धातु का काम करने में कुशल, धर्म में प्रीति रखने वाला तथा वृद्ध के समान आचरण करने वाला होता है।

चन्द्रमा और मंगल

जन्म काल में चंद्रमा और मंगल की युति हो तो जातक मिट्टी, चमड़ा अथवा धातुओं के शिल्प में कुशल (कारीगर) धनी, युद्ध कुशल, प्रतापी, आचारहीन, कलह प्रेमी, माता से शत्रुता रखने वाला, व्यवसाय द्वारा जीविकोपार्जन करने वाला, रक्त विकार आदि रोगों से ग्रस्त रहता है।

चंद्रमा और बुध

जन्म काल में चन्द्रमा और बुध की युति हो तो जातक धनी, गुणी, कवि, सुन्दर, हंसमुख, कुल धर्म का पालन करने वाला, स्त्री में आसक्त,

पद पाने वाला, मंत्रज्ञ, शास्त्रज्ञ, शस्त्रज्ञ, अर्थ–साधन करने में निपुण, चतुर, शीलवान्, सेना का अधिकारी अथवा कोई अन्य उच्च पद प्राप्त करने वाला होता है।

मंगल और शुक्र

जन्म काल में मंगल और शुक्र की युति हो तो जातक गणितज्ञ, गुणी, मिथ्यावादी, जुआरी, शठ पर स्त्रीगामी, प्रपंची, पापी, अभिमानी, सबसे शत्रुता रखने वाला, भोगी परन्तु जन समाज में सम्मान प्राप्त करने वाला होता है।

मंगल और शनि

जन्म काल में मंगल और शनि की युति हो तो जातक उचित बोलने वाला, अपने धर्म को छोड़कर पराये धर्म को अपनाने वाला, जादू एवं इन्द्रजाल आदि विद्याओं का ज़ाता, कलह प्रिय, विष तथा मदिरा बनाने एवं बेचने में तत्पर, चोर, मिथ्यावादी, अल्प धन वाला, झगड़ालू, शस्त्र और शास्त्र का ज़ाता, मित्रों से रहित, सुख से रहित तथा अपयश प्राप्त करने वाला होता है।

बुध और गुरु

जन्म काल में बुध और गुरु की युति हो तो जातक नृत्य वाद्य में कुशल, धैर्यवान, सुखी, पण्डित, नीतिज्ञ, विनयी, धैर्यवान, उदार, श्रेष्ठ, गुणों से युक्त तथा सुगन्धित वस्तुओं से प्रेम रखने वाला होता है।

बुध और शुक्र

जन्म काल में बुध–शुक्र की युति हो तो जातक शिल्प कला में कुशल, वेदज्ञ, संगीतज्ञ, नीतिज्ञ, धनी, प्रियवादी, हास्य प्रिय, सुखी, प्रतापी, चतुर, सदैव आनन्दित रहने वाला, श्रेष्ठ स्वरूप वाला तथा अनेक मनुष्यों का स्वामी होता है।

बुध और शनि

जन्म काल में बुध और शनि की युति हो तो जातक कलह प्रिय, चंचल चित्तवृत्ति वाला, संगीत, काव्य आदि में कुशल, भ्रमणशील, उद्योगहीन, उचित बात बोलने वाला तथा दुर्बल शरीर वाला होता है।

गुरु और शुक्र

जन्म काल में गुरु और शुक्र की युति हो तो जातक धन, मित्र, पुत्र, स्त्री आदि के सुख से युक्त, विद्वान, बुद्धिमान, गुणवान, धर्मात्मा, विद्या द्वारा जीविकोपार्जन करने वाला, सुन्दरी स्त्री का पति, शास्त्र तथा पंडित जनों से शास्त्रार्थ करने वाला, बड़ा सुखी और यशस्वी होता है।

गुरु और शनि

जन्म काल में गुरु और शनि की युति हो तो जातक शूरवीर, यशस्वी, जन्म समूह का प्रधान, सेनापति, धनवान, सम्पूर्ण कलाओं में कुशल तथा स्त्री द्वारा मनोवांछित फल को प्राप्त करने वाला होता है।

शुक्र और शनि

जन्म काल में शुक्र और शनि की युति हो तो जातक शिल्प लेख, (मकान आदि पर चित्रकारी करने या पत्थर आदि की वस्तुएं बनाने में कुशल) चंचल बुद्धि वाला, दारुण संग्राम करने वाला, आनन्द से युक्त, पशुओं को पालने वाला लकड़ी चीरने में कुशल, लवण तथा अम्ल रस का प्रेमी तथा उन्मत्त प्रकृति का होता है।

तीन ग्रहों की युति

सूर्य, चंद्र और मंगल

यदि जन्म काल में सूर्य, चंद्र और मंगल की युति हो तो जातक यन्त्र (मशीन) बनाने में कुशल, शूरवीर, दयाहीन, अश्व विद्या में निपुण, स्त्री हीन, सन्तान हीन तथा रक्त विकार से पीड़ित होता है।

सूर्य, चंद्र और बुध

जन्म काल में सूर्य, चंद्र और बुध की युति हो तो जातक धनवान, विद्वान, श्रेष्ठ, कवि अथवा कथाकार, सभाप्रिय, चतुर, प्रियवादी, राजा का सेवक, प्रतापी, अच्छे कामों को करने वाला, वार्तालाप करने में पटु तथा समस्त शास्त्रों एवं कलाओं का जानकार होता है।

सूर्य, चंद्र और गुरु

जन्म काल में सूर्य, चंद्र और गुरु की युति हो तो जातक राजा का मंत्री, स्थिर बुद्धि वाला, शत्रुओं को नष्ट करने वाला, धर्मात्मा, बन्धु-बान्धव का आदर करने वाला, देवता तथा ब्राह्मण का पूजक, चंचल, चतुर तथा धूर्त, पर्यटक प्रेमी, सेवा करने में कुशल तथा विद्वान होता है।

सूर्य, चन्द्र और शुक्र

जन्म काल में सूर्य, चंद्र और शुक्र की युति हो तो जातक सुन्दर शरीर वाला, शत्रुओं को नष्ट करने वाला, परम तेजस्वी, राजा के समान प्रतापी और भाग्यवान, धर्म में प्रीति न रखने वाला, पराये धन का अपहरण करने वाला, व्यसनी तथा दांतों में विकार वाला होता है।

सूर्य, चंद्र और शनि

जन्म काल में सूर्य, चंद्र और शनि की युति हो तो जातक ब्राह्मणों एवं देवताओं का भक्त, धातु कर्म करने में कुशल, वेश्या प्रेमी, व्यर्थ परिश्रम करने वाला, अत्यन्त धूर्त, धर्म का पालन करने वाला, शीलविहीन, धनहीन, हाथी-घोड़ों का पालन करने वाला तथा सत्कर्म करने वाला होता है।

सूर्य, मंगल और बुध

जन्म काल में सूर्य, मंगल और बुध की युति हो तो जातक कठोर चित्तवृत्ति वाला, प्रसिद्ध पराक्रमी, साहसी, निर्लज्ज, धन, स्त्री, पुत्र, मित्र आदि से युक्त तथा सलाह देने में चतुर होता है।

सूर्य, मंगल और गुरु

जन्म काल में सूर्य, मंगल और गुरु की युति हो तो जातक श्रेष्ठ वक्ता, धनी, राजा का मंत्री, सेनापति, नीतिशास्त्रज्ञ, सत्यवादी, उदार ह्रदय वाला, प्रियभाषी, उग्र प्रकृति वाला तथा सब कार्यों को करने में कुशल होता है।

सूर्य, मंगल और शुक्र

जन्म काल में सूर्य, मंगल और शुक्र की युति हो तो जातक सुन्दर, नेत्र रोगी, दयालु, विषयासक्त, कार्य कुशल, धनी, विनम्र अत्यन्त चतुर, बहुत बोलने वाला, गुणवान, अपने कुल में श्रेष्ठ, सुशील अथवा कुलशीलवान होता है।

सूर्य, मंगल और शनि

जन्म काल में सूर्य, मंगल और शनि की युति हो तो जातक मूर्ख, धन तथा पशुओं से रहित, रोगी, स्वजनों से तिरस्कृत अथवा स्वजन-विहीन, विकल, कलह से व्याकुल तथा सघन रोगों वाला होता है।

सूर्य, बुध और गुरु

जन्म काल में सूर्य, बुध और गुरु की युति हो तो जातक नेत्र रोगी, बड़ा धनी, शास्त्रज्ञ, शस्त्र विद्या का ज्ञाता, लेखक तथा संग्रहशील स्वभाव का चतुर व्यक्ति होता है।

सूर्य, बुध और शुक्र

जन्म काल में सूर्य, बुध और शुक्र की युति हो तो जातक आचार-विहीन, विदेशवासी, सबसे शत्रुता रखने वाला, दुर्बुद्धि, माता-पिता आदि गुरुजनों से तिरस्कृत तथा स्त्री के कारण दुःखी रहने वाला होता है।

सूर्य बुध और शनि

जन्म काल में सूर्य, बुध एवं शनि की युति हो तो जातक दुराचारी, बन्धु-बान्धवों से परित्यक्त, सबसे शत्रुता रखने वाला, शत्रु द्वारा पराजित, नपुंसकों जैसे स्वभाव वाला, परम दुष्ट तथा नीच मनुष्यों का संग करने वाला होता है।

सूर्य, गुरु और शुक्र

जन्म काल में सूर्य, गुरु और शुक्र की युति हो तो जातक राजा का आश्रित, नेत्र रोगी, पंडित, शूरवीर, परोपकारी, कम बोलने वाला, दुष्ट स्वभाव वाला, पराये काम में अधिक रुचि रखने वाला तथा धन से रहित होता है।

सूर्य, गुरु और शनि

यदि जन्म काल में सूर्य, गुरु और शनि की युति हो तो जातक राजाओं का प्रिय, मित्र–स्त्री तथा पुत्रादि से युक्त, सुन्दर शरीर वाला, प्रगल्भ, बहुत सोच–विचार कर खर्च करने वाला, निर्भय, अपने बन्धुओं का हित करने वाला तथा मित्रों से युक्त होता है।

सूर्य, शुक्र और शनि

जन्म काल में सूर्य, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक कलाविहीन, मान–हीन, खुजली अथवा कुष्ठ रोगी, शत्रुओं से भयभीत रहने वाला, दुराचारी, भाई–बन्धुओं से रहित तथा अनेक प्रकार के कुकर्म करने वाला होता है।

चंद्र, मंगल और बुध

जन्म काल में चंद्र, मंगल और बुध की युति हो तो जातक दुराचारी, पापी, बन्धु–बान्धवों से हीन, जीविका विहीन, अपमानित, अत्यन्त दीन तथा नीच मनुष्यों की संगति करने वाला होता है।

चंद्र, मंगल और गुरु

जन्म काल में चंद्र, बुध और गुरु की युति हो तो जातक क्रोधी, स्त्री में आसक्त, फोड़ा–फुंसी से युक्त, सुन्दर शरीर वाला, अपहरणकर्ता, बलवान, स्त्रियों को प्रिय, परस्त्रीगामी तथा सदैव प्रसन्न रहने वाला होता है।

चंद्र, मंगल और शुक्र

जन्म काल में चंद्र, मंगल और शुक्र की युति हो तो जातक की माता एवं स्त्री दुष्ट स्वभाव की होती है। ऐसा व्यक्ति शीत से डरने वाला, निरन्तर

भ्रमणशील, चंचल स्वभाव वाला तथा कुशील होता है। परन्तु उसका पुत्र शीलवान होता है।

चंद्र, मंगल और शनि

जन्म काल में चंद्र, मंगल और शनि की युति हो तो जातक की माता उसके बाल्यकाल में ही मृत्यु को प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति शूद्र स्वभाव वाला, कुटिल, लोकद्वेषी तथा कलहप्रिय होता है। वह सदैव दुःखी बना रहता है।

चंद्र, बुध और गुरु

जन्म काल में चंद्र, बुध और गुरु की युति हो तो जातक बुद्धिमान, भाग्यवान, श्रेष्ठ मनोवृत्ति, यशस्वी, परम प्रसिद्ध, श्रेष्ठ मित्रों वाला, तेजस्वी, धनवान, पुत्र, मित्र, स्त्री आदि के सुख से युक्त तथा कुशल–वक्ता होता है।

चंद्र, बुध और शुक्र

जन्म काल में चंद्र, बुध और शुक्र की युति हो तो जातक बड़ा विद्वान होता है। ईर्ष्यालु, धन का लोभी, दुराचारी तथा नीचवृत्ति द्वारा जीविका का उपार्जन करने वाला होता है। वह श्राद्ध के सम्बन्ध में विशेष श्रद्धालु रहता है।

चंद्र, बुध और शनि

जन्म काल में चंद्र, बुध और शनि की युति हो तो जातक विनम्र, सम्पूर्ण कलाओं में कुशल, श्रेष्ठ बुद्धि वाला, विश्व प्रसिद्ध राजाओं को प्रिय, नगर अथवा ग्राम पर आधिपत्य रखने वाला, महाविद्वान, प्रियवादी पंडित तथा लम्बे शरीर वाला होता है।

चंद्र, गुरु और शुक्र

जन्म काल में चंद्र, गुरु और शुक्र की युति हो तो जातक की माता अत्यन्त सुशील होती है। वह व्यक्ति विद्वान, सब कलाओं का ज्ञाता, मन्त्रज्ञ एवं शास्त्रज्ञ, सुन्दर शरीर वाला, चतुर तथा राजाओं का प्रिय होता है।

चंद्र, गुरु और शनि

जन्म काल में चंद्र, गुरु और शनि की युति हो तो जातक स्वस्थ शरीर वाला, शास्त्रज्ञ, व्यवहार कुशल, स्त्रियों को प्रिय, राजा द्वारा सम्मानित, अत्यन्त चतुर तथा उच्च अधिकारी होता है।

चंद्र, शुक्र और शनि

जन्म काल में चंद्र, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक वेदज्ञ, चित्रकार, लेखक, धनी, धर्मात्मा, सुन्दर शरीर वाला तथा पुरोहितों में श्रेष्ठ होता है।

मंगल, बुध और गुरु

जन्म काल में मंगल, बुध और गुरु की युति हो तो जातक, प्रतापी, संगीतज्ञ, परोपकारी, श्रेष्ठ कवि, चतुर, स्त्रियों को प्रिय, पर हित साधन करने वाला तथा अपने कुल में राजा के समान होता है।

मंगल, बुध और शुक्र

जन्म काल में मंगल, बुध और शुक्र की युति हो तो जातक दुर्बल शरीर वाला, अत्यन्त उत्साही, बहुत बोलने वाला, ढीठ, वाचाल, हीन कुल में उत्पन्न, सन्तुष्ट तथा अंगहीन होता है।

मंगल, बुध और शनि

जन्म काल में मंगल, बुध और शनि की युति हो तो जातक डरपोक एवं दुर्बल शरीर, परदेश में रहने वाला, वन में रहने की इच्छा, बुरे नेत्रों वाला, सहिष्णु, अत्यधिक कष्ट भोगने वाला, नेत्र रोगी, मुख रोगी, हास्य प्रिय तथा दूतकर्म करने वाला होता है।

मंगल, गुरु और शुक्र

जन्म काल में मंगल, गुरु और शुक्र की युति हो तो जातक सुखी, सबको प्रसन्न करने वाला, राजा का प्रिय, उत्तम स्त्री तथा पुत्रों वाला एवं श्रेष्ठ जनों द्वारा सम्मानित होता है।

मंगल, गुरु और शनि

जन्म काल में मंगल, गुरु और शनि की युति हो तो जातक कृश शरीर, दुराचारी, निर्धन, मित्रों द्वारा निन्दित, परन्तु राज्य द्वारा कृपापात्र, बुरे कर्म करने वाला होता है।

मंगल, शुक्र और शनि

जन्म काल में मंगल, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक स्त्री के सुख से रहित, परदेश में रहने वाला, सदैव दुःख भोगने वाला, परन्तु स्वयं अच्छे स्वभाव वाला होता है।

बुध, गुरु और शुक्र

जन्म काल में बुध, गुरु और शुक्र की युति हो तो जातक सुन्दर, राजा द्वारा सम्मानित, शत्रुओं को परास्त करने वाला, परम यशस्वी, सत्यवादी तथा सदैव प्रसन्न रहने वाला होता है।

बुध, गुरु और शनि

जन्म काल में बुध, गुरु और शनि की युति हो तो जातक बड़ा धनी, शीलवान, श्रेष्ठ वस्त्राभूषण वाला, सेवक एवं वाहनों से युक्त, भाग्यवान्, पंडित, सुखी, धैर्यवान तथा उत्तम स्त्री का पति होता है।

बुध, शुक्र और शनि

जन्म काल में बुध, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक चुगलखोर, नीच लोगों के साथ रहने वाला, पर स्त्री गामी, कलाओं का जानकार, मिथ्यावादी, धूर्त, आचार-रहित, दूर देशों की यात्रा करने वाला, धैर्यवान तथा स्वदेश प्रेमी होता है।

गुरु, शुक्र और शनि

जन्म काल में गुरु, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक नीच कुल में जन्म लेने पर भी सुशील, राजा के समान प्रतापी, धनी, यशस्वी तथा निर्मल चित्त वाला होता है। वह अत्यन्त कीर्ति अर्जित करता है तथा भूमि का स्वामी होता है।

चार ग्रहों की युति

सूर्य, चंद्र, मंगल और बुध

जन्म काल में सूर्य, चंद्र, मंगल और बुध की युति हो तो जातक चुगलखोर, चोरी करने वाला, व्यर्थ बोलने वाला, मायावी, सब काम करने में सक्षम, चित्रकार, लेखक, मुख रोगों तथा भाषा पर अधिकार रखने वाला होता है।

सूर्य, चंद्र, मंगल और गुरु

जन्म काल में सूर्य, चंद्र, मंगल और गुरु की युति हो तो जातक शिल्प का ज्ञाता, बड़े नेत्रों वाला, स्वर्ण के समान कांतिमान शरीर वाला, बलवान, सब काम करने में कुशल, तेजस्वी, धनवान, शोक रहित तथा नीतिज्ञ होता है।

सूर्य, चंद्र, मंगल और शुक्र

जन्म काल में सूर्य, चंद्र, मंगल और शुक्र की युति हो तो जातक शास्त्र के अर्थ को जानने वाला, पुत्र तथा स्त्री के सुख से सम्पन्न, बहुत बोलने वाला, धनवान तथा भाषण-वाक्पटुता, वकालत आदि वाणी से सम्बन्धित कार्यों द्वारा जीविकोपार्जन करने वाला होता है।

सूर्य, चंद्र, मंगल और शनि

जन्म काल में सूर्य, चंद्र, मंगल और शनि की युति हो तो जातक बौने अथवा विषम शरीर वाला, धनहीन, मूर्ख, भिक्षा द्वारा आजीविका करने वाला, दुर्बल शरीर वाला, दरिद्र होता है।

सूर्य, चंद्र, बुध और गुरु

यदि जन्म काल में सूर्य, चंद्र, बुध और गुरु की युति हो तो जातक शोक रहित, तेजस्वी, पराधीन, नीतिशास्त्र में कुशल, शिल्पज्ञ, रोग हीन, सुन्दर नेत्रों वाला तथा गौर वर्ण शरीर वाला होता है।

सूर्य, चंद्र, बुध और शुक्र

जन्म काल में सूर्य, चंद्र, बुध और शुक्र की युति हो तो जातक छोटे कद वाला, सुन्दर, राज्य द्वारा सम्मान प्राप्त, सुवक्ता, कांतिमान, परन्तु विकल रहने वाला होता है।

सूर्य, चंद्र, बुध और शनि

जन्म काल में सूर्य, चंद्र, बुध और शनि की युति हो तो जातक माता-पिता से हीन, विकलांग, निर्धन, दरिद्र, भिक्षुक, नेत्र-रोगी तथा कुटुम्ब रहित होता है।

सूर्य, चंद्र, गुरु और शुक्र

जन्म काल में सूर्य, चंद्र, गुरु और शुक्र की युति हो तो जातक जल, मृग एवं वन में प्रीति रखने वाला, सुखी, गुणी तथा राजाओं द्वारा सम्मानित होता है।

सूर्य, चंद्र, गुरु और शनि

जन्म काल में सूर्य, चंद्र, गुरु और शनि की युति हो तो जातक अत्यन्त दुर्बल शरीर वाला, स्त्रियों के समान आचरण करने वाला, डरपोक परन्तु लोगों का अगुवा होता है।

सूर्य, मंगल, बुध और गुरु

सूर्य, मंगल, बुध और गुरु की युति हो तो जातक पराई स्त्रियों से रमण करने वाला, देवता तथा ब्राह्मणों का सेवक, विजयी, शूरवीर, चक्रधारी तथा सूत का व्यवसाय करने वाला होता है।

सूर्य, मंगल, बुध और शुक्र

जन्म काल में सूर्य, मंगल, बुध और शुक्र की युति हो तो जातक निर्लज्ज, चोर, दुर्जन, विषम अंगों वाला, परस्त्रीगामी, देवता तथा ब्राह्मणों की सेवा करने वाला होता है।

सूर्य, मंगल, बुध और शनि

जन्म काल में सूर्य, मंगल, बुध और शनि की युति हो तो जातक कवि, योद्धा, राजा अथवा मंत्री, प्रतापी, नीच आचरण करने वाला, अस्त्र-शस्त्रों का ज्ञाता तथा नीच पुरुषों की संगति में रहने वाला होता है।

सूर्य, मंगल, गुरु और शुक्र

जन्म काल में सूर्य, मंगल, गुरु और शुक्र की युति हो तो जातक राजा द्वारा सम्मान प्राप्त, अत्यन्त धनी, यशस्वी, सुन्दर शरीर वाला, नीतिज्ञ तथा मनुष्यों का पालन करने वाला होता है।

सूर्य, मंगल, गुरु और शनि

जन्म काल में सूर्य, मंगल, गुरु और शनि की युति हो तो जातक मनुष्यों में श्रेष्ट, राजा द्वारा पूजित, सब कामों में सफलता पाने वाला, सुप्रसिद्ध, सेनापति, मंत्री, धनी, अन्न का संचय करने वाला तथा दयालु स्वभाव का होता है।

सूर्य, मंगल, शुक्र और शनि

जन्म काल में सूर्य, मंगल, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक नीच जाति के मनुष्य को अपने साथ रखने वाला, जनद्रोही, दुराचारी, मूर्ख, कटुभाषी, मांसाहारी तथा नीच कर्म करने वाला होता है।

सूर्य, बुध, गुरु और शुक्र

जन्म काल में सूर्य, बुध, गुरु और शुक्र की युति हो तो जातक धनवान्, दुखी, प्रसन्न रहने वाला, बुद्धिमान, सव कामों में सफलता पाने वाला, विनयी, मानी, राजा के सामान सुख भोगने वाला तथा स्त्री पुत्रादि से युक्त होता है।

सूर्य, बुध, गुरु और शनि

जन्म काल में सूर्य, बुध, गुरु और शनि की युति हो तो जातक बहुत भाइयों वाला, नपुंसक के समान, झगड़ालू, उद्योगहीन, निन्दित कर्म करने वाला तथा मानी होता है।

सूर्य, बुध, शुक्र और शनि

जन्म काल में सूर्य, बुध, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक पवित्र हृदय वाला, सुवक्ता, मित्रों वाला, सुन्दर, पंडित, विद्वान, भाइयों द्वारा सम्मानित, पुत्र तथा स्त्री के सुख को प्राप्त करने वाला, पवित्र विचारों वाला, भाग्यशाली तथा सुखी होता है।

सूर्य, गुरु, शुक्र और शनि

जन्म काल में सूर्य, गुरु, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक लोभी, सुखी, शिल्पज्ञ, कवि, राजा का प्रिय, परम कृपण परन्तु करुणा से पूर्ण हृदय वाला होता है।

चन्द्र, मंगल, बुध और गुरु

जन्म काल में चन्द्र, मंगल, बुध और गुरु की यूति हो तो जातक शास्त्रज्ञ, मनुष्यों में श्रेष्ठ, परम, विद्वान, वुद्धिमान, लोकपूजित, सत्यवादी, राजा का कृपा पात्र तथा सुखी जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

चंद्र, मंगल, बुध, और शुक्र

शुक्र की युति हो तो जातक की स्त्री कुलटा होती है, वह नींद में समय बिताने वाला, झगड़ालू, नीच प्रकृति का, बन्धु–द्वेषी, वेद तथा शास्त्रों का निन्दक, भाइयों से द्रोह करने वाला तथा नीच मनुष्यों से प्रेम करने वाला होता है।

चन्द्र, मंगल, बुध और शनि

जन्म काल में चन्द्र, मंगल, बुध और शनि की युति हो तो जातक वीरवंश में जन्म लेने वाला, दो माताओं वाला, स्त्री–पुत्र तथा मित्रादि से युक्त, सुखी जीवन व्यतीत करने वाला तथा साहसी होता है।

चंद्र, मंगल, गुरु और शुक्र

जन्म काल में चंद्र, मंगल, गुरु और शुक्र की युति हो तो जातक, अंगहीन, साहसी, धनी, मानी, पण्डित, पुत्रवान्, नीतिज्ञ परन्तु विकल बना रहने वाला होता है।

चंद्र, मंगल, गुरु और शनि

जन्म काल में चंद्र, मंगल, गुरु और शनि की युति हो तो जातक बहरा, उन्मादी, धनवान, अपने वचन का पालन करने वाला, शूरवीर, पण्डित, सत्यवादी, सदैव आनन्दित रहने वाला, राज्य द्वारा सम्मानित, दयालु परन्तु नीच मनुष्यों के साथ रहने वाला होता है।

चंद्र, मंगल, शुक्र और शनि

जन्म काल में चंद्र, मंगल, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक मलीन, कुलटा स्त्री का पति, उद्वेगी, जुआरी, मद्य-मांस का सेवन करने वाला, सर्प जैसी आंखों वाला, महा ढीठ, कुल का वंचक, सबका शत्रु तथा दरिद्री होता है। वह वीर वंश में जन्म लेकर भी वीर नहीं होता है।

चंद्र, गुरु, शुक्र और बुध

जन्म काल में चंद्र, गुरु, शुक्र और बुध की युति हो तो जातक सुन्दर शरीर वाला, धनी, माता-पिता से रहित, शत्रु विहीन, पण्डित, दयालु, चतुर, दानी तथा शास्त्रज्ञ होता है।

चंद्र, गुरु, शनि और बुध

जन्म काल में चंद्र, गुरु, शनि और बुध की युति हो तो जातक कवि, तेजस्वी, बन्धु-बांधवों का प्रिय, राज्य मंत्री, धर्मात्मा, यशस्वी, ज्ञानी, इन्द्रियजित तथा सब लोगों को प्रिय होता है।

चंद्र, बुध, शुक्र और शनि

जन्म काल में चंद्र, बुध, शुक्र और शनि की युति हों तो जातक नेत्र रोगी, राजा द्वारा सम्मानित, धनी, गांव का स्वामी तथा अनेक पत्नियों वाला होता है।

चंद्र, गुरु, शुक्र और शनि

जन्म काल में चंद्र, गुरु, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक पण्डित, पर स्त्रीगामी, दूसरों की सहायता करने वाला, पुरुषों में श्रेष्ठ तथा धनहीन होता है। उसकी पत्नी का शरीर मोटा होता है।

मंगल, बुध, गुरु और शुक्र

यदि जन्म काल में मंगल, बुध, गुरु और शुक्र की युति हो तो जातक स्त्री से कलह करने वाला, सुशील, धनी, दयालु, राजमान्य, स्वस्थ शरीर वाला तथा लोकप्रिय होता है।

मंगल, बुध, गुरु और शनि

जन्म काल में मंगल, बुध, गुरु और शनि की युति हो तो जातक शूरवीर, सत्यवादी, पवित्र हृदय वाला, धैर्यवान, सुवक्ता, विद्वान, विनम्र परन्तु धनहीन होता है।

मंगल, बुध, शुक्र, और शनि

जन्म काल में मंगल, बुध, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक पुष्ट शरीर वाला, मधुर भाषी, मल्ल विद्या में निपुण, धनहीन, कुत्तों को पालने वाला तथा लोक प्रसिद्धि प्राप्त करने वाला होता है।

मंगल, गुरु, शुक्र और शनि

जन्म काल में मंगल, गुरु, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक मानी, धूर्त, विषयी, पर-स्त्रीगामी, धनी, विनम्र, साहसी, विद्वान तथा श्रेष्ठ मनुष्यों का प्रिय होता है।

बुध, गुरु, शुक्र और शनि

जन्म काल में बुध, गुरु, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक वेद-वेदांग का ज्ञाता, मेधावी, शास्त्र विद्या में स्नेह रखने वाला तथा विषय-वासना में लीन रहने वाला कामी पुरुष होता है।

पांचों ग्रहों की युति

सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध और गुरु

जन्म काल में सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध और गुरु हो तो जातक की पत्नी दुष्ट स्वभाव की होती है, जिसके कारण जातक सदैव उद्विग्न बना रहेगा। ऐसा व्यक्ति स्त्री-हीन भी हो सकता है। साथ ही वह दुष्ट, क्रोधी, छली तथा सदैव दुःखी रहने वाला होता है।

सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध और शुक्र

जन्म काल में सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध और शुक्र हो तो जातक बन्धुहीन, असत्य बोलने वाला, दूसरों के काम करने वाला, हिजड़ों के समान आकृति वाला, परन्तु दयालु स्वभाव का होता है।

सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध और शनि

जन्म काल में सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध और शनि हो तो जातक स्त्री-पुत्रादि से रहित, चोर, सदैव दुःख भोगने वाला, बन्धन (कैद) को प्राप्त करने वाला और प्राय: थोड़ी आयु तक ही जीवित रह पाता है।

सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध और शुक्र

जन्म काल में सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध और शुक्र की युति हो तो जातक माता-पिता के सुख से रहित, नेत्र रोगी, दुःखी, हाथी से प्रेम रखने वाला, संगीतज्ञ अथवा जन्मान्ध होता है।

सूर्य, चंद्र, मंगल, गुरु और शनि

जन्म काल में सूर्य, चंद्र, मंगल, गुरु और शनि की युति हो तो जातक पराये धन का अपहरण करने वाला, व्यसनी, सज्जनों का वैरी, वृक्ष के समान आकृति वाला, दुष्ट, झगड़ालू, डरपोक तथा दूसरों को दुःख देने वाला होता है।

सूर्य, चंद्र, मंगल, शुक्र और शनि

जन्म काल में सूर्य, चंद्र, मंगल, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक सबका द्वेषी, धन-हीन, अधर्मी, आचार-विचार-रहित तथा पर-स्त्रीगामी होता है।

सूर्य, चंद्र, बुध, गुरु और शुक्र

जन्म काल में सूर्य, चंद्र, बुध, और शुक्र की युति हो तो जातक न्यायाधीश, राजमन्त्री, धनी, यशस्वी, चतुर, राजा द्वारा सम्मानित तथा सर्वत्र प्रशंसित होता है।

सूर्य, चंद्र, बुध, गुरु और शनि

जन्म काल में सूर्य, चंद्र, बुध, गुरु और शनि की युति हो तो जातक पराये अन्न पर निर्वाह करने वाला, ऋण-ग्रस्त, दुष्ट-कर्मों को करने वाला, धर्म-द्वेष, कायर, वेश्यागामी, उन्मादी, उग्र स्वभाव वाला, अपने मित्रों के कारण दुःखी तथा धूर्त होता है।

सूर्य, चंद्र, बुध, शुक्र और शनि

जन्म काल में सूर्य, चंद्र, बुध, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक धन सन्तान, मित्र तथा सुख से हीन, उत्साही, तथा रोगी शरीर वाला होता है। तथा शरीर पर रोयें अधिक होते हैं।

सूर्य, चंद्र, गुरु, शुक्र और शनि

जन्म काल में सूर्य, चन्द्र, गुरु, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक इन्द्रजाल-विद्या का जानकार, पण्डित, समर्थ, निर्भय, चंचल स्वभाव वाला, सुवक्ता, स्त्रियों का प्रिय, पापी, वाक्छल में प्रवीण तथा शत्रुओं द्वारा पीड़ित होता है।

सूर्य, मंगल, बुध, गुरु और शुक्र

यदि जन्म काल में सूर्य, मंगल, बुध, गुरु और शुक्र की युति हो तो जातक स्वच्छ एवं सुन्दर शरीर वाला, समर्थ, कामी, धीर, राजा का प्रिय, सेनापति बहुत से घोड़े रखने वाला, यशस्वी, धन-धान्य तथा सेवकों से युक्त होता है।

सूर्य, मंगल, बुध, गुरु और शनि

यदि जन्म काल में सूर्य, मंगल, बुध, गुरु और शनि की युति हो तो जातक रोगी, मलिन, उद्विग्न चित्त वाला, जर्जर शरीर वाला, भिक्षुक, जड़, पुत्रवान तथा अल्प धन वाला होता है।

सूर्य, मंगल, बुध, शुक्र और शनि

जन्म काल में सूर्य, मंगल, बुध, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक रोग तथा तथा शत्रुओं से ग्रस्त, स्थान भ्रष्ट, विकल, बुभुक्षित, दुःखी तथा दरिद्र होता है।

सूर्य, मंगल, गुरु, शुक्र और शनि

जन्म काल में सूर्य, मंगल, गुरु, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक धातु यन्त्र एवं रसायन के कामों में प्रवीण तथा प्रसिद्धि प्राप्त करने वाला, विद्वान, विचारवान, धनी, भाई बन्धुओं से युक्त तथा तपस्वी होता है।

सूर्य, बुध, गुरु, शुक्र और शनि

जन्म काल में सूर्य, बुध, गुरु, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक मित्रों का प्रिय, माता, पिता तथा गुरुजनों का भक्त, दयालु, धर्मात्मा, शास्त्रज्ञ, सुवक्ता, धनी तथा सेनापति होता है।

चंद्र, मंगल, बुध, गुरु और शनि

जन्म काल में चंद्र, मंगल, बुध, गुरु और शनि की युति हो तो जातक सज्जन, विद्वान, बहुत पुत्रों वाला, मित्रवान, धनवान, अच्छे स्वभाव वाला, निष्पाप तथा सुखी जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

चंद्र, मंगल, बुध, गुरु और शनि

जन्म काल में चंद्र, मंगल, बुध, गुरु और शनि की युति हो तो जातक दूसरों से अन्न की याचना करने वाला, मलिन पराई सेवा करने वाला, ब्राह्मण तथा रतौंधी रोग से युक्त होता है।

चंद्र, मंगल, बुध, शुक्र और शनि

यदि जन्म काल में चंद्र, मंगल, बुध, शुक्र और शनि की युति हो तो, जातक कुरुप, मलिन, मूर्ख, नपुसंक, निर्धन, मित्रों से बैर रखने वाला, दुष्टकर्म करने वाला पराई निन्दा करने वाला तथा कठोर हृदय वाला होता है।

चंद्र, मंगल, गुरु, शुक्र और शनि

जन्म काल में चंद्र, मंगल, गुरु, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक के बहुत से मित्र तथा बहुत से शत्रु होते हैं। वह दुष्ट स्वभाव वाला, दूसरों को कष्ट देने वाला, मलिन, पराई सेवा करने वाला, परन्तु विद्वान होता है।

चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र और शनि

यदि जन्म काल में चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक राजा का मंत्री, लोक में पूजित, अत्यन्त गुणवान्, गणाधीश, धनी तथा सुखी एवं यशस्वी होता है।

मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि

यदि जन्म काल में मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक तामसी स्वभाव वाला, चंचल, आलसी, अधिक सोने वाला, पवित्र वक्ता, दीर्घायु, राजा तथा अन्य मनुष्यों को प्रिय, धनी तथा सुखी होता है।

छः ग्रहों की युति

सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, गुरु और शुक्र

यदि जन्म काल में सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, गुरु और शुक्र की युति हो तो जातक, धन-धान्य, विद्या तथा धर्म से युक्त, कम बोलने वाला, अत्यन्त भोगी, भाग्यवान्, यशस्वी तथा सुखी जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, गुरु और शनि

यदि जन्म काल में सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, गुरु और शनि की युति हो तो जातक दयालु, चंचल स्वभाव का, शुद्ध अन्तःकरण वाला, परोपकारी, वन में विचरण करने वाला तथा विवाद में विजय प्राप्त करने वाला होता है।

सूर्य, चंद्र, मंगल, गुरु, शुक्र और शनि

यदि जन्म काल में सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक प्रत्येक काम में संशय करने वाला, मानी, सुप्रसिद्ध, संग्राम अथवा विवाद में विजय प्राप्त करने वाला, चिन्तित, वनों तथा पर्वतों में विचरण करने वाला एवं घातक स्वभाव वाला होता है।

सूर्य, चंद्र, मंगल, गुरु, शुक्र और शनि

जन्म काल में सूर्य, चंद्र, मंगल, गुरु, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक युद्ध करने के लिए उद्यत, क्रोधी, कृपण, धनी, सुखी राजाओं का कृपा–पात्र, ग्राम का पूज्य, लोभी, सुन्दर, भ्रम–मति वाला तथा स्त्रियों को प्रिय होता है।

सूर्य, चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र और शनि

यदि जन्म काल में सूर्य, चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक स्त्री विहीन, धनहीन, राजमंत्री, क्षमाशील, धर्मज्ञ, वेदज्ञ, राजा द्वारा सम्मानित, दयालु तथा सुप्रसिद्ध व्यक्ति होता है।

सूर्य, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि

यदि जन्म काल में सूर्य, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक धन, स्त्री तथा पुत्र से रहित, तीर्थ यात्रा करने वाला, वनवासी, ब्रह्म विद्या का ज्ञाता, क्षमाशील तथा भिक्षुक होता है।

चंद्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि

यदि जन्म काल में चंद्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक राज–मान्य, धनी, गुणवान, विश्वप्रसिद्ध, अनेक स्त्रियों वाला, राजा का मन्त्री, पवित्र हृदय वाला, आलसी तथा यशस्वी होता है।

सात ग्रहों की युति

सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि

यदि जन्म काल में सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि की युति हो तो जातक सूर्य के समान तेजस्वी, राजाओं द्वारा सम्मानित, दानी, धनी तथा शिवजी का भक्त होता है।

कुण्डली-फल

ज्यों की त्यों सभी कुण्डलियों का मिलना संभव नहीं पर शनि, राहु, गुरु, केतु इन चार प्रमुख ग्रहों का मिलान अवश्य करें, उसके नीचे लिखी संख्यानुसार फलादेश समझें।

1. ल 4 6 10 11 12 2
3 सू बु के गु रा श चं मं शु

जातक दानी, अभिमानी, मातृहीन, अल्पायु, पितृ सुख हीन, अल्प शिक्षा, कवि-लेखक-ज्योतिषी, वक्ता, नीतिज्ञ, स्त्री प्रेमी, धनी, पांवों में दर्द, विवेकी, कटु सत्यवादी, सुन्दर, मध्यम कद, ऋणी, शत्रुजित, कृपण, मृत्यु तीर्थ पर या घर में स्त्री के समझ, 61 वर्ष आयु, सन्तान पक्ष से चिन्तित, 9/12/19/33/45/56 वें वर्ष नेष्ट। 17/20/28/43/55 वें वर्ष श्रेष्ठ, विपत्ति में गुरु मंत्र का जाप, सोने की अंगूठी में मूंगा धारण करें। पूर्व जन्म में म्लेच्छ था, आगे के जन्म में गर्दभ बनेगा पर उसके बाद पुन: मनुष्य होगा। इस कुण्डली में चंद्रमा यदि 1/2/6/7/10 भावस्थ हो तो क्रमश: श्रेष्ठ सन्तान युक्त, धनी, रोगी, यात्रा में मृत्यु पावक, प्रतापी, राज-सम्मानित होगा।

2. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
3 3 7 2 3 6 1 11 10 4

जातक स्वाभिमानी, बुद्धिमान, नीतिज्ञ, मातृ प्रिय, दानी, भोगी, धनी, कामी, शत्रुजित, बांधव युक्त, पितृ विरोधी, मातृ भक्त, भाग्यशाली, नाटा गेहुआं, रंग, पांवों में पीड़ा, मनमौजी, अप्रिय सत्य के कारण अपवाद, विवाह योग 22वें वर्ष, दबी हुई पत्नी, दु:खी, विद्योपजीवी, धार्मिक पर विडम्बना पूर्ण स्थिति में, राजकीय कलंक को स्व चतुराई से पार कर लेगा। कम पुत्र, कन्या तीन, दो पुत्र सेवा करेंगे, नेत्र रोग या अतिसार से 80 वर्षायु में घर में वैशाख शुक्ला 4 बुधवार को मृत्यु। 1/11/24/36/49/72/78वें वर्ष अशुभ 16/22/34/40/56/66/73वें शुभ, रजत अंगूठी में हीरा धारण करें, गणपति का पूजन करें। चंद्रमा यदि 2/5/6/10/12 भावस्थ हों तो क्रमश: धनी स्त्री प्रेमी, शत्रु युक्त, कर्मण्य राज्याश्रयीय खर्चीला होगा। पूर्व जन्म में ब्राह्मण, अगले जन्म में भी ब्राह्मण होगा।

3. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
5 5 2 4 4 6 4 10 10 4

जातक प्रतापी, दीर्घ कालतक, बलवान, गौरवर्ण, सुन्दर, वाक्पटु, विवेकी, शत्रु हन्ता, दृढ़ उत्साही, अल्पसंतति, स्त्री, अलग जीवनयापन, परस्त्री रत, भोगी, स्वयं उपार्जित धन से सुखी, ऐश्वर्यशाली, ज्योतिष, कर्मकाण्ड में दक्ष, गणितज्ञ, तत्परता से खर्च करने वाला, उग्रकर्मी, गुप्त योजनाओं का निर्माता, व्यवहारी, स्वाभिमानी, वायुविकार, ग्रस्त, बड़े लोगों से सम्पर्क, साधन वाला, ठाट-बाट से रहने वाला, एक पुत्री तीन पुत्र, सेवा एक ही पुत्र करेगा। मृत्यु ज्येष्ठ कृष्णा 1, सोमवार। 72 वर्षायु में सर्प दंश या शस्त्राघात से, तीर्थस्थान पर 3/11/21/34/45/45/68वें वर्ष हानि प्रद 7/16/24/36/52/55/62वें लाभप्रद, गोमेद धारण करें। वासुदेव का यन्त्रात्मक अनुष्ठान उत्तम, पूर्व जन्म में शूद्र, आगे पिशाच बनेगा। चंद्रमा 1/4/7/10 भाव में हो तो क्रमशः शान्त सत्कर्मी, भ्रातृहीन, बहुस्त्री गामी व राज्याधिपति होगा।

4.	**ल**	**सू**	**चं**	**मं**	**बु**	**गु**	**शु**	**श**	**रा**	**के**
	9	**9**	**12**	**6**	**9**	**7**	**10**	**11**	**10**	**4**

जातक विद्वान, अनेक विद्याओं का ज्ञाता, विवेकी, सत्यवादी, स्वाभिमानी, धर्न पुरुषार्थी, कृपण, नष्ट संतान युक्त, 3 पुत्र, सुन्दर, गेहुआं रंग, कुटुम्बवान, धार्मिक, विचारशील, साहित्यकार, राज्य, सम्मानित, मुखरोगी, नेत्र हानि, स्वस्थ, 23वें वर्ष सुन्दर स्त्री प्राप्त, पर स्त्रीगामी, दो पुत्र सेवा करने वाले, पैतृक सम्पत्ति के साथ स्व उपार्जित सम्पत्ति होगी। पांवों में वायु विकार, अनायास धन लाभ, शत्रुजन पर विजय कम, उन्नति में कोई बाधक नहीं, गुरु भक्त, तीर्थाटन प्रेमी, वैशाख शुक्ल 3, गुरुवार को उन्माद रोग से 74 वर्षायु में मृत्यु। 3/13/19/32/47/54/61/68वें वर्ष हानि-प्रद। 7/17/27/34/45/58/66/72वें वर्ष लाभप्रद। अष्ट वसुपूजन, चांदी में नीलम पहने। पूर्व जन्म में क्षत्रिय, अगले जन्म में शूद्र होगा। चन्द्रमा 1/4/7/9/12 भाव में हो तो क्रमशः सुन्दर, धनी, मातृ भक्त, स्त्री प्रेमी, भाग्यवान, खर्चीला होगा।

5.	**ल**	**सू**	**चं**	**मं**	**बु**	**गु**	**शु**	**श**	**रा**	**के**
	10	**10**	**5**	**6**	**11**	**8**	**11**	**11**	**10**	**4**

जातक संगीतवान, आलसी स्वकार्य में उद्यमी, बचपन में रोगी, नेत्र रोगी, गृहस्थी से परेशान, पिंगल नेत्र, पीला शरीर, भाग्यहीन कुचक्री, विद्वान, कोमलांग, पितृ भक्त, अधिक रोम युक्त, सत्यवादी, विहार इच्छुक, परदेशवासी, खूब धनी, धार्मिक, स्त्री से लाभ, सुवक्ता, कृशकाय, संग्रही, चंचल नेत्र, क्रोधी, साहसी, कई स्त्रियों से धन लाभ। 26/31 वर्ष में माता व ससुराल से लाभ, शत्रु दबे रहेंगे। तर्कों से मुकद्दमें में विजयी, पत्नी से विरोध,

दवा–दारू पर विशेष खर्च। श्रावण कृष्ण 4, सोमवार मध्याह्न में 63 वें वर्ष मृत्यु। 4/6/10/18/25/36/56 वें वर्ष हानि। 7/7/15/28/41/61वें वर्ष लाभ, स्वर्ण अंगूठी में गोमेद व मूंगा लाभप्रद है। पूर्व जन्म में पुलिन्द जाति का अगले जन्म में वैश्य होगा।

6. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
11 11 6 10 8 12 11 10 4

जातक प्रियभाषी, लम्ब काय, श्याम वर्ण, बलवान, द्विभार्यायोग, विवेकी, सन्तान पक्ष से दुःखी, धन–पुत्र–पौत्रादि हीन, नेत्र रोगी, बचपन में रोगी, सामान्य गृहस्थ, तेज चाल, व्याकुल, स्त्रीधन का प्रेमी, निर्व्यसनी, स्वाभिमानी, धार्मिक, वाहन सम्पन्न, पितृभक्त, पर धन लाभ, चांदी–सीसा। श्वेत वस्तु का व्यवसायी, बन्धु–बान्धव–मित्र से विग्रह, अग्नि या शस्त्र से चोट, 21वें वर्ष विवाह 28वें वर्ष पुनः विवाह, प्रथम सदा रुग्ण, सन्तान हेतु सन्तान गोपाल मन्त्र का प्रयोग, चण्डी अनुष्ठान आवश्यक, उपाय से एक सन्तान, पितृ भक्ति के कारण 7/17/27वें वर्ष भाग्योदय, विवादों व शत्रुओं पर विजय, पौष शुक्ल 8 सोमवार, मध्याह्न में अग्नि पीड़ा से 78 वर्ष में मृत्यु। 5/10/15/25/36/56/62/72वें वर्ष हानिकर। 7/8/17/10/32/44/53/68वें वर्ष लाभप्रद। पूर्व जन्म में शूद्र, आगे वर्ण संकर होगा। चन्द्रमा यदि 1/4/5/9/11वें हों तो क्रमशः स्त्री लोलुप, एक पत्नी, पुत्रवान, भाग्यवान धनी होगा।

7. ल सू चं मं बु बृ शु श रा के
12 12 9 6 11 8 1 11 10 4

जातक महातेजस्वी, विचारवान, धनी, विचारक, चिन्तनशील, व्यवसाय कुशल, राजमान्य, स्वतन्त्र, सुन्दर, मध्यम कोमल देह, धार्मिक, रत्न वाहनादि युक्त, स्त्री से परेशान, पितृ भक्त, गुरुभक्त, पर पिता से विरोध पाने वाला, भोग–विलास में अपव्ययी, सन्तान से परेशान, रक्त प्रदर रोगी स्त्री, 23वें वर्ष में विवाह, 42वें वर्ष पत्नी की मृत्यु, सन्तान प्राप्ति हेतु गणपति पूजन करें। माघ कृष्णा 6, रवि, मध्य रात्रि 69 वर्षायु में मृत्यु सम्भव है। माणिक्य स्वर्ण में उन्नति हेतु पहनें। मृत्यु होगी मस्तक रोग से। 9/16/26/38/47/59वें वर्ष हानि प्रद। 9/12/21/23/33/39/64वें वर्ष लाभप्रद। पूर्व जन्म में क्षत्रिय अगले जन्म में क्षत्रिय पिता द्वारा शूद्र के गर्भ से जन्म लेगा। चन्द्र यदि 1/3/5/9/10 भावस्थ हो तो क्रमशः शान्त, उद्यमी, साहसी, पुत्रवान्, भाग्यवान, महाधनी होगा।

8. ल सू चं मं बु बृ शु श रा के
12 12 2 6 12 8 1 11 10 4

यह जातक महाविद्वान, विवेकशील, ज्ञानी, अभिमानी, सत्यवादी, नीतिज्ञ, गेहुंवां रंग, साधारण कद, क्षणिक क्रोधी, नेत्र दोषी, व्यवसाय व स्त्री से लाभ, धन संग्रही, एक पुत्र, धार्मिक, दयालु सद्गुण ग्राहक, स्व पराक्रम से धन, यश, विद्या प्राप्त, धर्म-कर्म में खर्च, माता-पिता का भक्त, राजा सम धनी सम्मानित, दृढ़ निश्चयी, हठी, निरन्तर भाग्योन्नति हेतु प्रयत्नशील, धीर, वीर, शान्त, शत्रु हन्ता, 12/28वें वर्ष भाग्योदय, राज्य सेवा में सफलता, धन लाभ, बड़े-बड़े विद्वान भी लोहा मानेंगे। चैत्र कृष्णा 5, गुरुवार मध्याह्न बेला 82 वर्ष में मृत्यु। पूर्व जन्म में क्षत्रिय इस प्रकार स्वर्ग भोगेगा। 6/16/27/42/53/78 वर्ष हानिकारक। 10/22/35/57/60/76वें वर्ष लाभ प्रद। स्वर्ण में पुखराज, केले का पूजन, गुरुवार का व्रत उत्तम होता है।

9. ल सू चं मं बु बृ शु श रा के
3 3 9 6 3 7 5 11 10 4

जातक स्वाभिमानी, प्रतापी व्यवसायी, धार्मिक, पर पाखंडी, विवेकी व व्यवहार कुशल व धन से व्यग्र, उद्यमी, आलसी व काम बिगाड़ने वाला, मित्र-कुटुम्बद्रोही, सन्तान से दुःखी, गृह-भूमि लाभ, कृपण, प्रबुद्ध राज्याश्रय से सम्मान, नेत्रमुख रोगी, दायीं भुजा में चोट, मलिन, कुचाली, गुप्त योजनाएं, शत्रु को पनपने नहीं देतीं। पर स्त्रीरत पर स्वपत्नी को कष्ट नहीं। 24 वर्ष में धार्मिक स्त्री से विवाह। 1-2 पुत्र जीवित रहेंगे। भाग्योदय 23/33वें वर्ष। आर्थिक पक्ष उत्तम नहीं। स्वकार्य में आशा से कम सफलता, फिर भी प्रभावशाली, लोक प्रसिद्ध, मृत्यु 67वें वर्ष मूत्र रोग से मार्गशीर्ष शुक्ल 10 रविवार मध्याह्न काल में। 17/23/33/42/58 वर्ष उत्तम 3/7/28/45/57/67 वें वर्ष हानि कारक, गुरु पूजन, बृहस्पति अनुष्ठान करें। स्वर्ण में पुखराज या माणिक्य धारण करें। पूर्व जन्म में सम्पन्न वैश्य व अगले जन्म में वैश्य होगा।

10. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
3 3 6 3 2 8 3 11 9 3

यह जातक ज्योतिषी, शीलवान् सुन्दर बातें करने वाला, ख्यात, भ्रमणशील, विनयी, सर्व हितैषी, कुटुम्ब से कलह, पुत्रादि से सुखी, मातृ सुखी, धनी, अनेक स्त्री भोगी, गुणीजनों का प्रेमी, धन-हानि योग, कमजोर, मिथ्यावादी, पाखण्डी, वन में दुःखी, शास्त्रज्ञ, भाषण देने में कुशल, श्रेष्ठ कर्मी, उत्तम भोजन प्रेमी, शत्रुजित, विहित कर्मों से पराङ्मुख, प्रसन्न, निंदक व तेजस्वी, विवाह 19 व 24 वर्षायु में, भाग्योदय 21/28 वें वर्ष, परस्त्रीरत, आयु 87 वर्ष मार्गशीर्ष शुक्ला 12 रविवार सायंकाल मृत्यु।

3/9/12/26/39/63वें वर्ष कष्टप्रद व मध्यमायु में अपमृत्यु भी संभव। पूर्व जन्म में ब्राह्मण व अगले जन्म में भी ब्राह्मण होगा। गोमेद या पुखराज पहनें। गुरुवार का व्रत कल्याणकारी व अरिष्ट नाशक। चन्द्रमा यदि 2/4/7/10 भावस्थ हो तो क्रमशः पूर्वधनी, कुटुम्ब प्रिय, कुलटा स्त्री, राज्यमान्य होगा। 2 पुत्रों द्वारा जीवन में सुख प्राप्य।

11. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
3 3 7 3 3 8 4 11 9 3

यह जातक सर्वहितैषी, विनयी, यशस्वी, प्रसिद्ध, शीलवान, गणितज्ञ कुंटुम्ब से कलह, दूर–दूर देशाटन करने वाला, पुत्रों से सुखी, प्रियवादी, माता से सुखी, सुन्दर वेषधारी, गृहस्थी से सुखी, धन रहित, कृशकाय, मिथ्यावादी, ढोंगी, सर्व जनप्रिय, शत्रुजित, प्रसन्न, कुकर्मी, दीन स्वभाव, हितैषी, बान्धव युक्त। 21वें वर्ष विवाह, 43 वर्ष में विधुर, भाग्योदय 23/28/43वें वर्ष, उपाय द्वारा 1 ही पुत्र संभव, वृद्धावस्था में योग लेकर (संन्यास) योग भ्रष्ट होगा। 78 वर्षायु, माघ शुक्ल 7 बुधवार मध्याह्न में मृत्यु। पूर्व जन्म में क्षत्रिय, अगले जन्म में ब्राह्मण कुल में जन्म ले स्वर्गादिक सुख भोगेगा। 3/7/8/18/29/41/53/64/73वें वर्ष अपमृत्यु कारक, हानिप्रद, पन्ना धारण करना, बुधवार का व्रत, वरुण का पूजन अरिष्ठ नाशक होगा। चन्द्रमा यदि 1/2/5/9/10 भाव में हो तो क्रमशः परम सुन्दर, कक्षाधीश, बहुपुत्रवान, परम धार्मिक, राजतुल्य धनी व प्रभावी होगा।

12. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
8 8 2 6 9 9 10 11 9 3

यह जातक अवन्नत, मातृ–पितृ विरोधी, विष, अग्नि–शस्त्र से भय, कलहप्रिय, मित्र हितैषी, वैभवशाली, कुलपालक, कारीगरी में कुशल, स्त्रियों से सुखी, साज–सज्जा प्रेमी, हर प्रकार से सुखी, वृद्धास्त्री से भोग, दुर्बल देह, चिन्तातुर, काव्य प्रेमी, एकान्त सेवी, प्रसन्न, विहित कार्यों से दूर, शत्रुहन्ता, दीनभावापन्न, दुष्कर्मी, हाथ में पीड़ा, भय–चिन्ता–घबराहट युक्त, पुत्र की ओर से व्याकुल, 21वें वर्ष अति सुन्दर कन्या से विवाह, 56वें वर्ष स्त्री वियोगी, 19/26/43वें वर्ष भाग्योदय, व्यवसाय में निरन्तर उतार–चढ़ाव, पितृ–विरोधी, कार्तिक शुक्ला 10 बुधवार, मध्य रात्रि, वायु विकार या ऊपर से गिरकर 68वें वर्ष मृत्यु सम्भव है। 4/8/16/24/34/39/43/54/60वें वर्ष दारुण कष्ट, अपमृत्यु भय। पूर्व जन्म में वैश्य, अगले जन्म में वनस्पति रुप, माणिक्य, धारण करें एवं

नारायणोपासना करें। चंद्र यदि 1/5/7/9 हो तो क्रमशः शान्त और सत्कर्मी, विवेकी, श्वेत वस्तु का व्यवसायी, धार्मिक व भाग्यशाली होगा।

13. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
1 1 5 8 1 10 1 12 8 2

यह जातक साहसी, रक्त विकारी, पित्त–प्रकोपी, भूमि से लाभ, सर्वसदैव हितैषी, बुद्धिमान, अग्नि–विष–शस्त्र भय, स्त्री–संतान से सुखी, विजयी, चंचल, अतिभोजी, ऋणी, दयावान, परोपकारी, क्रोधी, भय युक्त, ग्राम्य पति, धनी, सर्वत्र आदर, कवि, शत्रु रहित, अल्पकामी, गुणग्राही, व्यवहारकुशल, रोगी, प्रगल्भ, कातर, राज्य से धोखा, मुख रोगी, कुटुम्ब रोगी, दुर्वचनी। विवाह 18वें वर्ष, भाग्योदय 24/38/42वें वर्ष। पुत्रों में एक पुत्र सेवा करेगा। 66वें वर्ष कार्तिक कृष्णा 13 शनिवार सायंकाल असाध्य मुखरोग से मृत्यु। 1/7/17/27/38/52/63वें वर्ष हानिकर, माणिक्य व पुखराज पहनें, गुरु व्रत अरिष्ट दूर करेगा। पूर्व जन्म में वैश्य, अगले जन्म में ब्राह्मण होगा, स्वर्ण पायेगा। चंद्रमा 2/5/8/11 में हो तो क्रमशः अल्पधनी, पुत्रवान और विद्यावान, जल से हानि व भोगवान होगा।

14. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
3 3 5 7 3 10 1 12 8 2

जातक स्त्री प्रेमी, धैर्यवान सुपुत्र युक्त, बंधु–रहित, मित्र हितैषी, अभिमानी, धीरे काम कर्ता, भोगी, धनी, शत्रु हन्ता, खर्चीला, अंगहीन, स्त्री पक्ष से दुःखी, हठी, अशुद्ध चित्रवृत्ति, इच्छानुसार शुभ कार्यकर्ता, धार्मिक, परस्त्री से दूर, नीतिवान, सुन्दर भवन, वाहन संम्पन्न, रोगी, प्रगल्भ, ठिगना, जांघ पर व्रण, पक्षी हिंसक, मायावी, राज से द्विविधा, मुख रोगी, कुटुम्ब विरोधी, विवाह योग कमजोर, द्विभार्या योग, 22वें वर्ष धार्मिक स्त्री से विवाह, पुत्र अधिक जो नास्तिक व क्रोधी होंगे, एक पुत्र पितृ भक्त, मुकद्दमों में विजय राज्य, सेवा से भाग्योदय, भाग्य में निरन्तर उतार–चढ़ाव, भाग्योदय 23/36वें वर्ष। 71वें वर्ष आषाढ़ शुक्ला 10 मध्य रात्रि धार्मिक चिंतन करते हुए घर में ही मृत्यु 2/7/10/29/38/52/63/67वें वर्ष अपमृत्यु व हानिप्रद। पुखराज व लहसुनिया धारण करें, रविवार व्रत, मृत्युंजय, विष्णु का अनुष्ठान शुभ। पूर्व जन्म में विद्वान क्षत्रिय, स्वर्ग भोगेगा। चंद्रमा 36/9/12 हो तो क्रमशः उद्यमी, साहसी, गंभीर रोगी, जल से भय युक्त, भाग्यवान, धर्मात्मा, तीर्थाटन प्रेमी होगा।

15. ल सू चं मं बु बृ शु श रा के
6 6 11 9 6 9 5 12 8 2

यह जातक राज्य से द्विविधा व धोखा खायेगा। धन–धान्य का नाशक, मुख रोगी, कुटुम्ब विरोधी, अनुपयुक्त भाषी, पापी, प्रगल्भ, चोर, कायर,

दुर्बल, धनी, पंच प्रधान, छोटा कद, दुःखी, जांघ में फोड़ा, जामाताओं का पूजक, स्त्री भोगी, जीव हिंसक, शत्रु से भयभीत, पीलिया, रोग पीड़ित लोभी, कुमार्गी, विकल, विद्वान, योगाभ्यासी, भाग्यहीन, मातृ–पितृ भक्त, गृह–भूमि का लाभ, निरोग, हीन उद्यमी, आंग्ल भाषा का विद्वान होगा। सन्तान हेतु चिन्तित, 24वें वर्ष विवाह, स्त्री पेट रोगी, स्त्री भी संतान हीन, वृद्धावस्था में भाग्योदय, 66वें वर्ष संभव। आयु 84वें वर्ष श्रावण शुक्ल पंचमी रात्रि चतुर्थ ईश्वर भजन करते मृत्यु संभव। पूर्व जन्म में क्षात्र धर्म युक्त ब्राह्मण, इस जन्म के बाद मुक्ति प्राप्त होगी। हीरा, नीलम धारण करें। शनिवार व्रत, सूर्यानुष्ठान लाभप्रद है। चंद्र यदि 3/6/9/11 भावस्थ हो तो क्रमशः आलसी, क्रूर, स्वस्थ व विरोधी, भाग्यवान व धार्मिक, स्त्री लम्पट व जल से हानि पायेगा। 1/5/16/32/48/63/75वें वर्ष हानि व अपमृत्यु कारक है।

16.

ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
7	7	10	8	6	6	9	12	8	2

जातक बुद्धिमान, श्रेष्ठकर्मी, विद्वान, कलाविद्, धनी, सम्मानित, स्त्री सुख रहित, चंचल, कपिल वर्ण नेत्र, जल से भय, शत्रुओं से भयभीत, कृपण, सुखी, स्त्रियों को प्रिय, बाल्यावस्था में ही सुखी, पंडित, जीव हिंसक, रोगी, जांघ में कष्ट, चाण्डाल जैसे कार्य, कायर, चोर वृत्ति, प्रगल्भ, राज्य से निराशा, कुटुम्ब विरोधी, मुख रोग, झूठा, एक पुत्र की प्राप्ति, उग्र, नीच, पाप कर्म परायण, पैतृक धन भोगी, भोग पर खर्च, उत्तरार्द्ध में धार्मिक वृत्ति, गुरु–देव भक्त, अग्नि व शस्त्र से भय, भाग्योदय। 23/41/54वें वर्ष, शत्रु हन्ता, विरोधी बनेंगे, 65 वर्षायु वैशाख शुक्ला 6 रविवार को तीर्थ स्थान पर मध्याह्न में मृत्यु, परमपद प्राप्त, 2/12/22/38/61वें वर्ष अपमृत्यु भय, हानि कारक। 20वें वर्ष सुन्दर, धार्मिक स्त्री से विवाह, रविवार व्रत, आदित्य हृदय अनुष्ठान, नीलम अरिष्ट नाशक, शुभ है। चंद्रमा 1/4/7/10 हो तो क्रमशः परमसुन्दर, स्त्री लंपट, कुटुम्ब विरोधी, स्त्रीजित्, नेत्र विशेषज्ञ व राजा तुल्य होगा।

17.

ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
7	7	5	9	7	9	6	12	8	2

यह जातक राज पक्ष से भयभीत, सर्वजन विरोधी, पापी, कलह, कुशल, पर कार्यकर्ता, धनी, वाहन सम्पन्न, शत्रु से दुःखी, श्रेष्ठ स्त्रियों का प्रेमी, सुखी, मिथ्यावादी, अपव्ययी, कारीगर, कुकर्मी, वाचाल, व्यसनी, विनीत, गृह–भूमि, धन लाभ, ऐश्वर्यमय जीवन, तीर्थ यात्री, स्त्रीयुक्त, व्यावहारिक, गुणग्राही, परोपकारी, मायावी, चोर कर्म में कुशल, कुटुम्ब

विरोधी, आत्माभिमानी, अहंवादी, पर निंदक, वैभवशाली 20वें वर्ष विवेकी व सुन्दरी से विवाह, कई सन्तानें नष्ट, एक चरित्रहीन पुत्र, भाग्योदय 28/39/51/54वें वर्ष 67 वर्षायु। कार्तिक कृष्णा 12 गुरुवार, अपराह्न में भजन करते मृत्यु। पूर्व जन्म में धर्मात्मा, शूद्र। मोती–नीलम धारण करें, पयोव्रत साधन करें। 2/13/25/38/57/61वें वर्ष हानि कर, अपमृत्यु कारक। चन्द्रमा 2/5/8/11वें भाव में हो तो क्रमशः धनहीन व कुटुम्ब विरोधी, सुपुत्रवान, जलोदर रोग से या जल से हानि, राज्य से धन लाभ व सम्मान प्राप्ति होगी।

18.	ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
	7	7	5	10	8	10	7	12	8	2

जातक को राज्य से भय, सब का विरोधी, पापी, कलही पर कर्मरत, संग्राम में पराक्रमी, स्त्रियों से सुखी, स्वजनों के प्रतिकूल, धन–वैभव से सुखी, कृपण, श्रेष्ठ कर्म विमुख, घोर परिश्रमी व दुःखी, बुद्धिहीन, काम रहित, क्रोधी, विकल मनोरथ, सुन्दरता प्रेमी, प्रियभाषी, कवि, विनयी, रोगी, कायर, विवाह सुंदर, गेहुएं रंग की कन्या से 22वें वर्ष में, विलम्ब से सन्तान प्राप्त, उपाय से एक पुत्र, भाग्योदय 24/25/49वें वर्ष, धन की स्थिति श्रेष्ठ, माता–पिता, घर, भूमि, वाहन, पैतृक धन का पूर्ण सुख, 67वें वर्ष मार्गशीर्ष शुक्ला 14 शनिवार को मृत्यु, 2/7/11/21/36/58/62वें वर्ष अनिष्ट व अपमृत्यु कारक, शनिवार का व्रत, हनुमान पूजानुष्ठान, नीलम का धारण करना सभी अनिष्टों से बचा मनोरथ पूर्ण करेगा। पूर्व जन्म में वैश्य था, अगले जन्म में भी वैश्य होगा। चंद्र यदि 2/5/8/11 भावस्थ हो तो जातक क्रमशः दरिद्र, विद्वान और विवेकी, भ्रमणशील, अनायास धन पाने वाला व जल से हानि व पुत्रवान होगा।

19.	ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
	8	8		10	9	11	8	12	8	2

यह जातक रोगी, पाप कर्मी, प्रगल्भ, चोर, दुर्बल, कायर, मायावी, राज्य से द्विविधा, अन्नादि नाशक, मुख रोगी, धनी, कुटुम्ब विरोधी, कुवचनभाषी, कृपण, कलहकारी, विष, अग्नि, शस्त्र से भय, मातृ–पितृ विरोधी, अवनत जीवन, संग्राम में पराक्रमी, स्त्रियों से सुखी, स्वजनों से भय, धन–वैभव सम्पन्न, कुल पालक, कारीगर, अल्पकामी, क्रोधी, विफल मनोरथ, जीव हिंसक, निन्दित, निषिद्ध कर्म करने वाला, व्यसनी होगा। 24वें वर्ष अति गौर वर्ण, कृशोदरी, वाचाल, रुग्ण कन्या से विवाह होगा। पुत्र अधिक पर अयोग्य होंगे, नास्तिक भी, दो पुत्र सेवाभावी होंगे। भाग्योदय 23/39/56वें वर्ष, आयु 73 वर्ष। आषाढ़ कृष्णा 11 शुक्रवार उदर–वृण से

दोपहर घर पर मृत्यु संभव है। 2/5/7/17/37/42/58/69वें वर्ष अपमृत्यु भय एवं कष्टप्रद, राज्य में सम्मानित पद पर रहते हुए यश, मान, धन पायेंगे। गृहस्थी में व्यय अधिक होगा, अर्थ संचय असंभव, पूर्व जन्म में शूद्र था इस जीवन में मोक्ष पायेगा। लहसुनियां व माणिक्य पहनें, शुक्रवार व्रत, गणपति पूजा अनुष्ठान अरिष्ट शान्ति दायक है। चंद्रमा यदि 1/4/7/10 भाव में हो तो क्रमशः कृपण व कुत्सित पूर्ण कुटुम्बवान, स्त्री लम्पट तथा श्वेत वस्तु व्यवसायी व पंडित होगा।

20. ल सू चं मं बु बृ शु श रा के
3 3 3 2 11 4 12 8 2

जातक महा अभिमानी, बंधुप्रिय, दानी, भोगी, धनी, कामी, धीमी गति का कार्य–कर्ता, शत्रु नाशक, गणितज्ञ, शीलवान, सुभाषी, ख्याति प्राप्त, कीर्तिवान, विनयी, सर्वहितैषी, कुटुम्ब से कलह, दूर–दूर की यात्रा करने वाला, पुत्रों से सुखी, गुणी, कई स्त्रियों का भोगी, भाइयों से सुखी, राज प्रिय, ब्राह्मण प्रिय, आलस्य से धर्म–कर्म में ढीला, स्त्री द्वारा धन, मान, सुख, शत्रुओं से भी हित, सन्तोषी, वैभवशाली, खर्च का बाहुल्य, कोर्ट–कचहरी में सदैव विजयी, 18वें वर्ष धनी, सुंदर स्त्री से विवाह, 4 पुत्र सुयोग्य, सुशिक्षित, सेवाभावी पर अलग–अलग रहेंगे। भाग्योदय 9/19/38/49/58वें वर्ष। 3/13/27/32/46/63वें वर्ष अपमृत्यु कारक व हानि, आयु 72, वर्ष। माघ शुक्ला नवमी गुरुवार, मध्याह्न में मृत्यु। पूर्व जन्म में क्षत्रिय, अगले जन्म में जलचर, एकादशी व्रत, नारायण पूजनानुष्ठान, हीरा धारण करना अभीष्ट है। चंद्रमा 3/6/9/12 हो तो क्रमशः धार्मिक व उत्साही व मोक्ष पाने वाला, रोगी और दरिद्र, भाग्यवान, ऋणी होगा।

21. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
4 4 6 4 4 12 5 12 8 2

यह जातक भोगी, धार्मिक जनों का प्रेमी, मिष्टान्न प्रेमी, सौभाग्यशाली, बंधु प्रेमी, अनेक लोगों में विहार प्रेमी, मधुरभाषी, संगीत प्रेमी, युद्ध कुशल, लज्जा–रहित, जांघ में कष्ट, दुर्बल देह, बचपन में रोगी, सामान्य कद, कुल कलंकी, अनेक कन्याओं का पिता, गुणी, विलासी स्त्री का पति, विवाह सामान्य वर्ण, क्रोधी, स्त्री से 23वें वर्ष होगा। स्त्री पक्ष से भाग्योदय, भाग्योदय 44 व 58वें वर्ष, सन्तान की ओर से चिन्ता, अनेक उपाय कर एक पुत्र, यह सेवाधारी होगा पर नास्तिक व कुटुम्ब वृद्धि कारक, परस्त्री से धन प्राप्त। 4/14/28/43/56/63वें नेष्ट व अपमृत्यु कारक वर्ष रहेंगे। माघ कृष्णा 6 सोमवार, मध्याह्न में अपने ही घर में 66वें वर्ष मृत्यु होगी। मृत्यु के समय ईश्वर में चिन्तन, पूर्व जन्म में शूद्र, अगले जन्म में

ब्राह्मण होगा। पुखराज धारण, गुरुवार का व्रत, गुरु पादुका पूजन अरिष्ट नाश करेगा। चन्द्रमा यदि 3/6/9/12 भाव में हो तो क्रमशः आलसी, निरोग, धार्मिक, भोगप्रिय होगा।

22. ल सू चं मं बु बृ शु श रा के
10 10 2 8 9 11 8 12 7 9

जातक तीव्र स्वभाव का, गुणी, मुख रोगी, दानी अभिमानी, मृदु, पवित्र, नृत्य-गीत प्रेमी, क्लेश रहित, नीलवर्ण, वृद्धावस्था में रोगी, अल्पायु पुत्र-कलत्रवान, सुन्दर मुख, धर्म-कर्म में रत, राजसेवक, ब्राह्मण भक्त, खूब धनी, कुल विकारी, छोटा कद, जंघा कष्ट, विशाल नेत्र, मांसाहारी, प्रधान पंच, 18वें वर्ष या 21वें वर्ष सुन्दर धार्मिक, गुणी कन्या से विवाह 19/26/36/48वें वर्ष भाग्योदय, स्वस्थ शरीर, आयु 52 के बाद निरन्तर रोगी, विरोधी, रहित, कुटुम्ब विरोध से संतप्त, 6 पुत्र, विद्वान व नास्तिक होंगे, एक पुत्र धर्मात्मा-पिता भक्त् धन खर्च उत्तम कार्यों में, राज्य में उत्तम पदासीन, 22/35/49वें वर्ष अपमृत्यु कारक, मृत्यु तीर्थस्नान पर या घर में 59वें वर्ष माघ शुक्ला १४ मंगलवार रात्रि प्रथम पहर में माणिक्य धारण करना, रवि व्रत, आदित्य हृदय का पाठ लाभप्रद, पूर्व जन्म में हाथी भविष्य में वैश्य होगा। चन्द्रमा यदि 2/5/8/12वें हो तो क्रमशः धनी, विद्वान, जल से भय तथा अल्प लाभ वाला होगा।

23. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
3 3 6 10 4 12 3 1 7 1

यह जातक विद्वान, शास्त्रज्ञ, कलाविद्, चतुर, व्याख्यानदाता, उत्तम कार्य कर्ता, भोजन प्रेमी, गुणी, ऊँचा शरीर, वात-पित्त रोगी, दशान्तर भ्रमण, ऐश्वर्य में उतार-चढ़ाव, लोभेच्छार्थ किए कार्यों में हानि, बुद्धिमान, स्वयं प्रसिद्ध, सभाजित, उदार, विषयी, तेजस्वी, सुन्दर, सत्पुरुषों का प्रेमी, दीर्घायु स्थिरचित्त, रोग-रहित, काव्य-संगीत प्रेमी, कोमल स्वभाव, धन-स्थिति श्रेष्ठ, सन्तान की ओर से चिन्ता, एक पुत्र द्वारा सुख, अधिकांश सन्तानें नष्ट, विवाह 19 व 28वें वर्ष 2 बार साहस व परिश्रम से प्रत्येक कार्य में सफल, सभा-समाज में प्रतिष्ठा, मुकद्दमों में विजय, भाग्योदय 34/48/58वें वर्ष, 1/4/6/16/29/32/56/63/73वें वर्ष अपमृत्यु व हानि कारक, मृत्यु 89वें वर्ष वैशाख शुक्ला 5 गुरुवार प्रातः अश्मरी रोग के कारण। पूर्व जन्म में वैश्य व अगले जन्म में ब्राह्मण होगा। पन्ना व नीलम धारण, बुधवार का व्रत, यम पूजा सदैव लाभ देगी। चन्द्रमा यदि 1/4/7/10वें भाव मे हो तो क्रमशः सुन्दर, और स्त्री प्रेमी, पूर्ण कुटुम्बी, पितृ द्वेषी, स्त्री लंपट व श्वेत वस्तु का व्यवसायी व राजा समान धनी होगा।

24. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
4 4 2 10 4 12 4 1 7 2

यह जातक भोगी, खूब धैर्यवान, धर्मात्माओं का प्रेमी, मिष्टान्न प्रेमी, भाग्यशाली, बंधु प्रिय, लंबकाय, पुत्र-स्त्री से कष्ट, वात-पित्त रोगी, भ्रमणशील, सामान्य, ऐश्वर्य, विवादी शत्रुहन्ता, बुद्धिसागर, लेखन द्वारा जीविकोपार्जन, सुन्दर चिर रोगी, राजप्रिय, ब्राह्मणप्रेमी, नम्र, बंधु-बांधव, युक्त, धर्म-कर्म में आलसी, सत्पुरुषों का संगी, श्रेष्ठ स्त्रियों का भोगी, उत्तम कार्यकर्ता, बाल्यावस्था में मातृ-पितृ वियोगी, अभिमानी, युद्धजयी, सदैव चिन्तित, यदा-कदा कष्ट, कभी दुर्घटना का शिकार, स्त्री सुन्दर पर रक्त विकार ग्रस्त, विवाह 25 वर्षायु में, स्त्री की क्रुद्ध वाणी सन्तप्त, सन्तान से भी पीड़ा, एक पुत्र ही सत्पात्र, कुलपालक, वंश वृद्धिकर्ता, प्रतिष्ठा व भाग्योदय में वृद्धि, भाग्योदय 21/34/46/53वें वर्ष 3/6/17/24/49/56/61वें वर्ष हानिकारक व अपमृत्यु कारक, माता से अलग पिता संग रहेगा, 3रे वर्ष माता की मृत्यु, मृत्यु आश्विन-शुक्ला 9 शनिवार रात्रि के प्रथम प्रहर में, वात्त-पित रोग से घर पर 65 वर्षायु मे मृत्यु संभव, पूर्व जन्म में वैश्य व अगले जन्म में परस्त्री गमन के कारण महिषयोनि में। पन्ना पहनें, चतुर्थी व्रत, गणेश पूजन से अरिष्ट दूर। चन्द्रमा यदि 2/5/8/11 भावस्थ हो तो क्रमश: धनी, विद्या संपन्न, जल या विषभय, पुत्रवान व भोग प्रिय।

25. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
5 5 11 9 4 12 4 9 7 1

यह जातक स्थिर, धनवान, राजसेवी यशस्वी, आनंदी, भोगप्रिय, उत्साही, अल्पसंतति, पर गृहवासी, चपल, विजयी व बुद्धिसागर, विलासी, दृढ़ निश्चयी, पाण्डुरोगी, बहुकुटुम्बी, भाग्यहीन, कुचाली, विकल, सुन्दर वेषधारी, शक्तिवान, लज्जाहीन, क्षीण जाँघ, योगी, तीर्थाटन प्रेमी, घमण्डी, दुष्टा स्त्री, वीर्यदोषी, बहुव्ययी, उम्र के 25वें वर्ष विवाह 33वें वर्ष स्त्री की मृत्यु या अन्य पुरुष संग जायेगी। एक पुत्र होगा जो इनमें कपट-छल करेगा। विरोधी अनेक हानि पहुचाने वाले, सभा, राज्य में सम्मान रहित, लोह कार्य या शस्त्र निर्माण द्वारा व्यवसाय, भाग्योदय 39/46/52वें वर्ष 2/4/7/24/31/51वें वर्ष अपमृत्यु भय हानि कारक, मृत्यु किसी तीर्थ स्थान पर माघ कृष्णा चर्तुदशी शनिवार सायंकाल अग्नि विस्फोट या भूकम्प से 59वें वर्ष, पुखराज व मूंगा धारण करें, एकादशी व्रत, विष्णुपूजार्चन अरिष्ट नष्ट करेंगे, लाभ होगा। पूर्व जन्म में क्षत्रिय, अगले जन्म में कूष्माण्ड योनि प्राप्त। चंद्र यदि 1/4/7/10वें हो तो परम सुन्दर व

उच्च विचारक, गृह भूमि का स्वामी, पूर्ण कुटुम्बी, स्त्री युक्त तथा स्त्रीजित एवं न्यायाधीश के पद पर होगा।

26. ल सू चं मं बु बृ शु श रा के
6 6 8 10 9 12 7 1 7 1

यह जातक प्रथम वर्ष ज्वर, दूसरे वर्ष मुख पीड़ा, तीसरे वर्ष व्रण पीड़ा व भ्रातृ जन्म, 4 से 12 वर्ष मध्य विद्यारंभ व पिता को लाभ 13 से 21 मध्य बुद्धि बढ़े, विवाह हो, कामोद्वेग से मन विचलित हो 23 से 33 शत्रु, रोग भय, चिन्ता वृद्धि व दान-पुण्य से शान्ति। धन-स्त्री का सुख मिले, व्यवसाय में लाभ तथा उच्चपद प्राप्त, 34 से 45 कन्या का विवाहोत्सव में व्यय, कुल-कीर्ति में वृद्धि, सन्तान व भोग सुख, भूमि-भवन वाहन लाभ, 46 से 55 वातकफ़ प्रकोप, कुटुम्ब संग तीर्थाटन, बड़ादान, सदाव्रत बांटे 56 से 65 विशेष सुख, कीर्ति, कुआं-बाग निर्माण, लाभानुसार व्यय, आत्मचिन्तन, 66 से 69 आकस्मिक चिन्ता, भय, जीव का क्लेश, अपव्यय फिर धन वृद्धि, पुत्र-पौत्र सुख, वैशाख शुक्ला 8 रविवार गौ-पृथ्वी-सुवर्ण दानकर आसन लगाए, अर्द्धरात्रि, गधा, सिंह, चन्द्रमा प्राण विसर्जन, अगला जन्म राजकुल में, यह विद्वान, विलक्षण बुद्धिमान, जीवन में 3 अपमृत्यु योग, बाल्याकाल, युवावस्था, प्रौढ़ावस्था में 11 टंक स्वर्णदान पत्र तैयार करें फिर गोल पत्र पर 4 अंगुल व्यास को बीज मंत्र लिख पूजन कर दान ब्राह्मण को दें।

27. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
3 3 8 9 3 9 2 9 5 11

उक्त जातक के निरन्तर मंगल कार्य हो छायापात्र के दान से दन्त पीड़ा, ज्वरादि दूर हो। 4 से 7 वर्षायु विद्यारंभ, खेल में रुचि विशेष, 21 से 17 कीर्ति बढ़े, पढ़ने-लिखने में कुशलता, धन-धान्य वृद्धि, 18 से 23 विवाह व द्विरागमन, स्त्री गर्भवती हो, सन्तान व भाई जन्म 24 से 38 पिता को श्वास कास रोग, घर में किसी वृद्ध की मृत्यु, भूमि व राज द्वार से लाभ, पुत्र या कन्या विवाह में खर्च, 39 से 48 इच्छित सुख प्राप्त, मानसिक चिन्ता, कार्य हानि, भय हो। सुयत्न से धन लाभ, तीर्थाटन, 49 से 57 अकस्मात शोक, थोड़ा धन प्राप्त, रोग नष्ट 59 से 66 पुण्य कार्यो में खर्च, कीर्ति बढ़े, शरीर कष्ट, 59 की आयु में भाद्रपद कृष्णा 13 को प्राण त्याग। अगला जन्म राजकुल में ईश्वराधना कर सुख भोग, अन्त में परमगति प्राप्त। स्वर्ण प्रतिमा बना गुप्तदान ब्राह्मण को दे तो कष्ट दूर हो।

28. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
6 6 8 10 7 12 7 1 7 1

यह जातक खर्चीला, पर स्थान का उपयोग करने वाला, दुर्बल भ्रमणशील, चिन्तित, अनुभवी, स्त्री पक्ष से परेशान, सामान्य आजीविका,

सन्तान से कष्ट, शक्ति सम्पन्न, प्रभावी, भाई–बहिन युक्त, दीर्घायु, परदेश से लाभ, नियम–साधक, ठाठ–बाट का जीवन, भाग्योदय वर्ष में धनी, पैतृक संपत्ति प्राप्त, कुटुम्बी, राज्य सम्मानित, प्रयत्नशील, सुन्दर, श्रेष्ठ पत्नी, ननिहाल से सुखी, भूपति, गृहस्थ, भाग्यवान, धर्म–कर्म में खर्च, अपमृत्यु भोगी, उदर रोग, गुप्त वेदना, भयभीत, गुप्त धन, जन–धन प्रेमी, कठिन कार्य कर्ता, क्रोधी, शत्रु से परेशान, 25वें वर्ष सर्व सुन्दरी, विवेकी, धार्मिक, पति परायण स्त्री से विवाह, भाग्योदय तभी, 38/46/53वें वर्ष भाग्योदय के, सन्तान उपाय व शल्य क्रिया से, एक पुत्र वंश विस्तारक, शत्रु प्रबल, व्यवसाय, राज्य, विद्या, बुद्धि, विवेक से धन लाभ, पर खर्च, धार्मिक कार्य सम्पन्न, 2/9/16/28/45/57/66वें वर्ष हानिकारक व अपमृत्यु भय। 57वें वर्ष अपमृत्यु हुई तो पुनर्जन्म नहीं। नीलम धारण करें। शनिवार का व्रत, शनि पूजन, अनुष्ठान, पूर्व जन्म में क्षत्रिय था, अगले जन्म में कुम्हार 73वें वर्ष आषाढ़ शुक्ला 2 गुरुवार, मध्याह्न में व्रण पीड़ा से घर में मृत्यु। चन्द्रमा यदि 3/6/9/12 भाव में हो तो क्रमश: नीच और आलसी, स्वस्थ, भाग्यवान और धार्मिक व विदेशयात्री होगा।

29.	ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
	9	9	5	12	9	12	10	9	7	1

यह जातक भाग्यशाली, प्रभावशाली, निरीक्षक, धर्मज्ञ, धर्म पालक, न्यायी, श्रद्धालु, सुन्दर पत्नी, सफल व्यापारी, गृहस्थी में प्रभाव, उचित खर्च युक्त, पराए स्थान से संबंधित, मातृ सुख हीन, प्रयत्न से पुत्रवान, साधारण विद्या, व्यवसाय से लाभ, सुन्दर देह, सम्मानित, पितृ अनुगामी, राज्य में उन्नति, विवेकी, लौकिक रूप में सफल, श्रेष्ठ ससुराल, उल्लासपूर्ण, भूमि–लाभ, सुखी व विलासी, दीर्घायु, पुरातत्त्वज्ञ, शक्तिशाली, धनी, कुटुम्ब से मतभेद, शत्रुहन्ता, सन्तान से कष्ट, कपटी, चिन्तित स्त्रीजित, गुप्त युक्तिवान, उग्र, समाज पर धन के कारण प्रभावी, विवाह सुन्दरी, रूप यौवन सम्पन्न 20वें वर्ष, मामा के यहाँ दत्तक रूप में रह सकता है। सन्तान–गोपाल–स्तोत्र पाठ व अनुष्ठान से एक पुत्र प्राप्ति। भाग्योदय 2/23/43/54वें वर्ष 1/7/11/28/36/51/66वें वर्ष अरिष्ट व अपमृत्यु भय विरोधी अप्रत्यक्ष, राज सम वैभव, भूमि, वाहन, भृत्य सुन्दर योग, वीर्य दोष, अग्नि से भय, 77 वर्षायु, श्रावण कृष्णा 10 शुक्रवार प्राय: ईश्वर चिन्तन करके घर में ही मृत्यु, कारण वात–पित्त रोग। पूर्व जन्म मे वैश्य, अगले जन्म में काक योनि। चन्द्रमा यदि 3/6/9/12 भावस्थ हो तो क्रमश: उद्यमी, स्वस्थ, धार्मिक व यात्रा में कष्ट पायेगा।

30. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
10 10 4 12 9 12 1 11 7 1

यह जातक सामान्य स्वास्थ्य, दीर्घायु, यदा-कदा संकटमय, पुरातत्वज्ञ, प्रभावी, तेजस्वी, पुरुषार्थी, धर्मज्ञ, यशस्वी, पितृ शक्तिमान, राजमान्य, उन्नति, श्रेष्ठ आय, पराक्रमी, गृह-भूमि आदि युक्त, भाई-बहन युक्त, शत्रुजित, साहसी, भाग्यवान, लापरवाह, स्त्री पक्ष से हानि, व्यवसाय में कष्ट, परिश्रमी, विवेकी, अल्पयशी, स्वार्थी, सुन्दर पत्नी, लाभान्वित, बुद्धिमान, सन्तान पक्ष से दुःखी, सामान्य आयु, सामान्य दिनचर्या, विवाह परम सुंदर, योग्य, सुलक्षणा स्त्री से 26 वर्ष में। परस्पर मतभेद, ससुराल द्वारा धन का अपहरण, सन्तान की चरित्रहीनता परेशानी का करण, एक पुत्र द्वारा सेवा, शत्रुओं का पराभव, भायोदय 19/32/46/54 वें वर्ष 1/3/7/12/22/48/58/66 वें अपमृत्यु भय व अर्थ हानि कारक, व्यवसाय में उत्तम लाभ, धन-संचय योग, कुपात्र सन्तान द्वारा धन नष्ट, मूँगा पहनें, पूर्णिमा व्रत, चन्द्र देव का पूजानुष्ठान से अभीष्ट प्राप्ति, पूर्व जन्म में क्षत्रिय, अगले जन्म में नाग बने 66 वर्ष की आयु में आषाढ़ शुक्ला 13, सोमवार को मुख रोग से घर में मृत्यु हो। चन्द्रमा यदि 1/4/7/10 भाव में हो तो क्रमशः अति सुन्दर, व स्त्री जनों को प्रिय, यन्त्र-वाहन युक्त, स्त्री प्रिय व कुशल व्यापारी, राज सम्मान में विडंबना पाये।

31. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
10 10 2 12 10 12 11 1 7 1

यह जातक धनी, शीलवान, सुन्दर, वाहन युक्त, सुखी, ख्यात, कृपण, कुटुम्ब विरोधी, उत्पाती, क्रोधी, चिन्तित, अति प्रतापी, राज तुल्य, शुभ कर्मी, मधुरभाषी, दयालु, अल्पभाषी, निर्लज्ज, कलह के कारण दुःखी, आलसी, अपव्ययी, तेजस्वी, दुर्बल देह, व्यर्थ भ्रमण, शत्रु नाशक, गुप्त रोग, नेत्र पीड़ित, मामा के सुख से वंचित, धातु रोगी पत्नी, स्त्री वियोगी, लोक निंदित, तृष्णामुक्त, शोकाकुल, सुन्दर वस्त्रेच्छुक। जन्म के तीसरे वर्ष मामा की मृत्यु, 28वें वर्ष विवाह, सुन्दर व अल्प वयस्क लड़की से 38वें वर्ष सन्तान प्राप्ति, प्रथम भाग्योदय भी, 56वें वर्ष पुनः भाग्योदय, दो पुत्र 45वें वर्ष स्त्री वियोग, फिर शूद्र स्त्री से सम्बन्ध, 1/3/7/11/18/23/39/48/56/63वें वर्ष हानि कर व अपमृत्यु भय, सामान्य पैतृक धन प्राप्त, दाएं नेत्र में पीड़ा, मृत्यु अर्शादि गुप्त रोग से 67वें वर्ष पौष शुक्ला 3 बुधवार रात्रि क चाथे प्रहर में घर में ही। नीलम, शनिवार, प्रदोष व्रत, शिव पूजनादि लाभप्रद। चन्द्रमा 2/5/8/11 भावस्थ

हो तो क्रमशः पूर्णधनी तथा जल से कष्ट, विद्वान व विवेकी व सुयोग्य पुत्र प्राप्ति, नाविक स्वर्णकार एवं धनहीन हो।

32. ल सू चं मं बु बृ शु श रा के
11 11 3 1 11 12 12 1 7 1

यह जातक महाशठ, मित्रहीन, मलिन वेश, दयाहीन, सुखी, राज्य, से प्रतिष्ठित, साहसी, कलही, अहंवादी, अल्पधनी, पराक्रमहीन, धर्मरहित, शत्रुओं से दुःखी, राज्य सलाहकार, सुंदर शरीर, उत्तम वास, प्रसन्नचित्त, राज्य से वैभव युक्त, शत्रुजित्, जन विरोधी, चिन्तित, कार्य, नाशक, स्वजन विरोधी, पापानुरक्त, कुटिला व सुशीला स्त्रियों का भोगी, व्याकुल, स्त्री और पुत्र से चिन्तित, उद्वेगी, वातरोगी, क्रोधी व स्वाभिमान के साथ विद्या व विवेक प्राप्त होगा। उसी से धीरे-धीरे उन्नति होगी। 25वें वर्ष सुन्दर पर क्रोधी स्त्री से विवाह होगा। भाग्योदय वर्ष 23/28/38/49 हैं। शत्रुओं पर सदैव विजयी रहेंगे। यात्रा व जल से भय होगा, अपमृत्यु योग होगा। वायु विकार रहेगा। कभी-कभी मुख व दन्त पीड़ा भी पांच पुत्र म्लेछ वृति के होंगे। 1/7/11/18/32/54/61वें वर्ष हानिकारक है। मूंगा, लहसुनिया, धारण करें, तृतीया का व्रत, इन्द्र-पूजन लाभदायक है। पूर्व जन्म में वैश्य और आगे के जन्म में प्रेत योनि में जायेगा। 64वें वर्ष आषाढ़ कृष्ण 5 शनिवार प्रातः रक्त विकार से घर में ही मृत्यु होगी। चन्द्रमा यदि 2/5/8/11 भावस्थ हो तो क्रमशः पूर्ण धनी, सुपात्र पुत्रों का पिता, औषध या चिकित्सा से मृत्यु एवं श्रेष्ठ आय वाला होगा।

33. ल सू चं मं बु बृ शु श रा के
11 11 5 1 12 12 1 1 7 1

यह जातक सुन्दर, स्वस्थ, प्रभावशाली, क्रोधी, घोर परिश्रमी, स्त्री पक्ष से साहसी, सफल व्यवसायी, गृहस्थ संचालक, भाई-बहनों से पूर्ण, पराक्रमी, पितृ स्थान से लाभ, राज्य से उन्नति, व्यवसाय में शुभ, प्रतिष्ठित, शत्रु से परेशान, ननिहाल की हानि, भाग्यवान, धर्म पालक, घोर साहसी, अल्प विद्या, सन्तान से कष्ट, सामान्य धनी, सामान्य गृहस्थ, सर्वविरोधी, चिन्तित, दीर्घायु, पुरातत्त्वज्ञ, हठी, सुन्दर आयु, प्रयत्नशील, परिश्रम से लाभ, राजमान्य, भाग्यवान, मातृ से सुखी, भूमि सम्पन्न, यशस्वी, ईश्वर में निष्ठा, उत्साही, 23वें वर्ष विवाह, सुन्दर चिकित्सा उपरान्त सन्तान लाभ 32 वर्ष में। भाग्योदय 28/46/49/59/63वें वर्ष चार कन्या एक पुत्र, पुत्र सेवाभावी, राज्य सेवा से धन लाभ, भाग्यवृद्धि, वृद्धावस्था में पुत्र द्वारा व्यवसाय वृद्धि, 2/3/8/18/33/56/64वें वर्ष हानि व अपमृत्यु भय पूर्व जन्म में क्षत्रिय अगले जन्म में दादुर होगा। 73वें वर्ष कार्तिक शुक्ला 14

शनिवार मध्य रात्रि पाण्डु रोग से या रक्त विकार से घर में ही मृत्यु। चन्द्रमा यदि 1/4/7/10 भावस्थ हो तो क्रमशः परम सुंदर, शान्त व विवेकी, गृह-भूमि-वाहन व कुटुम्ब से सुखी, स्त्रीजित व अनेक स्त्रियों का भोगी और कुशल व्यवसायी, राज कार्य से भ्रष्ट व बान्धव युक्त होगा।

34. **ल सू चं मं बु गु शु श रा के**
12 12 9 2 11 12 2 1 6 12

यह जातक खूब प्रभावशाली, शत्रुजयी, रक्त विकारी, परिश्रमी, स्त्री पक्ष से कष्ट, सफल व्यापारी, गृहस्थी से दुःखी, पराक्रमी, धनी, भाई-बहन युक्त, कुटुम्ब से सहयोग, भाग्यवान, पुरुषार्थी, धर्म में श्रद्धा, पितृ पक्ष से उन्नति, राज्य सम्मानित, मातृ सुख में हानि, भूमि का इच्छुक, परदेश से संबंध, विवेकी, अपव्ययी, व्यवहार कुशल, धैर्यवान, सुन्दर देह, राजमान्य, ख्यात, बुद्धिमान, संततिवान, धर्मपालक, यशस्वी, दीर्घायु, पुरातत्त्वज्ञ, महाबली, प्रसन्न, विवाह कृष्ण वर्णा, रोगी स्त्री से 24वें वर्ष देव ब्राह्मण-गुरु में श्रद्धा 2 पुत्र जीवन भर सेवा करेंगे। भाग्योदय 29/41/54वें वर्ष, शत्रुओं पर सदैव विजय, लेखन व धातु व्यवसाय में विशेष सफल, उदार पर चिड़चिड़ा 1/6/11/34/43/56/63वें वर्ष रोग, अपमृत्यु भय, हानिकारक 68वां वर्ष पौष शुक्ला 7 बुधवार, श्लेष्माविकार से अपराह्न घर मे ही मृत्यु होगी। लहसुनिया पहनें, पूर्णिमा व्रत, ब्रह्मा-सावित्री पूजन से संकट दूर। पूर्वजन्म ब्राह्मणोत्पन्न शूद्र, अगले जन्म में चातक पक्षी होगा। चन्द्र 2/4/7/10वें हो तो क्रमशः परम सुन्दर तथा अस्थिर मति, मातृसुख रहित, स्त्री विदुषी व अनेक स्त्री का भोगी एवं धनी व गृह वाहनादि सम्पन्न होगा।

35. **ल सू चं मं बु गु शु श रा के**
1 1 12 3 1 4 12 3 4 10

यह जातक 1-2 वर्षायु में ही निरन्तर वृद्धि करेगा। भूत छाया की व्याकुलता के कारण माता के स्तनों में दूध नहीं रहा 3 से 5 वर्षायु में घर में मंगल, कुलकीर्ति बढ़े, खेल में विशेष रुचि, 6 से 10 परेशानी, दस्त, शरीर कमजोर हो, 11 से 14 प्रतिष्ठा वृद्धि, भोग-समृद्धि वृद्धि 15 से 18 विद्या प्राप्त न हो, विवाहोपरान्त विद्याभूषण, दास-वाहन सुख 19 से 23 पुण्य प्रभाव से स्त्री गर्भवती हो, पुत्र जन्म, अयत्न से हानि व शोक, 24 से 32 ऐश्वर्य लाभ, पुत्र सुख, यकायक खेद, ताम्रकलश में कृत, स्वर्ण दान दें, राजद्वार से विशेष लाभ, यश, कीर्ति बढ़ेगी, 31 से 35 सम्मान, कीर्ति बढ़े, पुत्र जन्म, धन, वस्त्राभूषण लाभ, कुटुम्ब में मृत्यु, 36 से 40 शरीर कष्ट, दूर्गा पाठ से लाभ, धन वृद्धि 35 से 40 पुत्र को कष्ट, स्त्री चिन्तातुर, घृत पूरित घड़े में

स्वर्ण दान करें। 46 से 50 राज से लाभ, पूर्व दिशा में यात्रा, यश वृद्धि, पुत्रोत्सव पर व्यय, 51 से 55 धर्म-कर्म मे मन, संध्या पूजन में व्यस्त, 56 से 60 कफ रोग, भूख कम, तुलादान करें। 69वें वर्ष मृत्यु, पूर्व जन्म में वैश्य व व्यापार से लाभ, दो माशे स्वर्ण पत्र पर लाल चंदन से दो सर्पचित्र बना वस्त्राभूषण व षटरस व्यंजन दान दें तो पुत्र होगा। अगले जन्म में ब्राह्मण होगा।

36.

ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
8	8	8	6	8	6	9	3	4	10

यह जातक 1 से 4 वर्ष तक तो निरन्तर वृद्धि होगी। घर में सुख व मांगलिक कार्य, दन्त पीड़ा व दस्त रोग से कृश शरीर। क्रीड़ा प्रेमी व आनंदी शरीर में व्रण, ज्वर कष्ट, 9 से 14 आयु में घर में मांगलिक कार्य, प्रतिष्ठा, वृद्धि, भोग-ऐश्वर्य में वृद्धि, 15 से 21 सर्व सुख प्राप्त, रुप-यौवना स्त्री प्राप्त, लाभार्थ किये कार्य धन बढ़ायेंगे, पितृ सुख न्यून, स्वकार्य से आनन्द, 22 से 26 तक राज्य से लाभ, कीर्ति वृद्धि, अकस्मात् दुःख, भय व्याप्त, महामृत्युंजय जाप से कष्ट दूर, कन्या-पुत्र की प्राप्ति, पत्नी से विशेष प्रीति, परस्त्रियों से सम्बन्ध दृढ़। 28 से 35 तक सर्वानन्द सुलभ हो, चिन्ता दूर, स्त्री क्रीड़ा, सुख वृद्धि, राज से लाभ, भाग्य वृद्धि, ग्राम-भूमि-भवन-जलाशय से लाभ। 36 से 41 घर में बड़े उत्सव, सम्मान वृद्धि, फिर घर का या अनजाना शत्रु मीठा बोल परोक्ष में हानि देगा, यात्रा होगी, विदेश से धन लाभ, मार्ग में चोर भय, 42 से 53 अनेक लाभ, कुटुम्ब वृद्धि, पुत्र को कष्ट से व्याकुलता, मृत्युंजय जाप, स्वर्ण-गौ-भूमिदान से उसका कष्ट दूर। 60 वर्ष में रोग, क्षुधानष्ट, श्वास-कास-अजीर्ण व्याधियां, सप्तधान्य का दान करें, 61 से 68 ईश्वराधना में लिप्त, शरीर में विशेष कष्ट, चिन्ता, 69वें वर्ष मृत्यु, अगले जन्म में ब्राह्मण होगा पूर्व जन्म में अहीर था।

37.

ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
6	6	8	4	6	7	5	10	11	4

यह जातक सुन्दर, स्वस्थ, प्रसन्न, उद्यमी, संयमी, प्रतापी, स्वाभिमानी, विवेकी, धार्मिक, तेजस्वी, पैतृक धनभोगी, राज्य सम्मानित सुदृढ़, लम्बा, स्त्री से धन प्राप्त कर्ता, कुत्सित संतान, विरोधियों से पीड़ित, 25वें वर्ष विदुषी व धार्मिक पत्नी प्राप्त, सन्तानें अधिक पर सभी नष्ट, एक सन्तान सेवा करेगी, हृदय रोग विशेषज्ञ, भाई-बन्धु प्रेम करेंगे। ऐश्यर्य की चिन्ता लाभ की नहीं, आवश्यकताएं बढ़ी-चढ़ी, मृत्यु 78 वर्ष में, रक्त विकारता, वैशाख शुक्ला 10रविवार रात्रि में 11/21/34/49/63/72वें वर्ष अनिष्ट कारक, अनन्तदेव का पूजन व स्वर्ण अंगूठी में यन्त्र धारण करें। चन्द्रमा

यदि 1/3/6/7/9 वें भाव में हो तो स्त्री प्रेमी, आलसी, रोगी, अनेक स्त्रियों वाला भाग्यशाली होगा। भाग्योदय 25-26वें वर्ष 7/17/37/44/54/66वें वर्ष श्रेष्ठ, पूर्व जन्म में सर्प बनेगा।

38. **ल सू चं मं बु गु शु श रा के**
6 6 9 4 7 7 6 10 10 4

यह जातक लम्बकाय, क्षीणकाय, गौर वर्ण, व्यवहार कुशल, योजनाकार, स्वाभिमानी, प्रतापी, पराक्रमी, विद्वान, पैतृक सम्पति प्राप्त कर्ता, चतुर, राज्याश्रय से धन प्राप्त, दयालु, सन्तान से कष्ट, व्यवसायी, उद्योगी, लाभार्थ कुछ भी गलत-सही करे, 21 या 26वें वर्ष विवाह, स्त्री धार्मिक, उसी से भाग्योदय, सन्तान कठिनाई से उपाय करने पर एक ही, उसी से सुख प्राप्त, सन्तान के लिए गोपाल स्तोत्र का पाठ, अनुष्ठान उत्तम, शत्रु हारेंगे। 84वें वर्ष वैशाख कृष्णा 13 शुक्रवार मध्याह्न में अर्श रोग या रक्त विकार से मृत्यु घर पर ही, पत्नी से सदा मतभेद, सम्पर्क में कई एक स्त्रियाँ आयेंगी, 45 वर्ष से ही पुंसत्व शक्ति से क्षीण, 8/18/28/34/48/66/72वें वर्ष हानिकारक, 12/21/26/39/53/63/74वें वर्ष लाभप्रद, माणिक्य व हीरा सोना व चाँदी में क्रमश: धारण करें, बुध-राहु की पूजन, अनुष्ठान हितकारक, पूर्व जन्म में ब्राह्मण, अगले जन्म में वर्ण संकर होगा। चन्द्रमा यदि 1/3/5/7/9 में हो तो क्रमश: स्त्री प्रेमी, आलसी, भाग्यवान, स्त्रीजित तथा धनी होगा।

39. **ल सू चं मं बु गु शु श रा के**
7 7 11 5 7 7 10 10 4

यह बालक प्रतापी, प्रभावी, तेजस्वी, धार्मिक, बुद्धिमान, विवेकी, नीतिज्ञ, विद्याविनयी, मृदुभाषी, गौरांग, सम कद, क्षीणकाय, उदार, ज्ञानी, बन्धु प्रिय, मातृ भक्त, धनहीन, पैतृक व्यवसाय में हानि, स्वाभिमानी, स्व उपार्जित धन से प्रसन्न, कटुभाषी स्त्री, राज्य-सन्तान पक्ष से हानि, धर्म-कर्म में व्यय कर प्रसन्न, चतुर, भाई से विवाद, विरोधियों पर विनम्रता से विजय, जल यात्रा से भय, कीर्तिवान, सभाजित, ज्योतिषी, तत्त्वज्ञ, आयु 58 से 61 वर्ष होगी। मृत्यु मार्गशीर्ष शुक्ला 7 गुरुवार को रक्त दोष या वीर्य विकार से रात्रि प्रथम प्रहर में, 1/4/7/10/22/33/48/52वें वर्ष श्रेष्ठ 3/8/16/26/42/58 नेष्ट कारक 23वें वर्ष विवाह व भाग्योदय, चाँदी में हीरा पहनें। सन्तान प्राप्ति हेतु पुरुषोत्तम चक्र व कवच का अनुष्ठान हितकर, पूर्व जन्म में ब्राह्मण व आगे भी ब्राह्मण बन धर्म कर्म में तत्पर रहेगा। चन्द्रमा यदि 2/5/7/8/10वें भावस्थ हो तो क्रमश, दरिद्र, कन्या युक्त, सुन्दर स्त्री वाला, जलहानि युक्त तथा राज्याश्रित होगा।

40. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
8 8 12 5 7 7 8 10 10 4

यह जातक नीतिवान, प्रियवादी, घोर स्वाभिमानी, उच्च पदासीन, न्यायी, चिकित्सा निपुण, हठी, ऐश्वर्य सम्पन्न, अपव्ययी, ऋणी, यदा-कदा अभाग्यशाली, गौरवर्ण, जल से भय, नीतिज्ञ, प्रतापी, तेजस्वी, संगीत प्रिय, मधुर स्वर, शत्रु नाशक, भाई-बन्धु, माता-पिता का प्रेमी, यशोकामना से धर्मज्ञ, सर्वप्रिय पर सन्तान से दुःखी, संतति विहीन, 24वें वर्ष सुन्दर, गुणवती, तीव्र कामेच्छुक, प्रदर रोगी स्त्री से विवाह, 29/36वें वर्ष भाग्योदय, धनलाभ 67 वर्षायु में, पौष कृष्णा 8 रविवार प्रातःकाल मृत्यु, 11/14/26/41/53वें वर्ष नेष्ट 13/27/29/30/45/56/62वें वर्ष शुभ फलदायक, स्वर्ण मुद्रिका में माणिक्य हितकर, संकट निवृति व सन्तान वास्ते विश्वेदेवा का पूजन शुभ है। पूर्व जन्म में क्षत्रिय, स्त्री से उत्पन्न ब्राह्मण पुत्र था, अगले जन्म में शूद्र कुल में वर्णसंकर होगा। चन्द्रमा यदि 1/2/5/7/9/10 भावस्थ हो तो क्रमशः नीतिवान, धनी, सन्तति युक्त, स्त्री प्रेमी, भाग्यवान व यशस्वी होगा।

41. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
8 8 2 6 7 7 8 10 10 4

यह जातक स्वाभिमानी, कलाकार, विद्वान, धार्मिक, नीतिज्ञ, उदार, दयालु, मध्यम शरीर, गौरवर्ण, दुष्ट, काव्य प्रिय, साहित्यिक, सत्यभाषी, प्रियवादी, न्यायी, न्यायालय से धन लाभ, 2 या 3 कन्या संतति, 5 तक पुत्र या संतति हीन या दत्तक पुत्र युक्त, सन्तान से दुःख, ऐश्वर्यशली, स्त्री प्रेमी, विचारक, धन में न्यूनता, धनार्थ निरन्तर प्रयत्नशील, व्यवसायी, माननीय, 20वें वर्ष भाग्योदय, 17 या 23वें वर्ष में विवाह, अन्यथा अविवाहित अनेक स्त्रियों से सम्बन्ध, यह मद्यपी होगा, अंतिमावस्था में सुधार, 60 वर्षायु में माघ शुक्ल 5 रविवार को मध्याह्न में मृत्यु, 1/8/11/21/34/53वें वर्ष नेष्ट 7/17/20/33/38/51वें वर्ष श्रेष्ठ, सन्तान प्राप्ति हेतु मंगल का अनुष्ठान, मूंगा धारण करना श्रेष्ठ है। पूर्व जन्म में शूद्र, अगले जन्म में म्लेच्छ, संसर्ग से शूद्र कुलोत्पन्न। चन्द्रमा यदि 1/4/5/7/20 भावस्थ हो तो जातक क्रमशः लम्पट, सुखी संततिवान, स्त्रीयुक्त व राज्यद्वार से सम्मान प्राप्त होगा।

42. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
10 9 9 6 10 7 10 11 11 4

यह जातक विद्वान, तेजस्वी, प्रतापी, श्रेष्ठ वक्ता, राज्याश्रित या राज्य से सम्मानित, काव्य, संगीत प्रेमी, धर्मात्मा, दयालु, आत्माभिमानी, स्त्री से दुःखी, निरंकुश, दूरगामी, दृष्टि में दोष, पुरुषार्थी, धनी, कुटुम्बप्रिय, लोकप्रिय, कीर्तिमान, बचपन में रोगी, अधिक सन्तान, द्विभार्यायोग, न्यायी,

सफल निर्णायक, मध्यम कद, सुन्दर, हठी, ज्योतिषी नीति–निपुण, पतला, शत्रु जयी, 18 या 20वें वर्ष विवाह। पुत्र द्वारा सेवा 24/36/56वें वर्ष विशेष भाग्योदय, पैतृक सम्पति व स्व उपार्जित धन से लाभ, गृह कलह में थोड़ा कम लाभ, देशाटन कर यश पायेगा। पत्नी व सन्तान से अलग रहना, बाह्य स्थानों में भोगाधिक्यता, ज्येष्ठ कृष्णा 1 बुधवार, सायंकाल 68 वर्षायु में मृत्यु, 3/8/16/26/38/42/58/62 वर्ष में नेष्ट फल, 9/18/20/32/45/54/64वें वर्ष उत्तम, गोमेद स्वर्ण में धारण, अरिष्ट निवारणार्थ गुरु पूजन हितकर, पूर्व जन्म में क्षत्रिय व अगले जन्म में क्षत्रिय होगा। चन्द्र यदि 1/4/7/9/10 भाव मे हो तो क्रमशः एक स्त्री का पति, मातृभक्त, स्त्री लम्पट, भाग्यवान व राजनेता होगा।

43.	ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
	10	10	9	6	11	8	11	11	10	4

यह जातक बहु संततिवान, आलसी पर स्वकार्य में उद्यमी, बाल्यावस्था में रोगी, नेत्ररोग से पीड़ित, गृहस्थी से पीड़ित, पिंगल नेत्र, पीली देह, कुचाली, विद्वान, सुन्दर वेष, कोमलांग, पितृभक्त, अधिक रोमयुक्त, सत्यवादी, विहारी, परदेशवासी, राजा सम धनी, स्त्री द्वारा धन प्राप्ति सुवक्ता, कृशकाय, सत्यवादी, धन, संग्रही, चंचल नेत्र, क्रोधी, साहसी, ससुराल के अतिरिक्त किसी स्त्री से धन–लाभ, 26–31 वर्ष में मातृ पक्ष, ससुराल से लाभ, शत्रु दबे रहेंगे, सतर्क व प्रभाव से मुकद्दमों में विजय, पत्नी से विरोध, औषधोपचार में विशेष खर्च, श्रावण कृष्णा 4 सोमवार, मध्याह्न में 63वें वर्ष मृत्यु, 4/6/10/18/25/38/56वें वर्ष हानिकारक, 7/8/15/28/41/61वें वर्ष लाभप्रद, स्वर्ण की अंगूठी में गोमेद व मूंगा धरण करें। पूर्व जन्म में पुलिन्द, अगले जन्म में वैश्य, चन्द्रमा यदि 2/5/6/10वें भाव में हो तो क्रमशः धनी, कन्यावान, शत्रुजित व राज्य मान्य होगा।

44.	ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
	11	11	2	6	11	8	11	11	10	4

जातक स्थिरचित्त वृत्तियुक्त, मित्रयुक्त, पर स्त्री–गामी, कोमलांग, बाल्यावस्था में रोगी, सन्तान से दुःखी, जल से भय, महापंडित, मेधावी, हृष्ट–पुष्ट, विवेकी, पवित्र, वाहन से सम्पन्न, सुन्दर भवन युक्त, भोगी, मनस्वी, सद्गृहस्थ, चेष्टावान, काव्य–संगीत प्रेमी, मन्दगामी, मदमस्त, शत्रुजित, पुत्रों से विरोध पर पुत्र सेवाभावी, संचित धन पुत्रों द्वारा शुभ कार्यों में खर्च, 20 वर्ष में विवाह, 26वें वर्ष भाग्योदय, 56वें वर्ष अधिक भाग्यवृद्धि, पौष शुक्ल 5 मंगलवार 67वे वर्ष जलोदर रोग से मृत्यु।

5/15/29/38/52/63वें वर्ष हानिकारक, 7/11/12/32/44/56/61वें वर्ष श्रेष्ठ, लाभप्रद। विपत्ति निवारणार्थ मंगल का व्रत तथा सोने में मूंगा पहनें। चन्द्रमा यदि 2/4/6/8/10वें भाव में हो तो जातक क्रमश: विदेशाटन करने वाला, मातृभक्त, शत्रुजित, जल से मृत्यु तथा राजमान्य होगा।

45. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
12 12 9 6 11 8 9 11 10 4

यह जातक विचारवान, तेजस्वी, धनी, मनस्वी, चिन्तनशील, व्यवसायी, राजमान्य, स्वतन्त्र, सुन्दर, कोमलांग, मध्यम कद, धार्मिक, रत्नवाहनादि युक्त, स्त्री से परेशानी, गुरु–पितृ भक्त पर पिता से विरोध, भोग–विलाष मे अतिशय खर्च, सन्तान से चिन्तित, रक्त, प्रदर–रोग युक्त पत्नी, 23 वर्ष में विवाह, 42वें वर्ष में विधुर, गणेश पूजन से सन्तान, माघ कृष्ण 6 रविवार, मध्यरात्रि 69 वर्षायु में मृत्यु, स्वर्ण में माणिक्य पहनें, मृत्यु मस्तिष्क रोग से, 6/16/26/38/47/59वें वर्ष हानिकारक, 9/12/21/23/33/49/64वें वर्ष लाभप्रद, पूर्व जन्म में क्षत्रिय तथा अगले जन्म में क्षत्रिय, पिता से शूद्र वेश्या से जन्मा, चन्द्रमा यदि 1/3/5/9/10 वें भाव में हो तो क्रमश: शान्त, उद्यमी, साहसी, पुत्रवान, भाग्यवान व महाधनी होगा।

46. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
1 1 9 5 1 7 2 11 10 4

यह जातक धीर–वीर–गम्भीर, शान्तविवेकी, संस्कृत व आंग्ल भाषी, कार्यकुशल, नीतिज्ञ, कर्मण्य, विशेष धनी, नष्ट संततिवान, जल यात्रा से भय, मुकद्दमों में शत्रओं पर विजय, परदेशगामी, ईश्वर भीरु, धर्म भीरु, उद्यमी, व्यवसायी, राज्य से प्रभावी, तेजस्वी, लंबी काया, पिंगल वर्ण, नेत्र दोषी, मुख व मस्तक पर चोट का निशान, 26वें वर्ष में विवाह, पत्नी सुन्दर, सुशील, विदुषी, धार्मिक, मधुर, व्यवसाय में स्त्री व स्त्री पक्ष से सहायता, गुड़ व स्वर्ण व्यवसाय से विशेष लाभ, गृह–भूमि का विशेष सुख, विदेशाटन के प्रसंग बार–बार उपलब्ध, पर स्वभाववश विदेशाटन नहीं, 10/17/27 वें वर्ष भाग्योदय, 3 पुत्र प्राप्त, धार्मिकवृत्ति श्रेष्ठ, हीरा व गोमेद स्वर्ण में धारण करें, स्वामी कार्तिकेय का पूजन–अनुष्ठान विशेष हितकर, ज्येष्ठ कृष्ण 4 मंगलवार अपराह्न 59 वर्षायु मृत्यु, 1/4/6/11/22/34/44 वें वर्ष अहित कर व 10/17/28/35/50/56वें वर्ष लाभदायक, पूर्व जन्म में ब्राह्मण था पर म्लेच्छ संपर्क के कारण अगले जन्म में म्लेच्छ बनेगा। चंद्रमा यदि 2/5/7/9 भावस्थ हो तो क्रमश: धनी, पुत्रवान, अनेक स्त्री भोगी व सौभाग्यशाली होगा।

47. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
4 4 1 7 3 10 5 11 10 4

यह प्राणी विवेकी, स्वाभिमानी, क्रोधी, गुप्त योजनाएं बनाने वाला, पुरुषार्थी, कुटुम्बी, कुचाली, कुकर्मी, राजमान्य, वायु रोगी, पत्नी, स्वयं उदर रोगी, उन्मत्त, मदमत्त, बलिष्ठ, प्रभावशाली, बड़ा पेट, ऐश्वर्यवान, सन्तानहीन, पितृ–गृह त्यागी, मातृ भक्त, पर प्रत्यक्ष में माता के प्रति कठोर, धर्मज्ञ, पर धर्म में आसक्त, दीर्घआयु, श्यामल, 52 या 62 वें वर्ष में मृत्यु, शस्त्रघात या दुर्घटना से तीर्थ क्षेत्र में होगी। पुरुषार्थ से धन–लाभ, कुटुम्ब पर विशेष खर्च, सन्तान–सुख नहीं, दत्तक पुत्र प्राप्ति, 22वें वर्ष विवाह, 23–38 वें वर्ष भाग्योदय, 22 वें वर्ष विवाह न होने पर जीवन भर अविवाहित, कुलटा स्त्रियों से विशेष संपर्क, इसकी वह स्त्री भी पुश्चली होगी 4/8/18/28/48/52/62 वें हानि कारक, 23/37/48/51वें वर्ष लाभप्रद, नीलम व शनि पूजन हितकर रहेगा। पूर्व जन्म में हत्यारा क्षत्रिय, अगले जन्म में पर धर्मावलंबी वर्णसंकर होगा। इनका धन इस जन्म में ही नष्ट होगा पर सभी भोग भोग लेगा। चंद्रमा यदि 2/4/5/8/10 वें वर्ष भाव में हो तो क्रमशः धनी, विवेकी, जल में मृत्यु पाने वाला व राज्य मान्य होगा।

48. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
4 4 10 7 4 7 5 11 1 3

यह जातक दृढ़वादी, प्रतापी, दृढ़ निश्चयी, विद्योपजीवी, अनेक विद्याओं में पारंगत, व्यवहार कुशल, गृह–भूमि सम्पन्न, पितृभक्त, प्रबुद्ध, विवेकी, धार्मिक, राज द्वारा सम्मानित, बड़ा कुटुम्ब पर कुटुम्ब द्वारा उपेक्षित, विचित्र स्वभाव, उग्र व शान्त, शत्रुनाशक, धनी, अनायास धन प्राप्त, अनेक उपायों से जीविकोपार्जन, कवि, साहित्यकार, संगीतज्ञ, गौरांग, लंबकाय, 19वें वर्ष विवाह, भाग्योदय, 21/26/42 वें वर्ष, शत्रु और विरोधी दबे रहेंगे, पुत्रों द्वारा सेवा, आयु 66 वर्ष, मार्गशीर्ष शुक्ल 11 शनिवार मध्याह्न में गुप्त रोग से मृत्यु, 9/19/21/27/52/58 वें वर्ष श्रेष्ठ 7/17/23/35/48/56/63वें वर्ष हानिकारक, विपत्ति निवारणार्थ गणेश पूजन तथा प्रवाल युक्त स्वर्ण मुद्रिका धारण करें। पूर्व जन्म में क्षत्रिय या पुनः ब्राह्मण कुल में जन्म लेगा। चन्द्रमा यदि 1/2/4/5/7/10 में हो तो क्रमशः सरल, गौरांग, अत्यन्त धनी, पूर्ण सुखी, नष्ट संतति, सुन्दर पति तथा वैद्य या चिकित्सक होगा।

49. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
5 5 1 7 6 7 5 11 9 3

यह जातक शास्त्रज्ञ, सौभाग्य एवं सद्गुणी, लंबा, गोरा, प्रिय दर्शन, सुरति प्रिय, अनेक स्त्री भोगी, मन–ही–मन कार्य विचारक,

पंडित, गृहस्थी संचालन में दक्ष, पत्नी से विमुख, रोगी, दंभी, मित्र कन्या से भोगी, कुचाली, विद्वान, सुन्दर वस्त्र प्रेमी, तेजस्वी, भाग्यहीन, संततिवाला, कृपण, पितृभक्त, कोमलांग, बंधुहीन, इकहरी देह, शत्रुयुक्त, बचपन में रोगी, व्याकुल दिल, 22 वें वर्ष विवाह, पत्नी से द्वेष, स्त्री रुग्णा, भाग्योदय 11/19/26वें वर्ष, शत्रुबल नाशक, परोक्ष में विरोध, अनेक उपायों से दो पुत्र प्राप्त, मंगलवार रात्रि प्रथम प्रहर में मृत्यु, 1/11/16/29/38/47/59/70/73वें वर्ष हानि कर 19/26/38/49/54/62/72 वें वर्ष लाभप्रद, स्वर्ण मुद्रिका में मूंगा कष्टनिवारक होगा। संकट काल में बृहस्पति पूजन-अनुष्ठान व्रत शुभ। चंद्रमा यदि 1/4/5/9/10 भाव में हो तो क्रमश: परम सुन्दर, मातृ-विरोधी, पुत्रवान्, भाग्यशाली व राज्य मान होगा। पूर्व जन्म में ब्राह्मण व आगे भी ब्राह्मण होगा।

50.	ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
	6	6	1	8	6	8	5	11	9	3

यह जातक विलासी, नीति निपुण, स्वजन प्रिय, कवि, धर्मात्मा ज्ञानी, वेदांगी, संगीतप्रिय, लोकप्रिय, शत्रुजित, कीर्तिवान, बाल्यावस्था में रोगी, संतान से दु:खी, कोमल, सत्यवादी, महान व्यक्तित्व, कृपण, एक बार विशेष धन हानि, भाई-बंधुरहित विकारयुक्त, उदारतापूर्वक खर्च, दंभी, ठाट-बाट का जीवन, कुल नाशक, पुत्र-पौत्रादि हीन, दुर्बल स्त्री, कठिनाई से एक पुत्र, एक पुत्री, पितृ सुखहीन, इन्हें गौरवर्ण, धार्मिक, सुन्दर कृशांगी पत्नी 18 वें वर्ष मिलेगी। ससुराल में भी कम लोग होंगे पर स्त्रियों में आशक्ति, भाग्योदय 16/21/28 वें वर्ष, जीवम में 7/18/21/28/40/42/58/68 वें वर्ष लाभप्रद, 5/11/20/32/39/42/59/70/71वें वर्ष हानि कारक, मृत्यु माघ शुक्ल 10 सोमवार को एकान्त में आकस्मिक, सामान्य रोग से 71 वें वर्ष, सन्तान प्राप्ति हेतु नीलम, हीरा या मोती पहनें। पूर्व जन्म में क्षत्रिय था, अगले जन्म में ब्राह्मण कन्या रुप में उत्पन्न होकर व्यभिचार प्रवृत होगा। चंद्रमा यदि 2/5/8/9 भाव में हो तो क्रमश: सामान्य धनी, पुत्रवान, जल से भय व धार्मिक होगा।

51.	ल	सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श	रा	के
	7	7	10	9	6	8	6	11	9	3

यह जातक मलिन चित्त, कुवेषी, ईर्ष्यालु, परद्रोही, पाखंडी, कुकर्मी, क्रोधी, प्रतापी, तेजस्वी, धर्म विमुख, स्वपराक्रम बढ़ाने के लिए राक्षसी वृत्ति से धर्म-कर्म, स्त्रीजित, पत्नी उनकी देवर में आसक्त होगी, उग्रवीर्य,

एक पुत्र प्राप्त, चोरी से धन संचय, स्त्री पर कृत्य व पितृ कुल से धन संचय करेगी, इसकी बुद्धि पर रोयेगी। मुकद्दमों में राज्य के विरुद्ध विजय प्राप्त। 46 वर्षायु में शूद्र स्त्री संपर्क, दोष के कारण प्रताप व प्रभाव नष्ट, फिर भिक्षुकवृत्त जीवन, 63 वर्ष में पत्नी व पुत्रों द्वारा निरादर, पौष कृष्ण 6 मंगलवार 67 वर्षायु में मृत्यु, अगले जन्म में ब्रह्म राक्षस होगा। पूर्व जन्म में प्रतापी राजा था पर गुरु व सर्प दोष शाप से यह दुर्गति प्राप्त होगी। 11/14/18/23/25/32/42/48/52वें वर्ष कष्टप्रद 4/7/15/17वें वर्ष लाभप्रद, गुरु शाप विमोचनार्थ लहसुनिया धारण करें। चंद्रमा यदि 1/4/7/10 भावस्थ हो तो क्रमशः शान्त, गंभीर व धनी, पूर्ण सुखी, सुन्दर व राज मान्य होगा।

52. | ल | सू | चं | मं | बु | बृ | शु | श | रा | के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 8 | 8 | 4 | 9 | 7 | 8 | 6 | 11 | 9 | 3 |

यह जातक क्रोधी, राजमान्य, गुणी, शास्त्र कथा प्रिय, शत्रु नाशक, यशस्वी, स्थिर बुद्धि, पूर्ण धनी, धर्म से लाभ, देव-गुरुभक्त, अनेक पुत्र-पुत्रियां, पंडित, सुखी, विशेष भोग-भोगी, शाकाहारी, मिष्टान्न प्रेमी, चतुर, गेहुआं रंग, 18वें वर्ष सुन्दर पत्नी प्राप्त, अन्याय से विरोध, श्लेष्मा विकारी, 68 वर्षायु में माघ शुक्ल 10 रात में, घर में ही, कफ विकार, भोजन विकार या पशु आघात से मृत्यु, व्रतोपवासी, तीर्थाश्रमी, पुरुषार्थी, शास्त्रज्ञानी, प्रसिद्ध ब्राह्मण, देवता-श्रुति स्मृति हेतु व्यय कर्ता, साहसी, गृहभूमि का लाभ, शस्त्र व अग्नि से भय, वाहनादि सम्पन्न, विरोधियों से दुःखी, कृश, कोमलांग, रत्नधारक, वाणीकार, पुत्र कन्यादि युक्त, पूर्व जन्म में ब्राह्मण व आगे भी ब्राह्मण होगा। 8/11/17/26/35/47/57/61/68वें वर्ष हानि कारक, 5/13/18/24/29/37/42/49/54/64वें वर्ष लाभ-दायक। संकट काल में विष्णु पूजन व पुखराज धारण करें। चंद्रमा यदि 2/4/5/8/9/11 भाव में हो तो क्रमशः पूर्वधनी, सुखी, अस्थिर मति, स्त्रीप्रिय, जल से भय, भाग्यवान, श्वेत वस्तु व्यवसाय में सफल होगा।

53. | ल | सू | चं | मं | बु | बृ | शु | श | रा | के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 3 | 8 | 5 | 10 | 8 | 8 | 7 | 11 | 9 | 3 |

यह जातक महा चतुर, धनी व ऐश्वर्यशाली, यात्रा प्रेमी, विद्वान्, शास्त्रज्ञ, धर्मात्मा, राजनीतिज्ञ, कवि, ज्योतिषी, कर्मकाण्डी, बड़े कुटुम्ब वाला, व्यवहार कुशल, गौर वर्ण, मध्यम कद, राजमान्य, धन सम्पन्न, गृह-भूमि-वाहन सम्पन्न, दो पत्नियाँ, अनेक स्त्रियों से विहार, उद्यमी, बाएं कंधे व दाएं नेत्र दृष्टि दोष, स्त्रियों को प्रिय, स्व-धर्म से उपेक्षा, चतुर चित्रकार, सामान्य क्रोधी, विवेकी, सफल वक्ता, विद्वान, शत्रु नाशक, प्रतापी, उदार,

द्रव्यसंग्रही, ठाट–बाट में खर्च, बात का धनी, प्रबुद्ध, वातरोगी, माता–पिता से लाभ, कुशल, पितृ–विरोधी, विवाह 18 व 24 वें वर्ष, परम सुन्दर स्त्री से, कई पुत्र होंगे, दो से सेवा प्राप्त, भाग्योदय 21/27/39 वर्षायु में, मृत्यु कैंसर रोग से, फाल्गुन शुक्ल 8 रविवार प्रात: 68 वर्षायु में 5/11/23/26/36/58/63वें वर्ष हानि व अपमृत्यु, हीरा पहनें, वरुण पूजन संकट दूर करेंगे। पूर्व जन्म में ब्राह्मण, अगले जन्म में क्षत्रिय। चंद्रमा यदि 2/4/6/8/9/12 हो तो क्रमश: यह श्वास–कास रोगी, बहनों का प्रिय, रोगी, जल से भय, भाग्यवान, खर्चीला होगा।

54.

ल	सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श	रा	के
8	8	2	10	9	8	7	11	9	3

यह जातक प्रतापी, तेजस्वी, प्रभावी, अनेक विद्या पारंगत, चतुर, विनम्र, धर्म विमुख पर हृदय में धर्म पर श्रद्धा, राजमान्य, राज्य सहायता से किसी बड़े उद्योग का संचालन करते हुए प्रचुर धनोपार्जन, मानी, उदार, चिकित्सालय निर्माता व दानदाता, बहु कुटुम्बी, मातृ–पितृ भक्त, ज्ञानी, स्त्री से उदासीन या संन्यासी या धर्मोपदेशक, उद्यमी, साहसी, गौर वर्ण, कृशोदर, मध्यम कद, सुन्दर, स्वस्थ, गृह–वाहनादि युक्त, धीर–गम्भीर, दूरदर्शी और विवेकी, शान्त, योजनाकार, पुत्रवान, निरंकुश, प्रेरणा देने वाला, न्याय प्रिय व सत्यवादी, पत्नी प्रदर रोग से पीड़ित, 20 वें वर्ष विवाह, भाग्योदय 29/31/43/58वें वर्ष, 19/24/33/39/49/63/69वें वर्ष अर्थहीन और पीड़ा कारक 69 वर्षायु मे मधुमेह रोग से फाल्गुन कृष्ण 7 बुधवार, घर पर ही मृत्यु, अरिष्ट निवारणार्थ लहसुनिया धारण करें, शिवपूजन हितकारक है। पितृ दोष के कारण पूर्व जन्म में वैश्य व ब्राह्मण कुल में अगला जन्म लेगा। चंद्रमा यदि 1/3/5/7/10 भावस्थ हो तो क्रमश: कुत्सित कर्मी, साहसी, अधिक पुत्रों वाला, श्वेत रंग के वस्तु व्यवसाय व राज्य पूज्य होगा।

55.

ल	सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श	रा	के
9	9	5	11	10	8	8	11	9	3

यह जातक क्रूर, स्वाभिमानी, प्रतापी, क्रोधी, ऐश्वर्यशाली, ठाट–बाट का जीवन–यापन, खर्चालु, राज्यकीय संबंधों से लाभ, वायुरोग, मूत्ररोग या वीर्यदोष, चिकित्सा में विशेष खर्च, व्याकुल चित्त, श्याम वर्ण, उद्यमी, साहसी, धर्म में तमोगुणी, पितृ भक्त, स्त्री से दु:खी नष्ट संतति वाला, हठी, अभिमानी, कुटुम्बहीन, परदेशवासी, मधुमेह रोगी, धर्म–कर्म में आलसी, राजकीय ठेकेदार या यान्त्रिक हो। 20वें वर्ष में विवाह, भाग्योदय 21/27/36वें वर्ष, आय से खर्च अधिक, शत्रु दबे रहेंगे,

सन्तानों में एक पुत्र द्वारा सेवा, राज्य से धन प्राप्ति, स्त्री चिर रोगी। 11/23/32/44/50/58/60/64 वें वर्ष अपमृत्यु कारक व हानि कारक, पौष शुक्ल 14 शनिवार प्रातः जल या वीर्यदोष से 64 वें वर्ष मृत्यु, पुखराज व हीरा धारण करना, मंगल का व्रत, अरिष्ट निवारणार्थ श्रेष्ठ है। पूर्व जन्म में ब्राह्मण व अगले जन्म में म्लेच्छ होगा। चंद्रमा यदि 2/4/5/9 भाव में हो तो जातक क्रमशः, धनी, कुटुम्बी, विद्वान, पुत्रवान, धर्मात्मा होगा।

56. ल सू चं मं बु बृ शु श रा के
10 11 6 12 10 8 10 11 9 3

यह जातक धनी, स्वस्थ, सुखी, पुष्टदेह, धार्मिक, बलवान, कृपण, श्रेष्ठकर्मी, विपुल भोग भोगी, व्यवसायी, श्रेष्ठ बंधु युक्त, संबंधियों का प्रेमी, मातृ–पितृ विरोधी, पिता के बंधुओं से ईर्ष्या, प्रसिद्ध पुत्रवान, वेदज्ञ, स्वस्थ व पुष्ट, उद्यमी, स्वेच्छाचारी, शत्रुओं से हानि, जीव रक्षक, राज दंड भोगी, देव–गुरु–पुजक, अल्पभोगी, राज कर्मचारी या राज्य से सम्मान, माता का शत्रु, पितृ–प्रेम विवाह, 19 वर्षायु में, स्त्री सुन्दर, दो पुत्र सेवा भावी, भाग्योदय 21/33/44वें वर्ष 7/10/23/38/53/61/64वें वर्ष, हानि कारक, मार्गशीर्ष शुक्ल 6 शुक्रवार 66वें वर्ष मध्याह्न में मृत्यु, मूँगा धारण करना, मंगलवार का व्रत शुभ, पूर्व जन्म में वैश्य अगले जन्म में पितृदोष से शूद्र कुल में उत्पन्न। चंद्रमा यदि 1/4/5/7/9 वें हो तो क्रमशः परम सुन्दर, गृह–भूमि का स्वामी, विद्वान, स्त्रीप्रिय तथा भाग्यशाली होगा।

57. ल सू चं मं बु बृ शु श रा के
12 12 2 12 11 9 11 11 9 3

यह जातक शत्रु दमनकर्ता, राज्याश्रयी, राज्याधिकारी, अपने ही सामने स्त्री–पुत्र से हीन स्थिति पाने वाला, धातु रोगी, मध्यमायु में आलसी, वृद्धावस्था में दुःखी, कुचाली, अहंकारी, क्रोधी, परस्त्रीगामी, स्त्री के गुप्तांग का चुम्बन लेने वाला, दोनों लोक बिगाड़ने वाला, वृद्धावस्था में व्याकुल, स्वउपार्जित धन नष्ट, वैराग्य से भिक्षावृत्ति करने वाला, मार्ग शीर्ष कृष्ण प्रतिपदा शनिवार 84 वर्षायु की आयु में मृत्यु, 18 वर्ष में विवाह, छिद्र युक्त दांतों वाली स्त्री के साथ, भाग्योदय 22/28/37 वर्ष में, 9/16/27/40/49/65/68/71वें वर्ष हानिकारक, पन्ना धारण करें, मंगल का व्रत रखें, पूर्व जन्म में क्रूर कर्मी ब्राह्मण, अगले जन्म में प्रेत बने। चन्द्रमा यदि 1/3/5/7/9 हो तो जातक क्रमशः सुन्दर व शान्त, भाग्यशाली, पुत्रवान, स्त्रीयुक्त या गृहस्थ, धार्मिक व सदाचारी होगा।

58. ल सू चं मं बु बृ शु श रा के
12 12 4 1 12 9 11 11 9 3

यह जातक व्यवसाय में सफल, सुखी, स्वजनों से भयभीत, राज्य द्वारा प्रतिष्ठा, व धनोपार्जन, साहसी कार्यकर्ता, सर्व सहायक, परधन रक्षक, देव-ब्राह्मण पूजक, सुन्दर स्त्रियों से प्रीति कर्ता, विनीत, धन-वाहन युक्त, सुंदर वस्त्र धारण करने वाला, शुभ कर्मी पर आलसी, निषिद्ध कर्मी, शत्रुजित, व्यसनी, सुप्रसन्न, प्रसन्न पर निन्दक, कुचाली, शत्रुनाशक, धनी, तेजस्वी, भाइयों को कष्ट दाता, हाथ में पीड़ा, भयाकुल, चित्त में घबराहट, दो पुत्रों का सुख प्राप्त 19वें वर्ष विवाह, 28/33/48वें वर्ष भाग्योदय, श्रावण शुक्ल 13 शनिवार 73 वर्षायु में भगवत चिंतन करते अपने ही घर में मृत्यु। 3/9/11/23/36/58/66वें वर्ष हानिकारक, गोमेद तथा पुखराज पहनें, गुरु पादुका पूजनाभिषेक से कष्ट निवारण, पूर्व जन्म में क्षत्रिय तथा आगे मोक्ष पाएगा। चन्द्रमा यदि 1/3/5/8/11 भाव में हो तो क्रमशः बुद्धिमान और सुन्दर, उद्यमी व साहसी, पुत्रवान, विद्युत से भय, धनी तथा सुखी होगा।

59.	ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
	1	1	2	1	1	9	12	11	9	3

यह जातक साहसी, विनीत बुद्धिमान, राज्याश्रय से धन व सम्मान प्राप्त, पित्त-विकार, भूमि से लाभ, सबका सहायक, चंचल चित्त, बहुभोजी, कलही, ऋणी, सुन्दर वस्त्र शत्रुजयी, राजमान्य, प्रसन्न, शत्रुओं से भय पर विजयी, तेजस्वी व व्याकुल चित्त, 20वें वर्ष सुन्दर पर रुग्ण स्त्री से विवाह वह दीर्घायु नहीं होगा। शत्रुओं पर बुद्धिमानी से विजय, 1/8/9/12/22/38/59वें वर्ष अपमृत्यु कारक एवं हानिप्रद, स्वामी कार्तिकेय पूजन, गोमेद धारण से अरिष्ट शांति व लाभ, पूर्व जन्म में क्षत्रिय था अगले जन्म में ब्राह्मण द्वारा क्षत्रिय के योनि से उत्पन्न। चन्द्रमा यदि 1/2/4/7/10वें भावस्थ हो तो परम सुन्दर, धनी, बन्धु-बान्धव युक्त, श्री सम्पन्न व राजद्वार से सम्मानित होगा।

60.	ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
	1	1	7	1	2	9	12	11	9	3

यह जातक महा प्रतापी, प्रभावशाली, स्वाभिमानी, क्रोधी, गेहुआं रंग, मध्यम कद, अल्पभोजी, वीर्यदोषी, विद्या व विवेक सम्पन्न, सामान्य धनी, ऋणी, सत्यप्रिय, कटुवादी, शास्त्रज्ञ, धार्मिक वृद्धावस्था में धन लाभ, कृपण पर भोग व ठाट-बाट पर व्यय, राज्य से धन प्राप्त, यदा-कदा धर्म में उदासीन, सुन्दर, निरोग मुख, दंत रोगी, स्त्री प्रिय, उद्यमी, साहसी पर निन्दक, घर-भूमि-भृत्य-वाहन युक्त, मध्यमायु में स्त्री वियोगी 5 पुत्र प्राप्त, एक ही पुत्र द्वारा सेवा, दो विवाह, 19 वें 25 वें वर्ष विवाह हो। विरोधी प्रबल रहें। भाग्योदय 21/32/43वें वर्ष। आयु 65 वर्ष श्रावण शुक्ल 10

शनिवार को रात्रि में मृत्यु। 1/7/17/20/39/46/68वें वर्ष हानि व अपमृत्यु भय कारक, मूंगा व माणिक्य पहनें, मंगल का व्रत पूजन से अरिष्ट निवारण में सहायता। चन्द्रमा 2/3/4/7/11/12वें भाव में हो तो क्रमशः पुत्र एवं कन्यादान, धनी–उद्यमी व साहसी, मातृभक्त, घर भूमि से सुखी, स्त्री युक्त, खर्चीला व धन लोलुप होगा।

61.

ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
1	1	5	2	2	9	1	11	9	3

यह जातक महाविद्वान, नीतिवान, धीर–वीर, गंभीर, शान्त, सत्यवादी, वाक्चतुर, गौरांग, लंबकाय, विवेकी, दिव्य देह, स्वस्थ, निरोग, तेजस्वी, प्रतापी, चतुराई से कार्य निकालने वाला, साहसी, उदार चेता, विलासी, ठाट–बाट का जीवन–यापन, गृह–भूमि–वाहन युक्त, पैतृक संपत्ति का लाभ, स्वयं समर्थ, सर्वप्रिय, विलासी होने से आलसी, नष्ट सम्पत्ति वाला, 20वें वर्ष परम सुन्दरी, धार्मिक कन्या से विवाह, दो पुत्र सेवाभावी, राजा के समान धनी, स्वयं की सूझ–बूझ से यथेष्ट धनोपार्जन, धार्मिक भी होगा, भाग्योदय 40वें वर्ष, सामान्य भाग्योदय, जन्मजात बिजली पानी से सावधान रहे, आयु 68 वर्ष, पौष शुक्ला 8 गुरुवार मध्याह्न में मृत्यु, पूर्व जन्म में वैश्य व अगले जन्म जन्म में भी वैश्य होगा। पुखराज धारण करने से लाभ व सूर्य पूजन, अनुष्ठान अरिष्ट निवारक है। चंद्रमा यदि 1/2/4/5/7/10वें भाव में हो तो क्रमशः स्त्री लम्पट, कामी, धनी, रक्षाधीश, मातृ–पितृ भक्त, पुत्रवान, स्त्रियों को प्रिय व राज्य से सम्बन्धित रहेगा। 5/11/15/28/44/59वें वर्ष हानिकारक है।

62.

ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
2	2	4	2	2	9	1	11	9	3

यह जातक उत्तम वस्त्रधारी, पशु सुख सम्पन्न, जल से भय, घर में अल्प सुख, पराए घर में रहने वाला, पशुओं से भय, पुत्रों से कष्ट, सद्गुण ग्राहक, गुणी जनों से प्रीति, अनेक स्त्रीभोगी, सदैव धनी, भाई–पुत्रों से युक्त, विनीत, गृह–भूमि–धन–वाहन से सम्पन्न, ग्राम्याधिपति, सर्वत्र सम्मान, कवि, जनप्रेमी, शत्रुजित, व्यवसनी, विवाहित कर्मों से पराङ्मुख, सुप्रसन्न, कुकर्मी, परनिन्दक, कुमार्गी, दुर्वचनी व भय, चिन्ता–व्याकुलता युक्त, विवाह 21 वर्ष में रक्त–विकारी स्त्री से, 21 वें वर्ष भाग्योदय, स्त्री को उदर विकार, तीन पुत्र, सुपात्र व योग्य, विरोधी प्रबल रहें, शासकीय सेवा में उच्च पद प्राप्त, पूर्णायु 73 वर्ष, श्रावण शुक्ल 7 सोमवार सायंकाल मृत्यु संभव, 23/44/56/68/70वें वर्ष हानिप्रद व अरिष्ट कारक, अपमृत्यु कारक। पूर्व जन्म में क्षत्रिय इस जन्म में धार्मिकता के कारण, तीर्थ स्थान

पर शरीर त्याग मोक्ष प्राप्त होगा। अरिष्ट निवारणार्थ गोमेद धारण करें, महामृत्युंजय पाठ व अभिषेक हितकर, स्त्रीहीन चंद्रमा 1/3/5/7/8 भाव में हो तो क्रमशः बुद्धिमान, भाग्यशाली, संततिहीन व जल से हानि हो।

63.	ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
	3	3	7	2	2	8	2	11	9	3

यह जातक गणितज्ञ, उत्तम शील स्वभाव, श्रेष्ठ वार्तालाप करने वाला, कीर्तिवान, विनयी, परोपकारी, स्व घर में अल्प सुखी, पर घर वासी, शत्रुओं से भय, पुत्र पक्ष से कष्ट, गुण ग्राहक, गुणी जनों से प्रीति, अनेक स्त्री भोगी, धनी, घर के लोगों से सुखी, मन में दुःख, पाखण्डी, मिथ्यावादी, दुर्बल शरीर, गौरवान्वित, पुष्पादि प्रेमी, शत्रुजित, विवाह कर्म से पराङ्मुख, निंदक व धनोपयोगी, अविवाहित, जार स्त्री से सम्बन्ध कर संतानोत्पत्ति, सन्तान से सुख नहीं, स्त्री की माध्यमायु में मृत्यु, आयु योग 82 वर्ष, भाग्योदय वर्ष 22 व 28 आषाढ़, शुक्ल 6 रविवार मध्याह्न में मृत्यु, कुकर्मों के कारण 43-58 या 63वें वर्ष वायुरोग से पीड़ित होकर मृत्यु की संभावना, अंधा भी होना संभव है। पुखराज पहनें, सूर्य देव का पूजन व अनुष्ठान से संकट दूर हों। पूर्व जन्म में शूद्र या अगले जन्म में प्रेत योनि प्राप्त। चंद्रमा यदि 1/2/5/9 भाव में हो तो क्रमशः सुन्दर, धनी, पुत्रवान, धर्मभीरु तथा समाज में सम्मानित होगा।

64.	ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
	4	4	10	मं	4	8	4	11	9	3

यह जातक क्रूर स्वभाव, पितृ विरोधी, पूर्ण धनी, पुत्रों से सुखी, कुटुंब से कलह, प्रियवादी, माता से सुख, सुन्दर वेषधारी, घर में सदा प्रसन्न, मिथ्यावादी, पाखण्डी, कमजोर, धन हानि, उत्तम कार्यों में बुद्धि लगाने वाला, सबको बस में करने वाला, शत्रुजित, विहित कर्मों से पराङ्मुख, जाति हितैषी, कुमार्गी, हाथ में पीड़ा, 4 पुत्र 2 कन्याएं, उदर विकारी, क्रोधी स्त्री से 20वें वर्ष विवाह, भाग्योदय 24/38/53वें वर्ष, विरोधी स्वयं परास्त, ऐश्वर्य-विलास में विशेष खर्च, धन-तृष्णा निरन्तर, सन्तान योग्य व सुपात्र, आयु 63 वर्ष, कार्तिक शुक्ल 7 मंगलवार, रात्रि प्रथम प्रहर में वायु-विकार या चोट से मृत्यु, 7/9/17/29/56/61 वें वर्ष हानिप्रद व अपमृत्यु भय कारक, हीरा पहनने व शनि व्रत से कष्ट निवृति। पूर्व जन्म में वैश्य और अगले जन्म में भी वैश्य होगा। चन्द्र यदि 1/3/4/7/10/12 भावस्थ हो तो क्रमशः स्त्रियों का प्रिय, उद्यमी व भाग्यशाली, सुखी, व्यभिचारी, साहसी तथा पूर्ण धनी होगा।

65.	ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
	4	4	2	4	5	8	5	11	9	3

यह बालक क्रूर स्वभाव, पितृ विरोधी, धनी, पर घर वासी, हीन भाव युक्त, दुष्ट बुद्धि, शत्रुओं से भयभीत, स्त्रीजित् व स्त्रियों का प्रेमी, स्वपत्नी से कलह, मिथ्यावादी, भाई-बन्धुओं से वैर, दुर्बल देह, दरिद्र, पाखण्डी, स्त्री द्वारा धन-मान-सुख प्राप्त, शत्रुजित, व्यसनी, सन्तोषी, कुमार्गगामी, जातिगत प्रेम, दान, विहित कर्म से परे, चाण्डाल जैसे कर्म विवादी, कलही, धनभोगी, तेजस्वी, हाथ में पीड़ा, भय, व्याकुलता, घबराहट युक्त। विरोधी खूब होंगे। विजयी उन पर, एक पुत्र द्वारा सेवा, अन्य पुत्र परदेशवासी, विवाह 20 वें वर्ष, भाग्योदय 24/38वें वर्ष, सन्तान सुयोग्य व सुखी 68वें वर्ष चैत्र शुक्ल 4 मंगलवार को रात में मृत्यु, अपने उग्र स्वभाव के कारण पुत्रों का भी विरोध करेगा। 4/9/11/14/28/46/52/63वें वर्ष अपमृत्यु कारक, हानिकारक, पूर्व जन्म में उग्रकर्मी क्षत्रिय व अगले जन्म में कीट योनि प्राप्त करेगा। चन्द्रमा यदि 1/2/5/7/9/11 भाव में हो तो क्रमशः परम सुंदर, शान्त, धनी, विद्वान्, सत्कर्मी, स्त्रीप्रिय, भाग्यवान और धर्मात्मा तथा श्वेत वस्तु के व्यापार से लाभ प्राप्त करेगा।

66.

ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
5	5	5	4	6	8	6	11	9	3

यह जातक परोपकारी, पराक्रमी, स्थिर बुद्धि, स्त्री से कलह, स्त्रीजित, शत्रुओं से भीत, दुष्टमति, अतिदीन, पर घर वासी, श्रेष्ट बोलने वाला, वाणी चतुर, अच्छा लेखक, सुन्दर स्त्रियों का प्रेमी, सुखी, धन की ओर से चिन्तित, तीर्थाटन प्रेमी, वाचाल, प्रसन्नचित्त, व्यसनी, शत्रुजित, जातिवादी, कटुवादी, परनिन्दक, तेजस्वी, चिन्तायुक्त, 18 या 22वें वर्ष विपरीत मति स्त्री से विवाह, 1 पुत्र सुख तथा सेवा भावी, परमायु 69 वर्ष फाल्गुन कृष्ण 9 रविवार को धार्मिक कार्य करते घर पर ही मृत्यु, जीवन के 3/4/9/17/28/39/52/63वें वर्ष धन हानि, रोगप्रद। पुखराज धारण करने, गुरु पूजन, गुरुवार व्रत से अरिष्टों का नाश तथा लाभ प्राप्त। पूर्व जन्म में क्षत्रिय था इसी जन्म में मोक्ष प्राप्त। कुण्डली में चंद्रमा यदि 1/2/7/10 भाव में हो तो क्रमशः परम सुन्दर, गंभीर तथा शान्त स्वभाव, सामान्य धनी, स्त्री लम्पट व सर्वत्र सम्मान पाता है।

67.

ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
6	6	1	5	5	8	7	11	9	3

यह जातक महत्त्वाकांक्षी, गीत-वाद्य प्रेमी, राज्य से अर्थलाभ, स्त्री-पुत्र से सुखी, साहसी, शत्रुजयी, विनयी, मिथ्यावादी, बंधुजनों से दुश्मनी, हीन बुद्धि, स्त्री प्रेमी, दुःखी, पाखण्डी, दुर्बल, धनहानि, वस्त्राभूषण-सुगंध प्रेमी, अधम से धनी, प्रियवादी, कवि, व्यसनी, विहित कर्म विरोधी,

प्रसन्नचित्त, दीन भाव मग्न, कुचाली, जाति प्रेमी, परनिन्दक, चिन्तित, व्याकुल, तेजस्वी, धनी, हाथ में पीड़ा, शत्रुनाशक, 22वें वर्ष परम सुन्दरी से विवाह, 21/28/46वें वर्ष भाग्योदय, पुत्र कम कन्याएँ अधिक, एक पुत्र द्वारा सेवा, आयु वर्ष 74 श्रावण शुक्ल 6 रविवार, दोपहर में मृत्यु सम्भव 3/8/28/35/39/58/72वें वर्ष हानिकारक, नीलम धारण व हनुमन्त पूजन कल्याणकारी, पूर्व जन्म में क्षत्रिय था। अगले जन्म में वर्णसंकर होगा। चंद्रमा यदि 3/4/6/8वें भाव में हो तो जातक क्रमशः धनी, मातृ विरोधी, यात्री एवं श्वास रोगी होगा।

68.	ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
	7	7	12	5	6	9	8	11	9	3

यह जातक राज्य से भय युक्त, सबका विरोधी, पापी, कलहप्रिय, कर्मण्य, स्त्री पुत्र से सुखी, साहसी, शत्रु हन्ता, विजयी, मृदुभाषी, लेखन कुशल, सुखी, श्रेष्ठ, स्त्रियों से प्रेम, घर–भूमि–वाहन–धन से सम्पन्न, उत्तम आभूषण युक्त, जीव हिंसक, निन्दक, व्यसनी, सुप्रसन्न, चाण्डाल कर्मी, शत्रु से भय, शत्रु–नाशक, दुर्वचनी, धन लोभी, तेजस्वी, हितकारी, स्वबन्धुओं को हानि, हाथ से पीड़ा, चिंता, व्याकुलता से घिरा, पूर्व जन्म में क्षत्रिय, अगले जन्म में पिशाच होगा। 18वें वर्ष विवाह तथा भाग्योदय 48वें वर्ष, सन्तानें मलिन व दुष्ट बुद्धि होंगी। वृद्धावस्था में सद्बुद्धि पाकर जातक कुछ धर्म–कर्म करेगा। सन्तान से विशेष कष्ट, ये पुत्र सन्ताप से, जलोदर रोग से 65वें वर्ष मृत्यु पाएँगे। 7/10/21/39/53वें वर्ष हानि कारक व कष्टप्रद। कष्ट निवारणार्थ माणिक्य पहनें, सूर्य का पूजन व आदित्य का पाठ करें। चंद्रमा यदि 2/3/5/7/10वें भाव में हो तो क्रमशः निर्धन, धीर–गंभीर, उद्यमी, विवेकी, परस्त्री लोलुप, प्रतापी, सत्कर्म कर्ता व व्यवसायी होगा।

69.	ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
	7	7		6	8	9	9	11	9	3

यह जातक पाप कर्मकर्ता, पर कार्य में संलग्न, सबका विरोधी, राज्य से भय, स्त्री–पुरुषों से सुख, मित्र हितैषी, शुभ कर्म विमुख, क्षमा शक्ति, दुःखी, खर्चीला, धन–आभूषण युक्त, पैतृक संपत्ति प्राप्त, स्त्री–पुत्र से सुख, राज्यमंत्री, नायक, शीलवान, कविता प्रेमी, कर्तव्य से च्युत, शत्रुजयी व भय युक्त, दुर्वचनी, कलही, धनी, द्विभार्यायोग एवं कर्तव्य विमुख, 20वें वर्ष विवाह व स्त्री पंगु हो जायेगी। पुनः 24वें वर्ष विवाह, भाग्योदय 26वें 44वें वर्ष, आयु 65 वर्ष। चैत्र शुक्ल 3 रविवार सायंकाल मस्तिष्क विकार से मृत्यु होगी। काली का पूजन व लहसुनिया पहनना शुभ रहेगा। पूर्व जन्म

में क्षत्रिय था व अगले जन्म में नरक भोगने के बाद वृक्ष योनि पायेगा। चंद्रमा यदि 1/4/8/10 भावस्थ हो तो जातक क्रमशः सत्कर्मी, मातृ भक्त, जल यात्री, राज मान्य व प्रभावशाली और पूर्वसुखी होगा।

70. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
10 10 12 7 10 9 11 11 9 3

यह प्राणी भ्रमणशील, कुटुम्ब विरोधी, धनहीन, उत्सव व उत्साहीन, ऐश्वर्यहीन, संतप्त, पत्नी पक्ष से पीड़ित, शत्रुओं से भय, पर कार्य सम्पन्न कर्ता, भूमि-वाहन युक्त, अल्पभोगी, सत्कर्म में आलसी, निंदितकर्मी, श्रेष्ठ कर्मों से दूर, शत्रुजयी, व्यसनी, प्रसन्नचित्त, दीनभावापन्न, तेजस्वी, सर्वहिंतैषी, 22वें वर्ष विवाह, स्त्री प्रदर रोगी। भाग्योदय 21/38/58 वर्षायु में, विद्या द्वारा धनोपार्जन, सर्वत्र मान-ख्याति, प्राप्त, पुत्र की ओर से सदैव दुःखी, मुकद्दमों में सदैव विजय, आयु 68 वर्ष भाव भाद्र पद कृष्ण 5 रविवार, सायंकाल, मस्तक पीड़ा से मृत्यु होगी। 1/7/17/29/42/56/63वें हानि कारक वर्ष है। यात्राएँ प्रायः कष्ट प्रद रहेंगी। धनाभाव रहेगा, कष्ट निवारणार्थ व लाभार्थ मूंगा पहनें व नृसिंह लक्ष्मी पूजन करें। पूर्व जन्म में ज्ञानी क्षत्रिय था अगले जन्म में स्त्री बनेगा।

71. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
11 11 6 7 10 9 12 11 9 3

यह जातक दुर्भावना पूर्ण व्यवहार रखने वाला, मित्र रहित, गरीब वेश-भूषा, क्रूर व दया रहित, अंग-भंग, बड़े लोगों से संतप्त, अल्प कार्याधीन, पर कार्य लिप्त, सुन्दर वस्त्राभूषण प्रेमी, घर से सुखी, शत्रुहन्ता, शत्रुओं से द्रव्य प्राप्त, दैन्य स्वभाव, राज्य से वैभव प्राप्त, तेजस्वी, स्व धनोपयोगी, सन्तानें पैदा होंगी और मर जायेंगी, एक पुत्र योग्य निकलेगा जो जीवन भर सेवा करेगा। 19वें वर्ष श्यामल, रोग-ग्रस्त कन्या से विवाह 20वें वर्ष भाग्योदय, आयु 68 वर्ष, श्रावण कृष्ण 6 मंगलवार प्रातः मानसिक रोग से एकाएक घर में ही मृत्यु होगी। 3/5/10/21/33/45/59/63वें वर्ष अर्थ हानि व दैहिक रुप से कष्टकारक है। नीलम पहनें, शनिवार का व्रत, हनुमान पूजा से अरिष्ट नाश हो। पूर्व जन्म में शूद्र था, व अगले जन्म में पिशाच योनि में जायेगा। चन्द्रमा यदि 2/5/8/11वें भावस्थ हो तो क्रमशः, धनवान व भ्रमणशील, विद्वान व सत्कर्मी, जल व शस्त्र से हानि, विविधार्थ लाभी व पुत्रवान होगा।

72. ल सू चं मं बु बृ शु श रा के
11 11 3 8 11 9 1 11 8 2

प्राणी सुखी, दया विहीन, मलिन वेष धारी, मित्र रहित, दुर्भावना युक्त, शठ, सुन्दर स्त्रियों का प्रेमी, धन-वाहन-भूमि युक्त, शत्रुओं से दुःखी, स्त्री

व सन्तान से सुखी, सर्वत्र विजयी, बुद्धिहीन, अधर्मी, पराक्रमहीन, अहंवादी, गृह–कलही, ग्रामाधिपति, कवि, प्रसन्न, शत्रुहन्ता, कायर, मायावी, द्विभार्या योग स्पष्ट, प्रथम 17 वर्ष में दूसरा 21वें वर्ष, सुन्दर व धर्मात्मा स्त्री से, एक ही पुत्र द्वारा सेवा प्राप्त, भाग्योदय 24/30/49 की आयु में, पूर्णायु 67 वर्ष, आषाढ़ कृष्ण 10 मंगलवार मध्याह्न में शस्त्रघात या अग्नि कांड से मृत्यु। 2/5/11/29/23/48/56वें वर्ष हानि व अपमृत्यु भय, भाग्योदय के अनेक अवसर प्राप्त होंगे तथा धार्मिक स्थिति भाग्योदय पर निर्भर रहेगी। मूंगा पहनें, घंटाकर्ण का अनुष्ठान करें जो कष्ट निवारक है। पूर्व जन्म मे कीट योनि में था, अगले जन्म में शूद्र होगा। कुण्डली में चंद्रमा यदि 2/5/8/11वें भाव में हो तो क्रमशः धनी, कन्या युक्त, स्वस्थ तथा बहु पुत्रवान होगा।

73.	ल	सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श	रा	के
	12	12	3	8	1	10	1	12	8	2

यह व्यक्ति स्वजनों से दुःख पाने वाला, व्यवसाय से धनी, सर्वत्र विजयी, अग्नि से भय, चंचल बुद्धि, वृकोदर, दयाहीन, ऋणी, पर सेवक, क्रोधी, अल्प कामी, ग्राम प्रधान, सर्वपूज्य, मनोरथ निष्फल, कवि, विजयी, शत्रुहीन, गुणी, वैभवपूर्ण, व्यवसाय कुशल, बधिर, क्षीण दृष्टि, मायावी, राज्य से धोखा, मुखरोगी, कटुवादी, ससुराल से धन प्राप्त, ससुराल वासी, 18वें वर्ष विवाह, धार्मिक व विदुषी कन्या से, भाग्योदय 26/38/44वें वर्ष, धन–वाहन युक्त, धार्मिक कार्यकर्ता, पर उदासीन, आयु 84 वर्ष, फाल्गुन कृष्ण 10 रविवार, घर से बाहर, जल यात्रा के समय मृत्यु। 1/7/12/28/45/54/73वें वर्ष हानिप्रद एवं दैहिक कष्ट कारक, पूर्व जन्म में ब्राह्मण, अगले जन्म में वर्ण संकर होगा। विद्या व सन्तान का पूर्ण सुख, पन्ना व हीरा धारण करें व गुरु पादुका स्तोत्र का पाठ–अनुष्ठान से संकट दूर होंगे। चन्द्रमा यदि 1/4/17/10वें भावस्थ हो तो क्रमशः परम सुन्दर और उत्साही, मातृ–पितृ विरोध, बहु भोगी तथा राज मान्य होंगे।

74.	ल	सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श	रा	के
	1	1	3	8	1	10	12	12	8	2

यह जातक गृहाधिपति, रक्त–पित्त रोगी, हितू, साहसी, अग्नि, विष व शास्त्र से भय, स्त्री–पुत्र का पूर्ण सुख प्राप्त, सर्वत्र विजयी, क्रोधी, चंचल मित्र, बहुभोजी, कलहकारी, ऋणी, पर कार्यकर्ता, भयभीत, राज वैभव व धन प्राप्त, शत्रुजित, सुखी, व्यवहार कुशल, परोपकारी, कायर, प्रगल्भ, दुर्बल, राज्य से धोखा, कुटुम्ब विरोधी सुवचन रहित, पुत्रों की संख्या कहीं अधिक, दो द्वारा सेवा प्राप्त, गुप्त रहस्य प्राप्त कर मुकद्दमों में विजयी, विवाह 18वें वर्ष, भाग्योदय 23/35/55वें वर्ष आयु 67 वर्ष माघ कृष्ण 11

व सन्तान से सुखी, सर्वत्र विजयी, बुद्धिहीन, अधर्मी, पराक्रमहीन, अहंवादी, गृह–कलही, ग्रामाधिपति, कवि, प्रसन्न, शत्रुहन्ता, कायर, मायावी, द्विभार्या योग स्पष्ट, प्रथम 17 वर्ष में दूसरा 21वें वर्ष, सुन्दर व धर्मात्मा स्त्री से, एक ही पुत्र द्वारा सेवा प्राप्त, भाग्योदय 24/30/49 की आयु में, पूर्णायु 67 वर्ष, आषाढ़ कृष्ण 10 मंगलवार मध्याह्न में शस्त्रघात या अग्नि कांड से मृत्यु। 2/5/11/29/23/48/56वें वर्ष हानि व अपमृत्यु भय, भाग्योदय के अनेक अवसर प्राप्त होंगे तथा धार्मिक स्थिति भाग्योदय पर निर्भर रहेगी। मूंगा पहनें, घंटाकर्ण का अनुष्ठान करें जो कष्ट निवारक है। पूर्व जन्म मे कीट योनि में था, अगले जन्म में शूद्र होगा। कुण्डली में चंद्रमा यदि 2/5/8/11वें भाव में हो तो क्रमशः धनी, कन्या युक्त, स्वस्थ तथा बहु पुत्रवान होगा।

73.	ल	सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श	रा	के
	12	12	3	8	1	10	1	12	8	2

यह व्यक्ति स्वजनों से दुःख पाने वाला, व्यवसाय से धनी, सर्वत्र विजयी, अग्नि से भय, चंचल बुद्धि, वृकोदर, दयाहीन, ऋणी, पर सेवक, क्रोधी, अल्प कामी, ग्राम प्रधान, सर्वपूज्य, मनोरथ निष्फल, कवि, विजयी, शत्रुहीन, गुणी, वैभवपूर्ण, व्यवसाय कुशल, बधिर, क्षीण दृष्टि, मायावी, राज्य से धोखा, मुखरोगी, कटुवादी, ससुराल से धन प्राप्त, ससुराल वासी, 18वें वर्ष विवाह, धार्मिक व विदुषी कन्या से, भाग्योदय 26/38/44वें वर्ष, धन–वाहन युक्त, धार्मिक कार्यकर्ता, पर उदासीन, आयु 84 वर्ष, फाल्गुन कृष्ण 10 रविवार, घर से बाहर, जल यात्रा के समय मृत्यु। 1/7/12/28/45/54/73वें वर्ष हानिप्रद एवं दैहिक कष्ट कारक, पूर्व जन्म में ब्राह्मण, अगले जन्म में वर्ण संकर होगा। विद्या व सन्तान का पूर्ण सुख, पन्ना व हीरा धारण करें व गुरु पादुका स्तोत्र का पाठ–अनुष्ठान से संकट दूर होंगे। चन्द्रमा यदि 1/4/17/10वें भावस्थ हो तो क्रमशः परम सुन्दर और उत्साही, मातृ–पितृ विरोध, बहु भोगी तथा राज मान्य होंगे।

74.	ल	सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श	रा	के
	1	1	3	8	1	10	12	12	8	2

यह जातक गृहाधिपति, रक्त–पित्त रोगी, हितू, साहसी, अग्नि, विष व शास्त्र से भय, स्त्री–पुत्र का पूर्ण सुख प्राप्त, सर्वत्र विजयी, क्रोधी, चंचल मित्र, बहुभोजी, कलहकारी, ऋणी, पर कार्यकर्ता, भयभीत, राज वैभव व धन प्राप्त, शत्रुजित, सुखी, व्यवहार कुशल, परोपकारी, कायर, प्रगल्भ, दुर्बल, राज्य से धोखा, कुटुम्ब विरोधी सुवचन रहित, पुत्रों की संख्या कहीं अधिक, दो द्वारा सेवा प्राप्त, गुप्त रहस्य प्राप्त कर मुकद्दमों में विजयी, विवाह 18वें वर्ष, भाग्योदय 23/35/55वें वर्ष आयु 67 वर्ष माघ कृष्ण 11

रविवार मध्याह्न में गल गण्ड से घर पर ही मृत्यु। 3/7/22/39/56/61वें वर्ष अपमृत्यु भय व धन हानि कारक, हीरा व पुखराज धारण करें, शुक्र का पूजन अनुष्ठान व शुक्रवार का व्रत अरिष्ट दूर करेगा। पूर्व जन्म में क्षत्रिय था। अगले जन्म में वृक योनि प्राप्त होगा। जीव-हिंसा कर नरकगामी होगा। चंद्रमा यदि 3/6/9/12वें भाव में हो तो क्रमशः धार्मिक मात्रा प्रेमी और स्वस्थ, भाग्यवान, निरोग, उदार एवं उद्यमी तथा जल से भय प्राप्त करता व शीत रोगी होगा।

75. ल सू चं मं बु बृ शु श रा के
2 2 3 8 1 10 12 12 8 2

यह जातक स्त्री और पुत्र से परेशान, दुर्बल स्वास्थ, अति दीन-हीन, लाल रक्तिम नेत्र, बुरे केश, तांबे के व्यवसाय में लाभ, धातुविकारी, परदेशी, ऋणी, चोर, क्षमाशील, कृषि कार्य में दक्ष, सुखी, कान्तिवान, सुन्दर और बुद्धिमान, विशेष पण्डित, पवित्र, वाहनादि युक्त, धार्मिक रोगी, मलिन वेष, छोटा कद, पापी, प्रगल्भ, कायर, मायावी, धनी, राज्य पक्ष से द्विविधा एवं धोखा प्राप्त, मुख रोगी, कुटुम्ब विरोधी, असम्मान जन्य ढंग से बोलने वाला, द्विविधा एवं धोखा प्राप्त, मुख रोगी, कुटुम्ब विरोधी, असम्मान जन्य ढंग से बोलने वाला, द्विभार्या योग व विवाह 20 वें वर्ष, दूसरा 22वें वर्ष, प्रथम भार्या कलहकारिणी, दुष्टा दुर्भगा हो तो दूसरा नहीं होता। प्रथम दुराचारिणी स्त्री होगी। भाग्योदय विलंब से, 37 व 53वें वर्ष, 3 पुत्र उत्पन्न होकर नष्ट। प्रथम सन्तान कन्या होने पर जीवित रहेगी पर कुल पर कलंक लगायेगी। अनेक उपायों से एक पुत्र प्राप्त। देशाटन से लाभ, 71 वर्षायु, माघ शुक्ल 11 रविवार प्रातः वायुपीड़ा से घर पर मृत्यु, जीवन के 2/8/18/34/40/62/70वें वर्ष हानि कारक, कष्टप्रद, मूंगा व गोमेद धारण करें, बुधवार का व्रत, शंकर आराधना से अरिष्ट नाश, पूर्व जन्म में शूद्र था, अगले जन्म में छछूंदर योनि प्राप्त। चंद्रमा यदि 2/5/8/11 वें भाव में होंगे तो क्रमशः धनी, पुत्रवान, जल से मृत्यु, पूर्ण सुखी व विविधार्थ भोगी होगा।

76. ल सू चं मं बु बृ शु श रा के
2 2 11 7 2 10 1 12 8 2

यह जातक उत्तम वस्त्रधारी, गुरु भक्त, लाल वस्तु के व्यापार में सफल, धन व्ययी, स्त्री पक्ष से परेशान, पिता का भक्त, स्थिर बुद्धि, पाप से भयभीत, कोमल देह, अधिक रोग युक्त, गौरांग, वाहन व रत्नादि युक्त, नीतिवान, पर स्त्री से दूर, धार्मिक, पंडित, चेष्टावान, रोगी, छोटा कद, दुःखी, दुर्बल, डरपोक, धनी, राज्य से धोखा, मुख रोगी, कुटुम्ब का विरोधी, सम्मानित भाषा, मस्तक पर चोट या घाव, 29वें वर्ष उदर व मस्तक

रोगी, स्त्री से विवाह, पुत्र अधिक, कन्याएं कम, एक पुत्र योग्य और सेवा भावी, भाग्योदय 25/39/56 वें वर्ष कुछ बाधाओं के साथ, विरोधी हारेंगे, अश्विन शुक्ल 8 बुधवार, मध्यरात्रि उदर विकार से 61वें वर्ष मृत्यु होगी। 2/10/17/28/35/64वें वर्ष नुकसानदायक, यात्रा में जल से भयभीत, पुखराज व गोमेद पहनें, बुधवार का व्रत, श्री सूक्त से लक्ष्मी का अनुष्ठान हितकारी होगा। पूर्व जन्म में शूद्र से उत्पन्न क्षत्रिय। अगले जन्म में ब्राह्मण होकर मोक्ष प्राप्त। चंद्रमा यदि 1/4/7/10 भाव में हो तो क्रमश: आत्म संतुष्ट और साहसी, पूर्ण सुखी, स्त्री लोलुप, राजदण्ड भागी होगा।

77.

ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
3	3	9	7	3	10	2	12	8	2

यह जातक शत्रु जयी, धनी, धीमी गति से कार्य वाहक, धीर-वीर, स्त्री-प्रेमी, बंधुहीन, मित्र हितैषी, बहु व्ययी, स्त्री पक्ष से परेशान, हठी, सगे-संबंधियों से संपन्न, अशुद्ध चित्त वृत्ति, स्वेच्छा से शुभ कर्मी, वाहनादि युक्त, सुन्दर घर, नीतिज्ञ, गुणी, पर स्त्री से दूर, चांदी व सीसे के व्यवसाय से धनी, दुर्बल, वाचाल, रोगी, छोटा कद, कायर, मायावी, कुटुम्ब विरोधी, भोग-विलास में खर्च, स्त्री विदुषी 20वें वर्ष विवाह, भाग्योदय 23/38/54वें वर्ष, मुकद्दमें में व विरोधियों पर विजय, देशाटन से लाभ, आय का साधन उत्तम, राज दण्ड योग, आयु 74 वर्ष, आश्विन कृष्ण 13 शनिवार, रात्रि के प्रथम प्रहर में, धर्म चिन्तन करते मृत्यु। सन्तान की ओर से मन चिन्तित, अनेक उपायों के बाद 1 पुत्र प्राप्त 2/5/15/28/44/59/69वें वर्ष अपमृत्यु कारक व धनहानि, मूंगा व पुखराज धारण, मंगल-गौरी का व्रत लाभप्रद। पूर्व जन्म में विद्वान-धार्मिक क्षत्रिय अगले जन्म में जड़ योनि में। चन्द्रमा यदि 1/4/7/10वें भावस्थ हो तो क्रमश: परम सुन्दर, स्त्री प्रेमी; पूर्ण-सुखी, मातृ विरोधी, कुशल व्यवसायी और स्त्रीजित तथा राजतुल्य होगा।

78.

ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
4	4		8	4	10	2	12	8	2

यह जातक भोगी, धार्मिक जनों का प्रेमी, मिष्टान्न प्रेमी, भाग्यवान, बंधु प्रेमी, मधुर भाषी, संगीत प्रेमी, बहु धनी, राजप्रिय, विष-अग्नि-शस्त्र से भय, स्त्री-पुत्र से सुखी, सर्वत्र सफल, सरल, नम्र स्वभाव, निर्लज्ज, क्षीण जंघा, दुर्बल, वाहन युक्त, रत्न-भवन से सम्पन्न, नीति निपुण, गुण ग्राहक, धार्मिक, श्वेत वस्तु के व्यापार से विशेष लाभ, वाचाल, सामान्य कद, रोगी, मायावी, प्रगल्भ, विलासी, स्त्री प्रेमी, एक पुत्र योग्य व सुपात्र, ऐश्वर्यशील, राज्य से सम्मान प्राप्त, विरोधियों पर युक्ति संगत विजय, स्वार्थ वश धर्म-

कर्म, गर्भाशय रोग युक्त पत्नी प्राप्त, 18वें वर्ष विवाह, विद्वान, विवेकशील, कर्मण्य होगा। स्त्रियों के गीत, वाद्य, नृत्य में विशेष रुचि, भाग्योदय 19/26/42/54वें वर्ष 3/9/11/24/37/52/62वें वर्ष अपमृत्यु भय व हानि–कारक, आयु 66 वर्ष, भाद्रपद शुक्ल, 14 मंगलवार मध्याह्न में मृत्यु। मोती व मूंगा धारण करें, राहु अनुष्ठान, बुधवार का व्रत से लाभ। पूर्व जन्म में यह क्षत्रिय था, अगले जन्म में वैश्य बनेगा। चन्द्रमा यदि 3/6/9/12वें भाव में हो तो क्रमशः आलसी और साहसी, निरंग व न्याय प्रिय, भाग्यवान एवं पर व्यवसाय में हानि उठायेगा।

79.

ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
4	4	7	8	4	9	2	12	8	2

यह जातक मिष्टान्न प्रेमी, धार्मिक, भाग्यशाली, भाइयों का प्रेम, मृदुभाषी, संगीतकार, धनी, राय मान्य, विष, अग्नि व शस्त्र से भय, गृहस्थ सुख पूर्ण, विजयी वाल्यावस्था में रोगी, दुर्बल शरीर, लज्जाहीन, सरल स्वभाव, राजमान्य, धनी, पवित्र कृपण, स्त्रियों का चहेता, गुणी, वाचाल, पंच प्रधान, मुख रोगी, छोटा कद, जांघ में फोड़ा या व्रण चिह्न, दुःखी, राज्य से धोखा, अन्न–धन संपन्न, कुटुम्ब विरोधी, 23 वें वर्ष विवाह, पत्नी धार्मिक, स्वार्थी, मृत वत्सा होगी। उसी समय भाग्योदय, 37/44वें वर्ष भाग्योदय कारक, उग्र स्वभाव, आलसी विरोधी प्रबल प अहित नहीं होगा। आय, यथेष्ठ, हलकी परेशानियाँ रहेंगी। अपमृत्यु व हानिकारक वर्ष 4/14/29/48/52/63वें वर्ष आषाढ़ कृष्ण 6 रविवार प्रातः अण्डकोषादि रोग से धार्मिक स्थिति में मृत्यु। पुत्र की ओर से कुछ विशेष चिन्ता, वृद्धावस्था में एक पुत्र प्राप्ति, पिछले जन्म में अविवेकी ब्राह्मण व अगले जन्म में मनुष्य होगा। कुण्डली में चंद्रमा यदि 1/4/7/10वें भाव में हो तो क्रमशः सुन्दर मातृयुक्त, श्वेत वस्तु का व्यवसायी व राजा तुल्य धनी होगा।

80.

ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
5	5	7	8	5	9	3	12	8	2

यह जातक अतिभोगी, शत्रु बल नाशक, छोटा पेट, कम सन्तान, उत्साही, पराक्रमी, धनरहित, युवावस्था में रोगी, एक पुत्र, अन्य स्त्री वाला, चपल बुद्धि, जल से भय, अल्पायु, सुंदर, देव–गुरु–ब्राह्मण भक्त, पवित्र, महा ऐश्वर्य सम्पन्न, कृपण, स्त्रियों को प्रिय, उत्तम भोजन, रोगी नेत्र, मृदुभाषी, सुन्दर वस्त्र धारक, पंच–प्रमुख, छोटा शरीर, प्रगल्भ, कायर, दुःखी, मुखरोगी, कुटुम्ब विरोधी, उग्र और गंभीर, विवाह 20वें वर्ष, 26वें वर्ष स्त्री वियोग, संग्रहणी रोग से 53वें वर्ष घर से बाहर, मार्गशीर्ष शुक्ल 2 मध्याह्न में मृत्यु, नीलम व हीरा धारण करें। बटुक भैरव का अनुष्ठान

उत्तम रहेगा। 2/6/12/25/47वें वर्ष हानिकारक, पूर्व जन्म में शूद्र स्त्री तथा पति वंचना के अपराध में इन्हें इस जन्म में विधुर रहना होगा, पुनः स्त्रीत्व पायेगा। चंद्रमा यदि 3/6/8/12वें भाव में हो तो क्रमशः उद्यमी और साहसी, जल से हानि, दीर्घायु और धार्मिक तथा विदेशों में व्यापार करने वाला होगा।

81. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
8 8 4 10 8 10 7 12 8 2

यह जातक महावीर, धर्मात्मा, पंडित, कुल में प्रधान, बुद्धिमान, सबका पालक, अर्शादि गुदा रोग, दुर्घटना का भय, जितेन्द्रिय, धन से हीन, कुल भूषण, स्त्रियों को सम्मोहित करने वाला, वृद्ध जैसा शरीर, भूमि से जीविकोपार्जन, क्रोधी, ब्राह्मण भक्त, सामान्य कद, सत्यवादी, शीघ्र मृत्यु को प्राप्त, अतिथि सेवक, वाहनादि सम्पन्न, रत्न भूषित, गृह मुक्त, नीतिगुणज्ञ, पर स्त्रियों से दूर, धर्मात्मा, पुत्रवान्, कुलीन, सुदर, प्रसन्न, सुखी, जांघ में कष्ट, कायर, राज्य से धोखा, 21वें वर्ष सुन्दर पर रोगी स्त्री से विवाह 4 पुत्र, 2 से कन्याएँ, सभी सन्तान सुयोग्य व सभ्य, भाग्योदय 22/38/52वें वर्ष राज्य कर्मचारी, भ्रमणशील 72 वर्ष की आयु में वैशाख शुक्ल 15 मध्याह्न में घर पर ही मस्तिष्क या हृदय रोग से मृत्यु, 26/38/49/71वें वर्ष हानिकारक, पूर्व जन्म में शूद्र अगले जन्म में ब्राह्मण होगा। चंद्रमा ३/६/९/१२वें भाव में हो तो क्रमशः उद्यमी और साहसी, व्यवसायी तथा परम धार्मिक, निरोग तथा जल–अग्नि से भय, भाग्यशाली व विलासी एवं अपव्ययी होगा।

82. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
8 8 7/10 9 10 8 12 8 2

यह जातक चंचल, शील रहित, विद्वानों का सेवक, रोगी, बातूनी, भाग्यहीन, रतिहीन, बुरा चाल–चलन, परदेशी, जितेन्द्रिय, धनहीन, कुलजयी, स्त्री मोहक, भूमि द्वारा जीविकोपार्जन, क्रोधी, ब्राह्मण भक्त, सामान्य कद, कभी–कभी धन लाभ, उद्यमी, घर–वाहन युक्त, नीतिज्ञ, गुणवान, पराई स्त्रियों से दूर, धर्मात्मा, राज्याश्रयी, मांसाहारी, बड़े–बड़े नेत्र, चतुर्थावस्था में मृत्यु, दुर्बल शरीर, मायावी, मुखरोग पीड़ा, कुटुम्ब विरोधी, कुलटा स्त्री, व्यभिचारिणी 24वें वर्ष में विवाह, 39वें वर्ष पत्नी वियोग, जारज पुत्रों का बाहुल्य, पर अधिक आयु नहीं पायेंगे। एक और सुपुत्र जीवित, 2/8/15/28/39/56/63वें वर्ष हानि व अपमृत्यु भय, आयु 70 वर्ष, वैशाख शुक्ल 13 मंगलवार मध्य रात्रि उत्तर दिशा में तीर्थस्थान में मृत्यु संभव। पूर्व जन्म में शूद्र था, इस जन्म में वैकुण्ठ की प्राप्ति, गोमेद पहनें,

गुरुवार का व्रत, गुरु भक्ति का अनुष्ठान लाभप्रद व अरिष्ट निवारक, चंद्रमा यदि 2/5/8/11 भाव में हो तो यह क्रमशः पूर्ण धनी, पुत्रवान्, जल से हानि तथा विविधार्थ लाभी होगा।

83. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
9 9 6 11 9 10 9 12 8 2

यह जातक सत्यवादी, निंदित केश, बंधु-हितैषी, देव-ब्राह्मण भक्त, बाल्यावस्था में रोगी, युवावस्था में धैर्यवान, महाधनी, दीर्घायु सुन्दर राजा तुल्य, स्त्री युक्त, क्रोधी, धन-धान्य-सम्पन्न, उद्यमी, वाहनादि युक्त, नीतिज्ञ, पराई स्त्रियों से दूर, धर्मात्मा, तीर्थाटन प्रेमी, निर्मल देह, सुखी, पवित्र, स्वबाहुबल से भाग्यशाली, उत्साही, छोटा कद, दुर्बल, कायर, मायावी, राज्य से धोखा, कुटुम्ब विरोधी, कभी-कभी नास्तिकों जैसे कार्य, धन प्राप्ति के लिएं अनैतिक कार्य करने से नहीं चूकेगा। 22वें वर्ष परम सुन्दरी कृशोदरी, पीनस्तनी, स्वस्थ, कर्तव्य परायण कन्या से विवाह होगा। 5 पुत्रों में से दो विशेष योग्य व कुलदीपक, पितृ, सेवाभावी होंगे, शत्रुविरोधियों आदि में विजय प्राप्त यदा-कदा व्यवसाय में उतार-चढ़ाव। 28/47/59वें वर्ष, स्वभाव में परोपकारिता कम रहने पर धार्मिक स्थल का निमार्ण होगा। आयु 82 वर्ष, आषाढ़ शुक्ल 13 सोमवार प्रातः किसी तीर्थस्थान में ईश्वर चिंतन करते हुए मृत्यु पुनर्जन्म नहीं होगा। पूर्व जन्म में वेदवेत्ता ब्राह्मण था। 2/7/17/33/39/51/61/63/72वें वर्ष अपमृत्यु का भय व हानिकारक, पुखराज पहनें, गुरुवार का व्रत, गुरु शाप विमोचन अनुष्ठान लाभप्रद है। चंद्रमा यदि 1/4/7/10 भाव में हो तो क्रमशः परम सुन्दर तथा स्त्रियों का प्रिय, पूर्ण कुटुम्बी और सुखी, प्रदर रोगिणी स्त्री और श्वेत वस्तु या औषधि व्यवसाय तथा राजमान्य या राज बंधन युक्त होगा।

84. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
10 10 3 12 9 10 10 12 8 2

यह जातक लंबकाय, स्त्री पुत्रादि से क्लेश, वात पित्त, रोगी, देशान्तर भ्रमण, पराक्रमी, स्वउपार्जित धन सम्पन्न, धर्मात्मा एवं बुद्धि सम्पन्न, तपस्वी, उपहास युक्त, सोम यज्ञ या गंगा स्नान करने वाला, कुल का दीपक, गुणी, सम्मानित, सुवस्त्र सम्पन्न, दिव्यदेह, पुण्यात्मा, आशावादी युक्ति उपासक, विघ्न मुक्त, ईर्ष्यालु, म्लेच्छों से धन प्राप्त, अभिमानी, धूर्तों का मित्र, अनर्थकर्ता, धनोपहारी, स्वकार्य से दुःखी, कर्तव्यशील, कर्मशील, कुसंगति से कम सफल, 21 वें वर्ष अति सर्वांग सुन्दर, धार्मिक, नष्ट सन्तति वाली पत्नी प्राप्त, वह उदर पीड़िता होगी। अनेक में से दो सन्तानें जीवित रहेंगी भाग्योदय 32/49/61वें वर्ष, मृत्यु आषाढ़ शुक्ल 12

शनिवार को हृदयरोग से 67वें वर्ष घर पर होगी। 8/6/11/14/27/63वें वर्ष हानिकारक, पूर्व जन्म में ब्राह्मण, अगले जन्म में प्रेत योनि पायेगा। मूंगा व पन्ना धारण करे, मंगलवार का व्रत रखे, मंगल चंडी के पूजन से लाभ होगा। चंद्रमा यदि 3/6/9/12वें भाव में हो तो क्रमश: धनी, उद्यमी व साहसी, निरोग व जल से भय, धार्मिक और खर्चीला होगा।

85.

ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
10	10	7	1	10	10	10	1	18	2

यह जातक अधिक सन्ततिवान, लोभी, आलसी, भ्रमणशील, कुटुम्ब विरोधी, धनेच्छुक, व्यसनी, दुष्टबुद्धि, दया रहित, विकराल शरीर, विपत्तियों से घिर हुआ, बुद्धिहीन, शत्रु से भय, बलहीन, अल्प कामी, पर कार्यकर्ता, क्रोधी, वृद्ध स्त्री भोगी, चिन्तातुर, कवि, प्रेमी, एकान्तवासी, विनयी, व्यवहार कुशल, रोगी, पापी, उपकारी, धनी, चांडाल कर्मी, प्रगल्भ, चोर, कायर, मायावी होगा। जलयात्रा से भय, 21वें वर्ष में मित्र या मित्र वंश की सुन्दर कन्या से विवाह या स्वकुटुम्ब की वृद्धा से अवांछनीय प्रेम संबंधों के कारण पत्नी से अलग सा-रहेगा। दो दुष्ट सन्तानें होंगी। उनके कुकृत्यों से आगे जाकर स्वयं भी सतायेंगी। पैतृक धन का आभाव पर स्वउपार्जित धन व कृपणता से संचित धन द्वारा धनी, भाग्योदय 34/48वें वर्ष, विरोधी प्रबल, भाग्योदय में अनेक विघ्न, सामान्य जीवन क्लेश पूर्ण, 65 की आयु, चैत्र कृष्ण 6 रविवार सायंकाल घर या परदेश में मधुमेह रोग से मृत्यु। 4/9/13/25/38/52/61वें वर्ष अपमृत्युभय, सर्पदंश एवं हानिकारक। पुखराज व नीलम पहनें, शनिवार का व्रत, शनि पूजा अरिष्ट दूर करेगा। पूर्व जन्म में चाण्डाल था, अगले जन्म में भी चाण्डाल होगा। चंद्रमा यदि 1/4/7/10वें भाव में हो तो क्रमश: विवेकी व सुन्दर स्त्री जनों का प्रिय व स्त्री लम्पट तथा सुवेषी व उतम कर्मनिष्ठ होगा।

86.

ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
11	11	3	12	10	10	11	12	8	2

यह जातक अनेक मित्रों से युक्त, स्थिर चित्त, पर स्त्रीरत, कोमलांग, सुखी, महाधनी, राज्य कर्मचारी, भोगहीन, गुणज्ञ, दुर्बल शरीर, स्त्री मोहक, चपल, स्वजाति को प्रसन्नता दायक, परधनेच्छुक, चंचल इन्द्रियोंवाला, बुद्धिमान, कर्मण्य, श्रेष्ठ जनों का हितैषी, स्वउपार्जित धन का स्वामी, वाहन युक्त, वाचाल, नीतिज्ञ, धार्मिक, गुणी, याज्ञिक, सुन्दर, हास्ययुक्त, ठिगना, सुन्दर, जीवहिंसक, मद्यपी, अहंकारी, मातृ विरोधी, व्यग्र चित्त, बाध्य जगत में खूब प्रतिष्ठा, ऐश्वर्य व भोग में विशेष व्यय, ठाट-बाट का जीवन, संतान की ओर से चिन्ता। 1 योग्य व सुपात्र सन्तान या 5 या 3

पुत्र, विवाह 23वें वर्ष अति सुन्दर, पर कलहकारी स्त्री के साथ, शत्रु व विरोधी प्रबल, मृत्यु 69 या 71वें वर्ष आषाढ़ शुक्ल 8 रविवार को या माघ कृष्ण 10 मंगलवार को दवाई में व्यतिक्रम द्वारा घर में ही होगी। भाग्योदय 3/6/28/53/63/68वें वर्ष, पूर्व जन्म में क्षत्रिय था अगले जन्म में शूद्र कुल में म्लेच्छ योनि प्राप्त। मंगल का व्रत, पुखराज, पहनने या गुरु ग्रह का पूजन अनुष्ठान से संकट दूर व इच्छा पूर्ति। चंद्रमा यदि 2/5/8/11वें भाव में हो तो जातक क्रमशः उद्यमी और साहसी, जल से हानि पुत्रवान और उद्यमी तथा धनी होगा।

87.	ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
	1	1	4	1	1	11	1	12	8	2

यह जातक साहसी, रक्त रोगी, विकारी, भूमि का स्वामी, सबका हितैषी, बुद्धिमान, सम्मानित, सुन्दर, धनी, क्रोधी, बंधु नाशक, पराक्रमी, राज्य द्वारा सम्मानित, चंचल चित्तवृत्ति, बहु भोजी, कलह प्रिय, निर्दयी, ऋणी, चिन्तित, पदार्थवान, रोगी, कृपण व निन्दक, दन्त व उदर रोगी, वाहनादि से सम्पन्न, ग्राम्याधिपति, सम्मानित कवि, शत्रु रहित, व्यवहार कुशल, गुण ग्राहक, उपकारी, वैभव सम्पन्न, वायु रोगी, बार-बार हानि उठाने वाला, धान्य नाशक, कुटुम्ब विरोधी, स्त्री पक्ष से सदैव चिन्तित, वह रोगी होगीं। राज्य में उच्च पद व सम्मान की प्राप्ति, एक बार पद से भ्रष्ट, विवाह 26वें वर्ष सुन्दर स्त्री से, शत्रु पर एवं मुकद्दमों में सदैव विजयी, भाग्योदय 29/33/45वें वर्ष, सन्तान योग उतम, 5 सन्तानें योग्य व आज्ञाकारी दो पुत्र अपने पास रह सेवा करेंगे। 68वें वर्ष उदर शूल या विशूचिका रोग से स्वघर में आषाढ़ शुक्ल 2 को सोमवार रात्रि में प्रथम प्रहर में मृत्यु। स्त्री सहयोग से धार्मिक कृत्य होंगे। 1/6/18/34/53/61वें वर्ष अरिष्ट कारक, भय व हानि कारक। पूर्व जन्म में ब्राह्मण, पुनः ब्राह्मण होगा। लहसुनिया पहनने, प्रदोष व्रत, शंकर का पूजन लाभप्रद व अरिष्ट नाशक है। चंद्रमा यदि 1/4/7/10 भावस्थ हो तो क्रमशः अति सुन्दर तथा, स्त्री प्रेमी, पूर्ण कुटुम्बी व घर-भूमि का स्वामी, कुशल व्यापारी व क्रय-विक्रय से लाभ एवं राज्य में सम्मान पायेगा।

88.	ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
	1	1	6	2	1	11	2	12	8	2

उक्त जातक अभिमानी, सुन्दर, क्रोधी, भ्रातृ-नाशक, पराक्रमी, अन्यों से प्रेम, बचपन में रोगी, नेत्र रोगी, नीच सेवक, घर-गृहस्थी रहित, भाग्यशाली, भ्रमित, पुत्र-पौत्रादि हीन, धातु रोगी, परदेशवासी, ऋणी, चोर, क्षमावान, कृषि कर्म दक्ष, भग्न हृदय, दुर्बल, सुखभोगी, कान्तिवान्,

पण्डित, शील रहित, सत्यवादी, कुल हानि, धार्मिक, पर धन प्राप्तक, चांदी व सीसे का व्यवसायी, गुणी, वाचाल, पंचों में प्रमुख 14 या 21वें वर्ष विवाह, चार सन्तान, 1 पुत्र से सेवा प्राप्त होगी। धीरे-धीरे स्त्री-पुत्र-कुटुम्ब अपने सामने ही नष्ट, पर मुखापेक्षी, घर रहित धर्मकर्म करता, धन साथ लेकर भ्रमण करेगा। भाग्योदय 15/25/39/56वें वर्ष, मृत्यु घर के बाहर, अतिसार से ज्येष्ठ शुक्ल 12 सोमवार 69 वर्षायु में संभव है। 3/10/28/42/54/63वें वर्ष अरिष्ट, हानि एवं मृत्यु प्राप्त कर शलभ योनि पायेगा। पुखराज व नीलम पहने, सोमवार का व्रत, शंकर की आराधना से अरिष्ट निवारण।

89. **ल सू चं मं बु गु शु श रा के**
2 2 9 3 2 11 3 12 8 2

यह जातक उत्तम सुगंधयुक्त पुष्प शय्या, उत्तमोत्तम वस्त्र, सुख युक्त, जल से भय, कुटुम्ब से कलह, यात्रा से लाभ, पुत्रादि से सुख, गुण ग्राही, रोगी, मृदुभाषी, सुन्दर वस्त्र, दीर्घायु प्रपंची, पराक्रमी, कायर, मायावी, श्रेष्ठ वचन रहित, गुरु भक्त, कृपण, सर्वप्रिय होगा। 22वें वर्ष सामान्य स्त्री से विवाह, स्त्री वायु-विकार ग्रसित, स्थूलकाय होगी, कई सन्तानें आपकी नष्ट होंगी। 2 पुत्र कठिनाई से बचेंगे। वे योग्य एवं सुपात्र होंगे। वे परस्त्र प्रेम से नहीं रहेंगे, स्त्री पाप कर्मरत जो उसके सामने ही मृत्यु को प्राप्त फिर जातक धार्मिक कार्यों में विशेष रुचि लेने लगेगा। मृत्यु घर में ही वात-पित्त विकार से 80 वर्ष में वैशाख कृष्ण 5 शुक्रवार को होगी। लोग अकारण निंदा करेंगे। धन-कुटुम्ब का सुख अच्छा। भाग्योदय 22/38/54वें वर्ष, 2/12/29/37/58/73/75वें वर्ष अनिष्ट कारक। पूर्व जन्म में शूद्र व अगले जन्म में पक्षी होगा। मूंगा पहने, शनिवार का व्रत रखे, शनि अनुष्ठान से लाभ होगा। चंद्रमा यदि 2/5/8/11वें भाव में हो तो क्रमशः सामान्य धनी, विवेकी पर विद्यारहित, जल से हानि तथा पुत्रवान होगा।

90. **ल सू चं मं बु गु शु श रा के**
3 3 9 3 3 11 4 12 8 2

यह जातक भाइयों से दुःखी, मित्रों का हितैषी, स्त्री-पुत्र युक्त, धनी, धैर्यवान, सहिष्णु विशेष विषयी, स्त्रियों में प्रीति, दुर्बल शरीर, सुखी, संबंधियों से युक्त-चित्त शुद्धि रहित, इच्छानुसार, धर्म-कर्मकर्ता, प्रियभाषी, सुन्दर, श्रेष्ठ, वस्त्राभूषण युक्त, सुन्दर स्त्री अभिलाषी, बाल्यावस्था में ही मातृहीन, धीरे-धीरे सुख में वृद्धि, विजयी, शत्रुजयी, वीर्यवान, समाज व राज्य से वैभव, अच्छे कार्यों में खर्च, गुप्तेन्द्रिय व नेत्र रोग से पीड़ित, धर्म स्थल का निर्माता, व्यवसाय द्वारा धनोपार्जन, 3 सुयोग्य

व सेवाव्रती पुत्र प्राप्त, 20वें वर्ष में सुन्दर, धार्मिक, श्रेष्ठ परिवार की कन्या से विवाह। विरोध, मुकद्दमों में विजय, भाग्योदय 32/49/58वें वर्ष, पिता का पूर्ण व माता का अल्प सुख। 7/12/28/46/53वें वर्ष आर्थिक हानि व मृत्यु तुल्य कष्ट प्राप्त। यदि माता जीवित रही तो व्यभिचारिणी होकर छोड़कर चली जायेगी। मृत्यु आषाढ़ कृष्ण 11 सोमवार, दोपहर में 68वें वर्ष तीर्थ स्थान पर। पूर्व जन्म में प्रबुद्ध तथा धार्मिक क्षत्रिय था, अगले जन्म में ब्राह्मण होगा। नीलम धारण करें, चतुर्थीव्रत, गणपति पूजन से अरिष्ट नाश व लाभ प्राप्त, चंद्रमा यदि 1/4/6/10 भाव में हो तो क्रमशः स्त्री प्रिय, पूर्ण सुखी, स्त्रीजित तथा कामी, महाधनी होगा।

91.	ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
	3	3	10	4	4	11	5	12	8	2

यह जातक लंबा, स्त्री–पुत्र से दुःखी, रोगी, देशान्तरों में भ्रमण, घटते–बढ़ते ऐश्वर्य वाला, अभिमानी, बन्धुप्रिय, शत्रुनाशक, धीमी गति से कार्यकर्ता, भोगी, कामी, धनी, जड़–बुद्धि, अतिदीन, नीच–सेवा में अनुरक्त, पर वश, परस्त्री लोलुप, सरल स्वभाव, लज्जा युक्त, क्षीण जांघ, दुर्बल शरीर, बचपन रोगी, राज तुल्य वैभव–सम्पन्न, कुल विनाशक, अधिक कन्या सन्तति, गुणी, नायक, विलासी, स्त्री से युक्त, पंच प्रधान, दो पुत्र सेवा भावी, 20वें वर्ष धार्मिक पर उग्र स्त्री से विवाह, सन्तान योग्य व बुद्धिमान भाग्योदय 24/36/64वें वर्ष 1/4/10/26/42/61वें वर्ष मृत्यु समान कष्ट और हानिकारक, 82वें वर्ष रक्त–पित् विकार से आषाढ़ शुक्ल 10 रविवार प्रातः घर में मृत्यु। पूर्व जन्म में क्षत्रिय, अंगले जन्म मकर योनि में। मूंगा पहने, मंगलवार का व्रत पूजनादि हितकर। चंद्र यदि 2/5/8/1 भाव में हो तो क्रमशः भयभीत पर सम्पन्न, अधिक पुत्रों वाला, पूर्व वैभव सम्पन्न तथा नास्तिक एवं विद्वान, विवेकी तथा प्रतिष्ठित होंगे।

92.	ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
	4	4		4	5	11	6	12	8	2

यह जातक क्रूर स्वभाव का, पितृ–विरोधी, धनी, परघरवासी, दीन, दुष्ट, शत्रुओं से भयभीत, स्त्रीजित, स्त्री से कलह, मिथ्यावादी, बन्धुद्वेषी, परस्त्रीगामी, रोगी, दुःखी, कृपण, पापी, निन्दक, उदर रोग, दन्त पीड़ा, तीर्थाटन प्रेमी, स्त्री युक्त, वाचाल, कुशल व्यवहारी, गुरुभक्त, वैभवशाली, हृदय परिवर्तन नहीं। पराया धन हड़पने में चेष्टावान, विवाह 21वें वर्ष सुन्दर, सामान्य वर्ण, सीमोल्लंघनी स्त्री से, भाग्योदय 26/42/62वें वर्ष भाग्योदय में आलस्य व अकर्मण्यता बाधक, सन्तान की ओर से चिन्ता, केवल 1 पुत्र कठिनाई से, शत्रु व विरोधी प्रबल वे बिगाड़ नहीं सकेंगे, स्त्री का

रक्त विकार, प्रदर-रोग। 4/7/14/28/38/53/61वें वर्ष अपमृत्यु भय व हानिकारक। मृत्यु 66वें वर्ष वैशाख कृष्ण 11 गुरुवार मध्याह्न में सामान्य रोग में तीर्थ क्षेत्र में संभव, पूर्व जन्म में क्षत्रिय था, अगले जन्म में बैल होगा। पुखराज एवं मूंगा धारण करे, मंगल का व्रत रखे, हनुमान कूा पूजन व अनुष्ठान, अरिष्ट निवारक व सौभाग्य वृद्धि कारक। चंद्रमा यदि 1/4/7/12 भाव में हो तो क्रमश: परम सुन्दर, स्त्री भोगी, पूर्ण सुत्री, स्त्रियों को प्रिय तथा महाधनी होगा।

93.	ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
	5	5	7	4	4	11	6	12	8	2

यह जातक महाभोग प्रिय, शत्रु नाशक, छोटे पेट वाला, अल्प सन्तति, उत्साही, पराक्रमी, धनहीन, युवावस्था में रोगी, एक पुत्र, परस्त्रीरत, पर गृहवासी, वीर, चपल, दुष्ट कर्मी, धन नाशक, शत्रुओं के लिए भय स्वरुप विभूतिवान, स्त्रियों से कम प्रेम, अति सुन्दर, ऐश्वर्यमय जीवन, रुग्णा स्त्री, सुभाषी, कृपण, स्त्री कोमलांगी, चतुर और धार्मिक होगी। 22वें वर्ष विवाह होगा। चार पुत्र होंगे जो शिक्षित, दयालु धार्मिक व मातृ-पितृ भक्त होंगे। धनावस्था श्रेष्ठ, यात्रा में अग्नि व शस्त्र भय, भूस्खलन भी सम्भव है। भाग्योदय 28/43/53 तथा 61वें वर्ष, आयु 68 वर्ष, वैशाख शुक्ल 13 रविवार, मध्याह्न, स्वघर में मूत्र रोग से मृत्यु, मृत्यु के समय ईश्वर चिंतन में, 4/12/24/39/48/58वें वर्ष अपमृत्यु भय व हानि कारक, पूर्व जन्म में धर्मात्मा क्षत्रिय व अगले जन्म में ब्राह्मण होगा। मूंगा पहने, शनिवार का व्रत रखे, शनिदेव का पूजन, अनुष्ठान अरिष्ट निवारक है। चंद्रमा यदि 3/6/9/12 भाव में हो तो क्रमश: उद्यमी व भाग्यवान, स्वस्थ, धार्मिक एवं सुन्दर तथा यात्रा में सुख पायेगा।

94.	ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
	5	5	3	5	5	11	10	12	7	1

यह जातक स्थिर बुद्धि, महापराक्रमी कीर्तिवान, राजसेवी, अल्प उपकारी, स्त्री-पुत्र से सुखी, साहसी, शत्रुहन्ता, विनयी, मिथ्यावादी, हीनबुद्धि, बन्धुजनों से दुश्मनी, स्त्रियों से प्रेम, पराया काम करने वाला, भययुक्त, क्रोधी, विफल मनोरथ, ठाट-बाट का जीवन, प्रियवादी, उतम कार्यकर्ता, कवि श्रेष्ठ, व्यवहार कुशल, गुण ग्राहक, कुटिल, कुशीला स्त्रियों का प्रेमी, व्याकुल चित्त, उद्वेगी, वात रोगी होगा। 20वें वर्ष सुन्दर, धार्मिक स्त्री से विवाह, 47वें वर्ष स्त्री वियोग, अन्य स्त्रियां इनके धन का उपभोग करेंगी। सन्तान सुख अल्प व उतम, दो पुत्र सेवाभावी, शत्रुओं पर व मुकद्दमों में बुद्धिमानी से विजय, प्रशंसा प्राप्त, भाग्योदय 18/28/46वें

वर्ष 1/7/21/11/38/49/58/63वें वर्ष दैहिक मृत्यु सम कष्ट व आर्थिक हानि, वृद्धावस्था में चिड़चिड़ापन, गृह व भूमि सुख प्राप्त, आषाढ़ शुक्ल 9, बुधवार मध्याह्न में किसी तीर्थ क्षेत्र में नवीन निर्माण योजना कराते समय 71 वर्षायु में मृत्यु। पूर्व जन्म में बुद्धिमान शूद्र व अगले जन्म में वृषलीपति होगा व नरक की यातना भोगेगा। लहसुनिया धारण करे, रविवार का व्रत, लक्ष्मी पूजानुष्ठान से अरिष्ट नाश।

95. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
6 6 10 5 6 11 7 12 7 1

यह जातक राज्य से धन लाभ, मृदु भाषी, संगीत प्रेमी, महत्त्वाकांक्षी, स्त्री–पुत्रादि से सुखी, साहसी, शत्रुजयी, विनयी, चतुर लेखक, सुखी, श्रेष्ठ स्त्री भोगी, दन्त पीड़ा, उदरपीड़ा, उतम वस्त्र, सुगंध पुष्पमाला धारक, धनी, विचारक, व्यवहार कुशल, गुणग्राही, उपकारी, वैभवशाली, विद्या व विवेक के साथ धन संग्रह, यदा–कदा आलस्यवश हानि, विरोधियों पर मुकद्दमों में सदैव सफलता, विचारों में श्रेष्ठता, धर्मपरायणता, स्वार्थीपन, विवाह सुशील, विवेकी पर उदररोगी स्त्री से 22वें वर्ष, भाग्योदय 26/42/54वें वर्ष, बार–बार विदेशाटन, पुत्र अधिक जो परदेशवासी होकर सहायता करेंगे, एक पुत्र से निरन्तर विरोध, 72वें भाद्रपद कृष्ण 9 रविवार मध्याह्न में वायु विकार से अपने ही घर में मृत्यु को प्राप्त, पूर्व जन्म में प्रबुद्ध क्षत्रिय, अगले जन्म में पतंगा। मूंगा व पुखराज धारण करने, नवमी का व्रत, विश्वेदेवा का पूजन से लाभ व अरिष्ट नाश, चंद्रमा यदि 2/5/8/11 भाव में हो तो क्रमशः सामान्य धनी, विज्ञान, जल व विद्युत से भय एवं सुपात्र पुत्र पायेगा।

96. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
7 10 6 7 11 8 12 7 1

यह जातक श्रेष्ठ, बुद्धिसागर, शुभ कार्यों से आजीविका यापन, विज्ञान कलाविद्, धनी, सर्वपूजित, राज्य से भय, विरोधी भावों से युक्त, कलही, पर कार्यकर्ता, मित्रों का सत्कारी, अन्यान्य से सुखी, पठन–पाठन का अभ्यासी, स्त्रियों के उत्सव में सुखी, अपव्ययी, कलाकुशल, वाचाल, व्यसनी, लेखक, निन्दक, सुंदर मुख, सुदर वस्त्र धारक, सुंदर स्त्री का अभिलाषी, पराक्रमी, पशुधन प्राप्त कर्ता, सन्तान योग्य तथा शिक्षित, स्त्री सदैव रोगी 17 या 19वें वर्ष विवाह, भाग्योदय 28/39/52वें वर्ष, सन्तान द्वारा कीर्ति बढ़ेगी। सेवा भावी व आज्ञाकारी, धर्म व शासकीय कार्यों में खर्च, शत्रु दबे रहेंगे। यदा–कदा दैहिक विकृति के कारण 6/8/18/32/56/61वें वर्ष अरिष्ट कारक रहेंगे अन्यथा निरोग। पूर्व जन्म

में शूद्रकर्मी क्षत्रिय था तथा अगले जन्म में हाथी बनेगा। घर-भूमि-माता-पिता का सुख मध्यम, राजकीय कार्यों में संकटापन्न स्थिति रहेगी। लहसुनिया एवं मूंगा धारण करे, एकादशी व्रत, श्रीनारायण का पूजन, अनुष्ठान से लाभ होगा। चंद्रमा यदि 1/4/7/10वें भाव में हो तो क्रमश: स्त्री प्रेमी, माता-पिता का भक्त, कुटुंबवान, स्त्री-हीन तथा लंपट एवं राजमान्य तथा कर्मी होगा।

97.

ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
8	8	2	6	9	11	7	12	7	1

यह व्यक्ति बड़ा शक्तिशाली, धर्मात्मा, पंडित, कुल प्रमुख, बुद्धि सागर, पालक, चंचल, शील रहित, विद्वानों का सेवक, युद्ध में वीर गति प्राप्त, परदेश वासी, पुत्रवान, धन-स्त्री-पुत्र युक्त, वाहन युक्त, वेद श्रोता, शत्रु सेवित, मन ही मन जलने वाला, क्रीड़ा व उत्तम कार्यों से युक्त, देवता व ब्राह्मण व व्याकरण में श्रद्धाहीन, पसली में पीड़ा, अशान्त चित्त, विफल मनोरथ, स्वाभिमानी, आय से ज्यादा खर्च, कुटुम्ब एवं सन्तान से सुखी, 20वें वर्ष सुन्दर, शीलवती से विवाह, 34वें वर्ष विधुर, पुत्र नास्तिक, शरीर प्राय: स्वस्थ, पराक्रम श्रेष्ठ, भाग्योदय 23/32/46वें वर्ष 1/3/8/12/19/26/38/47/52वें वर्ष अरिष्ट व अपमृत्यु कारक, आयु 68 वर्ष, फाल्गुन कृष्ण 13 रविवार, मध्याह्न में मृत्यु, 47वें वर्ष संग्राम में मृत्यु सम्भव, पूर्व जन्म में क्षत्रिय व पुन: क्षत्रिय कुल में जन्म, विपत्ति नाशार्थ गुरुवार का व्रत, गुरु पूजन, मोती धारण करना श्रेष्ठ। चन्द्रमा यदि 1/4/7/10वें भावस्थ हो तो क्रमश: स्त्री लंपट और दुराचारी, पूर्णसुखी, सुन्दरी स्त्री युक्त, व्यवसायी व सुंदरियों का प्रिय व राजतुल्य होगा।

98.

ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
8	8	10	7	8	11	7	12	7	1

यह जातक लोभी, कलही, अग्नि, विष, शस्त्र से भय, मातृ-पितृ विरोधी, अवन्नत, अपव्ययी, अंगहीन, बड़ों से संतप्त, रोगी, दुष्ट मति, धनहीन, निंदक, उदर पीड़ा, स्त्री पक्ष से दु:खी, शुभ कर्म विमुख, घोर परिश्रमी, सुंदर वस्त्र, शौक-मौज में खर्च, एक बार विपुल धन प्राप्त, प्रिय भाषी, काव्य प्रणेता, कवि श्रेष्ठ, व्यवहार कुशल, गुणज्ञ, पत्नी विपरीत दृष्टिकोण, 21वें वर्ष कलहकारिणी स्त्री से विवाह 32वें वर्ष स्त्री से वियोग, व्यवसाय न करें। राज्य सेवा उन्नतिदायक, व्यभिचारी, व्यसनी, विरोधियों पर विवेक से सफलता, दो योग्य तथा सुपात्र पुत्र, सेवाभावी, वाणी में प्रगल्भता, भाग्योदय 20/34/48वें वर्ष, 1/11/26/39/47/58/63वें वर्ष रोग व हानि कारक, 69 वर्षायु मार्गशीर्ष कृष्ण 5 मंगलवार रात प्रथम प्रहर

में घर पर ही मृत्यु, मूंगा व गोमेद पहने, प्रदोष व्रत, शंकर का पूजनाभिषेक से अरिष्ट नाश, पूर्व जन्म में बुद्धिमान क्षत्रिय व अगले जन्म में भील। चंद्रमा यदि 3/6/9/12वें भाव में हो तो क्रमश: उद्यमी व साहसी, रोगी व हानि उठाने वाला, परम धार्मिक व सौभाग्यशाली, दरिद्र, चोर व मस्तिष्क रोगी होगा।

99.	ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
	9	9	5	7	9	11	8	12	7	1

यह बालक, विनयी, व्यवहार में कुशल, गुण ग्राहक, उपकारी, वैभव सम्पन्न, कलही, जीव हिंसक, निषिद्धकर्मी, धनी, रोगी, कृपण, उदर पीड़ित, नम्र, कुल पालक, कलाविद्, स्त्रियों से सुख प्राप्तकर्ता, शौक-मौज में व्यय, अंगहीन, सन्तप्त, महाक्रोधी, मित्र हितैषी, सन्तोषी, पैतृक सम्पत्ति से लाभ, स्वउपार्जित धन संचय, कठिनाइयों से राज-समाज से सम्मान प्राप्त, धर्म-कर्म में प्रीति, 21वें वर्ष विवाह, भाग्योदय 26/41/58वें वर्ष, शरीर स्वस्थ व निरोग, स्त्री सुन्दर व धार्मिक, सन्तान की ओर से चिन्ता, एक पुत्र द्वारा सेवा प्राप्त, शत्रु व विवादों पर विजय, 1/7/11/24/29/43/53/56वें वर्ष रोग व हानि कारक, आयु 73 वर्ष कार्तिक शुक्ल 2 को धार्मिक चिंतन करते मृत्यु, पुनर्जन्म नहीं होगा। पूर्व जन्म में ज्ञानी क्षत्रिय था। हीरा पहने, शुक्रवार का व्रत, गणपति पूजन से अरिष्ट नाश। चंद्रमा यदि 3/6/9/12वें भाव में हो तो क्रमश: उद्यमी और साहसी, मुकद्दमों से धन प्राप्त और विदेश यात्री, भाग्यवान तथा परम धार्मिक व खर्चीला तथा जल से भय पायेगा।

100.	ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
	10	10	4	7	9	11	8	12	7	1

यह जातक नीच कर्मी, अधिक सन्तान, कृपण, आलसी, नष्ट, उद्यमी, भ्रमणशील, कुटुम्ब विरोधी, अल्पधनी, उत्सव व विभुता रहित, हितैषी, मित्र, राज्य से सुखी, विनम्र, कुल पालक, राज्य से सम्मान, नवीन स्त्रियों के वैभव से प्रीति, स्त्रियों से सुख कला, कुशल, दन्त रोगी, जीव हिंसक, निंदक, व्यसनी, कभी-कभी धन प्राप्त, गुणग्राही, 24वें, वर्ष विवाह, स्त्री सुंदर व धार्मिक, भाग्योदय 16/32/48वें वर्ष, विदेशाटन में सफल, उससे लाभ, शरीर स्वस्थ, विरोधी पराजित, पुत्रों की संख्या अधिक, पुत्र योग्य और विद्वान, स्वयं शिक्षित व विद्वान। 1/8/14/28/41/58/66वें वर्ष अपमृत्यु भय व हानि कारक, पूर्व जन्म में उग्र कर्मी क्षत्रिय व अगले जन्म में विद्वान ब्राह्मण होगा। 67वें वर्ष फाल्गुन शुक्ल 10 रविवार प्रात: हृदय रोग या श्वास पीड़ा से तीर्थ क्षेत्र में मृत्यु सम्भव। चन्द्रमा यदि 1/4/7/10वें भाव में हो तो क्रमश: सुन्दर स्त्रियों का भोगी और सुन्दर, कुटुम्ब विरोधी

और गृह पीड़ित, अनेक स्त्रियों का प्रेमी व रति प्रिय व श्वेत रंग की वस्तुओं के व्यापार से लाभ तथा राजद्वार से सम्मानित। पन्ना पहने, द्वादशी व्रत व वरुण पूजा शुभ होगी।

101. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
10 10 6 8 10 11 9 12 7 1

यह जातक भ्रमणशील, कुटुम्ब विरोधी, धनहीन, उत्सव रहित, विष, अग्नि, शस्त्र से भय, स्त्री-पुत्र से सुख, सर्वत्रजयी, शत्रुओं से पीड़ा, बुद्धिबल-हीन, अल्पकामी, पर सेवक, कृपण, पर निंदक, दन्त व उदर रोगी, श्रेष्ठ स्वभाव, विनयी, व्यावहारिक, गुणी, उपकारी, वैभव सम्पन्न, काव्य प्रेमी, 24वें वर्ष सुन्दर, पर खिन्न मना, रोगिणी स्त्री से विवाह, सन्तान की ओर से चिन्ता या संतान होगी नहीं। भाग्योदय 28/37/52वें वर्ष होगा। शत्रुओं, विरोधियों, बुद्धि, विवेक, गुप्त उपायों द्वारा सफलता प्राप्त, क्रोधी पर विवेकी, बिगड़े कार्य बनें। धन की न्यूनता, राज्य सेवा में उच्च पद प्राप्त नहीं। श्वेत वस्तु के व्यापार से लाभ, विशेष आसक्ति से हानि, 3/7/17/31/48/63वें वर्ष अपमृत्यु भय, हानि। मूंगा या हीरा पहनें। पूर्णिमा व्रत, पित्रेश्वरों का पूजन अरिष्ट दूर करेंगे। पूर्व जन्म में शान्त शूद्र, अगले जन्म में क्षत्रिय। मृत्यु 68वें वर्ष वैशाख कृष्ण 9 सोमवार रात्रि द्वितीय प्रहर में मधुमेह रोग से घर में ही होगी। चन्द्रमा यदि 3/6/9/12 भावस्थ हो तो क्रमशः उद्यमी व साहसी, स्वस्थ व सुन्दर, धार्मिक पर भाग्यहीन, ऐश्वर्य पर विशेष खर्च हो।

102. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
11 11 3 8 12 11 10 12 7 1

जातक धूर्त, मायावी, दुर्भावी, मित्र हीन, मलिनवेष, दयाहीन, सुखी, विष-अग्नि-शस्त्र भय, स्त्री-पुत्र से सुखी, विजयी, परधनेच्छुक देव—ब्राह्मण भक्त, श्रेष्ठ स्त्रियों से प्रीति, रोगी, दुष्ट मति, धनहीन, कृपण, पर निन्दक, उदर-दन्त रोगी, वृद्धा से भोग, व्ययी, दुर्बल, चिन्तित, कवियों से प्रेम, एकान्तवासी, व्यवहार कुशल, बुद्धि-वाणी में विशेषता, विवाह अधार्मिक, उदार स्त्री से 25वें वर्ष, सन्तान देर से, दुर्बल, मति मन्द, व हीन होगी। दो पुत्र, स्वयं की बुद्धि विधितक्षण, विरोधी प्रबल, राजमान्य तथा राज्य में प्रतिष्ठा, भाग्योदय 28/45वें वर्ष, स्वास्थ्य उतम, मध्यायु में दांत नष्ट 1/7/17/32/39/53/64वें वर्ष अरिष्ट कारक, पूर्व जन्म में तपस्वी ब्राह्मण अगले जन्म में वर्णसंकर। हीरा पहने, एकादशी व्रत, शंकर पूजन से अरिष्ट नाश। चंद्रमा यदि 2/5/8/11वें भाव में हो तो क्रमशः पूर्ण धनी, विवेकी तथा पुत्रवान, जल से भय एवं ऐश्वर्य भोगी होगा।

103. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
12 12 9 12 11 10 12 7 1

यह जातक स्वर्ण से परिपूर्ण, अल्प कामना युक्त, दुर्बल देह, लंबे समय तक चिन्तन, जड़मति, महाकामी, अन्यान्य स्त्रियों से रमण, पक्षिहन्ता, दुष्ट, कुत्सित रूप, रोगी, पीले नेत्र, पीत देह, शील-विद्या में कुशल, सुन्दर वेष रखने वाला, परधन इच्छुक, कृतघ्न, कुल विकारी, समरवेषी, पंच प्रधान, छोटा कद, राज्य में श्रेष्ठ पद, पदच्युत भी, विरोधी जनों से चैन नहीं, विवाह सुन्दरी पर रुग्णा से 20 वर्ष में, 39वें वर्ष स्त्री वियोगी, मुख व पांवों में पीड़ा, पुत्र व कन्याओं की संख्या समान, पुत्रों से मतभेद एक पुत्र द्वारा आराम, भाग्योदय 19/32/48वें वर्ष, विष-अग्नि-शस्त्र से भय 1/12/19/31/49/58/63वें वर्ष अपमृत्यु भय, अर्थ नाश, गुरु शाप विमोचन का अनुष्ठान करने से कष्ट दूर। पूर्व जन्म में शूद्र व अगले जन्म में पिशाच होगा। मृत्यु 69वें वर्ष, माघ कृष्ण 9 गुरुवार को अपने घर में ही। चन्द्रमा यदि 3/6/9/12वें भाव में हो तो जातक क्रमशः उद्यमी, साहसी, विद्या व संतान से हीन, जन या श्वास रोग से भय एवं विलासी होगा।

104. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
1 1 3 9 12 12 11 12 7 1

यह जातक स्वाभिमानी, धनी, सुन्दर, महाक्रोधी, बंधु-विनाशक, महा पराक्रमी, दूसरों को प्रिय, बचपन में रोग ग्रस्त, नेत्र रोगी, नीच जनों का सेवक, गृहस्थी रहित, भाग्यशाली, भ्रमित, वाहन युक्त, शत्रुओं से परेशान, श्रेष्ठ स्त्रियों का प्रेमी, सुख भोगी, पर धन रक्षक, देव-ब्राह्मण पूजक न्यायाधिकारी, सुन्दर, अति उत्तम वास, प्रसन्न चित्त, उत्तम कर्म में आलसी व विनयी, व्यवहार कुशल, उपकारी, गुण ग्राहक, 20वें वर्ष सुन्दर पर रोगी स्त्री से विवाह, पत्नी पर पुरुष से प्रेम करेगी, स्वयं उससे पूर्ण आसक्त रहेगा। आय से व्यय ज्यादा, माता-पिता-कुटुम्बी जनों का पूर्ण सुख, भाग्योदय में बाधाएं। भाग्योदय 34/46/56वें वर्ष, 1 पुत्र सुपात्र व सेवाभावी, शत्रु दबे रहेंगे। वाद-विवाद में विजयी। राज्य से सम्मान कठिन, 1/7/17/27/30/41/53/63वें वर्ष मृत्यु तुल्य कष्ट। मृत्यु आषाढ़ कृष्ण 5 शनिवार को वीर्य एवं वायु दोष से 65 वर्ष में घर पर ही रात्रि के द्वितीय प्रहर में। पूर्व जन्म में शूद्र था व अगले जन्म में प्रेत योनि पायेगा। गोमेद धारण करे, गुरुवार व्रत, शनि पूजन से अरिष्ट शान्त। चन्द्रमा यदि 3/6/9/12 भाव में हो तो क्रमशः जातक उद्यमी व साहसी, रोगी, एवं स्त्री प्रिय, भाग्यवान और धार्मिक तथा परदेशवासी एवं कुटुम्बहीन होगा।

105. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
2 2 4 10 2 12 1 10 7 1

यह जातक सुगंधित, पुष्प-शय्या और उत्तम वस्त्रों का प्रेमी, पशु धन से सुखी, जल से भय, संग्राम में पराक्रमी, स्त्रियों से सुखी, स्वजनों के प्रतिकूल, उनसे भय, धनी, गुणग्राही, गुणीजनों का प्रेमी, अनेक स्त्रियों का भोगी, बंधु-पुत्र से सुखी, राज्य का सलाहकार, उत्तम वाहनादि से सम्पन्न, सुन्दर श्रेष्ठ गृहवासी, प्रसन्न चित्त, गाम्याधिपति, शत्रुहीन आदरणीय, कवि, दुर्बल शरीर, माता-पिता का भक्त, स्वाभिमानी, क्षणिक क्रोधी, परम धार्मिक, शत्रुजयी होगा। भाग्योदय 24वें वर्ष, गौरांग व धार्मिक, सुन्दर, पतिपरायण, विदुषी कन्या से विवाह होगा। उसी के साथ भाग्योदय, पुत्र ज्यादा होंगे व सुयोग्य, शिक्षित, पितृभक्त होंगे। जातक के मन में सदा असन्तोष बना रहेगा। पैतृक धन व चलाचल संपत्ति का लाभ 1/2/7/17/34/46/58/66वें वर्ष अपमृत्यु भय एवं अनिष्टकर, मृत्यु तीर्थस्थल पर रक्त दोष से, फाल्गुन शुक्ल 3 बुधवार 69 की आयु में। पूर्व जन्म में ज्ञानी क्षत्रिय व अगले जन्म में ब्राह्मण हो मोक्ष की प्राप्ति। नीलम पहनने, शनिवार व्रत, हनुमान पूजन से अनिष्ट नष्ट। चंद्रमा यदि 3/6/9/12वें भाव में हो तो क्रमशः धर्मात्मा, साहसी, उद्यमी, बाल्यावस्था में रोगी, भाग्यवान एवं दरिद्र तथा आलसी होगा।

106. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
3 3 4 10 3 12 2 2 7 1

यह जातक अभिमानी, पूर्ण भ्रातृ प्रेमी, दानी, अधिक भोगी, धन से परिपूर्ण, कामी, कार्य क्षमता धीमी, गणितज्ञ, शत्रु नाशक, शीलवान, श्रेष्ठ वार्ताकार, ख्यात, कीर्तिवान, विनीत हितकारी, महापराक्रमी, स्त्रियों से परम सुख, स्वजनों से भयभीत, धन-वैभव सम्पन्न, प्रियभाषी, मातृ सुख पूर्ण, सुन्दर वेष, गृहस्थी से सुखी, राज्य सहायता, अच्छे स्थान में निवास, प्रसन्न चित, स्त्री-पुत्र से पूर्ण सुख, गंध-पुष्पादि से प्रेमी, अनेक स्त्रियों से भोग। 21वें वर्ष विवाह धार्मिक, सुशीला, मृदु भाषिणी, पति परायण कन्या से होगा। विवाहोपरान्त भाग्य, धन, विद्या, गृह, भूमि में निरन्तर वृद्धि, कई सन्तानें नष्ट। पुत्र जीवित, वह योग्य, शिक्षित होगा। शत्रु परास्त, पैतृक संपत्ति व स्वउपार्जित संपत्ति होगी। 38/52वें वर्ष भाग्योदय, धार्मिक दिखावा, अनेक उपायों से धन प्राप्त, कुटुम्ब में बड़े मतभेद रहेंगे। 1/4/14/42/53/63वें वर्ष अपमृत्यु भय व हानि, पूर्व जन्म में क्षत्रिय, अगले जन्म में धनी वैश्य, पन्ना पहने, द्वादशी व्रत, शनि पूजा से अरिष्टों का नाश, 84 वर्ष में वैशाख कृष्ण 5 शुक्रवार मस्तिष्क पीड़ा या हृदय रोग से

घर में ही मृत्यु। चन्द्रमा यदि 2/5/8/11 भाव में हो तो क्रमश: न्यायधीश, विद्वान, धर्मात्मा, जल या अग्नि से भय तथा भाग्योदय में विलंब हो।

107. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
4 4 6 9 4 12 4 1 7 1

यह जातक सुख से वंचित, क्लेश युक्त, संदेहशील, मलिनमन, वेश्यागामी, आनंद रहित, भ्रमणशील, लंबे हाथ-पांव, युद्ध में धैर्यवान, धनहीन, कठोर देह, निर्दय, ऋणी, शत्रुजयी, सुन्दर, अतिथि प्रेमी, सन्तान रहित, स्वतंत्र, दानी, संगीतज्ञ, मधुर भाषी, आलसी, उच्चपदासीन, यशस्वी, ईश्वर भक्त, व्यभिचारी, परोपकारी, पंडित, स्नेही, परदेशी, विवादी, रुग्ण पत्नी, बहु व्ययी, क्रोधी, विवाह सुंदर पर गर्भाशय रोगी, स्त्री से 23वें वर्ष में होगा। राज्य पद त्याग, पर्यटन कार्य करे, उसी के द्वारा जीविकोपार्जन, वेश्यागामी, शल्य चिकित्सा से पुत्र का जन्म, विरोधी पराजित होंगे। भाग्योदय 28/42/54वें वर्ष, 1/7/17/21/38/56/61वें वर्ष रोग कारक व हानि। नीलम व लहसुनिया पहने, रविवार का व्रत व आदित्य हृदय स्तोत्र का पाठ लाभप्रद, पिछले जन्म में वैश्य अगले जन्म में नपुंसक होगा। 67वें वर्ष मृत्यु पौष कृष्ण 4 मंगलवार प्रात: विक्षिप्तावस्था या सन्निपात से। चन्द्रमा 3/6/9/12वें भाव में यदि हो तो क्रमश: उद्यमी और साहसी व धार्मिक, निरोग पर जल से भय, स्थिर चित्त और विद्वान तथा अपव्ययी होगा।

108. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
5 5 10 9 5 12 5 1 7 1

जातक बलवान, स्वाभिमानी, आत्मबली, सुन्दर, प्रभावशाली, लंबा, गृहस्थ संचालन में लापरवाह, सन्तान से सुखी, सफल, विद्वान, यशस्वी, मातृ प्रेमी, कंजूस, सम्मानित, विवेकी, उन्नतिशील, धनी, भोगी, दीर्घायु मृदु भाषी, ठाट-बाट में व्यय, अच्छा संपर्क, पितृ-विरोधी, कुटुम्ब प्रेमी, स्त्री पक्ष से सम्मानित, अल्प धार्मिक, भाई-बहिन युक्त, स्वार्थी, श्रमजीवी, शत्रुजित, पुरुषार्थी, धैर्यवान यदा कदा हिम्मत हारने वाला, गुप्त युक्ति एवं शक्तियों का प्रयोगी, धर्म में बाधा, भाग्यशाली, बहु स्त्री भोगी, स्त्रियों को प्रसन्न करने में चतुर पर पुरुष स्त्री से 21 वें वर्ष विवाह, वैभव-गृह, भूमि, वाहन सुख पूर्ण, पत्नी सदैव मायके ही रहेगी। ससुराल में अच्छा सम्मान, लाभ, 1 पुत्र योग्य व सेवाभावी। समाज में मान, राज्य में उच्चपद-प्रतिष्ठा, भाग्योदय 34/46/52वें वर्ष 1/9/13/18/30/42/55/62वें वर्ष अपमृत्यु व आर्थिक क्षति, नीलम पहने, शनिवार का व्रत, शनि पूजनानुष्ठान से अरिष्ट नाश व लाभ, मृत्यु 74वें वर्ष वैशाख शुक्ल 13 सोमवार मध्य रात्रि में घर पर

घर में ही मृत्यु। चन्द्रमा यदि 2/5/8/11 भाव में हो तो क्रमशः न्यायधीश, विद्वान, धर्मात्मा, जल या अग्नि से भय तथा भाग्योदय में विलंब हो।

107. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
4 4 6 9 4 12 4 1 7 1

यह जातक सुख से वंचित, क्लेश युक्त, संदेहशील, मलिनमन, वेश्यागामी, आनंद रहित, भ्रमणशील, लंबे हाथ-पांव, युद्ध में धैर्यवान, धनहीन, कठोर देह, निर्दय, ऋणी, शत्रुजयी, सुन्दर, अतिथि प्रेमी, सन्तान रहित, स्वतंत्र, दानी, संगीतज्ञ, मधुर भाषी, आलसी, उच्चपदासीन, यशस्वी, ईश्वर भक्त, व्यभिचारी, परोपकारी, पंडित, स्नेही, परदेशी, विवादी, रुग्ण पत्नी, बहु व्ययी, क्रोधी, विवाह सुंदर पर गर्भाशय रोगी, स्त्री से 23वें वर्ष में होगा। राज्य पद त्याग, पर्यटन कार्य करे, उसी के द्वारा जीविकोपार्जन, वेश्यागामी, शल्य चिकित्सा से पुत्र का जन्म, विरोधी पराजित होंगे। भाग्योदय 28/42/54वें वर्ष, 1/7/17/21/38/56/61वें वर्ष रोग कारक व हानि। नीलम व लहसुनिया पहने, रविवार का व्रत व आदित्य हृदय स्तोत्र का पाठ लाभप्रद, पिछले जन्म में वैश्य अगले जन्म में नपुंसक होगा। 67वें वर्ष मृत्यु पौष कृष्ण 4 मंगलवार प्रातः विक्षिप्तावस्था या सन्निपात से। चन्द्रमा 3/6/9/12वें भाव में यदि हो तो क्रमशः उद्यमी और साहसी व धार्मिक, निरोग पर जल से भय, स्थिर चित्त और विद्वान तथा अपव्ययी होगा।

108. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
5 5 10 9 5 12 5 1 7 1

जातक बलवान, स्वाभिमानी, आत्मबली, सुन्दर, प्रभावशाली, लंबा, गृहस्थ संचालन में लापरवाह, सन्तान से सुखी, सफल, विद्वान, यशस्वी, मातृ प्रेमी, कंजूस, सम्मानित, विवेकी, उन्नतिशील, धनी, भोगी, दीर्घायु मृदु भाषी, ठाट-बाट में व्यय, अच्छा संपर्क, पितृ-विरोधी, कुटुम्ब प्रेमी, स्त्री पक्ष से सम्मानित, अल्प धार्मिक, भाई-बहिन युक्त, स्वार्थी, श्रमजीवी, शत्रुजित, पुरुषार्थी, धैर्यवान यदा कदा हिम्मत हारने वाला, गुप्त युक्ति एवं शक्तियों का प्रयोगी, धर्म में बाधा, भाग्यशाली, बहु स्त्री भोगी, स्त्रियों को प्रसन्न करने में चतुर पर पुरुष स्त्री से 21 वें वर्ष विवाह, वैभव-गृह, भूमि, वाहन सुख पूर्ण, पत्नी सदैव मायके ही रहेगी। ससुराल में अच्छा सम्मान, लाभ, 1 पुत्र योग्य व सेवाभावी। समाज में मान, राज्य में उच्चपद-प्रतिष्ठा, भाग्योदय 34/46/52वें वर्ष 1/9/13/18/30/42/55/62वें वर्ष अपमृत्यु व आर्थिक क्षति, नीलम पहने, शनिवार का व्रत, शनि पूजनानुष्ठान से अरिष्ट नाश व लाभ, मृत्यु 74वें वर्ष वैशाख शुक्ल 13 सोमवार मध्य रात्रि में घर पर

ही व्रण रोग से होगी। पूर्व जन्म में शूद्र था पुनः मृग योनि पायेगा। चन्द्रमा यदि 3/6/9/12 भाव में हो तो क्रमशः आलसी व दरिद्र तथा अंगहीन, स्वस्थ और निरोग तथा जल से भय, धार्मिक व खर्चीला तथा यात्रा द्वारा लाभ प्राप्त करता है।

109.

ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
6	6	8	10	7	12	7	1	7	1

जातक दुर्बल शरीर, सामान्य, सुन्दर, नौकरी द्वारा धनी, तेजस्वी, व्यवसाय में उन्नति, सुन्दर स्त्री, सद्गृह, भूमि अधिपति, मातृसुखी, स्त्री पक्ष से सुखी, पितृ सुख रहित, स्वस्थान वासी, भाग्यशाली, शुभ कार्य में खर्च, धर्म पालक, पराए स्थान में भाग्योन्नति, स्त्री से सहयोग, आर्दश पथगामी, विजयी, पुरुषार्थी, बहन से विरोध, शक्ति सम्पन्न, पितरोन्नति दर्शक, राज्य द्वारा सम्मानित, व्यवसाय में वृद्धि, परिश्रम से लाभ, कुटुम्ब से मतभेद, सम्मानित, आत्मबली, दीर्घायु पुरातत्त्वज्ञ, शरीर में कष्ट, विवाह सुन्दर व औषधि बल पर जीवित, रुग्ण से 27 वें वर्ष होगा, उसी समय भाग्योदय, 38/52/58वें वर्ष विशेष भाग्योदय, व्यवसाय में प्रारंभ में हानि फिर यथेष्ट लाभ, बाह्य क्षेत्र में यश, घर, भूमि, वाहन का श्रेष्ठ सुख, पुत्रों का व्यवहार सराहनीय 1/7/10/15/24/34/53/63वें वर्ष अपमृत्यु भय, अर्थ हानि, नीलम व पुखराज धारण करें, अष्टमी का व्रत, ब्रह्मा पूजन से अरिष्ट नाश, पूर्व जन्म में वैश्य था, अगले जन्म में वाहन, 65वें वर्ष पेट की शल्य चिकित्सा या व्रण रोग से आषाढ़ कृष्ण 6 बुधवार रात्रि में घर पर मृत्यु। चन्द्रमा यदि 1/4/7/10 भाव में हो तो क्रमशः परम सुन्दर, व आत्म संतोषी, मातृ-पितृ हीन, स्त्री लंपट और चांदी का व्यापारी तथा पितृ सुख से पूर्ण व राज्य में उच्च पद पायेगा।

110.

ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
7	7	3	10	8	12	8	1	7	1

यह जातक सुन्दर, बुद्धिमान श्रेष्ठ कर्मों से जीविकोपार्जन, विद्वान, कलाविद्, महाधनी, सर्व पूज्य, स्त्री सुख वंचित, चंचल, सामान्य उदर व शरीर, कपिल नेत्र, पिंगल केश, कुरुप, जितेन्द्रिय, कुलजयी, स्त्री मोहक, भूमि जीविका युक्त, क्रोधी, ब्राह्मण व सत्पुरुषों का भक्त, सामान्य कद, सत्यवादी, शुभ, अतिथि भक्त, हृदय रोगी, दान से विमुख, धर्मरत, राज्य सेवक, मांस-भक्षी, विशाल नेत्र, दीर्घायु, अल्पगतिवान, दुर्बल, कुटिल तथा कुशील, स्त्री भोगी, क्लेशी, दुष्टों से भयभीत, व्याकुल, स्त्री-पुत्र के लिए चिन्तित, उद्वेगी, वायु रोगी, विवाह होना कठिन, भाइयों से झगड़ा कर पैतृक संपत्ति में अपना भाग ले स्वतंत्र कार्य करेगा फिर

भी हित चिंतक रहेगा। अनेक स्त्रियों से भोग व धन खर्च, मृत्योपरांत कुटुम्बीजन संपत्ति के उत्तराधिकारी होंगे, पराक्रम में शिथिलता, शत्रु प्रबल, धन यथेष्ठ रहेगा। भाग्योदय 31/48/56वें वर्ष। विद्या का अभाव। 1/8/12/24/31/42/48/61वें वर्ष अपमृत्यु भय व हानि, पूर्व जन्म में चाण्डाल, अगले जन्म में बिच्छु, मृत्यु आषाढ शुक्ल 2 सोमवार प्रातः मस्तिष्क व ह्रदय रोग से घर के बाहर, माणिक्य पहने, शनिवार व्रत, शनि पूजानुष्ठान से अरिष्ट निवारण, चन्द्रमा यदि 3/6/9/12 भावस्थ हो तो क्रमशः उद्यमी और साहसी, यात्रा-चतुर तथा स्वस्थ, जलोदर रोग से पीड़ित या सभा में सम्मान एवं धर्म प्रेमी, दान, राज्य बंधन व्याप्त।

111.

ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
8	8	10	11	8	12	9	1	7	1

यह व्यक्ति बहु व्ययी, चतुर, गुप्त योजनाओं का निर्माता, युक्तिवान, बलवान पक्ष से कमजोर पड़ने वाला, ऊंचा शरीर, स्त्री-पुत्र से कष्ट, शत्रुजयी, संकट ग्रस्त, धैर्यवान, घोर परिश्रमी, वात-पित्त रोगी, देशांतर भ्रमण, सुह्रदयों से सुखी, सामान्य, ऐश्वर्य, राज्य से भूमि लाभ, श्रेष्ठ बुद्धि, लेखन कलाविद्, सुन्दर, रोग-पीड़ित, विलासी, वक्ता, कल्पनाशील, मृदुभाषी, सुन्दर वस्त्र, सुन्दर स्त्री इच्छूक, निर्भय संग्रामजयी, पशुलाभ, नम्र, शांत, मनोरथ सिद्ध, शत्रु नाशक, स्वार्थ सिद्धि व प्रदर्शनार्थ धर्माचरण, पत्नी आर्द्र गृह्यवती, अर्श रोगी, सुन्दरी, विवाह 24वें वर्ष, संतान सुपात्र, शिक्षित, बुद्धि-विवेक सम्पन्न, ससुराल से सम्मान व लाभ प्राप्त, शत्रु पर विजय, भाग्योदय 23/38/51वें वर्ष, व्यवसाय में सदा लाभ, राज्य से सम्मान, राजा तुल्य वैभव, खर्च विशेष, 1/4/9/13/27/32/48/57/63 वें वर्ष अपमृत्यु, अंगघात, लौहघात, विष भय, अर्थ हानि, 75वें वर्ष आश्विन कृष्ण 7 गुरुवार मध्याहन में मुख रोग या रक्त विकार से मृत्यु, लहसुनिया व नीलम पहने, हनुमान जी का पूजन-अनुष्ठान, अरिष्ट निवारक व लाभ प्रद, पूर्व जन्म में क्षत्रिय, अगले जन्म में रजक होगा। चन्द्रमा यदि 3/6/9 या 12 वें भाव में हो तो क्रमशः भाग्यवान, स्वस्थ, सुन्दर, पूर्व धार्मिक तथा यात्रा में कष्ट होगा।

112.

ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
9	9	4	12	8	12	10	1	7	1

यह जातक स्वजनों का कोप पाने वाला, बुद्धिमान, महाधनी, मित्र, हितैषी, सन्तोषी, व्यसनी, दयारहित, विकल शरीर, यात्रा लाभ, विपत्ति युक्त, कृपण, सत्कर्म-विमुख, घोर परिश्रमी, दुःखभोगी, सलाहकार, दानी, एकांतवासी, सुप्रसन्न, वृद्धा स्त्री भोगी, व्ययी, भयभीत, दुर्बल, कवियों का सत्कार करने वाला, ढीठ, गुरु व पितृभक्त, योग्य, राजतुल्य,

श्रेष्ठ कुलवान, सर्वपालक, 1 या 2 पुत्रों वाला, पराक्रमी, ऊँचा शरीर, भूम्याधिपति, स्त्री-पुत्रादि से कष्ट, वात-पित्त रोगी, राज्य से तिरस्कृत, शत्रुजयी, मृदुभाषी, चंचलमति, नेत्र-पीड़ित, यदा-कदा राज्य से सम्मान, भाग्योदय 17/29/42/52वें वर्ष, विवाह स्वस्थ व सुन्दर स्त्री से 25वें वर्ष, सन्तान से सदैव चिन्ता, कठिनाइयों व उपायों से 1 या 2 पुत्र प्राप्ति, एक योग्य, अन्य अयोग्य, स्वभाव में कठोरता, उग्रता के साथ दयालुता, धार्मिक स्थिति सामान्य, अल्प वीर्य पर उद्यमशील, शत्रुओं का पराभव, 1/3/4/6/8/11/18/32/39/56/61/72वें वर्ष अपमृत्यु भय व अनिष्टकारक, गृह-भूमि उपार्जित, आय साधन यथेष्ट, व्यय-विलासिता पर लहसुनिया व पन्ना पहने, रविवार व्रत, मृत्युंजय अनुष्ठान लाभप्रद। आयु 76 वर्ष चैत्र शुक्ल 7 शनिवार रक्त वमन या पित्त विकार से मृत्यु। पूर्व जन्म में क्षत्रिय अगले जन्म मे श्येन पक्षी, चंद्रमा यदि 2/5/8/11 भाव में हो तो क्रमशः उद्यमी, धनी-विद्या-बुद्धि सम्पन्न, अग्नि-विद्युत से भय तथा पुत्रवान होगा।

113.	ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
	10	10	4	1	11	12	12	1	[illegible]	1

यह जातक नीच कर्मी, अधिक सन्तान युक्त, महालोभी, आलसी, सुख भोगी, शील सम्पन्न, अभिमानी, नम्र, ठिगना, नृत्य प्रेमी, राज्य सम्मानित, वृद्धावस्था में रोगी, दन्त रोगी, निंदक, दुर्बल शरीर, काला, चंचल, नीच प्रसंगी, वंशहितैषी, धनी, स्त्रीप्रिय, सुन्दर नेत्र, अल्पबली, मलिन, हृदय रोगी, दानहीन, अल्पगति, अभिमानी, छोटे केश, कुशीला स्त्री, भोगी, दुष्टों से भय, व्याकुल स्त्री-पुत्र से चिन्तित, उद्वेगी, वायुरोगी जन्म-स्थान त्याग कर अन्यत्र जीवन-यापन, पिता का पूर्ण सुख पर पितृ विरोधी, 25वें वर्ष सुंदर, शील गुणी कन्या से विवाह, दो सन्तान उत्पत्ति के बाद पत्नी का त्यागन, एक पुत्र सेवाभावी, भाग्योदय 16/28/52वें वर्ष, 1/3/7/12/36/54/61वें वर्ष अपमृत्यु भय व अर्थहानि, मूंगा व नीलम पहने, अष्टमी का व्रत व ब्रह्मा जी का पूजनानुष्ठान अरिष्ट नाशक है। मृत्यु वीर्यदोष या हृदयरोग से माघ शुक्ल 1 सोमवार मध्याह्न 64 वर्षायु में। चंद्रमा यदि 1/4/7/10 वें भाव में हो तो क्रमशः सुन्दर और विवेकी, मातृ-सुख से वंचित, स्त्री प्रिय और कुशल व्यापारी तथा राज सम्मान में विघ्न या बंधन पाता है। पूर्व जन्म में क्षत्रिय व अगले जन्म में ब्राह्मण कुलोत्पन्न होगा।

114.	ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
	11	11	4	1	12	12	12	1	7	1

जातक स्थिर चित्त, विशेष मित्र युक्त, परस्त्रीरत, सुखी, प्रसन्न, धनाढ्य, राज्यकर्मचारी, बचपन में रोगी, निंदक, कृष्णवर्ण, नीच–प्रसंगी, कुचाली, पापी, कलही, बलविहीन, मंदगति, मदान्ध, व्यर्थ भटकाव, क्रोधी, स्त्री मोहक, चपल, जातिहितैषी, परधनेच्छुक, व्यसन रहित, हृदयरोग, दान न देने वाला, कटुभाषी, आलसी, दुष्टकर्मी, असहिष्णु रक्तविकार युक्त, सर्वजन विरोधी, स्त्री–पुत्रादि युक्त, वाहन सुख सम्पन्न, विवाह सुन्दर, श्रृंगारप्रिय स्त्री से 26 वें वर्ष होगा। भाग्योदय 26/38/52वें वर्ष, विरोधी प्रत्यक्षतः कुछ नहीं बिगाड़ पायेंगे, परोक्ष में निंदा करेंगे। कन्या संतानें अधिक, विद्या–बुद्धि द्वारा धनोपार्जन, यात्रा में जल से भय, 1 पुत्र सेवाभावी, 47वें वर्ष पत्नी वियोग, नीलम धारण करे, प्रदोषव्रत, पार्थिव शिव पूजन से सदैव लाभ होगा। 1/7/17/31/49/58/66वें वर्ष अपमृत्यु भय व आर्थिक हानि। पूर्व जन्म में क्षत्रिय था, अगले जन्म में हरिण होगा। चंद्रमा यदि 3/6/9/12वें भाव में हो तो क्रमशः उद्यमी और धार्मिक, स्वस्थ और सुन्दर, भाग्य व धर्महीन, भ्रमणशील व अपव्ययी होगा।

115.	**ल**	**सू**	**चं**	**मं**	**बु**	**गु**	**शु**	**श**	**रा**	**के**
	12	**12**	**4**	**1**	**12**	**12**	**1**	**1**	**7**	**1**

यह जातक वस्त्राभूषयुक्त, अल्पकामना, दुर्बल, दीर्घ चिन्तित, रोगी, सम्मान रहित, बहु व्यय, दुष्ट रक्षक, दीर्घकाल तक रोगी, कलहकारी, रक्त विकारी, सर्वजन विरोधी, स्त्री–पुत्र विमुख, नीच संगति, दुर्गुणी, असहिष्णु दुःखी, व्यर्थ भ्रमण, अल्पभाषी, निर्लज्ज, कटुभाषी, कलहकारी, आलसी, तेजस्वी, धनी, दानी, सुंदर मुख, निर्दय, कुटिल, अतिकामी, पर स्त्रीभोगी, पक्षिहन्ता, उदर पीड़ित, अदानी, मन–ही–मन चिंतन, चेष्टावान, 22वें वर्ष सुन्दर आर्द्र, गृह्यवती से विवाह, सन्तान होने में कष्ट, उपाय व चिकित्सा द्वारा दो पुत्र होना सम्भव, 39वें वर्ष स्त्री वियोग, 58/63वें वर्ष संतति वियोग व आर्थिक स्थिति डांवाडोल, गृहत्याग, भिक्षुक वृत्ति से निर्वाह करता 71वें वर्ष तीर्थ स्थान पर मृत्यु, माघ कृष्ण 5 रविवार सायंकाल होगी। भाग्योदय 24/32/49वें वर्ष 1/3/8/11/31/46/56/64वें वर्ष कष्ट, अपमृत्यु भय, क्षति। नीलम व पन्ना पहने, एकादशी व्रत विष्णु पूजन से अरिष्ट दूर होंगे। पूर्व जन्म में ब्राह्मण व अगले जन्म में कीट होगा। चंद्रमा यदि 2/5/8/11वें भाव में हो तो क्रमशः उद्यमी और धनी, विद्या, बुद्धि, सन्तान युक्त, पूर्ण सुखी तथा गृहस्थ, अकालमृत्यु पाने वाला और यथेष्ट आय से संतुष्ट रहने वाला।

116.	**ल**	**सू**	**चं**	**मं**	**बु**	**गु**	**शु**	**श**	**रा**	**के**
	2	**2**	**5**	**6**	**3**	**7**	**4**	**11**	**10**	**4**

यह प्राणी महा तेजस्वी स्वाभिमानी, खर्चीला, औषधि या लोहयन्त्र विद्या में कुशल, कृपण, मद्यपी, तेजवान, परस्त्रीगामी, स्त्री–सन्तान रहित, बहु कुटुम्बी, मातृ–पितृ विरोधी, पुरुषार्थ व कृपणता से धन संचय, यात्रा में कष्ट, राज्याश्रित या सम्मानित, कुसंगी, दुर्जनों का साथी, दुर्बद्धि एवं नीरस, 23वें वर्ष विवाह, पत्नी या तो मृत्यु को प्राप्त या पति से अलग रहेगी। वद्धावस्था में रोग–ग्रस्त, भाग्योदय, 11/26वें वर्ष, पुत्र संतान अधिक, पुत्रों द्वारा ही यश–वृद्धि, दो पुत्र परम आज्ञाकारी व सेवाभावी, उन पर विशेष स्नेह, मृत्यु उदर रोग से, कार्तिक कृष्ण 6 सोमवार रात्रि तृतीय प्रहर 71 वर्षायु मे तीर्थ क्षेत्र में। 5/11/27/38/43/56/68वें वर्ष उत्तम। 9/12/14/26/47/53/59वें वर्ष में अपमृत्यु हानि व कष्ट कारक, शनि मन्त्र का जाप–अनुष्ठान, ब्रह्मा–सावित्री का पूजन अरिष्ट नाशक है। पूर्व जन्म में शूद्र या अगले जन्म में संथाल कुल में जन्म। चंद्रमा यदि 1/4/5/7/11वें भाव में हो तो क्रमशः सुखी, पुत्रवान, स्त्रीवान, शान्त तथा धनी होगा।

117.	ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
	9	9	11	8	9	6	10	3	3	9

यदि धनु का केतु मिथुन, शनि, राहु, कन्या का गुरु हो तो जन्म के समय पिता के घर मंगलाचार हो, बचपन में भूत छाया से रोता रहे, 3रे वर्ष दन्त पीड़ा, माता को कष्ट, पिता को लाभ की चिन्ता, 5वें वर्ष क्रीड़ा मग्न, घर में मांगलिक कार्य, 6 से 10 विद्याध्ययन व खेल–कूद, व्रण पीड़ा, उदर रोग, आयु वृद्धि के साथ–साथ धन–वृद्धि 11 से 19 वर्ष विवाह, कुल–कीर्ति बढ़े, विद्याभ्यास में कुशलता, राजद्वार में पद लाभ, एक विशेष कष्ट, उपाय से शान्ति, 20 से 26 पुण्य प्रताप से पुत्र–पुत्री जन्म, सेवक, वाहन, मान–प्रतिष्ठा–प्राप्त, 26 से 33 घर में मंगल कार्य, पुत्र जन्मोत्सव, नई नारियों से समागम, शुभ कार्यों में खर्च, किसी वृद्ध की मृत्यु, छत्रभंग, शत्रु–मित्र समान, धन की चिन्ता, परस्त्री से एक बार गुप्त प्रेम, 34 से 39 राजद्वार में सम्मान, पूर्व में यात्रा, व्यवसाय में श्रेष्ठ लाभ, व्यय अधिक, 40 से 46 पुत्र की वंश–वृद्धि, कीर्ति बढ़े, एक प्राणी की ओर से चिन्ता, धर्म–कर्म में मन लगे, पुत्र व कन्या के विवाह पर खर्च हो 47 से 55 कफ–वात रोग, दुःख–सुख भोग भोगता दान करे, देव–गुरु–अतिथि भक्त 50 से 60 वे वर्ष कष्ट दान धर्म से शान्ति, 61वें वर्ष स्वयं रोगी, दुर्बलता, श्वास, काश, अजीर्ण भूख–नाश, हरि भक्ति में मन रमें, 68वें वर्ष मृत्यु, वैश्य कुल में जन्म लेगा।

118.	ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
	6	6	12	3	5	6	5	4	3	9

यह जातक 1-2 वर्ष में दांत, ज्वर रोग पीड़ित, 3रे वर्ष व्रण-व्याधि, माता को कष्ट, 4, वर्ष माता को विशेष कष्ट, 5 से 8 विद्यारंभ, पिता को लाभ, भाई का जन्म 9 से 16, घर में मंगल कार्य, विवाहोत्सव, सुन्दर, वस्त्राभूषण में व्यय, नई स्त्री का समागम, गीतवाद्य, बुद्धि-वृद्धि, राजमान, 17 से 20 स्त्री गर्भवती हो, बालक का जन्म, फिर रोग उत्पन्न होकर गर्भ नष्ट, महामृत्युंजय जाप, शिवार्चन से स्त्री का कष्ट दूर हो। नित्य मान, धन में वृद्धि, 21 से 29 मित्रागमन व उसके धन से यात्रा व धन लाभ व राजद्वार से विशेष लाभ, 30 से 39 मणि-मुक्ता प्राप्ति, कुल में विवाहोत्सव, मांगलिक कार्य हो, कन्या, पुत्र का सुख, धन-वृद्धि, सभी कार्य सिद्ध हो, 40 से 48 शत्रु उत्पन्न, राजद्वार से परेशानी अन्ततः जय, शत्रुनाश, ग्राम-भूमि-रत्न लाभ, 49 से 55 पुत्र-पौत्रादि के सुख में वृद्धि, रोग नष्ट, तीर्थाटन 56 से 67 सांसारिकता से मोह भंग, उत्साह वृद्धि 68वें वर्ष दैहिक पीड़ा, तीर्थ स्थान में मृत्यु। अगले जन्म में मनुष्य योनि पायेगा।

119.	ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
	6	6	12	3	7	7	5	10	10	4

यह जातक उग्रकर्मी, प्रतापी, गौर वर्ण, ऊँचा कद, क्रोधी, विद्वान, नीच कर्मरत, स्वाभिमानी, दयालु, विरोधियों पर प्रभावी, भाग्यहीन, आडम्बरी, यशेच्छा से धार्मिक कार्य-कर्ता, 5 पुत्र युक्त, धर्मात्मा स्त्री, 23वें वर्ष विवाह, कृपण, धन की कठोरता से रक्षा, स्त्री क्षेत्र में पराजयी, स्त्री प्रेमी, अधिक विषयी, धातु व रक्तरोगी, नेत्र दोषी, चंचल, मनमानी करने वाला, म्लेच्छों की संगति, स्त्री प्रसंग में धन खर्च, 5 में से दो पुत्रों द्वारा सेवा। पत्नी से निरन्तर मतभेद, ससुराल से चल-अचल संपत्ति का लाभ 74वें वर्ष वैशाख शुक्ल 7 शनिवार सायंकाल तीर्थ स्थान पर मृत्यु, 6/12/18/38/56/62/68वें वर्ष नेष्ट, 19/21/34/48/57/64वें वर्ष श्रेष्ठ व भाग्योदय कारक, पूर्व जन्म में शूद्र था, अगले जन्म में भी शूद्र होगा। विपत्ति काल में वरुण पूजन, मोती चांदी में धारण करने से श्रेष्ठ। चंद्रमा यदि 1/2/4/7/10वें भाव में हो तो क्रमशः शान्त, धनी, मातृभक्त, व्यवसायी, नृपतुल्य होगा।

120.	ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
	6	6	9	5	7	7	6	10	10	4

जातक लंबा गौर, कृशोदर प्रतापी, नीतिज्ञ, चतुर, गुप्त योजनाकार, धनी, आलसी, सन्तान पक्ष से कष्ट, स्त्री प्रेमी, लम्पट, व्यवहार कुशल, क्रोधी, कृपण, शरीर पर धन खर्च करे, शान-शौकत प्रिय, ऐश्वर्यशाली, भोगी, धार्मिक पर आडंबरी, बंधु-विरोधी, व्यवसाय में कम लाभ, संगीत-

कला प्रेमी, 23वें वर्ष विवाह, स्त्री सुंदर व सुशील, पर जातक लंपट स्त्रियों से संबंध रखेगा। धन–वृद्धि हेतु प्रयत्नशील रहेगा। विरोधी प्रबल होंगे पर चतुराई से उन पर विजय पायेंगे। सन्तान एक ही जीवित रहेगी। वह भी उपाय से, पुत्र–प्राप्ति हेतु हरिवंश पुराण का नवाह्न परायण उत्तम, आयु 73 वर्ष व फाल्गुन कृष्ण 10 शनिवार अग्निभय या शस्त्रघात से घर में ही मृत्यु होगी। सन्तान से सुख नहीं, 3/9/16/22/32/58/66वें वर्ष हानि प्रद, 11/12/23/38/57/61वें वर्ष लाभप्रद। स्वर्ण में मूँगा पहने, पूर्व जन्म में क्षत्रिय या अगले जन्म में नीच योनि पायेगा। चंद्रमा यदि 1/4/6/8/12वें भावस्थ हो तो क्रमशः स्त्रीजित, सुखी, शत्रु युक्त, जल से भय तथा विशेष खर्चीला होगा।

121.	ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
	7	7	8	5	7	7	7	10	10	4

यह जातक उद्यमी, व्यवसायी, विद्वान, प्रतापी, ज्ञानी, संगीत, काव्य, ज्योतिष, पुरातत्त्वज्ञ, विवेकी, नीतिवान, आत्मगौरवी, स्वाभिमानी, तेजस्वी, पराक्रम युक्त, धार्मिक, व्यवहार कुशल, सत्यभाषी, न्यायी, साधुजनों का सत्संगी, राजनीतिज्ञ, राजनीति में असफल, प्रजा में प्रभाव, कीर्तिवान, ऐश्वर्यपूर्ण, ठाट–बाट का जीवन, सुन्दर, कर्मनिष्ठ, सुदृढ़, गेहुआं रंग, विद्वान प्रिय, उदर विकार ग्रस्त, स्त्री युक्त, 21वें वर्ष विवाह, रक्त विकार ग्रस्त स्त्री से। तभी भाग्योदय, 3 पुत्र, 2 कन्याएं, दो पुत्रों द्वारा सेवा, शत्रु व विरोधी उखाड़–पछाड़ करते रहेंगे, व्यवहार कुशलता से उन पर विजय, दुर्जन की साझेदारी से बचते रहें। मार्गशीर्ष शुक्ल 6 अपरान्ह 66 वर्षायु में मृत्यु। 21/23/38/42/53/63वें वर्ष उत्तम। 11/13/25/39/56/66वें वर्ष अनिष्टकारक, विपत्ति में चांदी में हीरा पहने, विष्णु मंत्र का पूजन, वैष्णवी देवी का पूजनार्चन हितकर, पूर्व जन्म में ब्राह्मण था, अगले जन्म में गर्दभ होगा। चंद्रमा यदि 1/2/5/7/10 भावस्थ हो तो क्रमशः स्त्री लंपट, दरिद्री, अधिक कन्याओं वाला, स्त्री प्रेमी तथा राज्याश्रित होगा।

122.	ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
	8	8	9	6	8	7	8	10	10	4

जातक कृश शरीर, विवेकी, क्रोधी, स्वाभिमानी, स्त्रीलोलुप, धर्मात्मा, गेहुआं रंग, दीर्घदेही, व्ययी, धर्म–कर्म में खर्च, राज्याश्रित, उदार, बुद्धिमान, काव्य कोविद, ज्योतिषी, शील–सौंदर्य युक्त, चार पुत्र, सन्तान व विद्या प्राप्ति में व्यय, मुकद्दमों में विजय, शत्रु परास्त, 21वें वर्ष में विवाह 23/26वें वर्ष भाग्योदय, 68वें वर्ष मार्गशीर्ष शुक्ल 7 शनिवार रात्रि में मृत्यु, 8/17/20/23/36/48/56वें वर्ष उत्तम। 11/18/28/39/54वें वर्ष

हानि कारक, चाँदी की अंगूठी में मोती पहनना हितकर, गुरु पादुका पूजन, अभिषेक कल्याणकारी, शुक्रवार का व्रत फलदायक, पूर्व जन्म में म्लेच्छ, अगले जन्म में ब्राह्मण होगा। चंद्रमा यदि 2/4/6/7/11वें भावस्थ हो तो क्रमशः धनी, कुटुम्बी, शत्रुजयी, व्यवसायी तथा राजयोगी होगा।

123. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
8 8 12 6 8 7 9 10 10 4

जातक अच्छा विचारक, उपदेष्टा, विवेकी, क्रोधी, शत्रुजित्, प्रतापी, स्वाभिमानी, अधिक पुत्रवान, सुखी, भाई-बंधु युक्त, हठी, सामान्य धनी, कुशल व्यवहारी, नीतिज्ञ, चतुर, गणितज्ञ, उदार, दयालु धार्मिक, राज्याश्रयी, प्रबुद्ध, कार्यकुशल, विद्वान, स्त्री लोलुप, धन प्राप्ति में विशेष रुचि, लाभ कम, ठाट-बाट में व्यय, विवेक द्वारा शत्रुओं पर विजय, मध्यम कद, सुन्दर, गौरांग, पत्नी गौरांग, सुन्दर, सुशील, पतिव्रता, धार्मिक, रोगी। विवाह 11वें वर्ष 21/31/35वें वर्ष भाग्योदय, पैतृक संपत्ति लाभ सामान्य, 2 पुत्र सेवा भावी, कुटुम्बियों से मतभेद। मृत्यु भाद्रपद कृष्ण 14 मंगलवार, सायंकाल 67वें वर्ष, 7/13/17/22/38/58/63वें वर्ष हानि कारक। 3/14/21/31/35/48/54वें वर्ष श्रेष्ठ, अल्पायु में मातृ-वियोग, युवावस्था में पितृ वियोग, अनेक स्त्रियों से संबंध, शनिवार का व्रत, शनि पूजन, नीलम हितकर रहेगा। पूर्व जन्म मे क्षत्रिय था, अगले जन्म में कीटादियोनि, चंद्रमा यदि 1/2/5/7/10वें भाव में हो तो क्रमशः नीच, धनी, कन्या संततिवान, स्योजित तथा राजमान्य होगा।

124. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
10 10 12 6 10 7 10 11 10 4

जातक धीर, वीर, गंभीर, विवेकी मन, स्त्री, प्रतापी, विद्वान, राज्य से सम्मानित, गुप्त कार्यकर्ता—अनेक प्रकार से धनोपार्जन में समर्थ, धर्मात्मा, राजनीतिज्ञ, साहित्य संगीत प्रेमी, स्त्री की ओर से चिन्तित, सामान्य कुटुम्ब, स्वस्थ, सुन्दर, काला वर्ण, दीर्घायु समाजसेवी, विरोधियों की परवाह न करने वाला, संयमी। भाग्योदय 28वें वर्ष, विवाह होना संभव नहीं है। शिव या विष्णु-लक्ष्मी पूजन से विवाह होना संभव है। कार्तिक शुक्ल 8 रात्रि के समय 88 वर्षायु में मृत्यु संभव है। जीवन में बार-बार उतार-चढ़ाव आते रहेंगे। 4/7/17/31/56/68/73वें वर्ष हानि कारक। 10/22/28/45/55/63/69/76वें लाभदायक रहेंगे। गुरुवार का व्रत, लक्ष्मी पूजन, नीलम पहनने से संकटों से छुटकारा मिलेगा। पूर्व जन्म में पिशाच था एवं अगले जन्म में तिर्यङ् होगा। चंद्रमा यदि 2/3/5/8/10वें

भाव में हो तो क्रमशः दरिद्र, पुरुषार्थी, विद्वान, जल भययुक्त व राजा समान ऐश्वर्यशाली होगा।

125. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
1 1 5 6 12 8 2 11 10 4

जातक महाप्रतापी, प्रभावशाली, लंबकाय, तेजस्वी, स्वाभिमानी, क्रोधी, गौर वर्ण, अनेक विद्याओं में पारंगत, शत्रुजित, भाग्यशाली, मातृसुख रहित, पितृ भक्त, धर्म–कर्म में दक्ष, बदले की भावना रखने वाला, नष्ट संपत्ति युक्त एवं स्वस्थ होगा। पिता के घर में कम रहेगा। ससुराल से या अन्य स्त्री से खूब धन की प्राप्ति होगी, पिता व नाना दोनों के कुलों पर विशेष अधिकार रहेगा, शत्रुओं पर विजय, विरोधी पनपते रहेंगे। दो पुत्र होंगे जिन्हें खूब प्यार करेगा। परन्तु पुत्र मतभेद रखेंगे। कारावास की स्थिति आयेगी पर जेल नहीं होगी। राज्य में उच्च सम्मान प्राप्त, लक्ष्याधिपति योग है। घर–भूमि, वाहन का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। देशाटन से विशेष लाभ, मार्गशीर्ष 2 चंद्रवार 66 वर्षायु में मृत्यु योग है। 7/17/27/36/48/59/63वें वर्ष उतम रहेंगे। 15/11/24/42/58/66वें वर्ष हानिकारक रहेंगे। पूर्व जन्म में क्षत्रिय था, अगले जन्म में ब्राह्मण होगा। भाग्योन्नति के लिए पन्ना पहने, पितृ–देवताओं का पूजन उचित है। चन्द्रमा यदि 1/2/5/8/9वें भाव में हो तो क्रमशः परम शांत, महाधनी पुण्यवान, जल से भय तथा भाग्यशाली होगा।

126. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
1 1 9 6 2 7 3 11 10 4

यह जातक स्वतेजवान, दूसरों को चमकाने वाला, स्वाभिमानी, क्रोधी, धर्मात्मा, भाषण, साहित्य, संगीत में अभिरुचि, विरोधी विजेता, कर्मण्य, सामान्य धनी, पुरुषार्थी, ऐश्वर्यशाली, कृपण, प्रतिकार की भावना से युक्त, सन्तान से दुःखी, एक जगह टिककर नहीं रहने वाला, लंबा कद, यान्त्रिक होगा। स्त्री सुन्दर पर मतभेद सदा बना रहेगा। 20वें वर्ष में विवाह, 33वें वर्ष में स्त्री से वियोग, एक पुत्र जातक की जीवन भर सेवा करेगा, शत्रु मुकद्दमों में हारेंगे। धर्म–कर्म सकाम या दिखावे के लिए करेगा, फाल्गुन शुक्ल 3 रविवार मध्याह्न में 62वें वर्ष मृत्यु होना संभव है। 10/11/23/33/44/54वें वर्ष हानिकारक व अपमृत्यु भयकारक। 7/17/20/28/38/49/56/61वें वर्ष लाभकारी रहेंगे। सोने में माणिक्य धारण करे, गुरु पूजनानुष्ठान, गुरुवार का व्रत लाभप्रद रहेगा। पूर्व जन्म में क्षत्रिय था एवं अगले जन्म में म्लेच्छ संसर्ग से शूकर योनि प्राप्त करेगा। चंद्रमा यदि 1/4/7/9/12वें भाव में हो

तो क्रमशः शान्त, सुन्दर, मातृ मृत्यु, स्त्री लम्पट, भाग्यवान तथा खर्चीला होगा।

127. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
2 2 3 6 2 7 3 11 10 4

यह जातक पराक्रमी, वीर, आलसी, दृष्टि दोष, गौर वर्ण, मध्यम कद, पुष्ट, सुदृढ़, आत्माभिमानी, भाग्यशाली, राज्य से सम्मान, राज्य कर्मचारी, यान्त्रिक, गृह-भूमि लाभ से युक्त, कृपण, व्यवहार कुशल, नीतिवान, विरोधियों से कष्ट, सन्तान से दुःखी, कन्या अधिक, परम साधु, भोगी, वायु—विकार से दुःखी, कंधे पर चोट का चिह्न, अस्थिर मति, शोधकर्ता, 24वें वर्ष विवाह, स्त्री अलग रहेगी। भाग्योदय 10/24/46वें वर्ष, 2 पुत्र आज्ञाकारी, भव्य एवं पराक्रम की स्थिति श्रेष्ठ, विधुर जीवन जीना होगा। पौष शुक्ल 10 शनिवार रात्रि के प्रथम प्रहर में 67 वें वर्ष मृत्यु होना संभव है। 2/5/8/18/29/42/55/63वें वर्ष हानिप्रद व अपमृत्यु भय कारक। 11/19/46/53/65वें वर्ष लाभप्रद। विपत्ति व अनिष्ट निवारणार्थ राहु का अनुष्ठान, इन्द्र का पूजन, पंचमी का व्रत लाभप्रद रहेगा। पूर्व जन्म में वैश्य तथा भविष्य में शूद्र कुल में उत्पन्न होगा। चंद्रमा यदि 1/2/5/7/11 भाव में हो तो क्रमशः शांत, सुन्दर, परम धनी, सन्तान से दुःखी, स्त्रीप्रिय तथा विद्वान होगा।

128. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
3 3 12 6 2 7 5 11 10 4

यह जातक अभिमानी, बंधु प्रिय, दानी, भोगी, धनी, कामी, शत्रुजित, धीमे कार्य करने वाला, बाल्यावस्था में रोगी, भाग्यवान, दीन स्वभाव, देशाटन प्रेमी, पर वशीभूत, पर स्त्री प्रेमी व खर्च करने वाला, व्याकुल, यदा-कदा धन की न्यूनता अनुभव, पर स्त्री व धन का लोभी, मैत्रीभाव युक्त, विद्वान, शास्त्रज्ञ, कुकर्मी, नेत्ररोगी, मधुर भाषी, भांजे से प्रेम, सुन्दर वस्त्रधारी, पाखण्डी, धर्म रहित, हीन वीर्य परन्तु मदनानुरक्त एवं पिता के साथ छल करने में कुशल होगा। विवाह 23 वर्ष की आयु में होगा। पत्नी सुन्दर पर पति-पत्नी में सदैव मतभेद ही बना रहेगा। परस्त्री आसक्त, भाग्योदय 11/23/28वें वर्ष, सन्तान विद्वान होते हुए भी अविवेकी और पितृ-विरोधी होगी। वृद्धावस्था में एक पुत्र ही सेवा करेगा। पराक्रम में कुछ कमी का अनुभव करेगा। 3/7/10/15/27/36/58/78वें वर्ष हानिकारक। 11/23/28/39/49/56/67/71वें वर्ष लाभप्रद रहेंगे। 72वें वर्ष वायु-विकार या श्वास रोग से आश्विन कृष्ण 5 शनिवार को मृत्यु होगी। संकट में शिव पूजनाभिषेक हितकर, पूर्व जन्म में क्रूर कर्मा वधिक था, अगले जन्म में

वर्णसंकर होगा। चंद्रमा यदि 1/3/5/10/12वें भाव में हो तो क्रमशः उद्यमी, शान्त, पुत्रवान, राज्याश्रित एवं खर्चीला होगा।

129. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
5 5 8 7 5 7 5 11 9 3

यह जातक धीर, शान्त, उग्र राजनीतिज्ञ, शास्त्रज्ञ, उद्यमी, मातृ-पितृ भक्त, विद्या-विवेक, विनय सम्पन्न, अनेक उपायों व कठिनाइयों से एक पुत्र प्राप्त, व्यवहार कुशल, ज्योतिषी, साहित्यिक, दूरदर्शी, कुशल खिलाड़ी, स्त्री कृष्ण वर्णा, अनेक स्त्रियों का भोगी, युद्ध तथा विवाद में स्त्रियों की भांति कायर, घर में क्रोधी, चपल, व्यवसायी, कीर्तिवान, चित्रकार, शरीर, विज्ञानी, लंबोदर, मध्यम कद, गौर वर्ण, 25वें वर्ष में विवाह, कुटुम्बी जनों से प्रेम करने पर भी उनसे द्रोह बना रहेगा। मध्यायु में नेत्र दोष, वायु पीड़ा, धार्मिक कार्य सम्पादित, 11/21/27/36/42/52/58/63वें वर्ष उत्तम 15/24/38/47/53/66/67वें वर्ष अरिष्ट कारक, 67वें वर्ष कार्तिक शुक्ल 10 सोमवार प्रातः अपने ही घर में मृत्यु होगी। शत्रु से विवाद भूलकर भी न करे। धार्मिक कार्य करने से सम्मान एवं गौरव प्राप्त, संकट काल में स्वामी कार्तिकेय का पूजन व मोती धारण करे। पूर्व जन्म में क्षत्रिय था, अगले जन्म में ब्राह्मण कुल में जन्म लेकर मोक्ष प्राप्त। चंद्रमा यदि 2/4/6/8/10वें भाव में हो तो क्रमशः धनी, सुखी, शत्रुजित्, जल से भयभीत तथा राजमान्य होगा।

130. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
5 5 2 8 6 7 5 11 9 3

यह जातक प्रतापी, प्रभावशाली, अत्यन्त सुंदर, स्त्रियों को प्रिय, अपनी स्त्री से विरोध, विवेकी, उद्यमी, चेष्टावान, व्यवसायी, चिकित्सक, कठिनाई से एक पुत्र प्राप्त, शत्रु नाशक, शास्त्रज्ञ, धार्मिक, सुन्दर नीति निपुण, व्यवहार कुशल, बंधु-बांधव युक्त, महाधनी, विचारक, गंभीर, शान्त, गुप्त योजनाओं का निर्माता, निरंकुश, अनेक स्त्रियों का भोगी, सफल वक्ता, धर्म-कर्म में सुखानुभूति, गृह-भूमि-वाहनादि युक्त, चतुर, सुलक्षणा, आयु के मध्य भाग में दृष्टि दोष, विवाह 23 या 26वें वर्ष, भाग्योदय 20/24/28वें वर्ष, 7/17/22/29/38/48/60/62वें वर्ष श्रेष्ठ, 24/37/42/54/63वें वर्ष नेष्ट फलदायी। 66 वर्षायु प्राप्त। पौष शुक्ल 3 रविवार, रात्रि के तीसरे प्रहर, घर पर ही मृत्यु संभव। संकट निवारणार्थ पुखराज धारण करे, शिव का पार्थिव पूजन हितकर, पूर्व जन्म, लेकर विधुर होगा। चंद्रमा यदि 3/4/7/10/12वें भाव में हो तो जातक क्रमशः अति

सुन्दर, धनी, परम सुन्दर स्त्री व स्त्रीजित राज् तुल्य धनी व देशाटनकारी होगा।

131. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
7 7 2 9 6 8 5 11 9 3

यह जातक अल्पायु बलवान, शूर वीर, दानी, स्वजनों से प्रीति, प्रतापी, श्रेष्ठ, व्याकुल, क्रूरकर्मी, पराई वृद्धि से ईष्या, असंतोषी, चिन्तित, ऐश्वर्यशाली, स्व-स्थान में रहकर प्रसन्नता, परदेश में प्रतिष्ठा, कृपण, भीरु, पशु संग्रही, विद्वान, सुन्दर, बंधुप्रिय, भाई के घर की स्त्री का पति, बंधु प्रिय, चोर, राज्य बंधन, मलिन बुद्धि, सन्तान का पिता दण्डित, शस्त्र व जल हानि, कानून का जानकार, भाग्यहीन, स्वजनों को सताने वाला, विवाह यदि हुआ तो कठिनाई से 25 वर्षायु में, पर स्त्री संबंधरत, भाग्योदय 45 वर्षायु में सन्तान द्वारा, मार्गशीर्ष कृष्ण 5 रविवार अपराह्न 58 वर्ष 6 माह आयु में मृत्यु, योग, 12/14/18/20/24/27/32/36वें वर्ष हानिकर। 15/23/37/45/50वें वर्ष लाभप्रद, मूंगा-पन्ना पहनना हितकर, पूर्व जन्म में निन्द्यकरता क्षत्रिय व अगले जन्म में पिशाच होगा। चंद्रमा यदि 1/2/7/10वें भाव में हो तो क्रमशः शान्त, गंभीर, स्त्री लोलुप, धनी तथा उद्यमी होगा।

132. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
7 7 1 9 7 8 6 11 9 3

यह जातक कफ-विकारी, सत्यवादी, देव पूजक, स्वधर्मरत, स्त्रीविलासी, गो-ब्राह्मण भक्त, विचित्र वचन बोलने वाला, राजसेवक, अन्यजनों का कृपा पात्र, सुखी, जल क्रीड़ा प्रेमी, उद्यान, वापी, नदी तट पर विहार का प्रेमी, पुण्यात्मा, यशस्वी, नवीन-वस्त्र धारक, स्त्री से शत्रुता, पाप कर्मी, धन लोलुप क्रूर, खल स्त्री अनुरक्त, 68 वर्षायु में श्वास कास रोग से मार्गशीर्ष शुक्ल, 11 रविवार रात्रि चतुर्थ प्रहर में मृत्यु संभव, अतिथि व ब्राह्मण सेवक, दीन स्वभाव, योगाभ्यासी, देशाटनी दुर्जनों द्वारा निन्दित, विवाहादि मांगलिक कार्यों व साधु संगति में खर्च, परम धनी, वाहन सम्पन्न, सज्जनों से प्रेम, कुशल कार्यकर्ता, अधिक खर्चीला, वन में दुःख, दुर्बल शरीर, तीर्थाटनी, सन्तान कुमार्गी, 7/11/17/28/35/42/56/63वें वर्ष उत्तम। 13/21/39/38/46/57/63/66वें वर्ष हानिकारक रहेंगे। संकट में शिव पूजन, हीरा धारण करना उचित, पूर्व जन्म में गुरुभक्त, क्षत्रिय, अगले जन्म में ब्राह्मण कुल में उत्पन्न हो वैकुण्ठवासी होगा। चंद्रमा यदि 1/5/7/10वें भाव में हो तो क्रमशः सुन्दर, भाग्यवान् सुपुत्रवान् धर्मात्मा स्त्री का पति तथा राजा सम धनी होगा।

133. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
8 8 12 10 8 8 6 11 9 3

यह जातक प्रभावी, प्रतापी, विवेकी, महापण्डित, शास्त्रज्ञ, अनेक विद्याओं का ज्ञाता, नीतिज्ञ, स्वाभिमानी, क्रोधी, विप्र, अप्रिय, असत्य भाषी, न्यायी, दयालू धर्मात्मा, धनी, तेजवान, सुखी, गौरांग, लंबकाय, कुशल कारीगर, राजमान्य, राजकर्मचारी उच्चपदासीन, कभी कारावास योग, शत्रु व विरोधियों पर विजय, धर्म-कर्म की उपेक्षा, विवाद में जयी। चार पुत्र, तीन कन्याएं। एक पुत्र का सुखभोगी, विद्या-विनय सम्पन्न रसायन शास्त्रज्ञ, 25वें वर्ष विवाह, पत्नी सुन्दर, विदुषी, गौरांगी, कृशोदरी होगी। स्वयं ऐश्वर्यशाली, परदेशवासी, अनायास धनलाभ, द्रव्य संग्रही, घर—भूमि-वाहन सुख सम्पन्न, चंचल, प्रभावी-व्यक्तित्व, भाग्योदय विवाह व पुत्रोत्पत्ति के बाद 27वें वर्ष 38/43/54वें वर्ष भाग्योदय, 8/11/18/30/48/59/63वें वर्ष में अशुभ फलदायक। मृत्यु कार्तिक शुक्ल 4 शनिवार मध्याह्न 63वें वर्ष में वृणादि रोग से होगी। पूर्व जन्म में ब्राह्मण द्वारा क्षत्राणी के गर्भ से उत्पन्न व अगले जन्म में शूद्रयोनि में उत्पन्न हो अल्पायु पायेगा। नीलम धारण करे। सूर्य पूजन-अनुष्ठान से संकट दूर होंगे। चन्द्रमा यदि 1/3/5/7/10वें भावस्थ में हो तो क्रमशः कुत्सित स्वभाव, उद्यमी, अल्पविद्यावान, स्त्रीप्रेमी, व्यवसायी तथा राज्य सम्मान प्राप्त चिकित्सक होगा।

134. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
9 9 4 10 10 8 8 11 9 3

यह जातक कर्म व स्वभाव से उग्र, काला, लम्बी देह, कुरुप, कर्मनिष्ठ, साहसी, म्लेच्छ, भाषाविद्, विरोधयुक्त, कुटुम्बहीन, सर्वविरोधी, धर्म-विमुख, धन-सम्पन्न, अपव्ययी, ऋणी, व्याकुल चित्त, हठी, निरंकुश, अभिमानी, स्त्री घातक, परस्त्रीगामी, परस्त्री से सन्तान उत्पन्न, वृद्धावस्था में रोग-शोक त्रस्त, शस्त्रघाती, शस्त्रविवेकहीन, दस्यु कर्मकर्ता, लम्पट, धूर्त, ठग, चाटुकार, विचित्र स्वभाव, 20वें वर्ष में विवाह, 24वें वर्ष पर स्त्री गमन से पत्नी वियोग, भाग्योदय 43वें वर्ष में। 8/28/32/37/46/49/59/70वें वर्ष हानिकारक। कारावास का भरपूर योग, शत्रु पर इनका कोई प्रभाव नहीं, पुत्र इनसे अधिक विद्वान, धार्मिक, सुयोग्य होंगे। एक पुत्र पास रहकर सेवा करेगा। भाद्रपद कृष्ण 13 शनिवार 70 वर्षायु में मृत्यु। 24/43/56वें वर्ष अपमृत्यु भयकारक। अरिष्ट भंजन हेतु माणिक्य पहने, सूर्य अनुष्ठान करे, चंद्रमा यदि 1/4/6/8/10वें भाव में हो तो क्रमश: शान्त स्वभाव, गृहभूमि का स्वामी, स्वस्थ, श्वासरोगी तथा राज्य बंधन रहित होगा।

135. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
10 10 2 11 11 8 8 11 9 3

जातक परम शान्त, मंदाग्नि पीड़ित, धीर, वीर, उद्यमी, धनी, गेहुआं रंग का, पैतृक रुप में गृह–भूमि लाभ, पुरुषार्थी, आत्मज्ञानी, प्रभावशाली, विवेकी, सुशील, विद्याविनय सम्पन्न, पाँवों में दर्दानुभव, राज्य कर्मचारी, राज्य द्वारा धनाभाव, धर्म–कर्म युक्त, भाग्यशाली, कीर्तिवान व यशस्वी होगा। विवाह 22वें वर्ष सुन्दरी से होगा। दो पुत्र सेवाभावी, अल्पायु से ही दन्तपीड़ा ग्रस्त, शत्रुओं द्वारा प्रशंसित, ख्यातिप्राप्त, नीतिविज्ञान में चतुर एवं अग्नि व शस्त्र से भय, भाग्योदय 10/22/34/46/50वें वर्ष। 11/19/26/39/56/63वें वर्ष हानिकारक। फाल्गुन कृष्ण 3 बुधवार मध्याह्न 63 वर्षायु में मृत्यु संभव। उत्पत्ति व कष्ट विचारणार्थ हीरा व माणिक्य पहिनना चाहिए। सूर्य उपासना, रविवार का व्रत शुभ है। पूर्व जन्म में क्षत्रिय था, अगले जन्म में भी क्षत्रिय होगा। धन संचय पर विशेष ध्यान देने वाला, रहन–सहन, ठाट–बाट का रहेगा। चन्द्रमा यदि 3/5/7/10वें भाव में हो तो जातक क्रमश: उद्यमी, पुत्रवान, स्त्री–विलासी यथा राज्य समान ऐश्वर्यशाली होगा।

136. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
11 11 5 12 10 9 10 11 9 3

यह जातक बचपन में रोगी, नेत्र पीड़ित, व्याकुल, स्वाभिमानी, श्यामवर्ण, लंबा कद, आय से अधिक खर्च, धातु रोगी, परदेश में भ्रमण, क्षमाशील में कृषिकर्म, दक्ष, दुर्बल देह, अनायास यथेष्ट धन प्राप्त, धार्मिक, राजा तुल्य धनी, कभी–कभी अर्थ–संकट, दंभी, मिलनसार, नीचों से संगति, अल्पकेशी, वाचाल, दानी, चपल, शास्त्रज्ञ, शस्त्राघात पीड़ित, पुत्रों से सेवा प्राप्त, पैतृक सम्पत्ति की हानि, 19वें वर्ष सामान्य कद, मध्यम वर्ग स्त्री से विवाह। उसे गर्भक्षति योग होगा पर उपायों द्वारा तीन पुत्र प्राप्त, भाग्योदय 20/32/48वें, वर्ष 4/11/23/33/54/71वें वर्ष हानि व कष्टप्रद। आश्विन शुक्ल 4 मंगलवार को 72 वर्षायु में मृत्यु। पूर्व जन्म में म्लेच्छ व अगले जन्म में वर्णसंकर क्षत्रिय, वरुण देव पूजन, शुक्रवार व्रत, हीरा पहनने से संकट दूर होंगे। चन्द्रमा यदि 2/4/6/7वें भाव में हो तो क्रमशः धनवान ग्रह भूम्याधिपति, शत्रु—हन्ता तथा स्त्री लम्पट होगा।

137. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
12 12 4 12 12 9 11 11 9 3

यह जातक पुत्रवान, पुत्रों द्वारा ख्याति, तेजस्वी, सुखी जीवन, बलवान, बहुत सम्पन्न, कृपण, अतुल भोगी, मित्रों से विरोध प्राप्त, बंधु विहीन,

कुटुम्ब से दूर रहने वाला, श्रेष्ठ कर्मी, व्यवसायी, पिता के नाम से प्रसिद्धि प्राप्त, उद्यमी, बलवान, निरोग, स्वतन्त्र जीवन—यापन करने वाला, अनेक स्त्रियों का भोगी, पत्नी अधीन, स्वेच्छाचारी, घर से बाहर, अज्ञात स्थान में देह–त्याग, देव–गुरु पूजन, राजमान्य, अल्पभोजी, बुद्धिमान, माता–पिता का भक्त, वार्तालाप में चतुर, मानी–दानी, ऐश्वर्यशाली 18 वर्ष में स्थूल श्याम, षोडशी, से विवाह होगा। भाग्योदय 21/28/42वें वर्ष। जीवन के 6/11/23/32/43/55/69वें वर्ष हानिकारक रहेंगे। कार्तिक शुक्ल 8 बुधवार रात्रि समय 71 वर्षायु में मृत्यु होना संभव है। लहसुनिया धारण करे, चण्डी व्रत पूजन से अरिष्ट शान्त होंगे तथा कल्याण होगा। पूर्व जन्म में क्रोधी ब्राह्मण, इस जन्म में शुभ कार्यों से पुनः ब्राह्मण के घर जन्म ले वैकुण्ठ लोक को प्राप्त करेगा। चन्द्रमा यदि 3/5/9/10 भाव में हो तो क्रमशः उद्यमी, बहु पुत्रवान, भाग्यहीन व कुचाली होगा।

138.	ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
	12	12	6	1	12	9	12	11	9	3

यह जातक सुखी, स्वजनों से भीत व्यवसाय में विशेष लाभ, राज्य से सम्मानित, राज्य से धन लाभ, साहसी, सभी का सहायक, परधन लोलुप देव–गुरु–ब्राह्मण–अतिथि पूजक, साहसी, सभी का सहायक, सुन्दरियों का प्रेमी, विनीत, भूमि–भवन–वाहन युक्त, सुन्दर वस्त्र धारण करने वाला, शत्रुजित, शत्रुओं से धन प्राप्त, प्रसन्न, चाण्डाल कर्मी, कुसंगति प्रेमी, जाति उन्नति से आनंदानुभव, शत्रुओं से भय व्याप्त, तेजस्वी, बन्धुओं का विनाश देखने वाला, एक पुत्र से सुख प्राप्त 18 वर्ष आयु में विवाह 26/38/52वें वर्ष भाग्योदय, मुकद्दमों में सफलता पर कर्मक्षेत्र में राजदोष, साथ बाधाएँ। 1/11/23/30/42/53/58/67वें वर्ष हानि तथा अपमृत्यु कारक, हीरा व पन्ना धारण करे, शिव के पूजन से कल्याण, संकट निवारण, पूर्व जन्म में वैश्य अगले जन्म में यह वर्णसंकर वैश्य होगा। चंद्रमा यदि 1/2/4/7/10 भाव में हो तो क्रमशः स्त्री भोगी, धनी, वाहन युक्त, सुन्दर स्त्री युक्त तथा ऐश्वर्यशाली जीवन होगा।

139.	ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
	12	12	5	1	1	9	12	11	9	3

यह जातक व्यवसायी, धनी, सुखी, स्वजनों से सुखी, राज्याश्रित, राजमान्य, राज्य से प्रतिष्ठा, हिम्मती, सबका सहायक, दुष्ट स्वभाव, चंचलचित्त, बहुभोजी, कलही, दयाहीन, ऋणी, विनयी, भूमि–भवन–वाहन युक्त, ठाट–बाट पर विशेष खर्च, शत्रुजित, व्यसनी, शुभ कर्मों से विमुख, सुप्रसन्न, चाण्डाल जैसे कर्म, पर निंदक, कुमार्ग गामी, जातीय

उन्नति से प्रसन्न, दीन शत्रुओं से भयभीत पर अन्तोगत्वा विजय प्राप्त, अपशब्द बोलने वाला, तेजस्वी, हस्त पीड़ा, चिन्तित, व्याकुल, घबराहट ग्रस्त, शुक्र दोष से संतान की ओर से पीड़ित। 19वें वर्ष विवाह, भाग्योदय 21/30/42/53वें वर्ष में व्यवसाय में लाभ पर विवेक हीनता से राज्यापराध भी संभव। 68 वर्षायु भाद्रपद कृष्ण 2 मंगलवार को मृत्यु। 3/9/12/28/34/41/56/63वें वर्ष हानि कारक व अपमृत्यु भय, मूंगा धारण करे, भैरव पूजन हितकर, पूर्व जन्म में वैश्य था, अगले जन्म में पुनः वैश्य होगा। चन्द्रमा यदि 1/3/6/8वें भावस्थ हो तो क्रमशः स्त्री लम्पट, साहसी, शत्रुओं से भीत तथा शुक्र दोषी होगी।

140.	ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
	9	9	5	1	2	9	9	11	9	3

जातक प्रतापी, सौभाग्यशाली, परम सुन्दर, धार्मिक, योग्य स्त्री का पति, उत्तम संतान पर नष्ट संतति प्राप्त, सत्यवादी, गुप्त योजनाकार, नष्ट कर्म करने में तत्पर, राजमान्य, क्रोधी, उग्र, सामान्य धनी, मध्यायु में धन लाभ, धार्मिक पर यश-इच्छा से धर्म-कर्म करने वाला, भाग्योदय में विघ्न, पूर्ण मंडित, विद्या संपन्न, विवेकी, चंचल वृत्ति, कुटुम्ब से विरोध, धीर-वीर गंभीर, चेष्टावान, स्त्रियों को प्रिय, व्यवसायी, राज्य से संबंधित यान्त्रिक, स्वस्थ, दृष्टिदोषी, विचारवान, 21वें वर्ष विवाह, भाग्योदय 24/36/48/56वें वर्ष, विरोधी प्रबल, उनपर उपायों से विजय, 7/9/18/29/43/55/61वें वर्ष हानिप्रद, श्रावण शुक्ल 12 शुक्रवार मध्याह्न 67 वर्षायु में मृत्यु, नीलम पहने व सूर्य पूजा लाभकारी, एक पुत्र द्वारा सुन्दर, उद्यमी, साहसी, सत्कर्मी, पुत्रवान, विरोधियों पर विजयी, जल से हानि, राजमान्य, यदा-कदा, राज्यापराधी, पूर्व जन्म में क्षत्रिय, अगले जन्म में यह ब्राह्मण कुल में जन्म लेंगे।

141.	ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
	2	2	5	2	2	9	2	11	9	3

पुष्प शय्या पर विश्राम करने वाला, यह व्यक्ति सुन्दर वस्त्रों का प्रेमी, पशु पालन, जल से भय, सन्तान से दुःखी, गुणी, गुणियों का सम्मान करने वाला, अनेक स्त्री भोगी, धनी, भाइयों से सुखी, विनीत, धन-वाहन युक्त, आभूषण युक्त, बहु स्त्री भोगी, पुत्रवान, पुष्प-गंधादि का प्रेमी, कृषि कर्म दक्ष, विरल शत्रु युक्त, शत्रुजित, व्यसनी, प्रसन्न, सुकर्मी, निंदाशील, कुसंगति, दीन स्वभाव, विवाह 23वें वर्ष, स्त्री गौरांग, मध्यम कद, उदर विकारी होगा। 3 पुत्र सेवा भावी होंगे। व्यवसाय में हानि, शासकीय सेवा में उन्नति, विरोधियों पर युक्ति पूर्वक सफलता, आयु 62 वर्ष आश्विन कृष्ण 8

सायंकाल, तीर्थ क्षेत्र में मृत्यु। 2/8/11/14/38/52/68वें वर्ष हानि कारक, पूर्व जन्म में योगी, योग भ्रष्ट होने से ब्राह्मण बना, अब बैकुंठवासी होगा। चन्द्रमा यदि 1/4/8/11 भावस्थ हो तो क्रमशः सौम्य स्त्रियों का प्रेमी, स्त्रीयुक्त, श्वास-कास युक्त, गृह भूमि का स्वामी होगा। शनिवार व्रत और नीलम धारण करना शुभ है।

142. ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
4	4	10	3	4	8	4	11	9	3

यह जातक धनी, पितृ-विरोधी, क्रूर, परघरवासी, हीन भाव युक्त, दुष्ट बुद्धि, शत्रुओं से भयभीत, घर में प्रसन्न, ठाट-बाट का शौकीन, स्त्रीजित, स्त्री से कलह, माता से सुख, मृदुभाषी पर झूठा, ढ़ोंगी, दुर्बल शरीर, उत्तम कामों का विचारक, सर्वप्रिय, गुणी, विहित कर्म से पराङ्मुख, कुमार्गी, बांधवों को कष्ट दायक, सदैव प्रसन्न, विवाह, सामान्य कद, गेहूआं रंग, स्त्री से 24वें वर्ष होगा पर मध्यायु में ही स्त्री वियोग, 26वें वर्ष भाग्योदय, बार-बार उतार-चढ़ावमय जीवन, पुत्र विरोधी, सन्तान योग्य-सुपात्र, 67 वर्षायु में श्रावण शुक्ल 8 रविवार घर पर ही मृत्यु। 4/9/19/29/42/56/63वें वर्ष अपमृत्यु भय व हानि कारक, मृत्यु रक्त विकार या उदर विकार से होगी। मूंगा व नीलम शुभ, पृथ्वी-पूजन, रविवार-व्रत अरिष्ट नाशक। पूर्व जन्म में वैश्य था अगले जन्म में वृषभ होगा। चन्द्रमा यदि 2/2/4/68/12वें भावस्थ हो तो क्रमशः सुन्दर, गौर वर्ण, धनी, कुटुम्ब सुखी, यात्रा कर्ता तथा जल से हानि पायेगा।

143. ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
5	5	2	4	5	8	5	11	9	3

जातक बुद्धि स्थिर, अधिक परिश्रमी, पराक्रमी, यशस्वी, राजस्वी, परोपकारी, घर में न रहने वाला, अतिविनम्र, शत्रु विरोधी, स्त्रीजित, पत्नी से कलह, दुःख भोगी, स्त्री मिथ्यावादी, वन में दुःखी, पाखंडी, दुर्बल, दीन-हीन, सन्तोषी, स्त्री पक्ष से धन-पान-सुख प्राप्त, व्यसनी, सुप्रसन्न, यदा-कदा व्याकुल-चिन्तित, हाथ में पीड़ा, तेजस्वी, कुमार्गी, जाति हितैषी, पर निन्दक, कभी अपशब्द न बोलने वाला, विवाह युवती कलहकारिणी के साथ 23वें वर्ष होगा। कठिनाई व उपायों से एक पुत्र और वही जातक की सेवा करेगा। भाग्योदय 39/42/66वें वर्ष, आयु 71 वर्ष। आषाढ़ कृष्ण 5 सोमवार सायंकाल, मृत्यु योग। 10/11/28/38/52/61/70वें वर्ष कष्ट व हानि कारक। गोमेद व नीलम धारण करे, गणेश का पूजन-अनुष्ठान लाभप्रद है। कृष्ण पक्ष की चतुर्थी व्रत लाभप्रद। पूर्व जन्म में दीन वैश्य था अगले जन्म में भी वैश्य होगा। चंद्रमा यदि 1/4/5/7/10वें भाव में हो तो

क्रमशः विवेकी, मातृ विरोधी, सन्ततिहीन, व्यभिचारिणी पत्नी का पति तथा राजा के समान धनी व पूज्य होगा।

144. **ल सू चं मं बु गु शु श रा के**
6 6 12 5 6 8 7 11 9 3

यह जातक राज्य से धन प्राप्त करने वाला, संगीत प्रेमी, महत्त्वपूर्ण, विनयी, जयी, साहसी, स्व गृहस्थ से सुखी, स्त्रियों का प्रेमी, सदैव आनंदित, तेज लिखने वाला, चतुर, मृदुभाषी, मिथ्यावादी, धन हेतु चिन्तित, दुर्बल शरीर, कवि श्रेष्ठ, प्रयत्न से धन लाभ, सुन्दर वस्त्र सुगंध पर खर्च, तीर्थाटन प्रेमी, स्त्री युक्त, वाचाल, व्यसनी, विहित कर्म से दूर, शत्रुओं से डर, कुमार्गी, परनिन्दक, जाति प्रशंसंक, दीन भावापन्न, हीन, हाथ में पीड़ा, व्याकुल चित्त, 20वें वर्ष अति सुन्दर, धार्मिक, सुलक्षणा से विवाह, भाग्योदय 22/38/56वें वर्ष, शत्रु स्वतः परास्त, संतान देर से प्राप्त, दो पुत्र सेवाभावी, आयु 84 वर्ष, मार्गशीर्ष शुक्ल 14 शनिवार मध्यरात्रि में रक्तदोष तथा सन्निपात से घर पर मृत्यु। 3/9/11/28/42/49/58वें वर्ष अपमृत्यु भय व हानि कारक, संकट निवारणार्थ पुखराज व उन्नति हेतु पन्ना पहने, गुरुवार का व्रत, गुरु-पूजन इच्छा की पूर्ति में सहायक, पूर्व जन्म में पतंगा। पुनः ब्राह्मण कुल में जन्म लेगा। चन्द्रमा यदि 1/2/5/9/11वें भाव में हो तो क्रमशः कुकर्मी, पुत्रवान, स्त्री प्रिय, भाग्यशाली, श्वेत वस्तु का व्यसनी होगा।

145. **ल सू चं मं बु गु शु श रा के**
6 6 7 5 6 8 6 11 9 3

यह जातक राजा से धन प्राप्त, मधुर भाषी, संगीत प्रेमी, महत्त्वपूर्ण, स्त्री-पुत्र से सुखी, साहसी, शत्रुजयी, विनयी, सुंदर स्त्रियों का प्रेमी, सदैव सुखभोगी, तीव्र लेखन, वाक्पटु परन्तु झूठ बोलने वाला, पाखंडी, दुर्बल शरीर, दरिद्रता नाशार्थ प्रयत्नशील, धनोपार्जन में समर्थ, स्त्रीयुक्त, तीर्थाटन प्रेमी, व्यसनी, दुष्कर्मी, दीन भावापन्न, शत्रु पक्ष से भय, कुचाली, चाण्डाल कर्म, भय-चिन्ता से व्याकुल, हाथ में पीड़ा, 18वें वर्ष भाग्योदय, आयु वर्ष 68 चैत्र कृष्ण 3 सोमवार प्रातः रक्त विकार या शस्त्रघात से मृत्यु। 5/15/26/42/53/65वें वर्ष हानि कारक, मूंगा धारण करे, मंगलवार का व्रत-पूजन से अरिष्ट नाश, संकट निवारण। पूर्व जन्म में वैश्य था, अगले जन्म में भी वैश्य होगा, एक पुत्र सेवाभावी, चंद्रमा यदि 1/2/7/10/12वें भाव में हो तो क्रमशः सुन्दर, धनी, लम्पट, पितृ विरोधी, खर्चीला होगा।

146. **ल सू चं मं बु गु शु श रा के**
7 7 1 5 7 9 8 11 9 3

यह प्राणी राज्य पक्ष से भयभीत, विरोधी, पाप कर्मी, कलही, पराया काम करने वाला, स्त्री-पुत्रादि युक्त, साहसी, शत्रुओं पर विजय, विनयी, मिथ्यावादी, अपव्ययी, कुशल कार्यकर्ता, बुरे कार्यों का इच्छुक, वाचाल, व्यसनी, उत्तम वस्त्र धारणकर्ता, घर-भूमि-वाहन से सम्पन्न, जीव हिंसक, निषिद्ध कर्मी, प्रसन्न चित्त, दीन स्वभाव युक्त, शत्रु से भयभीत, दुर्वचनी, हाथ में पीड़ा, पत्नी सुन्दर, गौरांग, धार्मिक व 18वें वर्ष विवाह, भाग्योदय 24/34/56वें वर्ष, पुत्रों की संख्या अधिक व म्लेच्छ होंगे। केवल एक पुत्र द्वारा सेवा प्राप्त। 63 वर्षायु मार्गशीर्ष कृष्ण 7 मृत्यु रक्त विकार या आन्त्रशोथ से, मध्यायु में स्त्री वियोग, अरिष्ट निवारणार्थ गौरी पूजन व मोती धारण श्रेष्ठ, पूर्व जन्म में शूद्र था, अगले जन्म में गर्दभ योनि पायेगा। चंद्रमा यदि 1/2/4/7/8वें भाव में हो तो क्रमशः सत्कर्म कर्ता, दरिद्र, भूमि स्वामी, धनी मानी होगा।

147.

ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
8	8	4	6	8	9	9	11	9	3

यह बालक कृपण, विष-शस्त्र-अग्नि से डरने वाला, मातृ-पितृ विरोधी, अवनत जीवन, मित्रों का आदरणीय, परिश्रमी, दुःखी, विरोधी, श्रेष्ठ कर्म विमुख, साज-सज्जा का शौकीन, वाहन-भूमि, धन से लाभ, काव्य प्रेमी, शत्रुजयी, स्त्री-पुत्रों से धन लाभ, व्यसनी, कुकर्मी, बन्धुजनों को हानि, स्वजनों का हितैषी, सदैव प्रसन्न, म्लेच्छ संग तथा कुकर्मों में लाभ, नीच संतान द्वारा धन का नाश, वृद्धावस्था में दुःखी, 69 की आयु में श्रावण शुक्ल 12 सोमवार जलोदर वायु विकार से घर पर ही मृत्यु, मृत्यु के बाद नरकगामी, बाद में पशु योनि में जन्म। पूर्व जन्म में ब्राह्मण कुलोत्पन्न पर गुरु अपराध से वर्तमान योनि प्राप्त। 18वें वर्ष विवाह, 41वें वर्ष में पत्नी वियोग। 4/6/16/36/45/58/63वें वर्ष कष्ट व हानिकारक। चन्द्रमा यदि 2/6/9/11वें भावस्थ हो तो क्रमशः पूर्णधनी, शत्रुओं से भय व हानि, भाग्यशाली, धर्मात्मा, वैभव संपन्न तथा सुपात्र पुत्रों का पिता होगा। संकट निवारणार्थ काल भैरव पूजन व माणिक्य धारण करना श्रेष्ठ।

148.

ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
9	9	12	7	10	9	10	11	9	3

जातक सन्तोषी, मित्र हितैषी, महाधनी, बुद्धिमान, स्वजनों के कोप से परेशान, खर्चीला, अंगहीन, संतप्त, स्त्री से दुःखी, पर कार्यरत, बलहीन, शत्रुओं से भय, भूमि-भवन-वाहन युक्त, सुन्दर आभूषण युक्त, वृद्धा स्त्री से भोग, भयभीत, दुर्बल, चिन्तित, कवि प्रेमी, एकान्तवासी, शत्रुनाशक, चाण्डालकर्मी, दीन, शत्रुओं से भयभीत, तेजस्वी, सर्वहितैषी, बंधुजनों को

हानि पहुंचाने वाला, संतान बुद्धिमान, सुशिक्षित, पितृ विरोधी, केवल एक पुत्र सेवाभावी, पुत्रों की ओर से जातक सन्तप्त रहेगा। कई उपायों द्वारा विरोधियों पर विजय प्राप्त करने से प्रशंसा होगी। परमायु 69 वर्ष, बैशाख शुक्ल 14 गुरुवार मध्याह्न में तीर्थ में जल या संघर्ष से मृत्यु संभव है। विवाह सदैव रोगी स्त्री से होगा। 21वें वर्ष विवाह। 3/13/23/39/48/63वें वर्ष हानि कारक। पन्ना पहनने, हनुमान पूजा से लाभ होगा। जातक नास्तिक होगा। पूर्व जन्म में धार्मिक शूद्र था, अगले जन्म में सर्प योनि प्राप्त होगी। चंद्रमा यदि 1/2/4/9 भाव में हो तो क्रमशः परम सुन्दर और भोगी, लक्ष्याधीश, मातृ भक्त, पूर्ण सुखी और सौभाग्यशाली होगा।

149. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
10 10 1 7 10 9 12 11 9 3

यह जातक भ्रमणार्थी, कुटुम्ब से वैर-भाव, ऐश्वर्यहीन, अंगहीन, निर्बल, खर्चीला, शत्रुओं से भयभीत, अल्पकर्मी, शत्रुजित, भूमि-वाहन से सम्पन्न, वस्त्राभूषण युक्त, राज्य से वैभव प्राप्त, शत्रुओं से धन लाभ, प्रसन्न, नीच कर्म में दक्ष, दीन, भाषावान, झगड़ालू, कलही व पत्नी विहीन, विवाह होगा भी तो पत्नी जीवित नहीं रहेगी। विद्या पक्ष उत्तम, राजनीति में सक्रिय और उन्नति अन्तिमावस्था में धन संचित नहीं रहेगा। विरोधी प्रबल रहेंगे। गुप्त उपायों से शत्रुओं को पराजित करेगा। भाग्योदय 23/32/43वें वर्ष तथा मृत्यु 58वें वर्ष मार्गशीर्ष शुक्ल 12 शनिवार मध्य रात्रि में चिकित्सालय के भीतर मूर्च्छारोग से। 3/6/18/30/46वें वर्ष हानिकारक, उन्नति के लिए, नवरत्न, गणपति का अनुष्ठान तथा हीरा व पन्ना धारण करें। पूर्व जन्म में क्षत्रिय था, अगले जन्म में म्लेच्छ वृति का ब्राह्मण। चंद्रमा यदि 1/4/7/19वें भाव में हो तो क्रमशः सुन्दर, शान्त और गंभीर, पूर्ण सुखी व मातृ-पितृ भक्त, स्त्री युक्त तथा राजा तुल्य ऐश्वर्यशाली होगा।

150. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
11 11 5 8 12 9 12 11 8 2

यह जातक सबके प्रति दुर्भावना युक्त, शठ, मलिनवेषी, निर्दय, मित्रहीन, स्त्री पक्ष से दुःखी, धन का अपव्ययी, विकलांग, वाहन सम्पन्न, श्रेष्ठ स्त्रियों से प्रीति, घर में कलह, अहंवादी, धर्महीन, पराक्रमहीन, धन-वैभव युक्त, शत्रुओं से दुःखी, शुभ वस्त्राभूषण, राज्य से उपहार प्राप्त, शत्रुओं को जीतकर उनका धन लेने वाला, सुखी, प्रसन्न, प्रगल्भ, रोगी, चोर, पापी, राज्य से द्विविधा व धोखा, कुटुम्ब विरोधी, कटुवादी, कई विवाह होंगे जो 19/23/26वें वर्ष संभव है। एक भी स्त्री जीवित नहीं रहेगी।

3 पुत्र सुयोग्य तथा सुपात्र, पूर्णायु 67 वर्ष। चैत्र कृष्ण 9 रविवार प्रातः सन्निपात से मृत्यु। 3/8/18/34/54/63वें वर्ष हानि कारक। 36/48वें वर्ष भाग्योदय, नीलम, प्रवाल धारण करें। गणपति पूजन, पूर्व जन्म में शूद्र था, भविष्य में पक्षी योनि पायेगा। चंद्रमा यदि 4/7/10/1 भाव में हो तो क्रमशः सामान्य सुखी, वैभव हीन, सुन्दर होगा।

151.	ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
	12	12	11	8	12	10	1	12	8	2

यह जातक व्यवसाय में सफल, सुखी, स्वजनों से भय युक्त, सर्वत्र विजयी, स्त्री–पुत्रादि का सुख, शस्त्र–अग्नि–विष से भय, पर धन रक्षक, देव–ब्राह्मण पूजक, सुन्दरियों का प्रेमी, बुद्धिहीन, पराया सेवक, अंगहीन, क्रोधी, क्षीण मनोरथ, शत्रु रहित, सर्वत्र आदर प्राप्त, ग्राम्याधिपति, वाहन युक्त, व्यवहार कुशल, प्रतापी, विनयी, गुणी, वंशानुगत रोग पीड़ित, कुटुम्ब विरोधी, परोपकारी, 20वें वर्ष परम सुन्दर, सुशील, धार्मिक कन्या से विवाह, भाग्योदय 22/33/39/53वें वर्ष, आयु 63 वर्ष, कार्तिक शुक्ल 12 गुरुवार सायंकाल शल्य क्रिया से मृत्यु। 5/11/28/43/56/67वें वर्ष हानिकारक व अपमृत्यु भय कारक। हीरा व पुखराज धारण करें, लोहिताक्ष शंकर का पूजन, अनुष्ठान से अरिष्टों का नाश, पूर्व जन्म में क्षत्रिय था, अगले जन्म में यह ब्राह्मण होकर मोक्ष पायेगा। चंद्रमा यदि 3/6/9/12 भाव में हो तो क्रमशः उत्साही, विरोधियों पर विजय और स्वस्थ तथा अधार्मिक होगा।

152.	ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
	1	1	4	8	2	10	12	12	8	2

जातक रक्त–पित्त विकारी, भूम्याधिपति, हितैषी, बुद्धिमान, साहसी, पुनर्जन्म लेने वाला, पितृ भक्त, स्थिर मति, पाप से भय, कोमलांग, अधिक रोम युक्त, लंबे केशों वाला, गौरांग, वाहनादि युक्त, नीतिवान पर स्त्रियों से दूर रहने वाला, धार्मिक, निष्कपट, बलहीन, छोटे कदवाला, दुःखी, दुर्बल देह, कायर, धनी, राज्य से द्विविधा, कुटुम्ब विरोधी, श्रेष्ठ वचन बोलने वाला, विवाह 20वें वर्ष, सुन्दर परन्तु श्वेत प्रदर रोगी, स्त्री से भाग्योदय, 19/24/39वें वर्ष, पुत्र–पुत्रियों की संख्या समान, एक पुत्र तेजस्वी, प्रतापी, विद्वान, कुलदीप होकर सेवा करेगा। यह ऐश्वर्यशाली, ठाट–बाट में धन खर्च, पत्नी योग्य व सुपात्र 65 वर्ष में मूत्र विकार या मूत्र विकार से वैशाख शुक्ल 9 सोमवार, रात्रि के प्रथम प्रहर में धार्मिक चिन्तन करते मृत्यु। 2/12/22/48/56/61वें वर्ष हानिप्रद, पुखराज व नीलम पहने, हनुमान जी

के पूजन–अनुष्ठान से संकट दूर, पूर्व जन्म में प्रतापी राजा था, अगले जन्म में वैश्य कुल में जन्म होगा। चंद्रमा यदि 1/4/7/10वें भाव में हो तो क्रमशः परम सुन्दर, शांत, गंभीर, मातृ भक्त, पूर्ण सुखी, राज्य द्वारा सम्मानित, सुन्दर स्त्रीयुक्त, व्यवसायी व धनी होगा।

153.	ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
	2	2	4	7	1	10	1	12	8	2

यह जातक गुरु भक्त, प्रियवादी, गुणी, कृतघ्न, धनी, कृपण, वीर, सर्व प्रिय, दीनभाव, लाल नेत्र, गृहस्थ से दुःखी, अग्नि–विष–शस्त्र से भय, धनव्ययी, अंगहीन, स्त्री से दुःखी, हृष्ट–पुष्ट, बुद्धिमान, महापंडित, शीलवान, अल्प कोमल, पवित्र, सत्यवादी, विशाल शरीर, सुखी, महाधनी, वाहन युक्त, परस्त्री विहीन, नीतिज्ञ, धार्मिक, मन–ही–मन कार्यरत, चेष्टा कुशल, पंचस्वामी, रोगी, जंघा कष्ट, कायर, राज्य से सम्मान, अन्न संग्रही, मुख रोगी, कुटुम्ब विरोधी, द्विभार्या योग, प्रथम 18 दूसरा 19वें वर्ष विवाह, द्वितीय स्त्री व्यभिचारिणी व पति वंचक, संतान की ओर से यह खिन्न मन और संतान होना असंभव, पर पुरुष जात संतति, भाग्योदय 24वें वर्ष, 28वें वर्ष स्त्री द्वारा विष देने से अपमृत्यु भय, बच गया तो 72वें वर्ष ज्येष्ठ शुक्ल 11 बुधवार को प्रातः घर पर ही धार्मिक कृत्य सम्पन्न करते मृत्यु संभव। पितृ भक्त व पैतृक धन का लाभ, मृत्यु हृदय रोग से। 2/12/38/49/63/71वें वर्ष हानि कारक, गोमेद धारण करे बुधवार व्रत लाभप्रद। पूर्व जन्म में धार्मिक शूद्र व अगले जन्म में वैभव सम्पन्न ब्राह्मण। चंद्रमा यदि 3/6/9/12वें भाव में हो तो उद्यमी, साहसी, और भाग्यवान, स्वस्थ, भाग्यशाली, माया प्रेमी होगा।

154.	ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
	3	3	4	7	2	10	2	12	8	2

जातक अभिमानी, दानी, भोगी, धनी, धीमी गति से कार्यकर्ता, शत्रु बल नाशक, मित्र–हितैषी, भाइयों को हानि, स्त्री पुत्रादि युक्त, धैर्यवान, सहिष्णु अपव्ययी, अंगहीन, स्त्री से दुःखी, पितृ भक्त, स्थिर मति, कोमल, विशेष रोग, लम्बे केश, वाहन–रत्नों से सम्पन्न, गौरांग, नीतिज्ञ, पराई स्त्रियों से दूर, धार्मिक, विद्वान, चेष्टावान, छोटाकद, रोगी, विष, शस्त्र भय। 23वें वर्ष प्रथम विवाह, 27वें वर्ष पत्नी वियोग। पुनः द्वितीय विवाह व पत्नी से भय, भोग–विलास में विशेष खर्च, राजकीय कार्यों से 21/34/55वें वर्ष भाग्योदय, गुदा रोग से ज्येष्ट शुक्ल 12 सोमवार रात्रि प्रथम प्रहर में घर पर ही मृत्यु। 63वें वर्ष 8/17/18/23/32/49/67वें वर्ष हानिकारक, इसी जन्म में मोक्ष प्राप्ति संभव, पुखराज व पन्ना धारण करे, गुरुवार का व्रत, केले के

पूजन से अरिष्ट नाश। चंद्रमा यदि 2/5/8/11वें भाव में हो तो क्रमश: पूर्ण धनी तथा विदेशाटनी, पुत्रवान, और विवेकी, जल से हानि तथा वीर्य दोषी तथा अनेक भोग-ऐश्वर्यवान होगा। कन्याएं अधिक, अनेक अपायों से एक सेवाभावी पुत्र प्राप्त।

155. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
3 3 9 7 3 10 2 12 8 2

जातक मित्र हितैषी, स्त्री प्रेमी, बंधु जन के लिए हानिकारक, दानवीर, भोगी, अभिमानी, बड़े लोंगो से संतप्त, धनी, सरल, लज्जाहीन, दुर्बल, बचपन में रोगी, नीतिज्ञ, गुणी, धार्मिक, श्वेत धातु के व्यवसाय से लाभ, वाचाल, ठिगना, जांघ में कष्ट, कायर, मायावी, राज्य से धोखा, मुखरोगी, आय हेतु चिन्तन, राज्य से बंधन, अपव्ययी, शत्रुजित, संतान प्राप्ति कठिन, होगी तो वर्णसंकर, आयु 17 वर्ष वैशाख कृष्ण 12 मंगलवार रात्रि के प्रथम प्रहर में उदरशूल से घर पर ही मृत्यु। 3/10/18/32/47/58/67वें वर्ष अपमृत्यु भय व हानि कारक। नीलम पहने, शनिवार का व्रत तथा शनि का पूजनानुष्ठान अरिष्ट निवारक व मनोकामना सिद्धि में सहायक। पूर्व जन्म में क्षत्रिय था, अगले जन्म में म्लेच्छ होगा। चंद्रमा यदि 2/5/8/11वें भाव में हो तो क्रमश: सामान्य धनी और जल भय, पुत्रवान् और विवेकी, पाण्डुरोगी तथा वैभव सम्पन्न होगा।

156. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
4 4 10 8 5 9 3 12 8 2

जातक सामान्य, धनी, संगीत प्रेमी, मिष्टाभावी, सौभाग्यवान, धर्म संगति, मिष्टान्न भोजी, विजयी, स्त्री-पुत्र से सुखी, शस्त्र-अग्नि से भय, मिथ्यावादी, हीन बुद्धि, बंधु-विरोधी, स्त्रियों से प्रीति, सुंदर मुख, देव-गुरु ब्राह्मण भक्त, पवित्र, विनीत, भूमि-भवन-धन युक्त, नेत्र रोगी, विद्वान, गुणी, व्यवहार कुशल, राज्य चिकित्सक, राजनीति में दक्ष, निरन्तर भ्रमणशील, परोपकारी, मुखरोगी, सामान्य आय, म्लेच्छ भाषा जानकर क्रोधी, अभिमानी पर विवेकी, स्त्री से विरोध, 25वें वर्ष गर्भाशय रोगी से विवाह, भाग्योदय 22/33/52वें वर्ष संतान की चिन्ता बनी रहेगी, 3 कन्याएं। सुयोग्य, सेवा पात्र, म्लेच्छ सम्पर्की पुत्र प्राप्त। 5/9/17/36/54/61वें वर्ष मृत्यु भय व अर्थ हानि। माघ शुक्ल 8 सोमवार सायंकाल मूत्र कृच्छ रोग से मृत्यु। हीरा व पुखराज पहने संकट नाशक व लाभकारी होगा। शनिवार का व्रत तथा मंगल चण्डी की पूजा हितकर, पूर्व जन्म में क्रूर कर्मी क्षत्रिय तथा अगले जन्म में शूद्र होगा। चन्द्रमा यदि

2/5/8/11वें भावस्थ हो तो क्रमशः मातृ-प्रेमी, पुत्रवान, जल या वीर्यदोष से हानि, पुरातत्त्वज्ञ होगा।

157. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
5 5 11 8 5 9 4 12 8 2

यह जातक स्थिर बुद्धि, पराक्रमी, कीर्तिवान, राज्य द्वारा सम्मानित, राज्याश्रयी, परोपकारी, अग्नि से भय, मिथ्यावादी, स्त्री-पुत्र सुख युक्त, विजयी, हीनमति, बंधु विरोधी, स्त्रियों से प्रीति, दुःखी, अतिविनीत, वैभवशाली, वाहन युक्त, ऐश्वर्यमय जीवन, गुणी, सबको वश में करने वाला, मृदुभाषी, व्यवहार कुशल, उपकारी, रोगी, दुर्बल, सत्कार युक्त वचन बोलने वाला, द्विभार्या योग, प्रथम 17 द्वितीय विवाह 23वें वर्ष फिर द्वितीय स्त्री दुराचारिणी व कलहकारिणी होगी, अन्य स्त्रियों से सम्बन्ध भी रहेंगे, सन्तानें सुपात्र, योग्य, शिक्षित। आपको जीविकोपार्जनार्थ भ्रमण करना होगा। राज्य योग है। घर-भूमि-सुख यथेष्ठ, भाग्योदय 19/24/39/56वें वर्ष। पूर्णायु 69 वर्ष। माघ कृष्ण सप्तमी शुक्रवार प्रातः अपने ही घर में अश्मीरी रोग से मृत्यु संभव है। 2/11/31/48/59/65वें वर्ष अपमृत्यु कारक व हानिप्रद। हीरा पहने, गुरु पादुका स्तोत्र अनुष्ठान व व्रत संकट निवारण में सहायक। पूर्व जन्म में ब्राह्मण तथा भविष्य में पशु योनि पायेगा। यदि चंद्रमा 1/4/7/10वें भाव में हो तो जातक क्रमशः सुन्दर व स्त्री प्रेमी, पूर्ण कुटुम्बी व मातृदोषी, स्त्री लंपट व शुभ, धातु व्यवसायी एवं राजमान्य होगा।

158. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
6 6 7 9 5 9 5 12 8 2

यह जातक शास्त्रज्ञ, सौभाग्यशाली, गुणी, सुन्दर, सुरतिप्रिय, योगी स्वजन हितैषी, सजातियों को आनन्द, दुर्वाल स्त्री-युक्त, विलासी, शत्रुजित श्रेष्ठ कर्मी, दृढ़ाठगी, पति वर्णी, बन्धु-बान्धव युक्त, भाग्य में कुछ कमी, कुचाली, विकल, सुन्दर वेष, शील सम्पन्न, विद्वान-देव-ब्राह्मण-गुरु भक्त, पवित्र, कृपण, स्त्री प्रिय, स्त्री-पूजक, अधिक कन्याएं, कामदक्ष, पापकर्मी, प्रगल्भ, राज्य से धोखा, भोगात्मक विशेष खर्च, स्त्री के कारण शत्रु-वृद्धि, शत्रुओं पर विजय, अनेक स्त्रियों से संबंध, 19वें वर्ष मासिक धर्म-विकारी स्त्री से विवाह, पत्नी कुलटा, भाग्योदय व्यवसाय व राज्य से 21/36वें वर्ष भाग्योदय, मातृ-पितृ भक्त, भूमि-भवन-वाहन सम्पन्न, उत्तम कुटुम्ब, सन्तान अभाव, आयु 61 वर्ष, ज्येष्ठ कृष्ण 5, सोमवार, रात्रि के प्रथम प्रहर में घर पर ही शल्य चिकित्सा से मृत्यु संभव। 3/5/12/28/32/56/68वें वर्ष हानिकारक। पन्ना-नीलम धारण

करें, बुधवार व्रत, पितृश्वरों का अनुष्ठान, गया श्राद्ध करने से संकट दूर। पूर्व जन्म में क्षत्रिय, अगले जन्म में गुह्यक योनि प्राप्त करेगा। चंद्रमा यदि 2/5/8/11 वें भाव में हो तो क्रमशः सामान्य धनी, भाषाविद्, जल से भय व हानि पुत्रवान व ऐश्वर्यशाली होगा।

159. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
7 7 3 10 7 9 6 12 8 2

यह जातक मुख रोगी, अन्न-धन नाशक, रोगी, पापी, दुष्टात्मा, दुर्बल शरीर, छोटा कद, जन्म से ही समर्थ, पंडित, राज्य तुल्य धनी, लोभी, स्त्रियों को प्रिय, चंचल, मध्यम दृष्टि, इन्द्रियजित, कल की जय कराने वाला, भूमि से आजीविकार्जित, क्रोधी, ब्राह्मण व सज्जनों का भक्त, साम्राज्य सुखी, घर-वाहन-माता-पिता का पूर्ण सुख पर राज्य के संबंध में उदासी, बंधन योग, 21वें वर्ष परम सुन्दरी, विवेकी, पतिपरायण स्त्री से विवाह, सन्तान से चिन्ता, उपाय द्वारा पुत्र प्राप्ति संभव, भाग्योदय 26/36/56वें वर्ष। मृत्यु 67वें वर्ष में, वैशाख कृष्ण 9 रविवार मध्याह्न में घर पर ही मृत्यु। मोक्ष प्राप्ति। 2/6/11/25/42/52/63वें वर्ष अपमृत्यु भय व हानिकारक पूर्व जन्म में धर्मात्मा शूद्र, मंगलवार व्रत व माणिक्य पहनना लाभदायक। चंद्रमा यदि 3/6/9/12वें भाव में हो तो क्रमशः धार्मिक और कर्तव्य परायण, विदेश यात्री, भाग्यवान एवं ऐश्वर्य में खर्च करने वाला होगा।

160. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
9 9 1 11 9 10 8 12 8 2

यह जातक नीतिज्ञ, धर्मात्मा, सद्बुद्धि, श्रेष्ठ कुलोत्पन्न, सर्व पालक, स्वजनों से कोप, धनी, मित्र, हितैषी, सन्तोषी, विनय रहित, रोगी, कुल पालक, वैभवशाली, कारीगरी में दक्ष, स्त्रियों से सुख, अल्पकामी, भयभीत, क्रोधी, हीन मनोरथ, कलही, जीव हिंसक, निषिद्ध कर्मी, सबका निन्दक, व्यसनी, व्यवहार कुशल, रोगी, दुर्बल, सत्कारी वचन रहित, 19वें वर्ष में पतिपरायण, सुन्दर स्त्री से विवाह, दैनिक जीवन में ठाट-बाट एवं भोग-विलास में विशेष खर्च, आय कम, सर्वत्र सम्मान प्राप्त, आत्मसंतोषी, अग्नि से भय, भाग्योदय 20/38/58वें वर्ष, आयु वर्ष 61, माघ कृष्ण 11 रविवार प्रातःकाल तीर्थस्थल पर मृत्यु। मोक्ष प्राप्ति, पूर्व जन्म में धर्मात्मा ब्राह्मण था। सन्तान पक्ष से चिंता रहेगी। हरिवंश पुराण का पारायण सन्तान प्राप्ति हेतु उचित है। 1/8/17/35/53/69वें वर्ष अपमृत्यु भय व हानिकारक, नीलम धारण, शनिवार का व्रत प्रत्यंगिरा विधान अनुष्ठान लाभप्रद व अरिष्ट निवारक। चंद्रमा यदि 3/5/6/9/12वें भाव में हो तो क्रमशः उद्यमी, उत्साही, पूर्ण धार्मिक, अहिंसक एवं दरिद्र होगा।

161. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
10 10 5 11 7 10 10 12 8 2

यह जातक नीचकर्मी, अधिक सन्ततिवान, लोभी, उद्यमी, आलसी, क्रोधी, सुखभोगी, दानी, शीलवान, अभिमानी, छोटा कद, पवित्र, गीत नृत्यादि का अनुरागी, राज पूज्य, वृद्धावस्था में रोगी, देव पूजक, स्त्रीवान, पंडित, वेगवान, वाहन-रत्न-भूमि युक्त, नीतिज्ञ, पर स्त्री से दूर, धार्मिक, अंगहीन, बंधुयुक्त, भोगी, पंच प्रमुख, ऐश्वर्य व ठाट-बाट पर विशेष खर्च, विरोधी प्रबल, पर अहित नहीं कर पायेंगे। विवाह 19वें वर्ष, स्त्री सर्वांग सुन्दर, धार्मिक, उसके कर्म-बल पर जातक दीर्घ काल तक सुख भोगेगा। कर्म व भाग्योदय में बड़ी-बड़ी बाधाएं आयेंगी। 28/42/53वें वर्ष भाग्योदय होगा, स्वभाव में विवेक और उग्रता तथा क्रोध व शान्ति का मिश्रण, गुप्त योजनाओं द्वारा अपनी योजनाएं पूर्ण करेगा। 67 वर्षायु में माघ कृष्ण 30 मंगलवार सायंकाल वीर्य दोष से घर में ही मृत्यु संभव है। इन्हें अग्नि व विद्युत से भय रहेगा। दायीं जांघ पर चोट का निशान होगा। 3/10/18/33/47/61वें वर्ष हानि कारक, पूर्व जन्म में ब्राह्मण था। अगले जन्म में शूद्र होगा। सप्तमी का व्रत तथा पुखराज पहनना, उच्छिष्ट गणपति पूजन लाभ प्रद है। चन्द्रमा 2/5/8/11वें भाव में हो तो क्रमशः पूर्ण धनी, विवेकी, जल से भीत व दरिद्र होगा।

162. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
11 11 1 12 11 10 11 12 8 2

यह जातक महाधनी, अत्यन्त शठ, दुभार्वना युक्त, मित्र-रहित, मलिन वेष, दयाहीन, सुखी, व्यसनी, दुष्ट बुद्धि, विकल शरीर, यात्रा से लाभ, विपत्तियों से घिरा, गृह कलही, अहंकारी, पराक्रम हीन, धर्म हीन, शत्रुओं से दुःखी, पराए का कार्य करने वाला, कामी, भय युक्त, क्रोधी, मनोरथहीन, सामान्य वस्त्राभूषण युक्त, आलसी, व्यवहार कुशल, गुणग्राही, उपकारी, सुन्दर स्त्री भोगी, मित्र-मातृ सुखहीन, पितृ धन का नाशक, परदेश वासी, व्यग्र, अनेक स्त्रियों से संबंध, एक स्त्री से प्राण-हानि की संभावना, विवाह होना असंभव, हुआ तो 22वें वर्ष होगा, 3 पुत्रों को जन्म देने के बाद स्त्री की मृत्यु। 1 सन्तान द्वारा सेवा प्राप्त, विरोधी सदैव दबे रहेंगे, धार्मिक कार्यों में विशेष खर्च या फिर गलत कार्यों में खर्च होगा। भाग्योदय 38/44/58वें वर्ष, मृत्यु 11वें वर्ष ज्येष्ठ कृष्ण 12 रविवार को प्रातः शस्त्र प्रहार या अग्निप्रकोप से। 2/6/10/23/39/58/69वें वर्ष नेष्ट एवं अपमृत्यु कारक, पूर्व जन्म में वैश्य था, अगले जन्म में कीट योनि पायेगा। बुधवार का व्रत, सूर्य प्रजानुष्ठान, माणिक्य धारण मनोरथ दायक, लाभ प्रद, अरिष्ट निवारक

है। चंद्रमा यदि 3/6/9/12 वें भाव में हो तो क्रमशः सरल स्वभाव, निरोग, धार्मिक तथा भाग्यवान तथा तीर्थाटन प्रेमी होगा।

163. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
1 1 5 2 1 11 1 12 8 2

यह जातक उज्ज्वल वर्ण, स्त्री–पुत्रादि से दुःखी, पित्तरोग पीड़ित, देशाटन प्रेमी, कभी–कभी लाभ–हानि, कुटुम्ब से दुःख, लोभी, विवाद विजयी, श्रेष्ठ बुद्धि, लेखक, सुन्दर, रोगी, स्वर्ण–धन से युक्त, पितृ सेवक, पुत्रवान, अति बलवान, सत्पुरुषों का साथी, उत्तम स्त्रियों का भोगी, अच्छे कार्यों से सुख, लज्जाहीन, छोटे नेत्र, विदेश प्रेमी, शत्रु नाशक, यज्ञ–फल भोगी, वात रोगी, पितृधन रहित, राज्य व पंडितों से सम्मानित, धन–धान्य नाशक, कुटुम्ब विरोधी, अभिमानी, परजन प्रेमी, विद्यायोग है। विवाह सुंदर पर रोगी स्त्री से 18वें वर्ष होगा। अकस्मात धन प्राप्ति के अनेक योग प्राप्त, सन्तोष अधिक, सुशिक्षित, पर पितृ–विरोधी, 12/22/34/53/56वें वर्ष भाग्योदय, शत्रु व मुकद्दमों पर सदा विजय, कभी–कभी कुसंग एवं चोरी से धन हानि, एक ही पुत्र द्वारा सेवा प्राप्त, 67वें वर्ष माघ शुक्ल 8 शुक्रवार, मध्यरात्रि, धातुक्षीणता से मृत्यु, पूर्व जन्म में ब्राह्मण, अगली बार क्षत्रिय कुल में उत्पन्न हो मोक्ष प्राप्त मूंगा–लहसुनिया धारण करें एवं मंगलवार का व्रत अरिष्ट नाशक है। 2/8/18/24/39/58/63वें वर्ष अपमृत्यु व अरिष्ट कारक, चंद्रमा यदि 2/5/8/11वें भावस्थ में हो तो क्रमश; पूर्णधनी, यात्री, विवेकी व विद्यासम्पन्न, व्रण रोगी या जलोदर रोग, दीर्घायु व धनी होगा।

164. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
4 2 6 2 1 11 3 12 8 2

जातक गुरु भक्त, प्रियभाषी, गुणी, कृतज्ञ, धनी, कृपण, वीर, सर्वप्रिय, पुत्र व स्त्री से दुखी, दुर्बल, लाल नेत्र, बुरे केश, तांबे का व्यवसाय, अल्पसुखी, पर गृहवासी, शत्रुओं से भय, गुण ग्राहक, गुणीजनों से प्रीति, अनेक स्त्री भोगी, उदर पीड़ा, विद्वान कलाविद्, चतुर व्याख्यानी, श्रेष्ठ कार्यकर्ता, सुन्दर भोजन करने वाला, विनयी, व्यवहार कुशल, परोपकारी, दत्तक पुत्र बनेगा, विवाह 19 या 21वें वर्ष, कुरूप एवं कलहकारी स्त्री से अल्प वीर्य होने से सन्तान सुख से वंचित, प्रथम तो सन्तान होगी ही नहीं होगी तो नष्ट हो जाएगी, उपायों से एक कन्या प्राप्त जो पुत्र–पौत्रवती होगी। भाग्योदय 23/38/46वें वर्ष, धार्मिक, स्थिर, उत्तम, विरोधियों द्वारा निंदा प्राप्त। 2/12/22/34/48/56/69वें वर्ष अपमृत्यु भय व हानि कारक, वायु विकार व अतिसार से मृत्यु, पौष शुक्ल 10 शनिवार मध्याह्न 64वें वर्ष मृत्यु। पूर्व जन्म में शूद्र था, अगले जन्म में ब्राह्मण होगा। पन्ना

पहने बुधवार व्रत, संतान गोपाल स्तोत्र का पाठ से अनिष्ट नाश। चंद्रमा यदि 1/4/7/10वें भाव में हो तो क्रमशः सुन्दर और विलासी, पूर्णसुखी, मोतीसरा से मुत्यु या स्त्रियों को प्रिय तथा पूर्ण धार्मिक व कर्मनिष्ठ होगा।

165.

ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
3	3	7	3	4	11	4	12	8	2

श्रेष्ठ गणितज्ञ, शील सम्पन्न, श्रेष्ठ वार्ताकार, प्रसिद्ध, विनयी, सर्व हितैषी, कुटुम्ब से कलह, यात्रा से लाभ, पुत्र सुख, राजसेवक, परदेशवासी, स्त्री-भोगी, बुद्धिमान, सामाजिक, उदर रोगी, कृपण, दंतपीड़ा, ब्राह्मण प्रेमी, विनम्र, बंधु-बांधव युक्त, धर्म-कर्म में आलस्य, धीरे-धीरे सुख में वृद्धि, सुभाषी, सर्वप्रिय, बाल्यावस्था में माता-पिता से वियोग, युद्धजयी, न्यून आजिविका वाला, 20वें वर्ष विवाह, उदर रोगी स्त्री से एक पुत्र सेवा करेगा, भाग्योदय 24/36/48वें वर्ष, सन्तान सुख उत्तम, जीवन के 13/23/32/49/56वें वर्ष अपमृत्यु व हानिकारक, मृत्यु 68 वर्षायु में फाल्गुन शुक्ल 10 मंगलवार को तीर्थक्षेत्र में, लहसुनिया धारण करे, बुधानुष्ठान एवं सप्तमी व्रत से अरिष्ट नाश व लाभ, पूर्व जन्म में विद्वान क्षत्रिय था अगले जन्म में ब्राह्मण होगा। चंद्रमा यदि 2/5/8/11वें भाव में हो तो क्रमशः पूर्णधनी, विद्वान, जल से भय तथा माया से लाभान्वित होगा।

166.

ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
4	4	5	4	4	11	6	12	8	2

जातक ऊँचे शरीर का, वात-पित्त पीड़ित, देशान्तरों में भ्रमण, ऐश्वर्य में कमी, लोह, अग्नि से भय, स्वकार्य में विघ्न, चित में क्लेश। उद्यमपुरुषार्थ से लाभ, बुद्धिमान, लेखन से जीविकोपार्जन, दिव्य देह, कठिन रोगी, राज्य व ब्राह्मण प्रिय, नम्र, बंधु-बांधव युक्त, धर्म-कर्म में आलसी, स्त्रियों से प्रेम नहीं, अपूर्ण मनोरथी, योगाभ्यासी, रजोगुणी, मित्रों से दुःखी, 23 वें वर्ष विवाह, स्त्री सामान्य वर्ण, कलहकारिणी, सन्तान की ओर से चिन्तित, कन्याएं अधिक, उपाय से मात्र एक पुत्र, पितृेश्वरों का गया श्राद्ध करना उचित, मन खिन्न और उदास, गृह त्याग कर वनवासी हो सकता है। 63वें वर्ष श्रावण शुक्ल 11 सोमवार को अनायास तीर्थाटन के समय मृत्यु संभव, मृत्योपरान्त वैकुण्ठ वासी, 4/10/13/25/38/56वें वर्ष अपमृत्यु भय व कष्ट कारक। 19/44/52वें वर्ष भाग्योदय, नीलम पहनने, मंगल का व्रत, हनुमान पूजन से लाभ, चंद्रमा यदि 2/5/8/11वें भाव में हो तो क्रमशः धनी, पुत्र हीन, अनायास धन प्राप्त तथा पुत्रवान होगा।

167.

ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
5	5	8	5	4	11	10	12	8	2

जातक भोगी, शत्रु नाशक, छोटा पेट, अल्पसंतति, उत्साही, पराक्रमी, पुत्र दुःख पीड़ित, धनहीन युवावस्था में व्याधि, मात्र एक पुत्र, अन्य स्त्री युक्त, पर गृहवासी, चपल बुद्धि, विलासी, दुष्ट कर्मी, कुहृदय, पापी, दुःखी, सरल स्वभाव, लज्जाहीन, क्षीण जंघा, दुर्बल देह, बचपन में रोगी, कुल नाशक, उत्तम कुल की स्त्रियों का स्वामी, प्रमुख पंच, छोटा कद, जीवहिंसक, प्रगल्भ, चोर, कायर, गृहस्थ जीवन व धार्मिक जीवन विडम्बना पूर्ण, धर्म–कर्म मात्र, दिखावा, 26वें वर्ष विवाह, परस्त्रीगामी, प्रथम तो संतान होना असंभव, होगी तो चरित्रहीन व दुष्ट, भाग्योदय 29/36वें वर्ष 3/4/8/12/25/44/49वें वर्ष, अपमृत्यु भय व अनिष्टकर, घर में ही मृत्यु, पाण्डुरोग से फाल्गुन कृष्ण 5 शुक्रवार 69 वर्षायु में कष्ट के साथ होगी। पूर्व जन्म में व्याघ्र तथा मृत्यु के बाद नरक भोग म्लेच्छ योनि पायेगा। मंगलवार का व्रत, बुध की पूजानुष्ठान, पन्ना धारण करना लाभप्रद रहेगा। चंद्रमा यदि 1/4/6/10वें भावस्थ हो तो क्रमशः सुखी सुन्दर, स्त्रीप्रिय, व्यभिचारिणी माता का पुत्र व कुटुम्बहीन, स्त्री व व्यवसाय सम्पन्न व राज तुल्य ऐश्वर्य या राज्य भय होगा।

168.

ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
6	6		5	5	11	7	12	7	1

जातक शास्त्रज्ञ; गुणवान, सुंदर, सुरतिप्रिय बुद्धिमान, योगाभ्यासी, स्वजन हितैषी, सजातियों को लाभ होने पर प्रसन्न, दुर्बल पत्नी, शत्रुजयी, विलासी, श्रेष्ठ कर्मी, दृढ़ देह, स्त्रियों को वशीभूत करने में निपुण, मिथ्यावादी, धन नष्टकर्ता, पत्नी युक्त, पुत्रवान, देव–गुरु, ब्राह्मण प्रिय, क्लेश रहित, श्रेष्ठ कुलोत्पन्न, सुन्दर पत्नी, 19वें वर्ष विवाह, स्त्री विदुषी, पति परायण, पुत्र सन्तान अधिक जो आंग्लभाषी, धर्म विमुख एक पुत्र द्वारा सेवा प्राप्त, पुत्रों द्वारा प्रतिष्ठा वृद्धि, विरोधियों द्वारा प्रशंसा, वृद्धावस्था में धन, स्वास्थ, सुख प्राप्त, धर्म कार्य में विशेष खर्च, भाग्योदय 23/46/63वें वर्ष, 1/3/11/38/49/61वें वर्ष अपमृत्यु भय एवं हानि कारक, 81वें वर्ष चैत्र शुक्ल शनिवार को मध्यरात्रि उदर रोग से मृत्यु, अग्नि व जल से भय, मूंगा पहने, गुरुवार का व्रत, गुरु भक्ति से अरिष्ट नाश, पूर्व जन्म में क्षत्रिय, अगले जन्म में ब्राह्मण होगा। चंद्रमा यदि 1/4/7/10वें भाव में हो तो क्रमशः परम सुन्दर और विलासी तथा साहसी, भूमि वाहन, कुटुम्ब युक्त, स्त्री लंपट या व्यभिचारिणी, राजद्वार से सम्मान प्राप्त।

169. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
6 6 2 5 6 11 8 12 7 1

यह जातक उच्च देह, स्त्री व पुत्र से क्लेश, वात पित्त रोगी, देशान्तर भ्रमण, ऐश्वर्य में कमी व कभी अधिकता प्राप्त, शत्रु से भयभीत। कुल विकारी, धर्म मार्गी राजकर्मचारी, मांस भक्षी, विशाल नेत्र, वृद्धावस्था में मृत्यु, श्रेष्ठ बुद्धि, लेखक, सुन्दर, धन का रक्षक, स्त्रियों के प्रति अनासक्त, बंधु-बांधव युक्त, सेनापति, शत्रु नाशक, मामा का सुख नहीं, रोगी माता, स्व उपार्जित धन का कम खर्च, अधिक संचय, हठी और विवेकी, राज्य से सम्मान, विरोधियों पर सफलता, जुए से एकाएक लाभ, 4 व 10 वर्षायु में जीवित रहे तो 18वें वर्ष सुन्दर, परपुरुष प्रेमी, स्त्री से विवाह, दो पुत्र सेवा भावी, विदेश-यात्रा संभव, 43वां वर्ष नेष्ट, 23/35/44/58वें वर्ष भाग्योदय, मृत्यु पौष कृष्ण 5 सोमवार प्रातःकाल रक्तदोष से घर पर 69 वर्षायु में संभव है। 19/34/59/63वें वर्ष अरिष्ट एवं हानिकारक, अरिष्ट निवारणार्थ नीलम तथा पुखराज, प्रदोषव्रत एवं शंकर की पूजा श्रेष्ठ है। चंद्रमा यदि 3/6/9/12वें भाव हो तो जातक क्रमशः उद्यमी और साहसी, स्वस्थ व कुटुम्ब रहित, भाग्यवान और धार्मिक तथा अहिंसक यात्रा में कष्ट और आय से अधिक खर्चीला होगा।

170. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
7 7 5 6 8 11 8 12 7 1

जातक विलास सुख रहित, चंचल, स्वस्थ देह, धन अपव्ययी, पराक्रमी, मिथ्यावादी, चोरों से भय, कलही, सत्यवादी, अतिथिप्रेमी, महाधनी, कुल विकारी, धर्मेच्छुक, मांसाहारी, विशाल नेत्र, रोगी, दीर्घायु छोटा कद, जंघा कष्ट, कुशीला स्त्रियों का भोगी, उद्वेगी, वातरोगी, क्रोधी, घोर स्वाभिमानी, मुख या सिर पर चोट का निशान, शत्रुहन्ता, घर-भूमि-वाहन युक्त, शीत-पित्त रोगी, माता से व्यक्त, पुरुषार्थ में आलस्य वश हानि, दुःखी, 18वें वर्ष रोगी स्त्री से विवाह, वात रोगी, रक्त-विकार से स्त्री एक पुत्र को छोड़कर 24वें वर्ष मृत्यु को प्राप्त फिर दुर्भगा स्त्री पाकर वर्ण संकर सन्तान पैदा भी करेगा, सन्तान द्वारा कष्ट, प्रथम स्त्री के पुत्र द्वारा सेवा 32/49/56वें वर्ष भाग्योदय, 1/7/26/38/51/63/69वें वर्ष अपमृत्यु भय व हानि, 63वें वर्ष, तीर्थस्थान पर कार्तिक शुक्ल 8 बुधवार को प्रातः भगवत् चिंतन करते मोक्ष लाभ, पूर्व जन्म में शूद्र था, महात्मा की सेवा की थी अतः सद्गति प्राप्त, नीलम व मूंगा पहनें, पूर्णिमा व्रत, सत्यनारायण के पूजन से अरिष्ट नाश। चंद्रमा यदि 2/5/8/11वें भाव में हो तो क्रमशः

जातक निर्धन, विवेकी, धार्मिक, सुयोग्य सन्तान युक्त, धनी और नाविक व लाभान्वित होगा।

171. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
8 8 5 7 9 11 7 12 7 1

जातक चंचल, स्वशीलरहित, विद्वानों का सेवक, परदेशवासी, चपल, दुष्ट प्रकृति, पत्नी कुरूपा, धनी, उद्यमी, राजा सम ऐश्वर्यवान, कुल विकारी, धर्म मार्ग का इच्छुक, उत्तम वंश में उत्तम स्त्रियों के साथ विहार, सुन्दर देह, प्रसन्न, सुखी, कपटी, मलिन, पंच प्रमुख, रोगी, ठिगना, जंघा कष्ट, विषयी, पर स्त्रीगामी, भग चुम्बनशील, 20वें वर्ष विवाह, 26वें वर्ष विधुर, विरोधी प्रबल, हानि, आय से अधिक खर्च, दो पुत्र, जारज संतान, विरोधी, अंतिमावस्था कष्टपूर्ण, भाग्योदय 21/31/48वें वर्ष, 1/3/7/18/34/46/59/61वें वर्ष अरिष्ट, अपमृत्यु भय, मृत्यु घर पर ही, आषाढ शुक्ल 8 रविवार, मध्याह्न 71 वर्षायु में। हीरा पहने, शुक्रवार का व्रत, गौरी-पूजन से अरिष्ट दूर व लाभ, पूर्व जन्म में क्षत्रिय था, पुन: अगले जन्म में शूद्र होगा। चंद्रमा यदि 2/5/8/11वें भावस्थ हो तो क्रमश: धनी, परदेशी और कुटुम्ब से विरोध प्राप्त, विवेकी व विद्या सम्पन्न, निरोग तथा जल भय, ऐश्वर्य सम्पन्न तथा सुपात्र पुत्रों का पिता एवं भोगी होगा।

172. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
9 9 3 7 8 11 7 12 7 1

जातक राजनीति पटु, धर्मात्मा, बुद्धिमान, कुलीन, सर्वपालक, सत्यवक्ता, कुल हितैषी, देव व ब्राह्मणों में अनुरक्त, बचपन में रोगी, युवावस्था में धैर्यवान, महाधनी, दीर्घायु, सुन्दर, चपल, दुष्टा व कुरूपा स्त्री, अतिथि सेवी, पुत्रवान, कुलीन स्त्रियों का प्रेमी, छोटा कद, प्रसन्न, सुखी, पंच प्रधान, दुष्टों से भयभीत, विद्याध्ययन व राजकीय कार्यों में विरोध, व्यवधान से असफल, अनुभव, विवेक व श्वेत रंग की वस्तुओं या मादक द्रव्य व्यापार से लाभ, पुत्र-कन्या समान, मृत्यु 68वें वर्ष आश्विन कृष्ण 12 गुरुवार, रात्रि, द्वितीय प्रहर में ईश्वर चिंतन करते हुए, पुनर्जन्म नहीं। 23वें वर्ष विवाह, भाग्योदय 23/28/38वें वर्ष, 1/8/18/32/48/50/62वें वर्ष अपमृत्यु भय व अरिष्ट कारक, पूर्व जन्म में यह धर्मात्मा क्षत्रिय था, पन्ना धारण करने, एकादशी व्रत, तथा विष्णु का पूजन, अनुष्ठान से अरिष्ट नाश। चंद्रमा यदि 1/4/7/20वें भाव में हो तो क्रमश: सुन्दर व स्त्री प्रिय, पूर्ण सुखी, स्त्री प्रिय, राजमान्य होगा।

173. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
9 9 10 7 8 11 8 12 7 1

जातक स्वजनों से कोपयुक्त, बुद्धिमान, महाधनी, मित्र हितैषी, सन्तोषी, खर्चीला, अंगहीन बड़े जनों से संतप्त, स्त्री पक्ष से दुःखी, श्रेष्ठ कर्म विमुख, घोर परिश्रमी, नेत्रदोषी, निंदक, दांत व पेट का रोगी, कलही, जीवहिंसक, निषिद्ध कर्मी, क्रोधी, विवेक युक्त, स्वाभिमानी, सन्तान की ओर से चिन्ता, पुत्र संख्या अधिक, एक पुत्र द्वारा सेवा प्राप्त, बड़ा कुटुम्ब पर कुटुम्ब से मतभेद, शत्रु दबे रहेंगे, मुकद्दमों में सफलता, ठाट-बाट से रहने वाला, 23वें वर्ष विवाह, 46वें वर्ष पत्नी वियोग, 23/38/57वें वर्ष भाग्योदय 1/3/8/9/31/42/54/63वें वर्ष अपमृत्यु व अरिष्ट कारक, 74वें वर्ष, वैशाख कृष्ण 8 शनिवार मध्याह्न में मृत्यु, पन्ना पहने, बुधवार व्रत एवं अश्विनी कुमारों के पूजन से लाभ, चंद्रमा यदि 2/5/8/11वें भावस्थ हो तो क्रमशः धनी और परदेशवासी, विद्वान, सत्कर्मी, अनायास धन लाभ एवं पूर्ण धनी, पूर्व जन्म में गन्धर्व था अगले जन्म में ब्राह्मण होगा।

174. ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
11	11	2	8	11	11	9	12	7	1

जातक, ईश्वर भक्त, अधिक मित्रों वाला, पर स्त्री रत, कोमलांग, सुखी, महाधनी, राजकर्मचारी, दुर्बल, स्त्रियों का मन मोहने वाला, चपल, जाति को प्रसन्नतादायक, उच्चाधिकारी, पराक्रमी, बुद्धिमान, वंश हितैषी, स्त्रियों को प्रिय, सुन्दर, श्यामल, विशाल नेत्र, धर्मगामी, तीर्थाटन प्रेमी, देव-ब्राह्मण भक्त, स्वभुजाश्रयी, उत्साही, ठिगना, पैतृक संपत्ति प्राप्त, कुटुम्ब विरोधी, राज्य से बड़ा पद या सम्मान, विवाह क्रूर पर विवेकी स्त्री से 26वें वर्ष होगा। 21/39/53वें वर्ष भाग्योदय, संतान प्राप्ति विलंब से, प्रथम सन्तान नष्ट, पुत्र संख्या अधिक, एक पुत्र द्वारा सेवा प्राप्त, शत्रुओं पर स्व पराक्रम से विजय, जन्म स्थान से दूर जीवनयापन। 1/3/13/19/38/52/63वें वर्ष अपमृत्यु भय व हानि कारक होंगे, पूर्व जन्म में शूद्र अगले जन्म में कपोत होगा। मूंगा व नीलम धारण करे, शनिवार का व्रत, हनुमान जी का पूजन हितकर। आयु 71 वर्ष, भाद्रपद शुक्ल 13 सोमवार मध्याह्न में वस्तिपीड़ा से घर पर ही मृत्यु, चंद्रमा यदि 1/4/7/10वें भाव में हो तो जातक क्रमशः सुन्दर और कृपण, पूर्ण कुटुम्बी और सुखी, स्त्रीजित तथा राज्य से बंधन प्राप्त होगा।

175. ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
12	12	6	9	12	11	10	12	7	1

जातक स्वर्ण और रत्नों से पूर्ण, अल्पलाभी, दुर्बल, चिन्तित, जड़बुद्धि पर स्त्रीगामी, पक्षिहन्ता, कुत्सित रूप, विकल रोगी, पीले नेत्र, भाग्यहीन, कुचाली, विकल, सुन्दर बनकर रहने का इच्छुक, शील-विद्या में प्रवीण,

अव्यसनी, कुल विकारी, दोषी भाइयों वाला, युद्धवेषी, पंच प्रधान, ठिगना, जांघ में कष्ट, राज्य को धोखा देने की वृत्ति, विरोधियों पर प्रभावी, प्रथम सन्तान नष्ट, कुल 3 पुत्र, एक द्वारा सेवा, विवाह बुद्धिमान, रोगी, स्त्री से 23वें वर्ष, भाग्योदय 34/42/58वें वर्ष, व्यवसाय करना लाभप्रद, आर्थिक स्थिति मध्यम, धर्म-कर्महीन, भाई-बंधुओं से हानि, 1/7/12/24/36/52/63वें वर्ष कष्ट कारक, आयु 73वें वर्ष, आषाढ शुक्ल 10 गुरुवार, मध्यरात्रि में मृत्यु संभव है। कारण वात रोग, पूर्व जन्म में शूद्र, अगले जन्म में अहीर होगा। पुखराज व लहसुनिया पहने, सप्तमी का व्रत, महालक्ष्मी पूजन से अरिष्ट दूर होंगे। चन्द्रमा यदि 1/4/7/10 भाव में हो तो क्रमश: परम सुन्दर तथा सत्कर्मी, पूर्ण कुटुम्बी और सुखी, परस्त्रीगामी तथा राज्य से सम्मान प्राप्त होगा।

176. ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
12	12	4	9	12	11	11	12	7	1

यह जातक दुर्बल शरीर, जांघ में कष्ट, सामान्य कद, रोगी, धनहीन, विद्वान, कुशल, विकल, कुचाली, बड़ा कुटुम्ब वाला, अग्निहोत्री, सुन्दर शरीर, सुखी, हास्यप्रिय, दर्शनीय, पीतवर्ण, पशुबलि कारक, पर स्त्री सेवी, चिन्तित, कामनायुक्त, रत्नादियुक्त, दैनिक जीवन में ठाट-बाठ, बाह्य प्रभाव स्थिर, खर्च अधिक, अधिक यात्रा से जीवन हानि, अन्य स्त्री संपर्क से विरोधी प्रबल, औषधि व लोह व्यापार से लाभ, 24वें वर्ष विवाह, भाग्योदय 19/37/52वें वर्ष, सन्तान होना कठिन, पीठ व पावों में वात-विकार, 2 कन्याएं तथा दो पुत्र को गोद लेगा, कुटुम्बियों से मतभेद व वे प्रबल होकर हानि पहुंचायेंगे। 1/3/9/17/32/58/61वें वर्ष अपमृत्यु भय व हानिकारक, शुक्रवार का व्रत, हीरा धारण, भैरव-पूजन विपत्ति निवारणार्थ उत्तम, मृत्यु 74वें वर्ष कार्तिक शुक्ल 8 रविवार प्रात: घर में ही मस्तिष्क या उदर विकार से होगी। पूर्व जन्म में उग्रकर्मी शूद्र अगले जन्म में वानर योनि पायेगा। चन्द्रमा यदि 4/5/8/11वें हो तो क्रमश: धनी, पुत्रवान एवं विद्या सम्पन्न, जल से हानि व विविधार्थ भोगी होगा।

177. ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
1	1	4	9	12	12	12	12	7	1

सन्तान से दु:खी, साहसी, रक्त-पित्त विकारी, भूमिपति, हितू, बुद्धिमान, बड़ा धनी, वाहन-युक्त, शत्रुओं से दु:खी, श्रेष्ठ, स्त्रियों से प्रीति, सुखी, परधन रक्षक, ब्राह्मण भक्त, देव पूजन, राज्य का सलाहकार, सुन्दर शरीर, दानी, उत्तम निवास, प्रसन्न चित्त, राज्य से वैभव शत्रुजयी, विनयी, व्यवहार कुशल, सुशील, गुण ग्राहक, परोपकारी, भोग प्रिय, विवाह होना

कठिन है। यदि हुआ तो 20वें वर्ष 6 माह बाद स्त्रीवियोग या स्त्री अन्य पुरुष के साथ चली जायेगी। स्त्री देवर से प्रेम करेगी। सन्तान होगी ही नहीं, होगी तो प्रयासों, उपायों से एक पुत्र संभव, व्यवसाय में हानि, राजकीय सेवा से लाभ, शरीर स्वस्थ, यात्रा में कष्ट, गृहस्थी में खर्च अधिक, शत्रु प्रबल, मातृ सुख पूर्ण, धन संग्रह शक्ति अल्प, भाग्योदय 36/52/63वें वर्ष। 1/8/17/31/39/46/58/64वें वर्ष अपमृत्यु भय व हानि, मार्ग शीर्ष शुक्ल 10 गुरुवार, मध्याह्न मूत्र विकार से मार्ग में ही 67 वर्ष आयु में मृत्यु संभव है। पूर्व जन्म में भील तथा अगले जन्म में मच्छर योनि पायेगा। हीरा व नीलम धारण करे, एकादशी व्रत, गौरी पूजन से अरिष्ट नाश व लाभ होगा। चंद्रमा यदि 1/4/7/10वें भाव में हो तो क्रमशः सुन्दर तथा विवेकी, पूर्ण कुटुम्बवान व सुखी, अनेक स्त्रीभोगी एवं राज्यतुल्य सम्मान प्राप्त होगा।

178.

ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
2	2	5	10	2	12	2	2	6	1

जातक पशु से सुखी, दुर्बल, सुन्दर वस्त्रों का प्रेमी, जितेन्द्रिय, ठाट-बाट का जीवन, लाल नेत्र, ताम्र व्यवसाय से लाभ, कुल की जय, स्त्री मन मोहक, भूमि से आजीविका प्राप्त, अति क्रोधी, ब्राह्मण भक्त, पितृ भक्त, निष्पाप, कोमल, अधिक रोम युक्त, गौरवपूर्ण, हृदय रोगी, अदानी, परधनेच्छुक, चांदी-सीसे का व्यवसायी, गुणी, वाचाल, अल्पगतियुक्त, क्रोधी पर विवेकी, वंश उद्धारक, 23वें वर्ष में विवाह। 1 पुत्रोत्पन्न के बाद 29वें वर्ष भी भाग्योदय, 34/36वें वर्ष भाग्योदय कारक, पुत्र अपने नाना, पिता दोनों की संपत्ति का अधिकारी होकर कीर्ति विस्तार करे, पर इन्हें पुत्र से सन्तोष नहीं। राज्य सम्मान व शत्रुओं का आभाव, धन स्थिति सामान्य। 1/10/13/19/38/53/64वें वर्ष अपमृत्यु भय कारक, 68वें वर्ष श्रावणी शुक्ल 13 सोमवार को रात्रि तृतीय प्रहर में आन्त्रशोथ से मृत्यु होगी। नीलम व लहसुनिया धारण करे, बुधवार का व्रत, कुबेर पूजन-लाभप्रद। चंद्रमा यदि 1/4/7/10वें हो तो क्रमशः परम सुन्दर तथा स्त्री वियोगी, पूर्ण कुटुम्बी एवं सुखी, परस्त्री भोगी तथा राज तुल्य होगा। पूर्व जन्म में वैश्य था अगले जन्म में ब्राह्मण होगा।

179.

ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
3	3	5	10	4	12	2	1	7	2

जातक बंधुहीन, मित्र हितैषी, धनी, धैर्यवान, सहिष्णु, स्त्री प्रेमी, जितेन्द्रिय, जांघ क्षीण, दुर्बल देह, सरल स्वभाव, लज्जाहीन, बचपन में रोगी, दान रहित स्त्रियों से धन प्राप्त, वाचाल, अल्पगति, घमंडी, छोटे

बाल, शत्रु नाशक, भोगी होगा। आर्थिक स्थिति में बार-बार उतार-चढ़ाव आयेंगे। कभी धनी कभी ऋणी। पितृगृह की अपेक्षा ससुराल में अधिक रहेंगे। स्त्री सुन्दर, धार्मिक पर नष्ट संतति वाली होगी। विवाह वर्ष 26 में। अन्य स्त्रियों से भी संबंध रहेगा। धन लाभ भी उनसे संभव है। स्वभाव में उग्रता, शरीर स्वस्थ, देशाटन से लाभ, पाँवों में रक्त-विकार, उपायों द्वारा एक पुत्र प्राप्त जो म्लेच्छ वृत्ति का होगा, नाम कलंकित करेगा। कुटुम्ब से मतभेद, पुस्तक व्यवसाय से लाभ, भाग्योदय 26/43/53वें वर्ष। 1/4/11/22/39/56/68वें वर्ष मृत्यु तुल्य कष्ट कारक, समाज में प्रतिष्ठा, विरोधी पराजित, 71 वर्ष चैत्र शु० 2 रविवार मध्याह्न में अग्नि या चोर पीड़ा से घर पर भी मृत्यु संभव। पूर्व जन्म में क्षत्रिय था, धर्माभाव से अगली जन्म में श्वान योनि पायेगा। नीलम पहनने, प्रदोषव्रत, शिव पूजन से लाभ, चंद्रमा यदि 2/6/9/12 भाव में हो तो क्रमशः उद्यमी, साहसी, जल से भय, धार्मिक तथा अपव्ययी होगा।

180.

ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
5	5	8	10	5	12	5	1	7	1

जातक महाभोगी, शत्रु नाशक, छोटा पेट, अल्प सन्ततिवान, पराक्रमी, स्थिर बुद्धि, यशस्वी, राजसेवी, परोपकारी, संग्रामजयी, स्त्री जातक से सुखी, स्वजनों से भय, धन-वैभव से सम्पन्न, मिथ्याभाषी, स्त्री प्रेमी, दुःखी, राजपद प्राप्त कर्ता, सुन्दर, दानी, उत्तम स्थान में वास, प्रसन्न चित्त, सन्तोषी, चिन्तित, पापानुरक्त, कुटिल, कुशीला स्त्री भोगी, बंधुक्लेष, उद्वेगी, वातरोगी, स्त्रियों को मोहित करनेवाला, वृद्धतुल्य शरीर, भूम्याधिपति, क्रोधी ब्राह्मण भक्त, सामान्य कद, क्रोध के साथ विवेक, क्षणे रुष्टा क्षणे तुष्टा, स्त्री कपटी, क्रोधी, नीच परन्तु सुंदर, 24वें वर्ष विवाह, सन्तान की ओर से दुःखी, अति कठिनाई व पितृ श्राद्ध प्रयोग से एक पुत्र प्राप्ति, स्वस्थ व शत्रु पराजित, मुकद्दमों में विजय, राज्य, समाज में सम्मान, भाग्योदय 32/46/52वें वर्ष मूंगा, धारण करे, मंगल व्रत व अनुष्ठान से संकट निवृति में 6/17/37/48/56/63वें वर्ष अपमृत्यु भय व हानि-कारक, आयु 69 वर्ष, फाल्गुन कृष्ण 1 गुरुवार सायंकाल मानसिक रोग से मृत्यु, पूर्व जन्म में विद्वान ब्राह्मण था पुनः कपोत योनि पायेगा। चंद्रमा यदि 1/4/7/10वें भाव में हो तो जातक क्रमशः सुंदर व आत्म संतोषी, गृह-भूमि पति, कुटुम्ब से सुखी, स्त्री लम्पट तथा श्वेत वस्तु का व्यवसायी एवं वैभव सम्पन्न तथा राजमान्य लोभी।

181. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
7 7 8 10 12 7 1 7 1

यह जातक चिन्तातुर, व्याकुल, कामी स्त्रियों से लज्जित, युद्धजयी, धनी, चतुर, कृपण, साहसी, धन-वस्त्र आभूषण से युक्त, दानी, दीर्घायु, गौरवान्वित, गृहाधिपति, राज्य से धन लाभ, कलही, अल्पभाषी, निर्लज्ज, कटुभाषी, कलह से परेशान, आलसी, अपव्ययी कार्यकुशल, योग्य स्त्री का अभिलाषी, क्रोधी, दुर्बुद्धि, दुर्बल, दुष्ट स्वभाव, कुरूप, निर्दय, व्यर्थ भटकाव, कुमार्गी, धातुरोगिणी पत्नी, संतप्त, स्त्री वियोगी, लोक में निन्दित, शत्रुजित, बहु स्त्रीभोगी, असन्तुष्ट, रोगी पर सुंदर स्त्री से 23 वें वर्ष विवाह 33वें वर्ष स्त्री वियोग, अनेक स्त्रियों से संपर्क, शत्रु सदा प्रबल पर उन पर विजय प्राप्त, वीर्यदोषी, दो पुत्र सेवाभावी, माता-पिता-घर-भूमि का पूर्ण सुख, भाग्योदय 26/42/54वें वर्ष। जीवन के 1/8/12/22/31/48/59/63वें वर्ष अपमृत्यु भय व हानिप्रद रहेंगे। पूर्व जन्म में सूर्य व अगले जन्म में सर्प योनि पायेगा। 66 वें वर्ष आश्विन शुक्ल 9 रविवार को मध्याह्न में आंत्रशोथ या उदर विकार से घर पर ही मृत्यु होगी। नीलम पहनने, रविवार व्रत रखने, आदित्य हृदय स्तोत्र का पाठ, सूर्यानुष्ठान से सदा लाभ। चंद्रमा यदि 2/5/8/11वें भाव में हो तो क्रमशः निर्धन, विवेकी तथा म्लेच्छ विद्या प्रवीण, अनायास धनलाभ व जल से भय एवं राज्य व सम्मान पायेगा।

182. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
8 8 6 10 8 12 9 1 7 1

जातक पितृ अनुगामी, व्यवसायी, राज्य द्वारा सम्मानित, गौरवयुक्त, प्रभावी, पराक्रमी, साहसी, शक्तिशाली, कष्ट सहिष्णु, शत्रुजित, व्यवसायी पुरुषार्थी, अल्पधार्मिक, अनन्त विवेकी, दीर्घायु पुरातत्त्वज्ञ, स्त्री पक्ष से दुःखी, विद्वान, बुद्धिमान, कुटुम्ब, रक्षक, अतिभाषी, भाग्यवान, यशस्वी, सम्मानित, बहुव्ययी, चतुर, महासुखी, बंधुयुक्त, भूमिसुखरहित, बहन पक्ष का शत्रु, परिश्रम से सुखी, गुप्त शक्तिवान, परदेश से लाभ 23वें वर्ष सुंदर पर उदर या जलोदर रोग से पीड़िता से विवाह, उसी समय भाग्योदय, 36/54वें वर्ष भाग्योदय कारक, ससुराल पक्ष उत्तम, सन्तान सुख उत्तम, शत्रु-विरोधियों पर विजय, व्यवसाय से धन-वैभव की वृद्धि। 1/4/14/28/42/53/63/69वें वर्ष अपमृत्यु भय व अंग पीठ। श्रावण कृष्ण 9 शनिवार रात्रि के तीसरे पहर गलगंड से 64वें वर्ष मृत्यु संभव, पूर्व जन्म में ब्राह्मण था, अगले जन्म में छछूंदर होगा। गोमेद धारण, बुधवार

व्रत, शिव अनुष्ठान लाभकारी। चंद्रमा यदि 2/5/8/11वें भाव में हो तो क्रमशः धनी, छः पुत्र, भोगी व सुन्दर व औषधि प्रयोग से भय विक्रेता या चिकित्सक होगा।

182.

ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
9	9	6	11	8	12	10	1	7	7

यह जातक नीतिज्ञ, धर्मभीरु, बुद्धिमान, कुली, सर्वपालक, सत्यवादी, निन्दित केश, स्वजन हितैषी, देव-ब्राह्मण अनुरक्त, बाल्यावस्था में रोगी, युवावस्था में धैर्यवान, महाधनी, दीर्घायु, सुन्दर, सुंदर स्त्री, पीड़ित, क्रोधी, अतिथि प्रेमी, हृदयरोगी, दानी, दोषीबंधु, भोगी, राज्य फलभोक्ता अल्पगति, दुर्बल, प्रसिद्ध, पर धन सेवी, मातृ सुखहीन, ठाट-बाट का जीवन, वाहन युक्त, शत्रुरहित, गौरवशाली, ग्राम्याधिपति, राज्य सम्मानित, अल्पभाषी, निर्लज्ज, आलसी, खर्चीला, ठाट-बाट में खर्च, उग्र, स्वाभिमानी, राज्य सम्मान में बाधाएँ, सन्तान पक्ष दुर्बल, अनेक उपायों से एक-दो पुत्र जो कीर्ति को नष्ट कर, वेश्यागामी होंगे। शत्रुहन्ता, नयी भावनाओं का निर्माता, सुन्दर स्त्री से 23वें वर्ष विवाह, उनका वियोग सहना होगा। भाग्योदय 21/41/56वें वर्ष 1/3/6/7/11/18/24/32/53/66वें वर्ष अपमृत्यु भय व हानिकारक, नीलम पहने, द्वादशी व्रत व वामन भगवान पूजनानुष्ठान से लाभ व विपत्तियाँ दूर, कार्तिक शुक्ल 9 गुरुवार प्रातःकाल अदृश्य कारक से मृत्यु। पूर्व जन्म में क्षत्रिय था, अगले जन्म में शुक्र योनि पायेगा। चंद्रमा यदि 1/4/7/10 भावस्थ हो तो क्रमशः दीर्घायु, मातृ-पितृ भक्त कुटुम्ब से सुखी, स्त्री लम्पट और व्यवसायी तथा यात्रा से लाभ पायेगा।

184.

ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
12	12	4	1	12	12	1	1	7	1

जातक रत्न एवं स्वर्ण पुर्ण, अल्पकामना, अति दुर्बल, दीर्घ चिन्तन, नेत्रदोष, मान रहित, अपव्ययी, दुष्ट रक्षक, दीर्घरोगी, कलही, रक्तविकारी, सर्वजन विरोधी, स्त्री-पुत्रादि-विमुख, नीचों की संगति, दुर्गुणी, असहिष्णु, दुःखी, व्यर्थ भ्रमण, अल्पभाषी, निर्लज्ज, कटुभाषी, कलही, चिन्तित, आलसी, तेजस्वी, पक्षीहन्ता, दानी, सुंदर मुख, कुटिल, निर्दयी, अतिकामी, परस्त्रीभोगी, उदर रोगी, मनोमन चिन्तन, चेष्टावान, 22वें वर्ष सुन्दर व अति गुणवती स्त्री से विवाह, इनसे संतानोत्पति में बाधा आयेगी। उपाय व चिकित्सा से दो पुत्र होना संभव है। 39वें वर्ष स्त्री से वियोग, 58 व 63 वर्षायु में संतति वियोग और आर्थिक कष्ट, आप गृह त्याग भिक्षुक वृत्ति से

चतुर, गृह–भूमि–लाभ रहित, विवाद में खर्च व विजयी, शरीर सुदृढ़, मध्यम कद, स्वस्थ सुन्दर, रोग पर विशेष व्यय, 26वें वर्ष मातृ–वियोग, 24वें वर्ष विवाह, 20वें वर्ष भाग्योदय, पितृ कीर्ति से लाभ, आश्विन शुक्ल 5 शनिवार मध्यरात्रि 78 वर्षायु में मृत्यु, 9/21/30/33/44/54/72वें वर्ष हानिकारक व अपमृत्यु भय। 62/12/28/39/49/63/75वें वर्ष लाभदायक, विपत्ति में यमराज को सुन्दर पूजन तथा सोने की अंगूठी में मूंगा पहनना हर्षवर्धक, पूर्व जन्म में क्षात्र धर्म युक्त ब्राह्मण था। अगले जन्म में वृषली स्त्री का पति व शूद्र होगा। चंद्रमा यदि 1/3/6/9/11वें भाव में हो तो क्रमशः आत्म गौरवशाली, साहसी, शत्रुजित, भाग्यशाली और सम्पन्न होगा।

187. | ल | सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 10 | 10 | 12 | 6 | 10 | 7 | 10 | 11 | 10 | 4 |

इस कुण्डली वाला जातक धीर, वीर, शान्त, विवेकी, मनस्वी, प्रतापी, विद्यावान, राजा से सम्मान पाने वाला, गुप्त रूप से कार्य करने में कुशल, अनेक प्रकार से धन कमाने वाला, धर्मात्मा, राजनीतिज्ञ, साहित्य–संगीत प्रेमी, स्त्री की ओर से चिन्तित, सामान्य कुटुम्ब वाला, स्वस्थ सुन्दर, वृहदाकार, कृष्णवर्ण, दीर्घायु, समाज सेवी, विरोधियों की चिन्ता न करने वाला तथा संयमी होता है। इसका भाग्योदय 28 वर्ष की आयु में होगा। इसका विवाह होना कठिन है, परन्तु शिव अथवा लक्ष्मी का पूजन स्मरण करते रहने पर विवाह संभव हो सकता है। कार्तिक शुक्ल अष्टमी को रात्रि के समय 88 वर्ष की आयु में इसकी मृत्यु होना संभव है। उसके जीवन में अनेक उतार–चढाव आते रहेंगे। इसके लिए 4/7/17/31/56/68/73 तथा 85 में वर्ष हानिकारक तथा 10/22/28/45/55/63/69/76 तथा 81वें वर्ष लाभदायक सिद्ध होंगे। गुरुवार का व्रत करने, लक्ष्मी पूजन तथा चांदी की अंगूठी में नीलम धारण करने से संकटों से छुटकारा मिलेगा तेथा आकांक्षाएं पूर्ण होंगी। यह पूर्व जन्म में पिशाच था, अगली बार तिर्यग् योनि में जन्म लेगा। यदि इस कुण्डली में चन्द्रमा क्रमशः द्वितीय, तृतीय, पंचम, अष्टम तथा दशम भाव में हो तो जातक क्रमशः दरिद्र, पुरुषार्थी, विद्वान तथा राजतुल्य होगा।

188. | ल | सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 10 | 10 | 2 | 6 | 11 | 7 | 11 | 11 | 10 | 4 |

यह जातक अपने पुत्र एवं पिता का विरोधी, राज्य द्वारा सम्मान पाने वाला, खोटे कामों से धन इकट्ठा करने वाला, प्रतापी, स्वाभिमानी, कुकर्मी, क्रोधी, अनुशासित, मस्तक पर व्रण, अथवा घाव के चिह्न वाला, उन्मत्त, अल्प विद्यावान, स्त्री एवं संतान की ओर से दुःखी, धर्म–कार्य में विघ्न

उत्पन्न करने वाला, प्रबल विरोधी तथा शत्रुओं से युक्त, हठी, बन्धु-बान्धवों तथा स्वजनों से मिलकर अपना काम चलाने वाला, उन्माद रोगी, धन लाभ की गुप्त शक्ति रखने वाला, छली, विचित्र मस्तिष्क वाला, कृष्णांग, लम्बे शरीर वाला, उदर पीड़ा से युक्त, कृपण तथा नीच जनों की संगति करने वाला होता है। इसके प्रताप के समक्ष किसी का ठहर जाना सम्भव नहीं होता। इसके हृदय में हत्या करने की भावनाएं भी प्रबल रहेंगी। परन्तु किसी की हत्या कर नहीं सकेगा। किंचित विवेकशीलता इसको अपयशी बनने से बचाए रहेगी। यह घोर तन्त्रोपासक भी होगा तथा तन्त्र के बल पर अपने अनेक कार्यों का सम्पादन करता रहेगा। स्त्रियों की ओर से इसका मन उदासीन रहेगा तथा इसके पुत्र इसके विरोधी बने रहेंगे। अन्त में यह अपने कर्मों पर पश्चात्ताप भी करेगा। मार्गशीर्ष मास के कृष्णपक्ष की तृतीयं तिथि एवं बुधवार के दिन, मध्याह्न के समय 62 वर्ष की आयु में, सन्निपात ग्रस्त होकर, इसकी मृत्यु होना सम्भव है। इसके जीवन में 3/5/15/28/37 तथा 52वें वर्ष हानिकारक तथा 4/7/10/20/31/40/51/53 तथा 60वें वर्ष लाभकर सिद्ध होंगे। स्वर्ण की अंगूठी में पुखराज धारण तथा सूर्यदेव सर्वोपांग पूजा-उपासना करने से इसे संकट के समय मुक्ति मिल सकेगी। यह जातक पूर्व जन्म में नरापराधी शूद्र था, तथा अगले जन्म में प्रेतत्व को प्राप्त होगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, तृतीय, पंचम, सप्तम, दशम, अथवा द्वादश भाव में हो तो जातक क्रमश: शान्त, उद्यमी, ज्ञानी, पुत्रवान, द्विभार्या भोगी, राजमान्य, तथा ऐश्वर्यशाली होता है।

189. | ल | सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 3 | 3 | 5 | 6 | 2 | 7 | 4 | 11 | 10 | 4 |

यह जातक प्रभावशाली, विवेकी, परन्तु स्थिर मति, लम्बे कद वाला, गोल वर्ण, स्त्री सन्तान से युक्त, डरपोक, विरोधियों से संघर्ष न करने वाला, कृपण, मलिन वस्त्र धारी, सामान्य, व्यवसायी, भाग्यवान, अपने ही पुरुषार्थ से धन कमाने वाला, द्रव्य संग्रही, गृह भूमि के लाभ से युक्त तथा माता का विरोधी होगा। इसका एक पुत्र सेवा करेगा। पांवों में वायु विकार के कारण कष्ट रहेगा। इसकी माता व्यभिचारिणी होगी। पत्नी सुशील, विदुषी, धार्मिक, सुलक्षणा होगी। इसका विवाह 20 वर्ष की आयु में होगा। भाग्योदय 12, 22 एवं 32वें वर्ष होगा। आयु की परमावधि 81 वर्ष है। इसकी मृत्यु आश्विन कृष्ण पक्ष त्रयोदशी शुक्रवार को प्रात: अपने ही घर में होना संभव है। सन्तान कुचाली

होगी, परन्तु उसी के द्वारा इसकी उन्नति होगी, तथा कीर्ति का विस्तार होगा। इसके जीवन के 9/12/22/32/48/62 तथा 78वें वर्ष उत्तम, तथा 3/11/17/24/26/36/56/68 या 81वें वर्ष हानिकारक सिद्ध होंगे। भाग्योन्नति के लिए नीलम धारण करना या संतान वृद्धि के लिए गुरु पूजन करना शुभ होगा। अरिष्ट काल में अर्यमा पितृश्वरों का पूजन करना हितकर रहेगा। व्यक्ति पूर्व जन्म में क्षत्रिय के द्वारा शूद्रों के गर्भ से ही उत्पन्न हुआ था, तथा अगले जन्म में भी जार पति द्वारा शूद्रों के गर्भ से उत्पन्न होगा। यह जातक सफल वक्ता, तेजस्वी, धर्मात्मा, विनय सम्पन्न, स्वाभिमानी तथा मधुमेही या उदर रोगी या अल्प कुटुम्बवान, तथा सामान्य कर्म करने वाला होगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, षष्ठ या पंचम, सप्तम अथवा दशम भाव में हो तो इसके प्रभाव से यह जातक क्रमशः शान्त स्वभाव का, उद्यमी, सुपात्र, सन्ततिवान, स्त्री प्रिय तथा राजमान्य होगा।

190.	ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
	6	6	10	8	6	7	5	11	9	3

इस कुण्डली वाला जातक अत्यन्त साहसी, बाल्यावस्था में रोगी, नेत्र कष्ट से दुःखी, प्रतापी, मेधावी, पुत्र–पौत्रादि से रहित, भाइयों से अलग रहने वाला, सुबुद्धिवान, हृष्ट–पुष्ट, कांतिमान, नाम मात्र को शीलवान, पवित्र, सत्यवादी, महापंडित, व्यक्तित्व सम्पन्न, परदेश गमन में रुचि रखने वाला, सुखी, सुन्दरी भार्या का पति, धनी, सम्मानित, उद्यमी, उत्साही, एक बार अपने सम्पूर्ण धन को गँवा देने वाला, रोगी, ठाट–बाट में खर्च करनेवाला, दंभी, बलहीन, शत्रुनाशक, कुलक्षयी, दंभियों का मित्र, यदा–कदा चौर–वृत्ति में भी कुशल, विद्वान, तथा मलेच्छ भाषा का जानकार, इसकी पत्नी परम सुन्दरी एवं धर्मात्मा होगी। इसका विवाह 21 अथवा 17 वर्ष की आयु में होगा। संतानें होकर नष्ट हो जायेंगी। वृद्धावस्था में स्वोपार्जित धन से सुख रहेगा। कुटुम्बियों से द्वेष घना रहेगा। इसका भाग्योदय 24/34 तथा 42वें वर्ष में होगा। माघ, शुक्ल पक्ष 8 बुधवार को रात्रि के द्वितीय प्रहर में उदर विकार के कारण अपने ही घर में 68 वर्ष की आयु में इसकी मृत्यु होना संभव है। इसके जीवन में 6/ 18/29/40/52/57/60 तथा 68वें वर्ष हानिकारक रहेंगे तथा 5/9/17/21/24/34/42/53 तथा 61वें वर्ष उत्तम तथा लाभकारी सिद्ध होंगे। इसे अपनी उन्नति के लिए चांदी की अंगूठी में मोती जड़वा कर धारण करना चाहिए, विपत्ति के समय शुक्र का व्रत एवं अनुष्ठान हितकर रहेगा। यह पूर्व जन्म में क्षत्रिय तथा अगले जन्म में शूद्र कुल में उत्पन्न होगा। इस जन्म कुण्डली में चन्द्रमा यदि द्वितीय, पंचम,

सप्तम, नवम अथवा एकादश भाव में हो तो जातक क्रमशः पूर्णधनी, पुत्रवान, व्यवसायी, भाग्यवान तथा अनेक प्रकार से धन-लाभ करने वाला होगा।

191. | ल | सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 9 | 9 | 12 | 10 | 9 | 8 | 7 | 11 | 9 | 3 |

यह जातक प्रतापी, प्रभावशाली, विवेकी, अन्य लोगों का पथ प्रदर्शक, श्याम वर्ण, मुख रोगी, उदर में वायु विकार से पीड़ित, विद्वान, सामान्य क्रोधी, स्वाभिमानी, नास्तिक, धर्म विमुख, कामी, साहसी, उद्यमी, व्यवसाय द्वारा धनोपार्जन करने वाला, ऊँच-नीच कर्मों का कर्ता, असंतोषी, धनी, छली-कपटी, कभी उद्यमी और कभी आलसी, विद्वान, बन्धु-बांधवों से युक्त, माता-पिता व विरोधी, जल तथा अग्नि से भय पाने वाला, विरोधियों से लाभ उठाने वाला, कार्यश्रमी, दुर्जनों का साथी, व्यवसायी, मन-ही-मन धर्मशास्त्रों पर श्रद्धा भी रखने वाला, एवं राज्य से सहायता पाने वाला होगा। इसका विवाह 23 वर्ष की आयु में होगा। स्त्री रुग्ण होगी। उसकी मृत्यु पहले ही हो जाएगी। इसका भाग्योदय 9/12/21 अथवा 38 वर्ष की आयु में होगा। दो पुत्र इसकी सेवा करेंगे। जो इसी की भांति विद्वान होंगे। यह राज्य में उच्च पद तथा सम्मान प्राप्त करेगा। वैशाख कृष्ण पक्ष 12 मंगलवार को रात्रि में अग्नि अथवा रक्त विकार के कारण 69 वर्ष की आयु में इसकी मृत्यु होना संभव है। इसे 31/42/52/62/67 तथा 68वें वर्ष अशुभ रहेगा। हीरा धारण करना तथा बुधवार का व्रत हितकर रहेगा। यह पूर्व जन्म में म्लेच्छ कर्मी वैश्य था, तथा अगले जन्म में वैश्य ही होगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, द्वितीय, चतुर्थ, षष्ठ अथवा नवम स्थान में हो तो जातक क्रमशः माता-पिता का भक्त, धनी, बन्धु आश्रय दाता, रोग रहित तथा धार्मिक स्वभाव का होगा।

192. | ल | सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 10 | 10 | 1 | 11 | 10 | 8 | 9 | 11 | 9 | 3 |

इस कुण्डली वाला जातक, विपुल आय सम्पन्न, धनी, पुष्ट शरीर, बलवान, राज तुल्य, भूमि लाभ पाने वाला, धार्मिक, व्यवसायी, उद्यमी, भाई-बन्धुओं से युक्त, भोगी, पितृ विरोधी, पिता के सामने ही मृत्यु प्राप्त होने वाला, पुत्र-हीन, अथवा प्रथम पुत्र के नष्ट हो जाने का योग पाने वाला, परदेश भ्रमण में रुचि रखने वाला, स्वस्थ, चेष्टावान, स्वेच्छाचारी, धनी, कुटुम्बियों का विरोधी, विघ्न पाने वाला, दीर्घ-कालीन रोगी, अशुभ कर्म करने वाला, देव-गुरु पूजक, कृपण, राज कर्मचारी, बुद्धिमान, राजाओं जैसे कर्म करने वाला, मातृ हीन, अल्प भोजी, प्रसिद्ध तथा सत्यवादी होगा।

इसका विवाह 21 वर्ष की आयु में स्वैरिणी-स्त्री के साथ होगा। परन्तु इसकी स्त्री प्रतापी एवं प्रभाव के समक्ष सदैव दबी रहेगी। यह किसी समय अचानक राज्य सेवा को छोड़कर व्यवसाय के क्षेत्र में प्रवेश करेगा। ठाट-बाट से रहना इसे प्रिय होगा। इसके केवल दो पुत्र प्राप्त होंगे। भाग्योदय 21/27 या 38 वर्ष की आयु में होगा। इसकी कुल आयु 59 वर्ष से अधिक नहीं होगी। इसे 10/22/31/42/50 तथा 55वें वर्ष हानिकारक रहेंगे। दीर्घायु प्राप्ति के लिए सूर्य नारायण का व्रत तथा अनुष्ठान एवं माणिक्य धारण करना लाभप्रद रहेगा। यह पूर्व जन्म में वैश्य था, अगले जन्म में भी वैश्य ही रहेगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि, लग्न, चतुर्थ, पंचम अथवा अष्टम भाव में हो तो जातक क्रमशः सुन्दर, कुटुम्ब प्रेमी, पितृ प्रेमी, दीर्घायु होगा।

193. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
11 11 2 12 11 9 10 11 9 3

यह जातक सबका विरोधी, भाइयों द्वारा परित्यक्त, दुराचारी, पराजय पाने वाला, स्वस्थ, बलवान, दीर्घायु, धार्मिक, धनी, प्रसिद्ध, जन्म के समय पितृ हीन, अथवा पिता परदेश वासी, पुत्रवान, पुत्रों से सेवा पाने वाला, तथा श्रेष्ठ स्त्री का पति होगा। इसका विवाह 22 वर्ष की आयु में कुलीन एवं सद्गुणी स्त्री के साथ होगा। यह व्यक्ति स्त्री से प्रेम करने वाला, उसके अधीन रहने वाला, रूपवान, दीर्घ कालीन रोगी, राज्य में आजीविकाओं का उर्पाजन करने वाला, तथा भाग्योदय में विघ्न पाने वाला, भाग्योदय 30 वर्ष की आयु में होगा। विरोधी इसका कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते। कभी-कभी वायु विकार, मस्तक पीड़ा से पीड़ित रहेगा। इसके जीवन के 5/11/23/42/54 तथा 68वें वर्ष हानि एवं अपमृत्यु कारक रहेंगे। पौष शुक्ल 10 रविवार, मध्याह्न काल में 70 वर्ष की आयु में इसकी मृत्यु होना संभव है। यह धारण करने तथा शनि देव का व्रत तथा पूजन करने से लाभ तथा अनिष्ट नाश होगा। यह जातक पूर्व जन्म में म्लेच्छ कर्मयुक्त क्षत्रिय था एवं अगले जन्म में भी क्षत्रिय ही होगा। इसकी कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, तृतीय, चतुर्थ, षष्ठ अथवा दशम भाव में हो तो जातक क्रमशः सुन्दर उद्यमी, ग्रहभूमि स्वामी, शत्रुजित राज्य द्वारा दंडित होगा।

194. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
7 7 12 5 6 8 8 11 9 3

इस कुण्डली वाला जातक राजा से भय पाने वाला, विरोधी, कलही पर कर्म करने वाला, स्त्री पुत्रादि से सुखी, साहसी, शत्रुजित, विनयी, मधुर

भाषी परन्तु मिथ्यावादी, लेखन शक्ति में प्रवीण, श्रेष्ठ स्त्रियों से प्रेम करने वाला, दुर्बल शरीर, धनहीन, पाखण्डी, व्यसनी, दुःख पाने वाला, जीव हिंसक, सर्वनिन्दक, निषिद्ध कर्म करने वाला, कुमार्गी, अपनी जाति का हितैषी, शत्रु से भय पाने वाला, विवादी, धन भोगी, तेजस्वी, हाथ की पीड़ा से युक्त तथा चिन्ता एवं व्याकुलता से युक्त होता है। इसे संतान पक्ष से विशेष चिन्ता बनी रहती है। इसका विवाह 22 वर्ष की आयु तथा भाग्योदय 28 तथा 33 वर्ष में होता है। संतान कठिनाई से होगी तथा एक कुल कलंकी पुत्र सब कुछ नष्ट कर देगा। इसकी पूर्ण आयु 68 वर्ष की है। आषाढ़ कृष्ण सप्तमी रविवार को मध्याह्न काल में श्वास रोग के कारण इसकी मृत्यु घर पर ही होना संभव है। आयु के 7/17/38/49/55 तथा 63वें वर्ष अपमृत्यु एवं हानिकारक सिद्ध होंगे। शिवजी का पूजन एवं हीरा धारण करने से लाभ होगा तथा संकट निवारण होगा। यह जातक पूर्व जन्म में शूद्र था, अगले जन्म में प्रेत योनि पायेगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न द्वितीय, चतुर्थ, षष्ठ अथवा अष्टम भाव में हो तो जातक क्रमशः शान्त, निर्धन शत्रुओं से भय पाने वाला, सुखी तथ सामान्य धनी होगा।

195.	**ल**	**सू**	**चं**	**मं**	**बु**	**गु**	**शु**	**श**	**रा**	**के**
	7	**7**	**12**	**6**	**7**	**9**	**8**	**10**	**9**	**3**

यह जातक दूसरे कर्म करने वाला, पापी, विरोधी राज्य से भय पाने वाला, मित्रों का सम्मान करने वाला, अनेक लोगों से सुख पाने वाला, पठन-पाठन का प्रेमी, स्त्रियों के उत्सवों में सम्मिलित होने वाला, शिल्पी, व्यसनी अधिक वाचाल, दुष्कर्म कर्ता, धन-भूमिवान आदि का सुख पाने वाला, सुन्दर, आभूषणों से युक्त, सबका निन्दक, विहित, कर्मों से पराङ्मुख, जीव-हिंसक, सुप्रसन्न, शत्रुजयी, दीन भावना उत्पन्न, शत्रुओं से भय पाने वाला, हाथ में पीड़ा, तेजस्वी, बान्धवों के लिए हानिकारक तथा चिन्ता-व्याकुलता आदि से युक्त होगा। इसका विवाह 20 वर्ष की आयु में होगा। अत्यन्त कटु स्वभाव तथा अर्श रोग वाली स्त्री के साथ इसका विवाह होगा। भाग्योदय 29/38 तथा 58 वर्ष की आयु में होगा। गृह, भूमि तथा पुत्रों का पूर्ण सुख मिलेगा। संतानें योग्य तथा विवेकवान होंगी। आषाढ़ शुक्ल चतुर्थी मंगलवार को 66 वर्ष की आयु में रक्त दोष के कारण घर पर ही इसकी मृत्यु होना संभव है। इसे 3/7/14/16/26/35/49 तथा 58वें वर्ष अरिष्टकारक सिद्ध होंगे। इन्द्राषी प्रयोग तथा मूंगा धारण करने से संकटों का निवारण होगा। वह जातक पूर्व जन्म में शूद्र था, तथा अगले जन्म में मधुमक्खी की योनि प्राप्त होगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा

यदि तृतीय, पंचम, षष्ठ सप्तम अथवा नवम भाव में हो तो जातक क्रमशः उद्यमी, साहसी, पुत्रवान तथा विद्यावान, तथा यात्रा करने वाला, सुन्दर स्त्री से युक्त, भाग्यहीन होता है।

196. | ल | सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 9 | 9 | 6 | 7 | 10 | 9 | 11 | 11 | 9 | 3 |

यह जातक बड़ा बुद्धिमान, मित्रों का हितैषी, धनी, स्वजनों से कोपयुक्त, संतोषी, स्त्री पक्ष से दुःख पाने वाला, धन-खर्च करने वाला, अंगहीन, शत्रुओं से बलहीन, पर कार्यकर्ता, अल्प कार्यकर्ता, धन-भूमि-वाहनादि से सुखी, उत्तम वस्त्राभूषणों का प्रेमी, परन्तु उनका भोग न करने वाला, अच्छे कामों में आलस्य न करने वाला, निषिद्ध कर्म करने से विमुख, विहित कार्मों में तल्लीन, शत्रुजयी, परन्तु उससे भय पाने वाला, दीन, भावापन्न, बाहु पीड़ा युक्त एवं भय, घबराहट तथा चिन्तामुक्त होता है। भाग्योदय में अनेक बाधाएँ आती हैं। इसका भाग्योदय 29 और 46वर्ष की आयु में होगा। विवाह 21 वर्ष की आयु में मध्यम कद वाली स्त्री से होगा। वह सामान्य वर्ण की तथा धार्मिक विचारों की होगी। चिकित्सा में धन खर्च होता रहेगा। सन्तान योग्य तथा धनी होगी। परन्तु केवल 1 पुत्र ही सेवा करेगा। इसकी मृत्यु 68 वर्ष की आयु में कार्तिक शुक्ल चतुर्दशी शनिवार को रात्रि के प्रथम प्रहर में, जलोदर रोग अथवा वीर्य दोष के कारण होना सम्भव है। ससुराल पक्ष उत्तम रहेगा। शत्रु प्रबल नहीं हो सकेंगे। जीवन के 5/8/18/30/43/56 तथा 62वें वर्ष हानिप्रद रहेंगे। यह पूर्व जन्म में शूद्र था तथा अगले जन्म में वैश्य होगा। वीरभद्र का पूजन तथा पन्ना धारण करना हितकर रहेगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा चतुर्थ, सप्तम, दशम अथवा द्वादश भाव में हो तो जातक क्रमशः भूमि का लाभ पाने वाला, स्त्री हीन, आलसी, पितृ-विरोधी तथा निरन्तर भ्रमणशील होता है।

197. | ल | सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 9 | 9 | 5 | 7 | 10 | 9 | 11 | 12 | 9 | 3 |

यह जातक स्वजन विरोधी, बुद्धिमान, अतिधनी, मित्रों का हितैषी, सन्तोषी, स्त्री-पक्ष से दुःखी, धन-खर्च करने वाला, अल्पकामी, शत्रुओं से भय पाने वाला, सुन्दर आभूषणों से युक्त, भूमि-वाहन को प्राप्त करने वाला, निषिद्ध-कर्मकर्ता-शुभकर्म करने में आलसी, गुणग्राही, परोपकारी, दीनभावापन्न, शत्रु नाशक, कटु, सत्यवादी, नाम-प्रिय तथा स्त्री की ओर से सदा दुःखी रहने वाला होगा। स्त्री की चिकित्सा में धन खर्च करता रहेगा। इसके पाँच पुत्र सुपुत्र होंगे, जिनमें दो इसकी सेवा करेंगे। इसका विवाह

18 वर्ष की आयु में होगा तथा 44 वर्ष की आयु में स्त्री–वियोग होगा। भाग्योदय 21/27/38 तथा 53वें वर्ष में होगा। पूर्ण आयु 71 वर्ष होगी। मार्गशीर्ष शुक्ल नवमी गुरुवार को मध्याह्न के समय जल विकार अथवा जल के कारण इसकी मृत्यु होना संभव है। जीवन के 1/5/16/29/48/58 तथा 68वें वर्ष हानिकारक रहेंगे। पुखराज धारण तथा लक्ष्मी पूजन करने से हित–साधन होगा। यह जातक पूर्व जन्म में उग्र क्रूरकर्मी ब्राह्मण तथा अगले जन्म में भी ब्राह्मण होगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि द्वितीय, पंचम, नवम अथवा एकादश भाव में हो तो यह जातक क्रमशः पूर्णधनी, विद्वान, सौभाग्यशाली और धर्मात्मा, अविवेकी होगा।

198. **ल सू चं मं बु गु शु श रा के**
11 11 5 1 12 10 12 12 8 2

यह जातक धनी, राज्यकर्मचारी, भोग–हीन, गुणज्ञ, दुर्बल शरीर वाला, स्त्रियों को मोहित करने वाला, चपल, जाति हितैषी, शठ, दुर्भावयुक्त, मित्र विहीन, मलिन द्वेषी, दया–रहित, सुखी, बाल्यावस्था में उदर एवं दन्त रोगी, निन्दक, पापी, कृष्णवर्ण, चंचल चित्त, नीच–संगति में रहने वाला, कुचाल–चालक, राजमान्य, साहसी, सबका सहायक, विकल पर स्त्री के धन का इच्छुक, व्यसन–रहित, कृतज्ञ, ब्राह्मणों का भक्त, देव पूजक, उत्तम स्त्रियों का प्रेमी, रोगी, कपटी, दानी, सुन्दर शरीर वाला, छोटे कद वाला, जांघ में कष्ट युक्त, जीव–हिंसक, शत्रुजित, कायर, अन्न आदि का नाश तथा कुटुम्ब विरोधी होगा। आगे चलकर यह डाकू अथवा लुटेरा भी बन सकता है। यह अत्यन्त प्रभावशाली होगा तथा प्रचुर धन संग्रह करेगा, परन्तु उस धन का उपभोग नही कर पायेगा। इसका विवाह 20 वर्ष की आयु में इससे भी अधिक योग्य शूर–वीर तथा साहसी महिला के साथ होगा। भाग्योदय 27 तथा 48वें वर्ष होगा। इसके पुत्र अधिक धनी तथा योग्य होंगे। पहले पुत्र की मृत्यु का इसे महान कष्ट होगा। इसके विराधी सदैव दबे रहेंगे। राज्य दण्ड का भी योग है, परन्तु सम्भवतः यह दण्ड से बच जायेगा। इसकी मृत्यु अनायास ही घर से बाहर 68 वर्ष की आयु में वैशाख शुक्ल द्वादशी शनिवार को मध्याह्न काल में शस्त्रघात से होना संम्भव है। जीवन के 3/7/10/18/31/48/52 तथा 63वें वर्ष अपमृत्यु एवं हानिकारक हैं। यह पूर्व जन्म में राज्यभ्रष्ट प्रतापी क्षत्रिय था, अगले जन्म में शूकर योनि प्राप्त करेगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, चतुर्थ, सप्तम अथवा दशम भाव में हो तो जातक क्रमशः परमशान्त, सुन्दर और विवेकी, पूर्ण कुटुम्बी

तथा गृह–भूमि युक्त, स्त्रियों का प्रिय तथा व्यवसायी एवं राज्य बन्धन पाने वाला तथा कुकर्मी होगा।

199. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
12 12 4 1 12 10 12 12 8 2

यह जातक रत्न एवं स्वर्णादि से पूर्ण कामेच्छुक, अत्यन्त दुर्बल, दीर्घकालिका चिन्तित, जड़मति, पर–स्त्री विलासी, पक्षिहन्ता, दुष्ट हृदय, कुरूप, धातु–विकारी, परदेशवासी, सदैव ऋण प्राप्ति का इच्छुक, क्षमावान, कुटुम्ब से दुःखी, लोभी, विवादी, अत्यन्त विकल, परधनेच्छुक, कृतज्ञ, रत्न भवन आदि से युक्त, नीतिज्ञ, धार्मिक, रोगी, कपटी, बलहीन, मलीन, प्रमुख पंच, छोटे कद वाला, प्रगल्भ, विद्वान, गुणी देवतीर्थानुरागी, कुटुम्ब–पालक, धन भोगी, शत्रुजित, ऐश्वर्यशाली, तेजस्वी, भुजा में पीड़ा वाला एवं व्याकुल चित्त वाला होगा। इसकी पत्नी अत्यन्त सुन्दरी तथा विलासिनी होगी। विवाह 24 वर्ष की आयु में होगा। पैतृक–धन का प्राप्त होने पर यह उसे नष्ट कर देगा, तत्पश्चात स्वभुजोपार्जित धन का संचय करेगा। पुत्रों की संख्या 4 से कम नहीं होगी, वे सभी योग्य पण्डित तथा आज्ञाकरी और इसकी सेवा करने वाले होंगे। शत्रु सदा प्रभावित एवं पराजित बने रहेंगे। परन्तु कुटुम्बियों के विरोध के कारण इसे गृह–हीन होना पड़ेगा। इसका भाग्योदय 26/38 तथा 54 वर्ष की आयु में होगा। मृत्यु 73 वर्ष की आयु में कार्तिक कृष्ण चतुर्थी शनिवार को होना संभव है। जीवन के 4/11/31/49/58/68 तथा 71वें वर्ष अपमृत्यु एवं हानिकारक सिद्ध होंगे। यह जातक पूर्व जन्म में शूद्र था तथा अगले जन्म में हरिण योनि को प्राप्त होगा। शनिवार का व्रत, पुखराज धारण एवं गाय का पूजन करने से अरिष्ट शान्त होंगे तथा अन्य लाभ प्राप्त होंगे। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि द्वितीय, पंचम, अष्टम अथवा एकादश भाव में हो तो यह जातक क्रमशः धनी और विवेकी तथा सत्कर्मशील, विद्वान एवं धर्मात्मा, जल अथवा अग्नि से भय पाने वाला तथा शीत रोगी होगा।

200. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
12 12 5 1 1 11 1 12 8 2

यह जातक व्यापारी व्यवसाय द्वारा अधिक धनी, सुखी, स्वजनों का काम करने वाला तथा उनसे भयभीत भी रहने वाला, राज्य द्वारा धन, मान तथा प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाला, स्वाभिमानी, कपटी, निन्दक, खोटे तथा कटुवाक्य बोलने वाला, अधिक भोजन करने वाला, लम्बोदर, दांत और उदर संबंधी पीड़ा से युक्त, साहसी, निर्दय, कठोर, शत्रुजयी, रोगी, गृह–वाहनादि से सम्पन्न, वैभवशाली, मायावी, दुर्बल, राज्य से धोखा पाने

वाला अथवा राजदण्ड प्राप्तकर्ता, द्रव्य सर्जक, अथवा काव्य संगीत प्रेमी, व्यवहार कुशल, द्विभार्या योग वाला तथा बाह्य जगत में सम्मान पाने वाला होगा। इसका पहला विवाह 17 वर्ष तथा दूसरा विवाह 23 वर्ष की आयु में होगा। तभी भाग्योदय होगा। स्त्री पहली तथा ससुराल दूसरी अच्छी मिलेगी। सन्तानहीन होने का योग भी है। कई संतानें नष्ट होंगी–भाग्यवृद्धि विशेष होगी। धन का पूर्ण सुख रहेगा। संतान प्राप्ति के लिए सतचण्डी विधान अथवा प्रेत–शान्ति प्रयोग करना आवश्यक है। बड़ी कठिनाई से एक सुयोग्य पुत्र प्राप्त होगा। पुखराज तथा मूंगा धारण करने, मंगलवार का व्रत रखने तथा मंगल ग्रह का पूजन–अनुष्ठानादि करने से अरिष्ट शांत होंगे तथा लाभ प्राप्त होगा। विरोधियों पर सदैव सफलता मिलती रहेगी। भाग्योदय के अन्य वर्ष 38/53 तथा 63 भी होंगे। मृत्यु अनायास ही होगी। शस्त्रघात के विषवर्द्धन के कारण 74 वर्ष की आयु में फाल्गुन कृष्ण सप्तमी रविवार को मध्याह्न काल में मृत्यु होना संभव है। यह जातक पूर्व जन्म में उग्रकर्मी क्षत्रिय था। इसने शूद्रवत् आचरण किया था। अगले जन्म में इसे मर्कट योनि प्राप्त होगी। इसके जीवन के 2/12/22/48/63 तथा 71वें वर्ष अपमृत्यु एवं हानिकारक सिद्ध होंगे। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि तृतीय, षष्ठ, नवम अथवा द्वादश भाव में हो तो यह जातक क्रमश: परमधार्मिक तथा उद्यमी, सुन्दर व स्वस्थ, भाग्यहीन एवं दरिद्री, कुकर्मी तथा वैभव विलास में अधिक धन खर्च करने वाला होगा।

201.	**ल**	**सू**	**चं**	**मं**	**बु**	**गु**	**शु**	**श**	**रा**	**के**
	2	**2**	**6**	**10**	**1**	**12**	**1**	**1**	**7**	**1**

यह जातक गुरुभक्त, प्रियभाषी, परमगुणी, बड़ा धनी, अधिक कृपण, बलवान, सर्वप्रिय, स्त्री–पुत्रादि की ओर से दुःखी, दीन स्वभावी, लाल नेत्र तथा अशोभन केशों वाला, ताँबे के व्यवसाय में लाभ पाने वाला, जितेन्द्रिय, अपने कुल की वृद्धि करने वाला, स्त्रियों का मन हरने वाला, विकल, सामान्य कद वाला, क्रोधी, ब्राह्मण तथा श्रेष्ठ जनों का भक्त, व्यसन–रहित, कृतज्ञ, हृदय रोगी, उचित दान करने में परांङ्मुख, भूमि लाभ–वाला, मन–ही–मन चिन्तन करने वाला, महापण्डित के समान चेष्टावान, अल्पगति युक्त तथा दुर्बल शरीर वाला होगा। यदा–कदा व्यवसाय में श्रेष्ठ लाभ भी होता रहेगा। परन्तु पारिवारिक व्यय की वृद्धि के कारण धन संचय कम हो पायेगा। इसका भाग्योदय विवाह के साथ ही 24वें वर्ष में होगा। ससुराल पक्ष श्रेष्ठ रहेगा। विरोधी उत्पन्न तो होंगे, परन्तु इसके प्रभाव के समक्ष कोई ठहर नहीं पायेगा। संतान की ओर से प्राय:

चिन्ता बनी रहेगी। समाज एवं राज्य के कार्मों में सफलता कम मिलेगी। इसके जीवन के 1/7/9/19/38/42/56 तथा 68वें वर्ष अरिष्ट कारक सिद्ध होंगे। पुत्रों में से कोई पास रह कर सेवा नहीं करेगा। स्त्री परम सुन्दर, धर्मात्मा तथा शीलवाली, इसकी मृत्यु 73 वर्ष की आयु में, वैशाख शुक्ल 15 सोमवार को अपराह्न काल में, भगवत् चिन्तन करते हुए, घर में ही होना संभव है। यह मनुष्य पूर्व जन्म में क्षत्रिय था तथा अगले जन्म में ब्राह्मण होगा। नीलम तथा पन्ना धारण करने, शुक्रवार का व्रत रखने एवं मंगलचारी का अनुष्ठान करने से अरिष्ट शांत होंगे तथा लाभ प्राप्त होगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि द्वितीय, पंचम, अष्टम अथवा एकादश भाव में हो तो यह जातक क्रमश: सामान्य धनी एवं जल से भय पाने वाला विद्वान् और विवेकी, तीर्थ में मृत्यु पाने वाला, पूर्णधनी तथा विविधार्थ भोगी होगा।

202.

ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
2	2	5	10	2	12	2	1	7	1

यह जातक पशुओं का सुख पाने वाला, दुर्बल शरीर वाला, सुन्दर वस्त्र धारण करने वाला, जितेन्द्रिय ठाट-बाट से रहने वाला, लाल नेत्रों वाला, तांबे के व्यवसाय से लाभ पाने वाला, जितेन्द्रिय, कुल की जय करने वाला, स्त्रियों का मन हरने वाला, भूमि से आजिविका प्राप्त करनेवाला, अत्यन्त क्रोधी, ब्राह्मण भक्त, पितृ भक्त, निष्पाप, कोमल शरीर वाला, अधिक रोमवाला, लम्बे केशों वाला, अधिक गौर वर्ण, हृदय रोगी, दान करने में परांमुख, परधन प्राप्त कर्ता, चांदी एवं सीसे का व्यपारी, धनी, अधिक वाचाल, अल्प गति युक्त, क्रोधी होने के साथ ही विवेकी तथा वंश का उद्धार करने वाला होगा। इसका विवाह 23 वर्ष की आयु में होगा तथा एक पुत्र को जन्म देने के बाद 29 वर्ष की आयु में स्त्री की मृत्यु हो जायेगी। विवाह के साथ ही इसका भाग्योदय भी होगा। भाग्योदय के अन्य वर्ष 34/46 भी होंगे। इसका पुत्र अपने पिता तथा नाना दोनों की संपति का अधिकारी होकर कीर्ति विस्तार रहेगा। परन्तु पुत्र के द्वारा इसे संतोष प्राप्त नहीं होगा। राज्य सम्मान तथा शत्रुओं का अभाव रहेगा। धन की स्थिति सामान्य रहेगी। तांबे तथा श्वेत वस्तुओं के व्यवसाय से अच्छा लाभ होगा।

इसके जीवम के 1/7/13/19/28/53 तथा 64वें वर्ष अपमृत्यु कारक रहेंगे। इसकी मृत्यु 68 वर्ष की आयु में श्रावण शुक्ल त्रयोदशी सोमवार को रात्रि के तीसरे पहर में आन्त्रशोथ के कारण होना संभव है। नीलम तथा लहसुनियां धारण एवं बुधवार का व्रत एवं कुबेर पूजन उसके लिए अरिष्ट निवारक एवं लाभकारी रहेंगे। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, चतुर्थ,

सप्तम अथवा दशम भाव में हो तो जातक क्रमशः परम सुन्दर स्त्री विरोधी, पूर्ण कुटुम्बी, एवं सुखी, पर स्त्री भोगी तथा राज्य तुल्य होगा। यह जातक पूर्व जन्म में वैश्य था, तथा अगले जन्म में ब्राह्मण होगा।

203. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
6 6 4 10 6 12 6 1 7 1

इस कुण्डली वाला जातक शास्त्रज्ञ, सौभाग्यशाली, गुणवान, सुन्दर, सूरत प्रिय, अत्यन्त धनी, कम बोलने वाला, मातृ पक्ष से धन पाने वाला, नीरोग, शत्रुजित, योगशील, स्वजनों का हितैषी, सजातियों का हित, दुर्बल स्त्री का पति, विलासी, सत्कर्मा, दृढ़ शरीर वाला, जितेन्द्रिय कालजयी, स्त्रियों को मोहित करने वाला, भूमिजीवी, क्रोधी, बुद्धिमान, सुन्दर, प्रियदर्शी, पण्डित, मन्दगामी, अभिमानी, राजतुल्य, मृदुभाषी, कभी-कभी मुख रोगी, मिथ्यावादी सत्कारकर्ता, लघुकेशी, धन-रक्षक तथा दुष्ट वंशी होगा। धन विवेक, विद्या, बुद्धि, आचार, विचार, गृह, भूमि, सम्मान, वैभव, राज्य में प्रतिष्ठा आदि का उत्तम सुयोग प्राप्त होगा। उसकी पत्नी परम सुन्दरी, पति परायण, सुशिक्षिता, सुशीला, धार्मिका, परन्तु प्रायः रुग्णा होगी। इसका विवाह 20 वर्ष की आयु में होगा। सन्तानों में कन्याओं की संख्या अधिक रहेगी। परन्तु इसका एक ही पुत्र वंश-यश-विस्तारक, पितृभक्त तथा विनम्र होगा। इसके जीवन के 1/11/28/31/49/62/73 एवं 77वें वर्ष अरिष्ट एवं अपमृत्यु कारक होंगे। गोमेद धारण करने, सप्तमी का व्रत रखने तथा लक्ष्मीजी का पूजन करने से अरिष्ट दूर होंगे, तथा लाभ प्राप्त होगा। यह पूर्व जन्म में धार्मिक क्षत्रिय था तथा अगले जन्म में प्रथम योनि प्राप्त करके उत्तम भोग भोगेगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि द्वितीय पंचम, अष्टम अथवा एकादश भाव में हो तो यह जातक क्रमशः सामान्य धनी, अधिक पुत्रों का पिता, जल अथवा विष से मृत्यु पाने वाला तथा सामान्य प्रतिष्ठित होगा।

204. ल सू चं मं बु गु शु श रा के
8 8 11 10 8 12 9 1 7 1

यह जातक महाबली, धर्मवान, पण्डित, कुलप्रधान, बुद्धिमान, सबका पालक, कलही, विष, शस्त्र एवं अग्नि से भय पाने वाला, माता-पिता का विरोधी, उन्नति रहित, पराक्रमी, स्त्री सुखी, स्वजनों से प्रतिकूल, धनी, परिश्रमी, राज्य का सलाहकार, सुन्दर शरीर वाला, दानी, अच्छे स्थान का निवासी, प्रसन्नचित्त, स्त्री-पुत्रादि से युक्त, शीलवान, शत्रुओं से दुःखी, रोगी, विकल उद्वेगी, वातरोग-पीड़ित, दुर्बल, परदेशवासी योग्यजनों से पूजित, दीर्घायु, ग्रामाधिपति, राज्य द्वारा पुरस्कृत, अल्पभाषी, निर्लज्ज,

स्वतन्त्र, सभासद एवं दयालु होगा। शत्रुओं पर तथा मुकद्दमों में सदैव सफलता प्राप्त करेगा। पैतृक-धन की अपेक्षा अपनी भुजाओं से भी धनोपार्जन कर, उसका संचय करेगा। इसका धन सत्कर्म तथा तीर्थयात्रा में व्यय होगा। विद्या सम्पन्न सुयोग्य तथा सत्पात्र प्राप्त होंगे। इसका विवाह 25 वर्ष की आयु में परम सुन्दरी, विवेकयुक्ता एवं पतिपरायण स्त्री के साथ होगा। भाग्योदय 21/38 तथा 53वें वर्ष में होगा तथा जीवन के 1/7/17/28/32/51/58 एवं 66वें वर्ष अपमृत्यु तथा शरीर पीड़ा कारक रहेंगे। इसकी मृत्यु 68वें वर्ष में फाल्गुन शुक्ल चतुर्थी गुरुवार को अपराह्न काल में व्रण अथवा विशूचिका रोग से होना संभव है। वह पिछले जन्म में क्षात्र धर्म युक्त शूद्र तथा अगले जन्म में अधिक बधिक होगा।

नीलम तथा पुखराज धारण, चतुर्थी व्रत एवं चन्द्रदेव का पूजनानुष्ठान हितकर रहेंगे। इस कुण्डली में चन्द्रमा चतुर्थ, सप्तम अथवा दशम भाव में हो तो जातक क्रमशः लम्पट, कुटुम्बहीन, स्त्री प्रेमी एवं राजतुल्य सुखी तथा सम्माननीय होगा।

205.	**ल**	**सू**	**चं**	**मं**	**बु**	**गु**	**शु**	**श**	**रा**	**के**
	3	**3**	**9**	**5**	**3**	**5**	**3**	**3**	**4**	**10**

इस जातक के जन्म के समय से पिता के सम्मान में वृद्धि होगी। इस व्यक्ति को 2 वर्ष की आयु में ज्वर पीड़ा तथा दंत पीड़ा, 3 वर्ष वर्ण, अग्नि भय तथा अकस्मात ऊंचाई से गिर कर चोट लगने की संभावना रहेगी। 5 से 7 वर्ष की आयु में घर में मंगल कार्य होंगे तथा बालक विद्या पढ़ना आरम्भ करेगा एवं गुरु भक्त होगा, कोई सामान्य कष्ट भी होगा। माता-पिता चिन्ताकुल होंगे, 8 से 16 वर्ष की आयु में विद्या की वृद्धि विवाहोत्सव तथा नवयौवनाओं द्वारा घर में मंगल गान होंगे। 17 से 25 वर्ष की आयु में विवाह होंगे फिर स्त्री गर्भवती होगी तथा अल्पजीवी बालक को जन्म देगी। पंचमेश ग्रह (शुक्र) की पूजा तथा सन्तान गोपाल मन्त्र के जप से सन्तान सुख प्राप्त होगा। 26 से 30 वर्ष की आयु में घर में किसी वृद्ध की मृत्यु होगी। धन व्यय होगा। राज द्वारा धन सम्मान की प्राप्ति होगी तथा पुत्र लाभ का ह्रास होगा। 31 से 36 वर्ष की आयु में किसी पर स्त्री से प्रेम होगा। धन वृद्धि तथा अनेक लाभ होते रहेंगे। राजद्वार से लाभ तथा यश की वृद्धि होगी। फिर अकस्मात दुःख तथा परदेश में भय की प्राप्ति होगी। कष्ट भी होगा। महामृत्युंजय तथा आयुद्धारण मंत्र का जप करने से सब कष्ट दूर होंगे तथा सुख प्राप्त होगा। 37 से 44 वर्ष की आयु में कुल दीपक पुत्र का लाभ होगा। अनेक कार्यों के उद्यमों से आनंद की वृद्धि होगी तथा राजद्वार

से विशेष लाभ मिलेगा। भूमि एवं नवीन गृह का लाभ होगा। बगीचा तथा कुआं या जलाशय बनेगा। 45 से 50 वर्ष की आयु में पौत्र का जन्म होगा। तथा सब स्थानों से लाभ होगा। पुण्य प्रभावों से चित्त की वृत्तियां बदलेंगी। किसी समय रात्रि में चोरों का घर में प्रवेश होगा परन्तु धन की हानि नहीं होगी। दूध देने वाली गाय–भैंस, पुत्र आदि का सुख होगा। 51 से 60 वर्ष की आयु में पुत्र की संतान (पौत्र) का लाभ, पुनः होगा। 61 वर्ष की आयु में प्रपौत्र का लाभ होगा। फिर वृद्धावस्था के कारण भूख में कमी तथा शरीर में दुर्बलता आयेगी, उस समय सोंठ, काला नमक तथा हरड़ का सेवन करना हितकर रहेगा। 62/68 वर्ष की आयु के बीच आश्विन कृष्ण पंचमी को देहावसान होना संभव है। यह जातक विद्या, विनय सम्पन्न, तेजस्वी तथा धनवान होगा एवं प्रभु कृपा से मोक्ष प्राप्ति के साधन उपलब्ध करेगा। पिछले जन्म में शूद्र कुल में उत्पन्न होकर इसने अनेक पाप किये थे। पाप कर्मों से धन कमाया तथा तीर–कमान से अनेक पक्षियों का वध कर उनका मांस सेवन किया। उन पक्षियों के शाप के कारण, इसके पुत्र सुख में न्यूनता रहेगी। एक लाख गायत्री मन्त्र का जाप करने, ब्राह्मणों को विधिपूर्वक दान देकर भोजन कराने तथा पक्षियों को दाना डालने से इसे पुत्र सुख मिलेगा।

206.	ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
	8	8	1	4	8	7	8	4	3	6

यदि तुलाराशि में गुरु, कर्क राशि में शनि, मिथुन राशि में राहु तथा धनु राशि में केतु हो तामसनामक योग होता है। इस जातक में जन्म से दो वर्ष तक घर में अनेक प्रकार में मंगल–उत्सव हो तथा बालक सुखी और क्रीड़ा निमग्न बना रहेगा। शरीर में एक तरह का कष्ट भी होगा, जो उपचार से शान्त हो जाएगा। 3 से 5 वर्ष तक सुयत्न से कल्याण होगा तथा 10 वर्ष की आयु तक बालक की वृद्धि होती रहेगी। विद्याध्ययन में कम तथा खेल कूद में मन अधिक लगेगा। 11 से 19 वर्ष की आयु में कुल चिन्ता, विवाह तथा मंगल कार्यों का योग है। 20 से 25 वर्ष की आयु में जातक को कन्या तथा पुत्र प्राप्ति हो। आनन्द तथा अन्य वस्तुओं का लाभ होगा। मान–प्रतिष्ठा में वृद्धि हो। आनन्द वैभव बढ़े। अयत्न से चिन्ताएं उत्पन्न हों। अनेक क्लेश प्राप्त हों। 26 से 30 वर्ष की आयु में विशेष सुख मिले। धन–धान्य पुत्रादि का लाभ हो। कीर्ति बढ़े। भूमि तथा रत्न का लाभ हो। मान–वृद्धि हो। 31 से 35 वर्ष की आयु में घर में मंगल कार्य हों। धन–वृद्धि हो, विशेष कर राज द्वार से लाभ हो। कन्या तथा पुत्र के विवाह में खर्च हो। 36 से 45 वर्ष तक सुख एवं सौभाग्य की वृद्धि हो। सब चिन्ताओं का नाश हो। अयत्न

करने पर वात–पीड़ा हो। कन्या तथा पुत्र का जन्म हो, पत्नी से प्रेम बढ़े। पर स्त्री से भी प्रेम होना संभव है। नवीन स्त्रियों के रूप–यौवन में विह्वल रहें। 46 से 55 वर्ष की आयु में राजद्वार से विशेष लाभ हो तथा कीर्ति बढ़े। फिर अचानक दुःख प्राप्त हो तथा विदेश में विशेष भय हो। तांबे के कलश में घी भर कर उसमें गुप्त रूप से स्वर्ण रख कर यथाविधि ब्राह्मण को दान करने से कष्ट दूर हो। 56 से 64 वर्ष की आयु में चिन्ता दूर हो तथा स्त्री–पुत्रों में रति रहे। लाभ से व्यय अधिक रहे। विवाह आदि उत्सवों में धन खर्च हो। दुधारू पशुओं का सुख प्राप्त हो। महान कीर्ति मिले। भूख कम लगे तथा शरीर निर्बल हो। फिर रोग मुक्ति। देवाराधना करने से पुत्र एवं पौत्र के सुख में वृद्धि हो। 65 से 68 वर्ष की आयु में देश भक्ति तथा तीर्थ यात्रा हो। श्वास–कास तथा शरीर काम आदि का कष्ट हो। 69 वर्ष की आयु में निर्धन होना संभव है। आश्विन, कृष्ण पंचमी को देहावसान हो। हे पुत्र! पुण्य प्रभाव से यह जातक अगले जन्म में ब्राह्मण कुल में उत्पन्न होकर विद्वान, विनयी, तेजस्वी, पवित्र तथा धर्मात्मा होगा एवं शुभ कर्मों के फलस्वरूप मोक्ष पायेगा। हे शुक्र! पूर्व जन्म में भी यह जातक एक तीर्थ क्षेत्र का निवासी तथा परम धनवान था। यह बड़ा दानी तथा विष्णु भक्त था, परन्तु एक बार इसने क्रोधावेश में एक निरपराध वैश्य को मारा था, उस पाप से इस जन्म में इसे कुछ कष्ट भी उठाने पड़ेंगे। उस पाप का प्रायश्चित्त करने के लिए इसे एक स्वर्ण पत्रक पर ब्राह्मण का चित्र अंकित कर विधि पूर्वक पूजन करने के उपरान्त किसी ब्राह्मण को दान करना चाहिए। इस दान के प्रभाव से पूर्व जन्म के पाप का प्रायश्चित्त हो जायेगा तथा सब प्रकार के सुखों की प्राप्ति होगी, धन, स्त्री, पुत्रादि का भी लाभ होगा।

207.

ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
10	10	10	3	10	7	10	3	3	9

इस जातक की आयु के प्रथम वर्ष में नेत्र पीड़ा तथा द्वितीय वर्ष में दन्त पीड़ा होगी तथा तीन–चार वर्ष की आयु में भाई अथवा बहन का जन्म हो, माता को पीड़ा तथा पिता के चिन्ता के साथ ही धन लाभ एवं भूमि लाभ होगा। पांचवें, आठवें वर्ष की आयु में विद्या आरम्भ तथा विद्या में मंगल कार्य होगा। व्रण की बीमारी होगी जो औषधोपचार से शान्त होगी। पिता को दिन–प्रतिदिन धनयादि का लाभ होगा, 9 से 16 वर्ष की आयु में पिता के चित्त में गुप्त चिंता तथा खेद होगा, परन्तु धन एवं कीर्ति में वृद्धि होगी, कुछ शारीरिक कष्ट भी होगा जो स्वयं ही शान्त होगा। 17 से 24 वर्ष की

आयु में पिता का पूर्व संचित धन विवाह आदि मंगल कार्यों में व्यय होगा। उन्हीं दिनों कुटुम्ब में किसी वृद्ध की मृत्यु हो। 25 से 32 वर्ष की आयु में, जातक की पत्नी गर्भवती होगी, तथा दीर्घायु पुत्र का लाभ होगा। पंचमेश ग्रह का पूजन तथा जप दान कराने से पुत्र का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। एक शत्रु भी उत्पन्न होगा। राजद्वार से विजय हो तथा शत्रु का नाश होकर दिन-दिन धन की वृद्धि हो। 33 से 39 वर्ष की अवधि में धन की वृद्धि हो तथा मंगल कार्यों में व्यय भी हो। विवाह, भवन, कूप, बगीचा, आदि का निर्माण हो। घर में किसी वृद्ध को कष्ट हो तो औषधोपचार से दूर न हो सके, राजद्वार से पहले थोड़ा भय, बाद में लाभ हो। वाहन आदि के सुख तथा गुप्त धन की प्राप्ति हो। 40 से 48 वर्ष की आयु में मान-कीर्ति, ज्ञान तथा बुद्धि की वृद्धि हो। पुत्र-पौत्र का सुख प्राप्त हो। देवाराधना करते रहने से कष्ट रोग दूर हो। कूप, उपवन सहित नवीन भवन का निर्माण हो। विवाहादि उत्सव कार्यों में धन व्यय हो। रत्न, वस्त्र, आभूषणादि का लाभ हो, बहुत दान भी दे। ब्राह्मण की कन्या के विवाह में धन, खर्च करे। 56 से 63 वर्ष की आयु में पुत्र-पौत्रादि का सुख हो तथा धर्म-कर्म में धन खर्च करने के कारण देश में सर्वत्र कीर्ति प्राप्त हो। फिर सब कामों को त्यागकर सदैव देवाराधना में लगा रहे। रात-दिन अहिंसा में प्रीति रहे। 64 से 68 वर्ष की आयु तक तीर्थों में देव-दर्शन कर पुण्य अर्जित करे। फिर शरीर में कष्ट, श्वास कास, काम आदि की पीड़ा हो। चिन्तित रहे। 69 वर्ष की आयु में विशेष कष्ट हो तथा किसी पुण्य क्षेत्र के निकट देह-त्याग करे। पिछले जन्म में यह शूद्र कुल में जन्मा था। वहां इसने बड़े-बड़े पाप किये तथा अपने भोजन के लिए अनेक पक्षियों का वध किया। उस पाप के कारण इस जन्म में यह प्रायश्चित्त न करने पर यह पुत्र सुख से वंचित रहेगा। एक लाख गायत्री मंत्र का जाप कराके ब्राह्मणों को दान दे तथा भोजन कराये तो इस अनुष्ठान से प्रायश्चित्त होकर इसके पाप नष्ट होंगे तथा पुत्र-सुख की प्राप्ति होगी।

208.	ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
	1	1	4	4	1	7	2	3	2	8

इस जातक के तुला राशि में गुरु, वृष में राहु, मिथुन में शनि तथा वृश्चिक में केतु होने पर, 'चाल्यसार' योग होता है। इसके अनुसार इस जातक को पहले तथा दूसरे वर्ष में दन्त रोग तथा ज्वर पीड़ा होती है। तीसरे वर्ष में ज्वर व्याधि तथा माता को कष्ट होता है, जो औषधोपचार से शान्त होगा। उन्हीं दिनों पिता को अकस्मात लाभ भी होगा। शरीर को थोड़ा कष्ट होगा, जो कि घृत दान करने से दूर हो सकेगा। 5 से 8 वर्ष की आयु में

विद्यारम्भ तथा पिता को लाभ, सहोदर प्राप्ति का योग है। कुछ अरिष्ट भी संभव है, जो तुलादान से दूर हो जायेगा। 9 से 16 वर्ष की आयु में घर में मंगलगान हो। विवाहोत्सव, वस्त्र–आभूषण आदि में पिता का धन खर्च होता है। नवीन स्त्रियों से गमन करता है। विद्या एवं राजद्वार से सम्मान में वृद्धि होगी। 17 से 24 वर्ष की आयु में राज्य से सम्मान की प्राप्ति होगी एवं धन का लाभ भी होगा। स्त्री गर्भवती होगी तथा पुत्र का जन्म होगा। स्त्री को कोई बिमारी भी होगी जो औषधोपचार से दूर होगी। महामृत्युंजय का जप तथा शिवार्चन करना हितकर रहेगा। उससे रोग–शान्त होकर, सुख प्राप्त होगा। इसी अविधि में धन तथा मान की वृद्धि होगी। 25 से 33 वर्ष की आयु में संयोग से एक बचपन के मित्र से मुलाकात होगी। तथा उस मित्र की संगति से किसी नगर की यात्रा तथा धन का लाभ होगा। 34 से 45 वर्ष की आयु में किसी मृगनयनी सुन्दरी स्त्री से प्रेम होगा। उसी प्रेम के कारण कई नये शत्रु उत्पन्न होंगे एवं आपको चिन्ता बनी रहेगी। भगवती अनुष्ठान से शत्रु शान्त हो सकेंगे। अनेक प्रकार से लाभ, भूमि की उपलब्धि तथा नवीन भवन का निर्माण होगा। बगीचा तथा जलाशय का निर्माण करवायेंगे। दास–दासी, चतुष्पद एवं वाहन का सुख प्राप्त होगा। 56 से 62 वर्ष की आयु में पौत्र का जन्म होगा। महान उत्सव होगा। अधिक–से–अधिक लाभ होगा। पुण्य एवं धार्मिक कार्यों में अधिक चित्त लगेगा। किसी समय रात्रि में चोर के आगमन का भय तो हो परन्तु धन हानि न होगी। दूध देने वाली सुन्दर गाय, मनोहर स्त्री तथा पुत्र का लाभ होगा। 63 से 66 वर्ष की आयु में पुण्य से भाग्य वृद्धि हो, पुत्र–पौत्रादि आनन्दित रहें, कीर्ति अधिक बढ़े। धंधा कम होकर, शरीर कृश हो। 69 वर्ष में आयु पूर्ण हो, तथा आश्विन कृष्ण, पंचमी को पंचतत्त्व अलग–अलग हो। यह जातक अगले जन्म में ब्राह्मण कुल में उत्पन्न होगा तथा दान–मंत्र जप भक्ति एवं पुण्य के प्रभाव से मोक्ष प्राप्त करेगा। पिछले जन्म में यह व्यक्ति शूद्र कुल में उत्पन्न हुआ था। यह गुणी तथा धनवान था। एक बार इसने एक गर्भवती स्त्री को मारकर भोजन किया था। उस पाप के प्रभाव से यह दुःखी होगा तथा सन्तान एवं भाई–भतीजों के सम्बन्ध में कष्ट पायेगा। इसके शरीर में बारम्बार वात पीड़ा होगी।

तीस पल भारी तांबे का पत्र बनवाकर, उसमें नवमण्डल बनाएं तथा तीन पल स्वर्ण की सव श्वाससारिणी बनवाकर उसे ताम्र पत्र पर स्थापित कर तथा यथाविधि पूजनादि करके, आसन पर बैठे पंच बीजाक्षर मन्त्र का

जप करें। फिर उस हिरणी तथा ताम्र पत्र को 6 पल चांदी सहित किसी सुपात्र ब्राह्मण को दान कर दे तो पापों का प्रायश्चित्त होकर सब कष्टों से छुटकारा मिलेगा, तथा आनन्द की वृद्धि होगी।

ग्रहों का परिचय

नवग्रहों का सामान्य परिचय, उनके गोचर फल, राशिगत प्रभाव, दोषपूर्ण प्रभाव तथा पीड़ा निवारण के उपाय आदि के विषय में क्रमश: निम्नानुसार समझना चाहिए।

सूर्य

श्री मद्भागवत के अनुसार पृथ्वी तथा स्वर्ग के मध्य जो स्थान ब्रह्माण्ड का है, वही सूर्य की स्थिति है। सूर्य तथा ब्रह्माण्ड मण्डल के मध्य सब ओर पच्चीस करोड़ योजन का अन्तर है। अर्थात सूर्य से सब ओर पच्चीस करोड़ योजन की दूरी तक ब्रह्माण्ड गोलक की सीमा है। इस अचेतन अण्ड में सूर्य 'वेराज' रूप में प्रतिष्ठित है, इसलिए सूर्य को मार्तण्ड नाम से भी सम्बोधित किया जाता है। सूर्य के द्वारा ही आकाश, दिशा, अन्तरिक्ष लोक, भूलोक, स्वर्ग लोक, नरक रसातल तथा अन्य लोक एक दूसरे से विभाजित रहते हैं।

सूर्य की माता का नाम अदिति है, इसी कारण सूर्य को आदित्य भी कहा जाता है। अदिति दक्ष प्रजापति की पुत्री तथा महर्षि कश्यप की पत्नी थीं। सूर्य की दो पत्नियां संध्या तथा छाया हैं। छाया नामक पत्नी के गर्भ से शनिश्चर का जन्म हुआ, इस प्रकार सूर्य शनिश्चर के पिता हैं। शनिश्चर भी एक गुट के रूप में अवस्थित हैं। तथा अपने पिता सूर्य की भांति ही अत्यन्त शक्तिशाली है।

सूर्य अपने मार्ग पर चलते हुए दिन–रात को छोटा–बड़ा करते रहते हैं। सूर्य जब मेष तथा तुला राशि में भ्रमण करते हैं तब दिन–रात बराबर के होते हैं। जब वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या राशि में संक्रमण करते हैं, तब प्रतिमास की रात्रि में एक–एक घड़ी अर्थात इन महीनों की रात्रि क्रमश: प्रत्येक दो–दो–पल कम होती चली जाती है। सूर्य जब वृश्चिक राशि, धनु, मकर, कुंभ, तथा मीन राशियों में भ्रमण करते हैं। तब प्रतिमास एक–एक घड़ी दिन घटता जाता है।

सूर्य पृथ्वी से लगभग सवा करोड़ मील की दूरी पर स्थित है। यह पृथ्वी से लगभग तेरह लाख गुना अधिक बड़ा है। इसका व्यास पृथ्वी से 109 में 5 गुना अधिक है। तथा भार तीन लाख तीस हजार गुना अधिक है। इसका

जन्म कुण्डली में विभिन्न भावों में स्थित सूर्य अपने दोषी प्रभाव को निम्नानुसर प्रकट करता है–

1. यदि सूर्य जन्म नक्षत्र का स्वामी हो तो वह जातक के लिए हानिकारक होता है।

2. यदि सूर्य अपने नक्षत्र कृत्तिका, उत्तरा फाल्गुनी, उतराषाढ़ा को पूर्ण दृष्टि से देख रहा हो तो भी हानिकारक होता है।

3. यदि सूर्य अपने भाव से अष्टम स्थान में स्थित हो तो हानिकारक होता है।

4. यदि सूर्य लग्न में बैठा हो तो स्थिर तथा सन्तान को कष्ट एक अल्प सन्तति दायक एवम जातक को क्रोधी, अल्पकेशी, कृश शरीर तथा पित्त–वात रोगी बनाने वाला होता है।

5. यदि सूर्य द्वितीय भावस्थ हो तो जातक के नेत्रों के लिए हानिकारक, धन प्राप्ति में बाधक तथा, नौकरी में अनेक कठिनाइयाँ उत्पन्न कराने वाला होता है। वह जातक को मुख रोगी–नेत्र रोगी–कर्ण रोगी–दन्त रोगी भी बनाता है।

6. यदि सूर्य चतुर्थ भाव में हो तो राजयज्ञ योग कारक तथा जीविकोपार्जन में विघ्न उपस्थित करने वाला तथा चिन्ता ग्रस्त बनाए रखने वाला होता है।

7. यदि तृतीय भाव में हो तो भाइयों, विशेषकर बड़े भाई के लिए हानिकारक होता है।

8. यदि पंचम भाव में हो तो जातक रोगी तथा शीघ्र क्रोधी, दुःखी, वंचक एवं अल्प संततिवान होता है।

9. यदि षष्ठ भाव में हो तो जातक के मामा को कष्ट होता है।

10. यदि सप्तम भाव में हो तो जातक चिन्तित, राज्य द्वारा अपमानित, कठोर स्वभाव वाला, स्त्री के लिए क्लेश कारक तथा स्वयं के स्वास्थ के लिए हानिकारक होता है।

11. यदि अष्टम भाव में हो तो जातक पित्त रोगी, चिन्तातुर एवं निर्बुद्धि होता है।

12. यदि सूर्य एकादश भाव में हो जो जातक उदर रोगी, अल्प सन्ततिवान एवं सन्तान के सम्बन्ध में चिन्तित बना रहने वाला होता है।

13. यदि द्वादश भाव में हो तो जातक के बायें नेत्र में कष्ट होता है, और वह कृष शरीर तथा आलसी होता है।

में रत्न (माणिक्य) को इस प्रकार जड़वाना चाहिए कि अंगूठी में रत्न का निम्न भाग अंगुली की त्वचा का स्पर्श करता रहे। रविवार के दिन जब पुष्य नक्षत्र हो, तब प्रात: 9-12 बजे के बीच माणिक्य जड़ित अंगूठी का निर्माण कार्य आरम्भ करना चाहिए। पुष्य नक्षत्र के अभाव में उत्तराषाढ़ा अथवा उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र वाले रविवार को भी अंगूठी बनवाई जा सकती है। स्वर्ण के अभाव में माणिक्य जड़ित अंगूठी ताँबे में भी बनवाई जा सकती है। माणिक्य के अभाव में लालड़ी, षड्माणिक, माणिक सिंगली संग सिन्दूरियाँ, संग टोपाज, संग आतसी, कंटाकिस अथवा तामड़ा को भी जड़वाया जा सकता है। ये उपरत्न माणिक्य से क्रमश: कम प्रभावशाली होते हैं। माणिक्य अथवा अन्य किसी उपरत्न को अंगूठी में जड़वाने से पूर्व उसके निर्दोष होने की परीक्षा कर अथवा करा लेनी चाहिए क्योंकि दोषी रत्न लाभ के स्थान पर हानि पहुँचाने वाला सिद्ध होता है।

अंगूठी के तैयार हो जाने पर उसके रत्न को, **ऊँ ह्रीं हंसः सूर्याय नमः**–इस मन्त्र से अभिमन्त्रित करना चाहिए। फिर पूजन तथा हवन करना चाहिए। पूजन तथा हवन के लिए प्रात: 10 बजे का समय सर्वश्रेष्ठ माना गया है। सवा पांच तोले का सूर्यासन बनवाकर उस पर दो मासा वजनी सूर्य की स्वर्ण मूर्ति प्रतिष्ठित करें, फिर रत्न जड़ित अंगूठी को भी सूर्यासन पर रखकर अंगूठी तथा सूर्य–मूर्ति का षोडशोपचार पूजन करें तथा पूर्वोक्त मन्त्र द्वारा अंगूठी को अभिमन्त्रित करें। कर्मकाण्ड करने वाले ब्राह्मण को उचित है कि वह सर्वप्रथम **ऊँ ह्रीं हंसः सूर्याय नमः-** इस मंत्र से अंगूठी तथा यजमान को अभिमंत्रित कर, अंगूठी के रत्न में, सूर्य की प्राण–प्रतिष्ठा करें, तदुपरान्त हवन–पूजन आदि कृत्य करायें। (सूर्य मंत्र का स्वरूप आगे देखें)

उक्त कर्मों की समाप्ति के बाद यजमान को उचित है कि वह सूर्यासन, सूर्य मूर्ति, तथा सूर्य के दान की वस्तुओं को एक छोटे से माणिक्य के साथ कर्मकाण्ड करवाने वाले ब्राह्मण को दान कर दें तथा स्वयं माणिक्य अथवा उपरत्न जड़ित अंगूठी को अपने दायें हाथ की अनामिका में धारण करें। इस प्रकार विधिपूर्वक धारण की गई अंगूठी सूर्यकृत दोषों का परिहार करके मनोवांछित फल प्रदान करती है। माणिक्य अथवा उपरत्नों के अभाव में चाँदी के सूर्य अथवा बिल्वपत्र की जड़ को धारण करना भी हितकर रहता है।

माणिक्य अथवा सूर्य के पूर्वोक्त अन्य उपरत्नों का प्रभाव अंगूठी में जड़वाने के दिन से 4 वर्ष तक बना रहता है। तत्पश्चात उसका प्रभाव क्षीण

हो जाता है। अत: प्रति 4 वर्ष बाद नये रत्न वाली अंगूठी बनवा कर पूर्वोक्त विधि से धारण करनी चाहिए तथा पुराने रत्नों और अंगूठी को बेच अथवा दान कर देना चाहिए। अन्य व्यक्ति के पास पहुँचकर पुराना रत्न पुन: 4 वर्ष के लिए प्रभावकारी हो जाता है। इसी प्रकार हर 4 वर्ष बाद नये व्यक्ति के पास पहुँचते रहने से वह निरन्तर प्रभावकारी बना रहता है।

4. मन्त्रोपचार–यदि दान अथवा माणिक्य धारण करना संभव न हो तो आगे लिखे किसी भी मन्त्र को निश्चित संख्या में स्वयं जप करते रहने से भी सूर्यकृत अनिष्ट दूर होते हैं। यदि स्वयं मन्त्र जप कर पाना सम्भव न हो तो किसी सुयोग्य ब्राह्मण से मन्त्र–जप कराना चाहिए।

(1) **"ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्मृतं मत्यच। हिरण्येनसविता रथेना देवो याति भुवनानि। पश्यन्। सूर्याय नमः"**– इस मन्त्र की जप संख्या 7000 है।

(2) **"ॐ रं रवये नमः"**–यह सूर्य का लघु मन्त्र है। इसकी जप संख्या 7000 है।

(3) **"जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्। तमोऽरिं सर्व पापघ्नं प्रणतोस्मि दिवाकरम्"**–इस मन्त्र का यथाशक्ति संख्या में नित्य जप करना चाहिए। स्नान तथा दान के समय भी इस मन्त्र का जप या उच्चारण शुभ फलदायक रहता है।

(4) **"ॐ ह्रीं ह्रीं सः सूर्याय नमः ह्रीं"**– इस मन्त्र की जपसंख्या भी 7000 है।

5. **अन्य उपाय**–(1)यदि सूर्य सन्तान पक्ष के लिए बाधाकारक हो तो 'हरिवंशपुराण' सुनना हितकर रहता है। (2) सूर्यकृत दोष के शमनार्थ रविवार का व्रत करना भी हितकर रहता है। (3) साम्ब पुराण में वर्णित 'सूर्य स्तोत्र' का नित्य पाठ करने से मनुष्य समस्त पाप तथा बंधनों से छूटकर आरोग्य एवं मुक्ति प्राप्त करता है। (4) सूर्य प्रात: स्मरण स्तोत्र 'सूर्याष्टक' सूर्य मण्डलाष्टक, तथा त्रैलोक्य मंगल सूर्य कवच का तीनों संध्या काल में पाठ करने वाला व्यक्ति रोग, दोष एवं भूत–प्रेतादि की बाधाओं से मुक्त होकर अभीप्सित फल प्राप्त करता है। "त्रैलोक्य मंगल सूर्य कवच" को गोरोचन, कुंकुम तथा अगर द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखकर संक्रान्ति अथवा सप्तमी तिथि वाले रविवार को त्रिलोह के ताबीज में भरकर दायीं भुजा (स्त्री के लिए बायीं भुजा) अथवा कण्ठ में धारण करने वाला व्यक्ति त्रैलोक्य–विजयी होता है। (5) रोगविनाश के लिए **"ह्रीं ह्रीं सः सूर्याय**

नमः"– इस मंत्र का नित्य 108 बार जप करते रहने से रोग दूर होने में सहायता मिलती है तथा रोगी शीघ्र स्वस्थ हो जाता है। नित्य प्रातःकाल सूर्य को अर्घ्य देने तथा प्रणाम करने भी मनोभिलाषाएं पूर्ण होती हैं।

चन्द्र

'पद्म पुराण' के अनुसार ब्रह्मा के पुत्र महर्षि अत्रि ने एक बार 'अनुत्तर' नामक घोर तप किया। तप की समाप्ति पर उनके नेत्रों से जल की बूँदें गिरीं, जिन्हें दिशाओं ने स्त्री रूप में उपस्थित होकर पुत्र–प्राप्ति के उद्देश्य से ग्रहण कर लिया, परन्तु वे उस गर्भ रूप जल को धारण करने में असमर्थ रहीं, तब उनके द्वारा परित्यक्त उस जल को ब्रह्मा ने एक युवा पुरुष के रूप में परिवर्तित कर दिया और ब्रह्म लोक में ले जाकर उसका नाम चन्द्रमा रक्खा। वहाँ देव, गन्धर्व, अप्सरा एवं ऋषि–मुनियों द्वारा स्तुति किए गये चन्द्रमा के तेज में अत्यधिक वृद्धि हुई। फिर दक्ष प्रजापति ने अपनी 27 कन्याओं का विवाह चन्द्रमा के साथ कर दिया। तदुपरान्त चन्द्रमा ने इन्द्रलोक में राजसूय यज्ञ करके महान् ऐश्वर्य तथा यश को प्राप्त किया।

पौराणिक मतानुसार चन्द्रमा की स्थिति सूर्य–राशियों से 1 लाख योजनों की ऊंचाई पर है। इसकी गति अत्यन्त तीव्र है। अतः यह सूर्य संचरण के एक वर्ष के मार्ग को एक मास में तथा एक नक्षत्र राशि को 2¼ (सवा दो दिन) में पार कर लेता है। सूर्य तथा चन्द्रमा जब परस्पर छः राशियों के अन्तर पर आते हैं तब पूर्णिमा हो जाती है। सूर्य की परिक्रमा करते रहने के साथ ही चन्द्रमा पृथ्वी की भी परिक्रमा करता है। यह 2180 मील प्रति घण्टे की गति से चलकर 27 दिन 7 घण्टा, 43 मिनट तथा 11 सेकंड अर्थात् लगभग 27½ दिन में सौर–मण्डल की परिक्रमा कर लेता है। गोचर में चन्द्रमा प्रत्येक राशि संक्रमण की अन्तिम 3 घटी (एक घंटा 12 मिनट) पहले में अपना विशिष्ट फल देने लगता है, जन्म राशि में विभिन्न स्थानों पर चन्द्रमा का गोचर फल इस प्रकार कहा गया है–प्रथम राशि में होने पर जातक को धन अथवा अन्न का लाभ कराता है। द्वितीय में धन नाश, तृतीय में द्रव्य लाभ, चतुर्थ में कुक्षि–रोग अथवा नेत्र पीड़ा, पंचम में कार्य नाश, षष्ठ में धन लाभ, सप्तम में धन तथा स्त्री लाभ, अष्टम में मृत्यु तुल्य कष्ट, नवम में राज भय, दशम में सुख लाभ, एकादश में धन लाभ तथा द्वादश में हो तो रोग एवं नक्ष करता है। मतान्तर से प्रथम

चन्द्र कल्याणकारी द्वितीय में संतोषी कारक, तृतीय में धनदायक, चतुर्थ में कलहकारक, पंचम मे ज्ञानवृद्धि, षष्ठ में श्रेष्ठ, सम्पति दायक, सप्तम में, मान–वृद्धि, अष्टम में मृत्यु भय, नवम में अर्थ लाभ, दशम में सम्मान प्राप्ति, एकादश में सर्वलाभ तथा द्वादश में हानिकारक होता है। पूर्णचन्द्र को सौम्य तथा क्षीण चन्द्र को पापग्रह माना गया है। चन्द्रमा से प्रथम, तृतीय, षष्ठ, सप्तम, दशम तथा एकादश भाव में स्थित ग्रह शुभ होते हैं। पंचम, नवम, द्वादश, चतुर्थ तथा अष्टम एवं द्वितीय बिद्ध स्थान हैं। बिद्ध स्थानों में बुध रहित कोई ग्रह नहीं होना चाहिए, अन्यथा बिद्ध चन्द्रमा शुभ स्थानों पर होते हुए भी अशुभ फल देता है। सूर्य की भांति चन्द्रमा शुभ स्थान पर होते हुए भी अशुभ फल देता है। सूर्य की भांति चन्द्रमा भी सदा मार्गी तथा उदित रहता है। कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी तथा चतुदर्शी को चन्द्रमा बिद्ध, अमावस्या को मृत, तथा शुक्ल प्रतिप्रदा को बाल माना जाता है। अतः ये चार तिथियाँ शुभ कर्मों के लिए त्याज्य मानी गई हैं। चन्द्रमा की स्वराशि कर्क है। यह वृषराशि में उच्चस्थ एवं मूल त्रिकोणस्थ तथा वृश्चिक में नीचस्थ माना जाता है। सूर्य तथा बुध चन्द्रमा के नैसर्गिक मित्र, राहु तथा केतु शत्रु एवं मंगल, शुक्र तथा शनि सम माने गये हैं।

जन्म कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित चन्द्रमा अपने दोषी प्रभाव को निम्नानुसार प्रकट करता है–

1. केन्द्र स्थित चन्द्रमा क्षीण प्रभाव वाला होता है, अतः वह पूर्ण शुभ फलदायी नहीं होता।

2. सूर्य से युक्त चन्द्रमा क्षीण प्रभाव वाला होने के कारण शुभ फल नहीं दे पाता।

3. सूर्य जिस राशि में स्थित हो, उससे अगली पाँच राशियों में से किसी भी राशि में स्थिति चन्द्रमा भी क्षीण माना जाता है।

4. यदि चन्द्रमा द्वितीयेश होकर मिथुन लग्न में बैठा हो तो अशुभ फल देता है।

5. यदि चन्द्रमा अपनी राशि के छठे, अथवा आठवें भाव में बैठा हो तो भी अशुभ फल देता है।

6. यदि चन्द्रमा छठे, आठवें, बारहवें भाव में स्थित हो तो अशुभकारी होता है।

7. यदि चन्द्रमा राहु, केतु, अथवा शनि में से किसी भी एक अथवा अधिक ग्रहों के साथ हो तो भी अशुभ फल देता है।

8. यदि चन्द्रमा पर राहु, केतु, शनि अथवा मंगल में से किसी एक अथवा अधिक ग्रहों की दृष्टि हो तो भी अशुभ फल देता है।

9. यदि चन्द्रमा किसी भी भाव में वृश्चिक राशि में स्थित हो तो अशुभ फल देता है।

10. यदि चन्द्रमा नीच, अस्तगत हो तो अशुभ फल देगा।

11. यदि चन्द्रमा के साथ बैठा हुआ राहु ग्रहण योग बना रहा हो तो चन्द्रमा अशुभ फल देता है।

12. यदि चन्द्रमा तृतीय भाव में हो तो जातक को कफ रोगी बनाता है।

13. यदि चन्द्रमा षष्ठ भाव में हो तो जातक कफ रोगी, अल्पायु तथा नेत्र रोगी होता है।

14. यदि चन्द्रमा अष्टम भाव में बैठा हो तो जातक प्रमेह रोगी होता है तथा बन्धन के कारण दुःखी होता है।

15. यदि चन्द्रमा द्वादश भाव में हो तो जातक कफ रोगी, नेत्र रोगी तथा चिन्तन शील होता है।

16. (क) यदि चन्द्रमा पंचमेश होकर द्वितीय भाव में

(ख) सप्तमेश होकर द्वितीय भाव में

(ग) द्वितीयेश होकर सप्तम भाव में

(घ) पंचमेश होकर नवम भाव में

(ड़) एकादशेश होकर षष्ठ भाव में, अथवा

(च) सप्तमेश होकर द्वादश भाव में

(छ) नवमेश होकर चतुर्थ भाव में

(ज) चतुर्थेश होकर नवम भाव में

(झ) नवमेश होकर द्वितीय भाव में

(ञ) एकादशेश होकर चतुर्थ भाव में अथवा

(ट) दशमेश होकर तृतीय भाव में बैठा हो तो अशुभ फल कारक होता है।

चन्द्रमा जातक के जीवन पर प्रायः 24, 25 वर्ष की आयु में अपना शुभ अथवा अशुभ फल प्रदर्शित करता है। मेष, वृश्चिक तुला, तथा मीन लग्न में चन्द्रमा योगकारक होता है। रोहिणी, श्रवण, पुनर्वसु, विशाखा तथा पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में स्थित चन्द्रमा शुभ फल प्रदान करता है तथा कृत्तिका, उत्तरा फाल्गुनी, आश्लेषा, ज्येष्ठा, उत्तराषाढ़ा, एवं रेवती नक्षत्रों पर स्थित चन्द्रमा अशुभ फल देता है।

जन्म कुण्डली में चन्द्रमा की अशुभ स्थित होने पर चन्द्रकृत पीड़ा के निवारणार्थ निम्नलिखित उपाय हितकर सिद्ध होते हैं।

1. औषधि–स्नान, गाय का दूध, दही, घृत, गोबर तथा मूत्र, हाथी का मद एवं सीप, शंख, स्फटिक एवं श्वेत चन्दन से युक्त जल द्वारा स्नान करने से चन्द्रकृत पीड़ा का निवारण होता है।

2. मुक्ता दान–जिन लोगों के लिए चन्द्रमा अनिष्ट कारक हो, उन्हें मोती का दान करना शुभ कहा गया है। सोमवार के दिन पांच तोला वजनी चांदी के पत्र पर चन्द्रमा का मंत्र खुदवाकर उसके मध्य भाग में एक मोती (अभाव में श्वेत पुखराज) जड़वाकर, उसकी प्राण प्रतिष्ठा करके 3 अथवा 9 दिनों तक मंत्र षोडशोपचार पूजन करना चाहिए तथा हवन करना चाहिए। यदि चन्द्रमा का अरिष्ट प्रबल हो तो 60 दिनों तक नित्य नियमित रूप से पूजन तथा हवन करना चाहिए। पूजावधि समाप्त होने पर उक्त मुक्ता युक्त मंत्र को आगे लिखित वस्तुओं के साथ किसी सुपात्र ब्राह्मण को दान कर देना चाहिए। 1. श्वेत बैल 2. दो गायें, 3. चावल, 4. बांस का पौत्र (टोकरी आदि) 5. शंख, 6. कपूर, 7. घृत, 8. दही, 9. चीनी अथवा मिश्री 10. श्वेत वस्त्र एवं 11. श्वेत पुष्प। इसके अतिरिक्त जल पूर्ण कुम्भ तथा दक्षिणा।

चन्द्र यन्त्र के स्वरूप को आगे प्रदर्शित किया गया है। इस विधि से मुक्ता दान करने पर चन्दकृत रोग–दोष की शान्ति होती है। तथा घर में लक्ष्मी का स्थायी निवास बना रहता है।

रत्न धारण–चन्द्रकृत पीड़ा के निवारणार्थ चन्द्रमा के रत्न मोती अथवा उसके रत्न अथवा प्रतिनिधि प्रत्यों को धारण करना चाहिए। रत्न (मोती) धारण की विधि निम्नलिखति है–

कान्ति युक्त, तल रहित, (लुढ़कने वाले अर्थात गोल) लाल, पीले श्वेत अथवा श्याम वर्ण के गोल तथा मोटे मोती को शरीर पर धारण करना चाहिए। इनमें श्वेत रंग का मोती सर्वश्रेष्ठ माना गया है। मोती को बिना बिंधवाए, श्वेत रंग के वस्त्र में लपेट कर धारण करना चाहिए। यदि बिंधवा कर ही पहनना हो तो उसे धारण करते समय ही बिंधवाना चाहिए। पुरुष को अपनी दाँयीं भुजा अथवा कण्ठ में एवं स्त्री को अपनी बाँयीं भुजा अथवा कण्ठ में मोती को धारण करना चाहिए।

मोती के अभाव में चाँदी, वंशलोचन, दुद्धि की जड़ अथवा पिण्ड खजूर को भी धारण किया जा सकता है, और वह शुभ फलदायक होता है। यदि मोती को अंगूठी में जड़वाकर धारण करना अभीष्ट हो तो गुरुवार अथवा रविवार के दिन जब पुष्य नक्षत्र हो, तब प्रातःकाल सूर्योदय से 10 बजे के मध्य 4 रत्ती अथवा इससे अधिक वजनी मोती को चाँदी की अंगूठी में जड़वाएँ। मोती को इस प्रकार जड़वाना चाहिए कि उसका तल भाग त्वचा को स्पर्श करता रहे। अंगूठी के तैयार हो जाने पर किसी सोमवार को जब पुष्य अथवा रोहिणी, हस्त, श्रवण, नक्षत्र हो तब प्रातः दस बजे के बाद सर्वप्रथम 4 तोला 7 रती वजनी चाँदी के सिंहासन (चन्द्रासन) पर मुक्तायुक्त अंगूठी को रखकर, उसका षोडशोपचार पूजन करें तथा **'ॐ सौं सोमाय नमः'**– इस मन्त्र का उच्चारण करते हुए हवन करें तथा अग्नि में घृत, प्रियंगु, गुग्गुल एवं तिल की 700 आहुतियां दें। फिर मोती में प्राण प्रतिष्ठा करके पूर्णाहुति के पश्चात् अंगूठी को बांयें हाथ की तर्जनी में अथवा कनिष्ठा अंगुली में पहन लें एवं पूर्वोक्त चन्द्र दान की वस्तुओं को एक छोठे से मोती तथा दक्षिणा सहित किसी सुपात्र ब्राह्मण को दान कर दें। मोती के अभाव में श्वेत पुखराज अर्थात चन्द्रमणि अथवा निमरू, शंखजोड़, सफेद संग, नीलासंग अथवा संग गौरी–इन उपरत्नों को भी अंगूठी में जड़वाकर पहिना जा सकता है। अंगूठी में जड़वाने के दिन से प्रारम्भ करके 2 वर्ष

1 मास तथा 27 दिन तक मोती प्रभावकारी बना रहता है, तदुपरान्त दूसरा मोती जड़वाना चाहिए।

3. **मन्त्रोपचार**–चन्द्रकृत पीड़ा में आगे लिखे मन्त्र भी सहायक सिद्ध होते हैं **1. ॐ इमं देवा असपन्न ळ सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ट्याय महते जानरा–ज्यायेन्द्र स्येन्द्रियाय। इममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एव वोडमी राजा सोमो स्माकं ब्राह्मणानां घ्रूं राजा। चन्द्राय नमः।** इस मंत्र की जप संख्या 11000 है। **2. ॐ श्रां श्रीं एं चन्द्रमसे नमः**। इस मंत्र की जप संख्या भी 11000 है। **3. ॐ सौं सोमाय नमः**। यह चन्द्रमा का लघु मन्त्र है। इसकी जप संख्या भी 11000 है। **4. दधि शंखतुकाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्। नामामि शशिनं भक्त्या शम्भोर्मुकुट भूषणम्**–इस मंत्र को स्नान अथवा दान के समय उच्चारण करते रहना चाहिए। ये सभी मन्त्र चन्द्रकृत अरिष्ट–दोष–निवारक तथा अभीप्सित फलदायक सिद्ध होते हैं।

4. अन्य–1. चन्द्र के दोषी प्रभाव को शांत करने के लिए सोमवार को व्रत रखना शुभ माना गया है। 2. यदि चन्द्रमा संतान पक्ष के लिए निर्बल अथवा अरिष्ट हो तो शिवजी की आराधना करना शुभ रहता है।

मंगल

पुराणों के अनुसार सौर–मण्डल में मंगल की स्थिति बुध से 2 लाख योजन ऊपर मानी गई है। यह भी कहा गया है कि यदि वक्र गति से न चले तो 45 दिन में एक राशि पर संचरण करता हुआ कुल डेढ़ वर्ष में संपूर्ण राशि चक्र को पार कर लेता है। इसे पृथ्वी का पुत्र माना गया है। अत: इसके भूमिपुत्र:, भौम, कुंज, आदि नाम भी हैं। वह अनेक कल्पित कथाओं का पुत्र भी है। नवग्रह मंडल में इसे सेनापति का पद प्राप्त है। तथा इसे युद्ध अथवा रोमांस का देवता भी माना गया है। पृथ्वी से मंगल की दूरी 6, 25, 00, 000 मील मानी जाती है, परन्तु यह हर पन्द्रहवें वर्ष पृथ्वी के बहुत पास आ जाता है। उस समय पृथ्वी से इसकी दूरी केवल 3, 46, 00, 000 मील ही रह जाती है। इसका व्यास 4115 मील का है। सूर्य की परिक्रमा करने में इसे 687 दिन लगते हैं। इसकी गति में परिवर्तन होता रहता है। जब यह सूर्य के समीप पहुँचने को होता है उस समय इसकी गति अत्यन्त तीव्र हो जाती है।

गोचर फल–मंगल किसी भी राशि पर पहुँचने के 8 दिन पूर्व से ही फल देना आरम्भ कर देता है राशि–भ्रमण के प्रथम 8 दिन ही इसके गोचर फल माने गये हैं। झगड़ा, मुकद्दमा आदि में भौम बल को ही प्रधान माना जाता है। जन्म राशि से विभिन्न स्थानों में स्थित मंगल का गोचर फल इस प्रकार माना गया है–जन्म राशि में हो तो शत्रुभय, द्वितीय में हो तो धननाश, तृतीय में अर्थ–लाभ, चतुर्थ में शत्रु–क्षय (मतान्तर से शत्रु–पीड़ा), पंचम भाव में हो तो धन–क्षय, (मतान्तर से प्राण–हानि), षष्ठ भाव में हो तो द्रव्य लाभ, सप्तम में हो तो शोक प्राप्ति, अष्टम में हो तो शत्रु–भय (मतान्तर से अस्त्राघात), नवम में हो तो कार्यनाश, दशम भाव में हो तो शोक–प्राप्ति (मतान्तर से शुभ), एकादश में हो तो वस्त्र, भूमि लाभ एवं द्वादश में हो तो रोग एवं धन–लाभ।

मंगल के शुभ स्थान, तृतीय, षष्ठ, और एकादश तथा बिद्ध स्थान द्वादश, नवम और पंचम हैं। बिद्ध स्थानों पर किसी ग्रह की स्थिति हो तो मंगल अशुभ फल देता है भले ही वह शुभ क्यों न हो। सूर्य की भांति ही इसके भी वामवेध का विचार किया जाना चाहिए। यह सूर्य–चन्द्र की भांति सदैव मार्गी न रहकर समय–समय पर अस्त, मार्गी तथा वक्री होता रहता है।

मंगल मुख्यत: जातक के जीवन में 28 से 32 वर्ष की आयु तक अपना शुभ अथवा अशुभ प्रकट करता है। जन्म कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित मंगल अपने दोषी प्रभाव को निम्नानुसार प्रकट करता है–

1. यदि मंगल जन्म कुण्डली में वक्री अथवा अस्त हो तो अशुभ फल देता है

2. यदि षष्ठ, अष्टम अथवा द्वादश भाव में बैठा हो तो अशुभ होता है।

3. यदि अष्टमेश अथवा षष्ठेश के साथ युति अथवा दृष्टि संबंध हो तो अशुभ होता है।

4. यदि शत्रु ग्रहों के बीच बैठा हो तो अशुभ होता है।

5. यदि किसी भाव में बैठकर चतुर्थ, पंचम सप्तम, नवम, दशम अथवा एकादश भाव को देख रहा हो तो अशुभ फल कारक होता है।

6. यदि चंद्रमा राहु अथवा शनि के साथ हो तो अशुभ होता है।

7. यदि शुभ भावों का स्वामी होकर शत्रु राशि में बैठा हो तो अशुभ फल देता है।

8. यदि

(क) लग्नेश होकर षष्ठ भाव में

(ख) द्वितीयेश होकर सप्तम अथवा नवम भाव में

(ग) तृतीयेश होकर दशम भाव में

(घ) चतुर्थेश होकर नवम अथवा एकादश भाव में

(ड़) पंचमेश होकर दशम अथवा द्वादश भाव में

(च) पंचमेश होकर द्वादश भाव में

(छ) नवमेश होकर द्वितीय अथवा चतुर्थ भाव में

(ज) एकादशेश होकर चतुर्थ अथवा षष्ठ भाव में बैठा हो तो अशुभ फल कारक होता है। इसके अतिरिक्त

1. लगनस्थ मंगल जातक को क्रूर तथा गुप्त रोगी बनाता है। ऐसा व्यक्ति लौह आदि धातुओं के शस्त्रादि व्रण जन्य कष्ट को भोगता है।

2. द्वितीय भावस्थ मंगल जातक को धनहीन, नेत्ररोगी, चर्म रोगी तथा कुटुम्बिक क्लेश से युक्त बनाता है।

3. तृतीय भावस्थ मंगल भाइयों से विरोध कराने वाला अथवा भ्रातृकष्ट कारक होता है।

4. चतुर्थ भावस्थ मंगल जातक की पत्नी को रुग्ण बनाता है एवं मातृ सुखहीन करता है। साथ ही जातक को अग्निभय, अपमृत्यु भय तथा अल्प मृत्यु भी देता है। ऐसा जातक बन्धु विरोधी होता है।

5. पंचम भावस्थ मंगल जातक को कृश शरीर, उदर रोगी, गुप्तांग रोगी, व्यसनी तथा संतति क्लेश युक्त बनाता है।

6. षष्ठ भावस्थ मंगल जातक को ऋणी, क्रोधी, चर्म रोगी, रक्त विकारी, तथा व्रण आदि व्याधियों से दुःखी बनाता है।

7. सप्तम भावस्थ मंगल जातक को स्त्री दुःखी, कटुभाषी, निर्धन, घातकी तथा धन-नाशक बनाता है और उसकी पत्नी के जीवन के लिए भी अशुभ होता है।

8. अष्टम भावस्थ मंगल जातक को व्याधि ग्रस्त, व्यसनी, मद्यपी, उन्मत्त, तथा धन के लिए चिन्तित बनाता है। ऐसा व्यक्ति नेत्ररोगी, रक्त विकार युक्त एवं अग्नि, शस्त्र तथा चोर से भय पाने वाला होता है।

9. नवम मंगल जातक को द्वेषी, क्रोधी, अहंकारी, भातृ विरोधी तथा ईर्ष्यालु बनाता है।

10. दशम भावस्थ मंगल जातक को सन्तान कष्ट देता है।

11. एकादश भावस्थ मंगल जातक को क्रोधी, दम्भी तथा झगड़ालू प्रवृति का बनाता है।

12. द्वादश भावस्थ मंगल जातक की स्त्री का नाशक होता है एवं जातक को नेत्र रोगी, मूर्ख, पापी झगड़ालू, उग्र स्वभावी तथा ऋणी बनाता है।

जन्म कुडली में मंगल की अशुभस्थिति हो तो मंगलकृत पीड़ा के निवारणार्थ निम्नलिखित उपायों को करना पीड़ा शामक, हितकर तथा मनोभिलाषा की पूर्ति करने में सहायक सिद्ध होता है।

1. औषधि स्नान–लाल चन्दन, लाल पुष्प, बेल की छाल, जटा मांसी, मौलश्री, खिरेटी, हींग, गोदंती, मालकांगुनी, तथा सिंगरफ मिश्रित जल द्वारा स्नान करने से मंगल कृत पीड़ा शांत होती है।

2. प्रवाल दान–जिनके लिए मंगल अरिष्ट अथवा अनिष्ट कारक हो उन्हें प्रवाल अर्थात मूंगा शुभ तथा हितकर रहता है। प्रवाल दान करने की विधि इस प्रकार है। मंगलवार के दिन ताम्रपत्र के ऊपर मंगल मंत्र को अंकित करवा (खुदवा) कर मध्य में एक छोटा–सा मूंगा जड़वाइये। मंगल मंत्र का स्वरुप नीचे दिया जा रहा है। फिर सात दिन तक उस यंत्र को षोडशोपचार पूजन करें तथा **'ॐ भूमि सुतजायनमः** इस यंत्र का 28000 की संख्या में जप करें। अथवा किसी विद्वान ब्राह्मण से करायें। तदोपरान्त आठवें दिन उक्त मंत्र को मंगलवार के ही दिन आगे लिखी वस्तुओं के साथ किसी ब्राह्मण को दान कर दें। ब्राह्मण सुपात्र तथा विद्वान होना चाहिए। वस्तुओं के नाम ये हैं– 1. पीले रंग की गाय अथवा लाल रंग का बैल 2. स्वर्ण 3. लाल वस्त्र 4. मसूड़ 5. गुड़ 6. लाल चन्दन 7. घृत 8. केशर 9. कस्तूरी 10. गेहूँ 11. लाल कनेर अथवा लाल रंग के पुष्प 12. मूंगा तथा दक्षिणा। उक्त विधि से प्रवाल (मूंगा) दान करने से मंगल कृत बाधा शमन होकर सब प्रकार के अरिष्ट दूर होते हैं। मंगल के यंत्र को तिकोने ताम्रपत्र पर खुदवाना चाहिए।

3. रत्न धारण–मंगलकृत पीड़ा के निवारणार्थ प्रवाल (मूँगा) अथवा उसके प्रतिनिधि द्रव्यों को धारण करना शुभ रहता है। मूँगे के प्रतिनिधि द्रव्यों में संगमूशी या नाग जिह्वा–गोजिह्वा जड़ी को धारण किया जा सकता है। रत्न धारण की विधि इस प्रकार है।

पीलापन लिए हुए लाल रंग का मूँगा जो कम–से–कम 6 रत्ती वजन का हो, सोने की अंगूठी में इस प्रकार जड़वाइए कि उसका तल अंगूठी की त्वचा का स्पर्श करता रहे। अंगूठी के सोने, (स्वर्ण) का वजन 6 रत्ती से कम नहीं होना चाहिए। मंगलवार के दिन जब चन्द्रमा अथवा मंगल मेष, अथवा
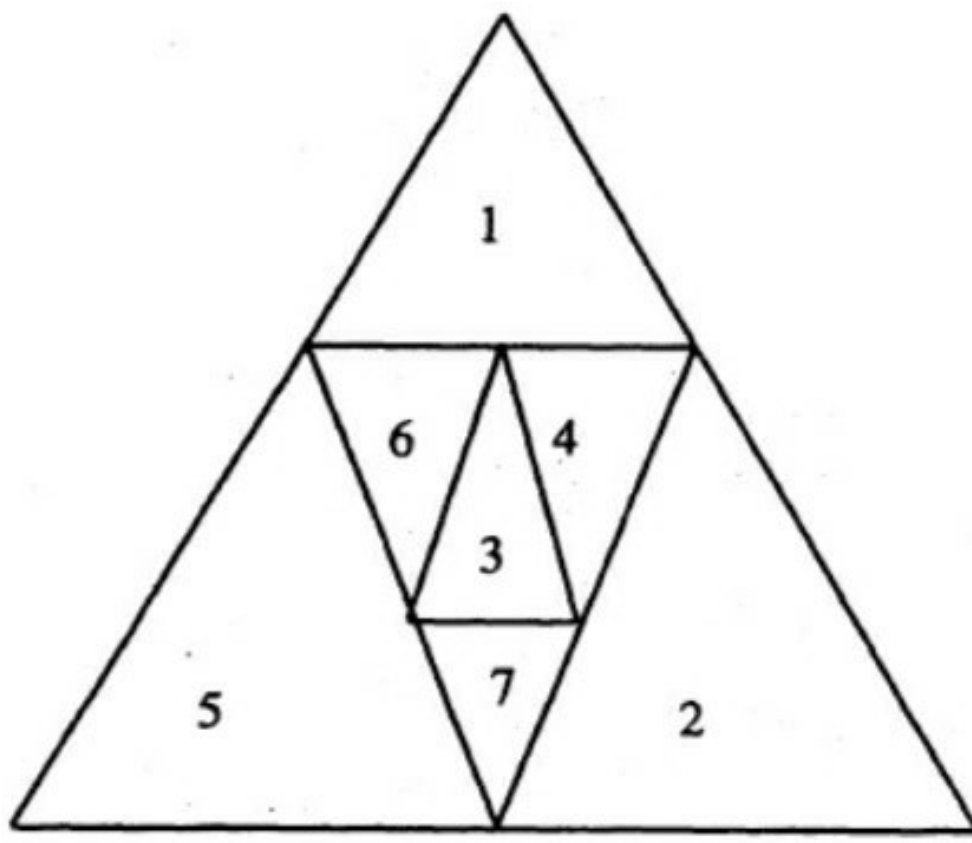
५. अन्य–1. मंगलवार को व्रत रखने से भी मंगलकृत अरिष्ट प्रभाव की शान्ति होती है। दिन में व्रत रखकर सूर्यास्त के बाद भोजन करना चाहिए। यदि संभव हो तो प्रत्येक मंगलवार को प्रातः स्नान करने के बाद लाल रंग की गाय का लाल चन्दन तथा लाल पुष्प से पूजन करके उसे मसूर की दाल तथा गुड़ का नैवैद्य दिखाने के बाद खिलाना चाहिए तथा उस दिन स्वयं बिना नमक का भोजन करना चाहिए। मुख्यतः आटा एवं गुड़ खाने से अधिक लाभ होता है।

2. यदि मंगल संतान के लिए बाधक हो तो रुद्राभिषेक करना चाहिए।

3. ऋण ग्रस्तता से छुटकारा पाने के लिए ऋणमोहक मंगल स्तोत्र का पाठ करना हितकर रहता है। इससे ऋण से मुक्ति मिलकर धन की वृद्धि होती है। ऋणमोचक मंगल स्तोत्र निम्नानुसार है–

1. मंगलो भूमि पुत्रश्च ऋणहर्ता धनप्रदः।
थिणसनो महाकायो सर्वकर्माविरोधकः।।
लोहितो लोहिताक्षश्च सामगानाँ कृपाकर।
धरात्मज कूजो भौमो भूतिदो भूमिनन्दनः।।

2. अंगार को यमभश्चैव सर्वरोगापहारका।
वृष्टेकर्ता पहर्ताच सर्वकाम फलप्रद।।

3. एतानि कुनामानि नित्यं यः श्रद्धया पठेत।
ऋणं न जायते तस्य धन शीघ्रमुवाप्नुयात।।

4. एकोन्विंशति नामानि पठित्वा तु तदन्ति के।
रूपवान धनवारचैव जायते नात्र संशयः।।

5. एक कालं द्विकालं च यः पठेप्सुसमाहितः।
एवं कृते न संदेहो ऋणंहंत्वा सुखी भवेत।।

6. धरणीगर्भ सम्भूतं विद्युत्कान्ति समप्रभम।
कुमारं शक्ति हस्तं च मंगलम प्रणमाम्यहम।।
इति

भौमारिष्ट निवारण उपायों को यथा संभव मंगल को दो घड़ी दिन चढ़े करना विशेष फलदायक रहता है।

बुध

पुराणों के अनुसार बुध चन्द्रमा की पत्नी रोहिणी के पुत्र हैं। श्राद्धदेव वैवश्वत मनु की पुत्री इला बुध की पत्नी हैं। इला के गर्भ से उत्पन्न तथा पुरुरवा के नाम से विख्यात बुध के धर्मात्मा पुत्र ने 100 से भी अधिक अश्वमेध यज्ञ किये थे।

आकाश मण्डल में शुक्र से दो लाख योजन ऊपर बुध की स्थिति बताई गयी है। इसकी गति शुक्र के अनुसार ही रहती है। जिस समय यह सूर्य की गति का उल्लंघन करता हुआ राशि संचरण करता है उस समय पृथ्वी पर आंधी, बादल, सूखे का भय उपस्थित होता है। नवग्रह मण्डल में बुध को राजकुमार का पद प्राप्त है। पृथ्वी से बुध की दूरी 3,68, 41,460 मील आँकी गई है। इसका व्यास 3140 मील का है। यह स्थूल रूप से लगभग 28 दिन में परिक्रमा पूरी करता है। यह ज्यों–ज्यों सूर्य से दूर तथा पृथ्वी के निकट होता जाता है, त्यों–त्यों इसका तापक्रम घटता चला जाता है।

गोचरफल बुध किसी भी राशि पर पहुँचने से 7 दिन पूर्व से ही अपना फल देना आरम्भ कर देता है तथा सम्पूर्ण राशि के भोग काल तक एक जैसा ही प्रभावशाली अर्थात फलदायक बना रहता है। जन्म राशि से विभन्नि स्थानों पर गोचर बुध का प्रभाव इस प्रकार होता है। जन्म राशि में भय अथवा बन्धन, द्वितीय स्थान में, धन–लाभ, तृतीय में क्लेश अथवा शत्रु–वध, चतुर्थ में अर्थलाभ, पंचम में शत्रु–भय अथवा दुःख, षष्ठ में स्थान प्राप्ति, सप्तम में शरीर–पीड़ा, अष्टम में धन–लाभ, नवम में पीड़ा, दशम में सौख्य अथवा शुभ, एकादश में द्रव्य–लाभ तथा द्वादश में वित्त–नाश।

बुध के शुभ स्थान 2, 4, 6, 8, 10 तथा 11 हैं एवं बिद्ध स्थान 5, 3, 9, 1, 8 तथा 12 हैं। बुध यदि किसी शुभ स्थान पर हो, परन्तु बिद्ध स्थानों पर कोई चन्द्र रहित ग्रह हो तो बुध का शुभ काल भी अशुभता में परिवर्तित हो

जाता है। सूर्य, शुक्र, राहु तथा केतु–ये चारों ग्रह बुध के नैसर्गिक मित्र हैं। चन्द्रमा शत्रु है अर्थात बुध अपने पिता चन्द्रमा से शत्रुभाव रखता है, जबकि चन्द्रमा अपने पुत्र बुध से मित्र भाव रखता है। मंगल, गुरु तथा शनि से बुध समभाव रखता है। बुध यदि शुभ ग्रहों से युक्त हो तो शुभ तथा पापग्रह से युक्त हो तो अशुभ माना जाता है। अकेले बुध की गणना शुभ ग्रह के रूप में की जाती है।

जन्म कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित बुध अपने दोषी प्रभाव को निम्नानुसार प्रकट करता है।

1. यदि जातक की जन्म लग्न मिथुन अथवा कन्या हो तो बुध शुभ फलकारक नहीं होता।

2. यदि बुध शत्रुग्रहों से दृष्ट हो तो अशुभ फल देता है।

3. यदि बुध मीन राशि में बैठा हो तो अशुभ फल देता है।

4. यदि बुध छठे, आठवें अथवा बारहवें भाव में बैठा हो तो भी अशुभ फलदायक होता है।

5. यदि बुध किसी अच्छे भाव का स्वामी होकर अपने भाव से अष्टम स्थान में बैठा हो तो अशुभ फल देता है।

6. यदि बुध के साथ मंगल, शनि, राहु, अथवा केतु की युति हो तो अशुभ फल होता है।

7. यदि बुध लग्न द्वितीय, चतुर्थ, पंचम, सप्तम, नवम, दशम अथवा एकादश भाव का स्वामी होकर अपने छठे स्थान में पड़ा हो तो अशुभ फलदायक होता है।

8. षष्ठ भावस्थ बुध जातक को रोगी, आलसी तथा कलह प्रिय, अष्टम भावस्थ बुध मानसिक रुप से दुखी तथा द्वादश भावस्थ बुध आलसी बनाता है।

9. यदि बुध द्वितीयेश होकर नवम भाव में, तृतीयेश होकर दशम भाव में, व चतुर्थेश होकर एकादश भाव में, सप्तमेश होकर द्वितीय भाव में, नवमेश होकर चतुर्थ भाव में अथवा एकादशेश होकर षष्ठ भाव में बैठा हो तो जातक को अशुभ फल देता है।

10. अशुभ बुध अपनी दशा तथा अन्तर दशा में विशेष अशुभ फल देता है।

जन्म कुण्डली में बुध यदि वृश्चिक राशि में हो तो जातक अविश्वासी, स्वार्थी, शंकालु, चालाक, रोगी तथा जीवन में अनेक बार धोखा खाने

वाला तथा कठिनाइयों का सामना करने वाला होता है एवं मीन राशि में हो तो उग्र स्वभावी, विषयी, गप्पी, मन्दबुद्धि, यात्रा प्रिय, परन्तु शीलवान होता है। ऐसा व्यक्ति कभी या तो स्वयं अपनी पत्नी को धोखा देता है या उसकी पत्नी ही उसे धोखा देती है। धनु, मकर तथा कुंभ राशि में स्थित शुभ फलदायक होता है। मुख्य रुप से बुध जातक के ऊपर अपना प्रभाव प्रायः 32 से 35 वर्ष की आयु में प्रकट करता है।

गुरु तथा चन्द्रमा के साथ बैठा हुआ बुध शुभ फलकारक, शुक्र के साथ मिश्रित फल देने वाला। राहु, केतु, शनि तथा मंगल के साथ अशुभ फलदायक एवं सूर्य के साथ होने पर अस्त माना जाता है। चतुर्थ स्थान में बुध निष्फल रहता है। बुध के, शुक्र के साथ राजसी तथा चन्द्रमा के साथ शत्रुवत् सम्बन्ध माने गए हैं।

बुधकृत पीड़ा के निवारणार्थ निम्नलिखित उपाय हितकर माने गए हैं।

1. औषधि स्नान–मोती, गोरोचन, अक्षत, स्वर्ण, शहद, जायफल, पिपरामूल तथा गाय के गोबर मिश्रित जल द्वारा स्नान करने से बुधकृत पीड़ा का शमन होता है।

2. पन्ना दान–जिनकी जन्म कुण्डली में बुध अरिष्ट अथवा अनिष्टकारक हो उन्हें दोष परिहारार्थ पन्ना दान करना चाहिए। पन्ना दान की विधि इस प्रकार है–बुधवार को छः तोला वजनी चाँदी के पत्र पर बुध का मन्त्र अंकित करवा कर उसके मध्य में एक पन्ना जड़वायें। बुध यन्त्र का स्वरूप नीचे दिया जा रहा है। फिर नित्य छः दिनों तक उस मन्त्र का षोडशोपचार पूजन करें तथा **'ॐ उद्बुध्य स्वाग्ने'** इत्यादि मन्त्र के द्वारा (पूरा मन्त्र आगे लिखा जा रहा है।) 8000 की संख्या में जप करें अथवा करावें। तदुपरान्त बुधवार के ही दिन आगे लिखी वस्तुओं के साथ उक्त मन्त्र किसी सुपात्र ब्राह्मण को दान कर दें। वस्तुओं की सूची इस प्रकार है– 1. स्वर्ण, 2. मूंगा, 3. कांस्य, 4. हाथी दांत 5. हरा वस्त्र 6. शस्त्र 7. घृत 8. शक्कर, 9. कपूर, 10. पीले रंग के पुष्प, 11. पन्ना, 12. फल तथा दक्षिणा।

उक्त विधि से पन्ना दान करने पर बुध की बाधा शान्त होकर दानकर्ता की मनोभिलाषा पूर्ण होती है।

3. रत्न धारण–बुधकृत पीड़ा के निवारणार्थ बुध के रत्न पन्ना अथवा उसके प्रतिनिधि द्रव्यों के धारण करना शुभ फलप्रद रहता है। बुधवार को मिथुन अथवा कन्या राशि में आश्लेषा, ज्येष्ठा अथवा रेवती नक्षत्र हो तथा बुध अथवा सूर्य के नवांश में बुध हो, उस दिन सूर्योदय के प्रातः 10 बजे

की समयावधि में कम–से–कम छः रत्ती का वजन के सोने की अंगूठी बनवा कर उसमें कम–से–कम 3 रत्ती वजन का पन्ना इस प्रकार जड़वायें कि वह अंगूठी की त्वचा का स्पर्श करता रहे। छः रत्ती अथवा इससे अधिक वजनी पन्ना अधिक प्रभावकारी रहता है।
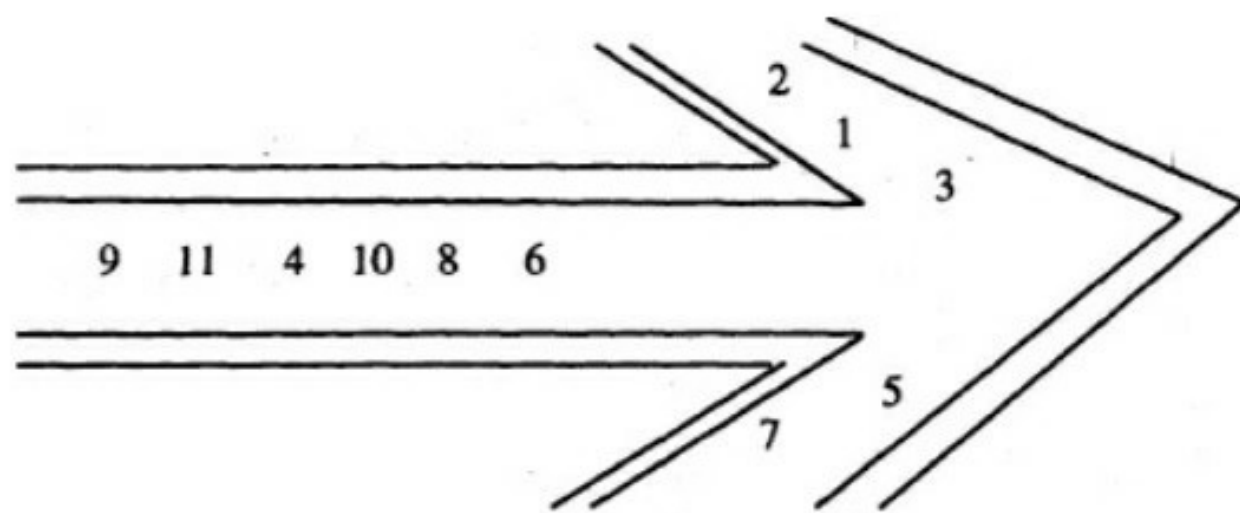
अंगूठी तैयार हो जाने पर उसी दिन 11 बजे के बाद सर्वतोभद्र चक्र बनाकर उसके ऊपर चाँदी का कलश स्थापित कर कलश का पूजन करें तथा उसके ऊपर पन्ना जड़ित अंगूठी को रखकर **'ॐ हां क्रा डं ग्रहनाथाय बुधाय स्वाहा'** अथवा **'ॐ ही बुं गुहनाथाय बुधाय नमः'**–इनमें से किसी भी एक मंत्र का उच्चारण करते हुए अंगूठी को अभिमन्त्रित करें फिर पूर्वोक्त बुध मन्त्र का (जिसे पहले से ही बनवा कर तैयार रखना चाहिए) पूजन करें। तदुपरान्त **ॐ उद्बुध्य स्वाग्ने,** इत्यादि मन्त्र) (पूरा मन्त्र आगे लिखा जा रहा है।) के द्वारा 4000 आहुतियाँ देकर हवन करें तत्पश्चात बुध मन्त्र बुध–स्थंडिल पर स्थापित करें एवं रत्न जड़ित अंगूठी को कलश में से निकाल कर स्थंडिल पर स्थापित करें तथा कलश के जल द्वारा अभिषेक देकर उस रत्न में बुध की प्राण–प्रतिष्ठा करें। इस विधान की समाप्ति के बाद अंगूठी को पुनः बुध मन्त्र से अभिमन्त्रित करके अपने दायें हाथ की कनिष्ठा अथवा अनामिका अंगुली में पहनिए। फिर पूर्णाहुति देकर एक पन्ना के साथ बुध की दान वस्तुओं तथा बुध मन्त्र को ब्राह्मण की भेंट कर दें।

यदि बुध जन्म कुण्डली के चतुर्थ, अष्टम अथवा द्वादश भाव में हो तो, अथवा अशुभ ग्रहों द्वारा दृष्ट हो तो उक्त विधि से पन्ना जड़ित अंगूठी को उत्तरा फाल्गुनी, आश्लेषा, ज्येष्ठा अथवा रेवती नक्षत्र वाले बुधवार को धारण करना चाहिए। यदि पन्ना को अंगूठी में जड़वाना चाहें तो उसे हरे रंग के वस्त्र में लपेट कर कण्ठ अथवा भुजा में धारण किया जा सकता है। पन्ना के अभाव में टोडा, वैरूज, संगपन्नी, संग मरगज अथवा संगपितमनी को भी धारण कर सकते हैं। परन्तु यह उपरत्न कम प्रभावशाली होते हैं।

अंगूठी में जड़वाने अथवा धारण करने के दिन से तीन वर्ष तक पन्ना प्रभावकारी रहता है। इस अवधि के बाद पुराने रत्न को बदल कर नया रत्न जड़वा लेना चाहिए। पुराना रत्न नए व्यक्ति के पास पहुँचकर पुन: तीन वर्ष के लिए प्रभावकारी हो जाता।

4. मन्त्रोपचार–निम्नलिखित मन्त्र बुधकृत पीड़ा के निवारण में सहायक सिद्ध होते हैं।

'ॐ उदबुध्य स्वाग्ने प्रतिजागृतहित्वमिष्टापूर्ते स द्यूं सृजेथामयं च। अस्मित्सधस्थे अध्युत्तरास्मिन विश्वेदेवा यजमानश्च सीदित्। बुधाय नमः।' यह बुध का मुख्य मन्त्र हैं। इसका 8000 की संख्या में जप करना चाहिए।

२. ॐ बं बुधाय नमः' यह बुध का लघु मन्त्र है। इसकी जप संख्या 4000 है। **३ ब्रां ब्रीं श्रीं सः बुधाय नमः**। इस मन्त्र की जप संख्या 8000 है।

४. प्रियंगुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्। सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम। इस मन्त्र का स्नान या दान के समय अथवा अन्य किसी भी समय उच्चारण करना शुभ रहता है।

5. अन्य– बुधवार का व्रत भी बुधकृत अनिष्ट निवारक माना जाता है। 2.बुध के सन्तान पक्ष में बाधक होने पर विधान सहित सम्पुट चण्डी पाठ करना अथवा कराना भी श्रेष्ठकर सिद्ध होता है।

बृहस्पति

पुराणों के अनुसार कर्दम ऋषि की तीसरी पुत्री श्रद्धा का विवाह अंगिरा ऋषि के साथ हुआ था। उन्हीं के गर्भ से बृहस्पति अर्थात गुरु का जन्म हुआ। बृहस्पति देवताओं के गुरुपद पर अभिषिक्त हैं, इसी कारण इन्हें 'गुरु' कहा जाता है। नवग्रह मण्डल में बृहस्पति को मन्त्री का पद प्राप्त है। बृहस्पति की स्थिति आकाश में मंगल ग्रह से ऊपर दो लाख योजन की दूरी पर है। यदि बृहस्पति वक्र गति से न चले तो ये एक राशि को एक वर्ष में पार कर लेते हैं।

आधुनिक विद्वानों के अनुसार ग्रह पृथ्वी से लगभग 36, 70, 00,000 मील की दूरी तक आ जाता है। इस ग्रह का व्यास 9, 86, 720 मील, (मतान्तर से 2, 75, 000 मील) माना गया है। यह सौर–मण्डल

का वृहदाकार, महाकाय, तथा सबसे अधिक भारी ग्रह है। अन्य ग्रहों के सम्मिलित आकार की तुलना में भी बृहस्पति बड़ा है, सम्भवतः इसी कारण ज्योतिष शास्त्र में इसे गुरु (भारी अथवा सबसे बड़ा) कहा गया है। इसकी गति 8 मील प्रति सेकण्ड है। यह लगभग 12 वर्ष में सूर्य की एक प्रदक्षिणा पूरी करता है। सूर्य से बृहस्पति की दूरी लगभग 48, 32, 00, 000 मील मानी जाती है। स्थूल रुप में यह एक राशि में एक वर्ष तक संचरण करता है।

गोचर फल–गुरु किसी भी राशि में पहुँचने के मध्यकाल में अपना पूर्ण शुभ अथवा प्रभाव प्रकट करता है। राशिचर से दो मास पूर्व ही इसका गोचरफल मिलना आरम्भ हो जाता है। राशिचर के मध्य में दो मास तक इसका पूर्ण फल प्राप्त होता है। जन्म राशि के विभिन्न स्थानों में गोचर गुरु का प्रभाव इस प्रकार मिलता है–जन्म राशि में भय, द्वितीय स्थान में धन लाभ, तृतीय में रोग या अशुभ, चतुर्थ में धन नाश, पंचम में सुख या शुभ, षष्ठ में शोक या अशुभ, सप्तम में राज भय (अथवा राज्यपूज्यता), अष्टम में (मृत्यु या धन नाश), नवम में सुख (या धन वृद्धि), दशम में दरिद्रता (अथवा प्राण भंग), एकादश में धन प्राप्ति एवं द्वादश में पीड़ा अथवा मानसिक व्यथा।

गुरु के शुभ स्थान हैं–2, 5,7,9 तथा 11 एवं बिद्ध स्थान हैं–12,4,3,10 और 18। शुभ स्थान स्थित गुरु तभी पूर्ण शुभ फल देता है, जब उसके बिद्ध स्थान में कोई न हो, अन्यथा उसके शुभफल में कमी आ जाती है अथवा उसका शुभफल नष्ट हो जाता है अथवा वह अशुभ फल देता है। सूर्य, चन्द्र तथा मंगल–ये तीनों गुरु के नैसर्गिक मित्र हैं। बुध तथा शुक्र शत्रु हैं। एवं शनि, राहु तथा केतु से सम भाव रखता है। सूर्य के साथ सात्विक, चन्द्रमा के साथ राजस तथा मंगल के साथ तामस मैत्री सम्बन्ध माना गया है। गुरु मुख्यत: 16, 22 एवं 40 वर्ष की आयु में जातक के जीवन पर अपना शुभ अथवा अशुभ प्रकट करता है। वक्री, अस्त अथवा अतिचारी गुरु कभी अभीष्टफल नहीं देता। उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, पुनर्वसु, पूर्वाभाद्रपद तथा विशाखा नक्षत्रों में यह शुभफलदायक तथा आर्द्रा, स्वाति एवं शतभिषा नक्षत्रों में अशुभ फलदायक होता है। लगनस्थ बृहस्पति को एक लाख दोष दूर करने वाला कहा गया है। यही बात केन्द्रस्थ बृहस्पति के विषय में भी कही गई है। परन्तु केन्द्रस्थ बृहस्पति को केन्द्राधिपत्य का

दोषी भी कहा गया है। जन्म कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित गुरु अपने दोषी प्रभाव को निम्नानुसार प्रकट करता है–

1. यदि जन्म कुण्डली में गुरु, मेष, वृष, सिंह, वृश्चिक, तुला, मकर अथवा कुंभ राशि पर स्थित हो तो अशुभ प्रभाव करता है।

2. यदि गुरु किसी अच्छे भाव का स्वामी होकर अपने भाव से छठे अथवा आठवें भाव में बैठा हो तो अशुभ फल देता है।

3. यदि जातक का दिन गुरुवार हो और उसी दिन पुष्य नक्षत्र भी हो तो गुरु अशुभ फलदायक होता है।

4. यदि जातक का जन्म पुनर्वसु, विशाखा अथवा पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में हुआ हो अथवा जन्म कुण्डली में गुरु इन्ही नक्षत्रों में से किसी में हो तो अशुभ फल देता है।

5. यदि गुरु के साथ बुध, चन्द्र, मंगल अथवा सूर्य में से किसी की युति हो तो वह दोषी प्रभाव वाला हो जाता है।

6. यदि गुरु पंचम, षष्ठ, सप्तम अथवा अष्टम भाव में बैठा हो तो अशुभ फल देता है।

7. यदि गुरु द्वितीय, पंचम, सप्तम अथवा एकादश भाव में अकेला बैठा हो तो। हानिकारक सिद्ध होता है।

8. यदि गुरु द्वितीयेश होकर नवम भाव में अथवा चतुर्थेश होकर एकादश भाव में अथवा सप्तमेश होकर द्वितीय भाव में, अथवा नवमेश होकर चतुर्थ भाव में अथवा दशमेश होकर पंचम भाव में बैठा हो तो अशुभ फल देता है।

9. चतुर्थ भावस्थ गुरु सन्तान रोधक होता है।

10. षष्ठ भावस्थ गुरु जातक को दुर्बल बनाता है।

11. अष्टम भावस्थ गुरु जातक को गुप्त रोगी बनाता है।

12. द्वादश भावस्थ गुरु जातक को आलसी तथा दुष्ट चित्त वाला बनाता है।

जन्म कुण्डली में गुरु की अशुभ स्थिति हो तो पीड़ा निवारणार्थ निम्नलिखित उपाय करने चाहिए।

1. औषधि स्नान–श्वेत सरसों, गूलर, दमयन्ती, मुलहठी, शहद, चमेली के फूल तथा नवीन पत्तों के मिश्रित जल द्वारा स्नान करने से गुरुकृत पीड़ा का शमन होता है।

2. पुखराज दान–जिन जातकों के लिए गुरु अरिष्ट अथवा अनिष्ट कारक हो, उन्हें दोष परिहारार्थ पुखराज का दान करना चाहिए। गुरुवार के दिन सोने अथवा चाँदी के पत्र पर गुरु का यंत्र (जिसका स्वरूप नीचे दिया जा रहा है) अंकित करवाकर उसके मध्य में पीला पुखराज जड़वायें। फिर यंत्र का विधिवत् पूजन करके इस मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित करें– **ॐ ऐं क्लीं बृहस्पतये नमः।** उक्त कार्य का प्रारम्भ जब गुरु उच्च के कर्क राशि के 4 अंश पर हो, तब करना चाहिए। इसके अभाव में शुभ राशि, नक्षत्र तथा गुरु का शुभ योग देखकर, गुरुवार के दिन प्रारम्भ करना चाहिए। 34 दिन तक यंत्र का नित्य पूजन करके मन्त्र जप तथा हवन करते रहकर, गुरुवार के दिन ही सायंकाल में यंत्र का षोडशोपचार पूजन करके निम्नलिखित मन्त्र का 19000 की संख्या में जप करना चाहिए।

ॐ बृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद्युमद्धिभातिक्रतुमज्जनेषु। मद्दीदयच्छवस ऋत प्रजातदस्य स्मासुद्रविणं धेहि चित्रम्। बृहस्पतये नमः।

मन्त्र जप के पश्चात आगे लिखी वस्तुओं के साथ उक्त यंत्र किसी सुपात्र ब्राह्मण को दान कर दें। वस्तुओं के नाम इस प्रकार है–1. स्वर्ण 2. कांस्य, 3. पीत वस्त्र, 4. घृत, 5. शक्कर, 6 घोड़ा, 7. चने की दाल, 8. हल्दी, 9. पीतपुष्प, 10. फल, 11. लवण 12. पुखराज तथा दक्षिणा। इस विधि से पुखराज दान करने पर बृहस्पतिकृत बाधा शान्त होती है।

3. रत्न–धारण–गुरुकृत पीड़ा के निवारणार्थ पीले पुखराज अथवा उसके उपरत्न अथवा प्रतिनिधि द्रव्यों को धारण करना शुभ फलदायक होता है। रत्न–धारण की विधि इस प्रकार है–
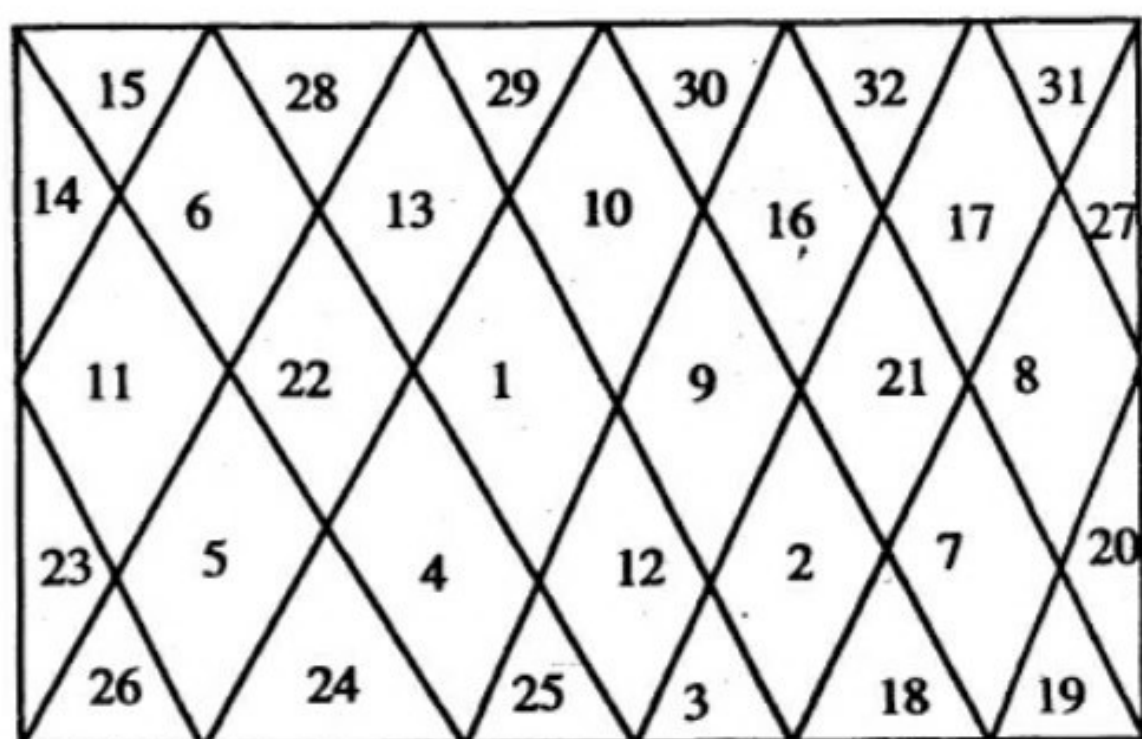
गुरुवार को जब पुष्य नक्षत्र हो, तब प्रात:काल सूर्योदय के समय से 11 बजे के बीच स्वर्ण की अंगूठी बनवाकर, उसमें कम–से–कम 4 रत्ती वजन

का पुखराज जड़वायें। अंगूठी में सोने का वजन सात रत्ती अथवा इससे अधिक होना चाहिए। इसके साथ ही 9 तोला वजनी चाँदी के पत्र पर पूर्वोक्त गुरु यंत्र अंकित करवाकर उसके मध्य में एक पुखराज जड़वाकर रख लें। यंत्र तथा अंगूठी तैयार हो जाने पर उसी दिन गुरु का पद्मिभाकार स्थंडल बनाकर, उस पर गुरु यंत्र को स्थापित करें तथा चने की दाल से अष्टदल का निर्माण कर, उसके ऊपर जलपूर्ण कलश की स्थापना कर, अभिषेक करें तथा पूर्वोक्त गुरु मन्त्र का जप करें। फिर **ॐ ऐं श्रीं बृहस्पतये नमः** इस मन्त्र से 4500 आहुतियाँ देकर हवन करें। तदुपरान्त अंगूठी के रत्न में बृहस्पति की प्राण-प्रतिष्ठा कर, संध्या से पूर्व ही, शुभ प्रहर में अंगूठी को दायें हाथ की तर्जनी अथवा अनामिका अंगुली में धारण करें तथा गुरु के दान की पूर्वोक्त वस्तुओं सहित गुरु यंत्र किसी सुपात्र ब्राह्मण को दान कर दें। इस विधि से पुखराज-जड़ित अंगूठी धारण करने से गुरुकृत अनिष्ट दूर होकर मनोभिलाषाओं की पूर्ति होती है। अंगूठी में जड़वाने के दिन से पुखराज चार वर्ष 3 मास 18 दिन तक प्रभावकारी बना रहता है तदुपरान्त पुराने नग को बदलकर नवीन नग जड़वाना चाहिए।

जो लोग पुखराज को अंगूठी में न जड़वाना चाहें, वे पूर्वोक्त विधि से रत्न आदि का पूजन करके उसे पीले वस्तु में बाँधकर, कण्ठ अथवा भुजा में भी धारण कर सकते हैं। पुखराज के अभाव में उसके उप-रत्न संग सोनेला, संगघियिा, कपूर, संग सोना मक्खी अथवा संग कहरुवा को भी धारण किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त मोती अथवा भारंगी (भागरे) की जड़ को भी धारण करना शुभदायक रहता है।

4. मन्त्रोपचार-निम्नलिखित मन्त्रों का जप करने से भी गुरुकृत अरिष्ट एवं अनिष्ट के निवारण में सहायता मिलती है।

"ॐ बृहस्पते अतियदर्यो अहाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छ वस-ऋत प्रजातदस्मासुद्रविणं थेहि चित्रम्। बृहस्पतये नमः"।

यह बृहस्पति का मुख्य मन्त्र है। इसका 19,000 की संख्या में जप करना चाहिए।

2. "ॐ' गुँ गुरुवे नमः"

यह बृहस्पति का लघु मन्त्र है। इसकी जप संख्या भी 19,000 है। इस मन्त्र का जप किसी भी समय किया जा सकता है।

3. "ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरुवे नमः"

इस मन्त्र का जप भी 19,000 की संख्या में करना चाहिए।

4. "देवानां च ऋषीणां च गुरुं वाचनं सन्निभम्। बुद्धिभूतंत्रिलोकेशं तं गुरुं प्रणमाम्यहम्"।

इस मन्त्र का उच्चारण स्नान-दान के समय अथवा किसी भी समय करना शुभफल दायक होता है।

5. अन्य उपचार-यदि गुरु सन्तान पक्ष के लिए अहितकर हो तो गुरु की प्रसन्नता के लिए पितृश्वरों की तिथियों में श्राद्ध, दान, आदि पुण्य कर्म करने से गुरु का कुप्रभाव दूर होकर वांछित फल की प्राप्ति होती है। 2. अनष्टिकर गुरु के प्रभाव का शमन करने हेतु गुरुवार को व्रत रखना भी हितकर कहा गया है। गुरुवार के व्रत में सायंकाल पीली वस्तुओं, बेसन के पदार्थों का लवण रहित भोजन करना चाहिए। भोजन में मीठी वस्तुएं खाई जा सकती हैं।

शुक्र

पुराणानुसार शुक्र महर्षि भृगु के पुत्र हैं। ये एक नेत्र से विहीन तथा दैत्यों के गुरु हैं। श्रीमद्भागवत के अनुसार चन्द्रमा से तीन लाख योजन की दूरी पर (ऊँचाई पर अभिजित्) आदि 28 नक्षत्रों की स्थिति है। उनसे भी दो लाख योजन की अधिक ऊँचाई पर शुक्र अवस्थित है। नवग्रह मण्डल में शुक्र को भी मन्त्री का पद प्राप्त है। वर्तमान ज्योतिषियों के मतानुसार शुक्र पृथ्वी से 3, 43, 00, 000 मील तथा सूर्य से 6,70,00,000 मील की दूरी पर स्थित है। यह ग्रह वर्ष में एक बार पृथ्वी के अत्यन्त निकट आ जाता है तब पृथ्वी से इसकी दूरी केवल 20,00,000 मील ही रह जाती है। इसका व्यास लगभग 7700 मील माना जाता है। यह 22 मील प्रतिसेकण्ड की गति से चलता हुआ लगभग 224 दिन में सूर्य की एक परिक्रमा पूरी कर लेता है। यह ग्रह सामान्यतः एक राशि में एक मास तक संचरण करता है।

गोचर फल-शुक्र अपनी राशि के मध्य में विशेषफल देता है। सामान्यतः यह राशि संक्रमण के एक सप्ताह पूर्व ही फल देना आरम्भ कर देता है। जन्म राशि के विभिन्न स्थानों पर गोचर शुक्र का प्रभाव इस प्रकार बताया गाया है-जन्म राशि पर हो तो शत्रुक्षय, द्वितीय स्थान में हो तो धन लाभ, तृतीय में हो तो शुभ, चतुर्थ में हो तो धन-लाभ, पंचम में हो तो पुत्र लाभ, षष्ठ में हो तो शत्रु भय, सप्तम में हो तो शोक, अष्टम में हो तो

अन्न अथवा अर्थ–लाभ, नवम में हो तो वस्त्र लाभ, दशम में हो तो अशुभ, एकादश में हो तो वित्त लाभ तथा द्वादश में हो तो प्रव्याप्ति। शुक्र के शुभस्थान 1,2,3,4,5,8,9,11,12 हैं। तथा बिद्ध स्थानों पर कोई अन्य ग्रह हो तो शुक्र अशुभ फल देता है। ये शुक्र के अनुलोम तथा प्रतिलोम कहे जाते हैं।

शुक्र समय–समय पर वक्री, मार्गी तथा अस्त होता रहता है। बुध, शनि, राहु तथा केतु–ये चारों शुक्र के नैसर्गिक मित्र ग्रह हैं। सूर्य तथा चन्द्रमा शत्रु हैं तथा मंगल एवं गुरु से इसका समभाव बना रहता है! शुक्र की गणना शुभग्रहों में की जाती है। इसका बुध के साथ सात्विक, शनि तथा राहु के साथ तमस मैत्री सम्बन्ध माना गया है। शुक्र मुख्य रूप से 25 से 28 वर्ष की अवस्था में जातक के जीवन पर अपना शुभ अथवा अशुभ प्रभाव प्रदर्शित करता है।

जन्म कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित शुक्र अपने दोषी–प्रभाव को नियमानुसार प्रकट करता है–

1. यदि जन्म कुण्डली में शुक्र वक्री, नीच, अस्तगत अथवा पापग्रहों के साथ हो तो अशुभ फल देता है।

2. यदि शुक्र छठे अथवा आठवें भाव में बैठा हो तो अशुभफल देगा।

3. यदि शुक्र शुभ भावों का स्वामी होकर, अपने भाव से अष्टम अथवा षष्ठ भाव में बैठा हो तो अशुभ फल देगा।

4. तृतीय भावस्थ शुक्र जातक को आलसी बनाता है।

5. षष्ठभावस्थ शुक्र जातक को दुराचारी, गुप्तरोगी, मूत्ररोगी तथा स्त्री सुख से हीन बनाता है।

6. सप्तम भावस्थ शुक्र जातक को कामी तथा अल्पव्यभिचारी बनाता है।

7. अष्टम भावस्थ शुक्र जातक को गुप्त रोगी, दुःखी, क्रोधी, रोगी, निर्दयी तथा परस्त्रीगामी बनाता है।

8. दशमभावस्थ शुक्र जातक को विलासी तथा लोभी बनाता है, एवं

9. द्वादश भावस्थ शुक्र जातक को परस्त्रीगामी, पतित, धातु–रोगी, आलसी तथा, स्थूल रोगी, या स्थूल शरीर बनाता है।

शुक्र भरणी, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, मृगशिरा, चित्रा एवं धनिष्ठा नक्षत्रों पर अशुभ फल देता है जब कि आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती, कृतिका,

स्वाति तथा आर्द्रा नक्षत्रों पर शुभफल देता है। शुक्र की अशुभ स्थिति होने पर शुक्रकृत पीड़ा के निवारणार्थ निम्नलिखित उपायों को करना हितकर सिद्ध होता है।

1. औषधि स्नान–जायफल, मैनसिल, पीपरामूल, केशर, इलायची तथा मूली बीज इनसे मिश्रित जल द्वारा स्नान करने से शुक्रकृत पीड़ा शांत होती है।

2. हीरादान–शुक्र के अरिष्ट तथा अनिष्ट प्रभाव को दूर करने के लिए हीरे का दान शुभ तथा हितकर कहा गया है। हीरा दान करने की विधि निम्नलिखित है–

शुक्रवार के दिन चाँदी के पत्र पर शुक्र के यन्त्र (जिसका स्वरूप नीचे दिया जा रहा है) को अंकित करवाएँ तथा उसके मध्य में एक हीरा जड़वाएँ। फिर उस यंत्र का विधिवत् पूजन करके प्राण प्रतिष्ठा करें या करायें। **'ॐ ऐं जं गौ शुक्राय नमः'**–इस मंत्र द्वारा शुक्रवार को हीरा अभिमन्त्रित करें तथा 49 दिनों तक इस मन्त्र का विधि पूर्वक पूजन सहित जप करते रहें। अन्त में आगे लिखी वस्तुओं के साथ उक्त यंत्र किसी सुपात्र ब्राह्मण को दान कर दें। दान की वस्तुएँ इस प्रकार हैं–1. श्वेत चन्दन 2. चाँदी 3. रंग बिरंगा वस्त्र (चित्राम्बर) 4. स्वर्ण 5. दूध 6. दही 7. चावल 8. मिश्री 9. श्वेत माला 10. सुगन्धित द्रव्य 11. श्वेत पुष्प 12. श्वेत अश्व तथा दक्षिणा। इस दान से शुक्रकृत पीड़ा का शमन होता है।
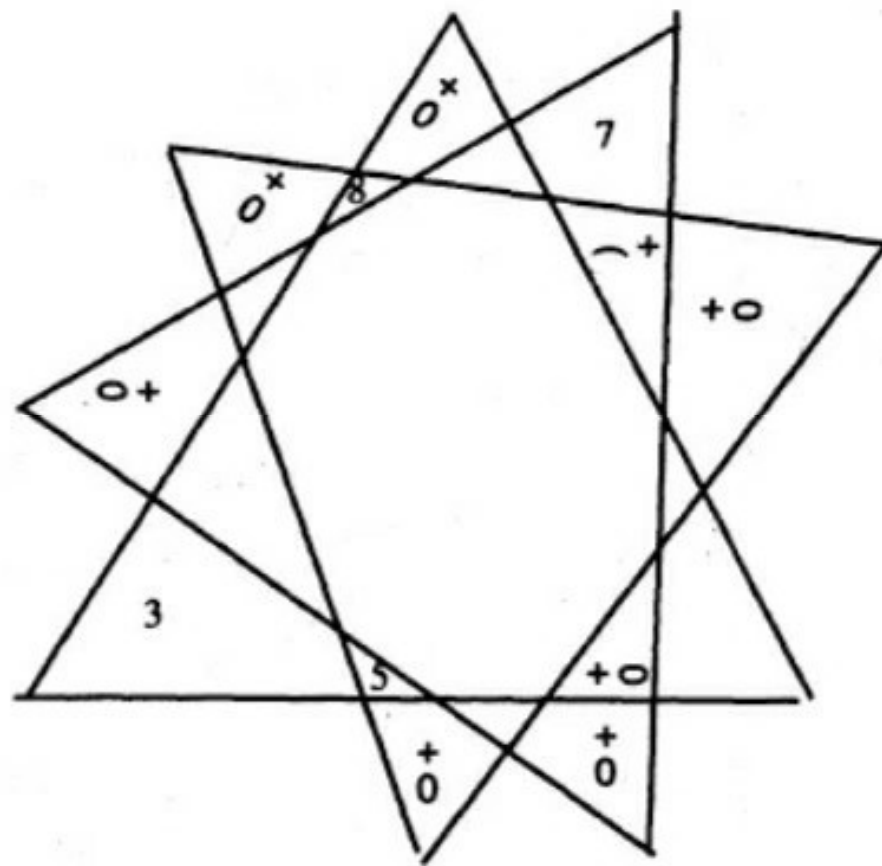
3. रत्नधारण–शुक्रकृत पीड़ा के निवारणार्थ शुक्र के रत्न 'हीरा' अथवा उसके उपरत्न अथवा प्रतिनिधि द्रव्यों को धारण करना चाहिए। रत्न धारण करने की विधि इस प्रकार है। शुक्रवार के दिन जब भरणी नक्षत्र, पूर्वाफाल्गुनी अथवा पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र हो अथवा शुक्र, वृष, तुला अथवा

मीन राशि पर हो, उस दिन प्रातःकाल सूर्योदय से 11 बजे तक के मध्यकाल में कम–से–कम 7 रत्ती स्वर्ण की एक अंगूठी बनवाकर, उसमें कम–से–कम 1 रत्ती हीरा जड़वाएँ। हीरा तथा स्वर्ण का वजन यदि समान हो तो और भी उत्तम रहेगा। अंगूठी के साथ ही 7 तोला वजनी चांदी के पत्र पर पूर्वोक्त शुक्र, मंत्र खुदवाकर, उसमें भी एक छोटा–सा हीरा जड़वाना चाहिए। जब यंत्र तथा अंगूठी तैयार हो जाए, तब यज्ञमण्डप बनाकर उसमें पंचकोणाकार शुक्र–स्थण्डल का निर्माण करें। तथा शुक्र यन्त्र को रत्न जड़ित अंगूठी सहित स्थापित कर **'ॐ ऐं जं गीं शुक्राय नमः'–इस मन्त्र को 4000 की संख्या में जप कर शुक्र के मूल्य मन्त्र "ॐ अन्नात्परिसुतो रसं ब्राह्मण व्यपिवत्क्षत्रं पयं सोमं प्रजापतिः ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान शं शुक्र मंधस इन्द्रस्येन्द्रि मिद्र पयो मृंत मधु"** का 16000 की संख्या में जप करें अथवा किसी ब्राह्मण से करायें। तत्पश्चात रत्न में शुक्र की प्राणप्रतिष्ठा करके अंगूठी को अपनी तर्जनी अथवा अंगुली में पहन लें तथा पूर्वोक्त दान की वस्तुओं सहित शुक्र यन्त्र किसी सुपात्र ब्राह्मण को दान कर दें। यदि शुक्रवार के दिन पुष्य नक्षत्र हो तो उस दिन अंगूठी को धारण करना विशेष शुभ रहेगा। अंगूठी में जड़वाने के 7 वर्ष तक हीरा प्रभावशाली बना रहता है। तदुपरान्त उस पुराने हीरे को बदल कर नया हीरा जड़वाना चाहिए। (पुराना हीरा नये व्यक्ति के पास पहुँचकर पुनः 7 वर्ष के लिए प्रभावकारी हो जायेगा।)

जो लोग हीरे को अंगूठी में न जड़वाना चाहें, वे चित्र–विचित्र रंग के वस्त्र में उसे बाँधकर पूर्वोक्त विधि के अनुसार पूजनादि करके कण्ठ अथवा भुजा में धारण कर सकते हैं। हीरे के अभाव में उसके उपरत्न संग कांसला, संग दतला, संग कुरंज अथवा संग तुरमूली को भी धारण किया जा सकता है। परन्तु उपरत्न कम प्रभावशाली सिद्ध होते हैं। इनके अतिरिक्त चाँदी अथवा सिंहपुच्छी की जड़ को धारण करना भी। शुभदायक रहता है।

4. मन्त्रोपचार–निम्नलिखित मन्त्रों का जप भी शुक्रकृत पीड़ा के निवारणार्थ में सहायक सिद्ध होता है–

1. "ॐ अन्नात्परिसुतो रसं ब्राह्मण व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विधान द्यूं शुक्र मंधस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयो मृत मधु शुक्राय नमः"। यह शुक्र का मुख्य मन्त्र है। इसका 16,000 की संख्या में जप करना चाहिए।

2. "ॐ शुं शुक्राय नमः"– यह भी शुक्र का लघु मन्त्र है। इसका भी 16,000 की संख्या में जप करना चाहिए।

3. 'ॐ ट्रां ट्रीं ट्रौ सः शुक्राय नमः'– इस मन्त्र का भी 16,000 की संख्या में ही जाप किया जाता है।

4. "हिमकुन्द मृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्र प्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यह्म"।।

इस मन्त्र का स्नान दानादि के समय अथवा किसी भी समय उच्चारण करना शुभकर रहता है।

5. अन्य अनिष्टकर शुक्र के प्रभाव शमनार्थ शुक्रवार को व्रत रखना हितकर रहता है। यदि शुक्र संतान पक्ष के लिए अहितकर हो तो गाय को पालना हितकर सिद्ध होता है।

शनि

पुराणानुसार शनि का जन्म सूर्य की द्वितीय पत्नी छाया के गर्भ से हुआ है। इसकी स्थिति बृहस्पति से दो लाख योजन ऊपर है। समस्त राशियों का परिभ्रमण यह तीस वर्ष में पूरा करता है। नवग्रह मण्डल में इसे सेवक का पद प्राप्त है। आधुनिक ज्योतिर्विदों के अनुसार शनि सूर्य से 88,00,00,000 मील तथा पृथ्वी से 79,10,00,000 मील (मतान्तर से 89,00,00,000 मील) की दूरी पर स्थित है। इसका व्यास 71500 मील माना गया है। यह अत्यन्त मन्द गति से चलने वाला ग्रह है। इसी कारण इसके 'शनैश्चर' तथा मन्द नाम रक्खे गये हैं। सूर्य के समीप पहुँचने पर इसकी गति लगभग 60 मील प्रतिघण्टा हो जाती है। सामान्यत: एक राशि में भ्रमण करने में इसे ढाई वर्ष का समय लगता है। तथा सूर्य की एक परिक्रमा करने में इसे ३० वर्ष लग जाते हैं। यह आकाश मण्डल का सबसे सुन्दर ग्रह है। इसके चारों ओर तीन वलय–कंकण जैसे चक्र एक दूसरे से अलग रहते हुए घूमा करते हैं। शनि इन वलयों के साथ ही आकाश में संचरण करता रहता है। अन्य किसी भी ग्रह में ऐसे वलय नहीं हैं। यह एक राशि पर लगभग ३० मास रहता है तथा राशि के अन्तिम भाग में पूर्ण फल देता है। यों यह राशि संचरण से ६ मास पूर्व ही अपना चमत्कार प्रदर्शित करना आरम्भ कर देता है।

गोचर प्रभाव– जन्म राशि से विभिन्न स्थानों पर गोचर–शनि का प्रभाव निम्नानुसार होता है–

जन्म राशि में हो तो रोग तथा धन–क्षय, द्वितीय स्थान में हो तो क्लेश, धन हरण एवं चिंता, तृतीय में हो तो धनागम (मतान्तर से शत्रु नाश) चतुर्थ में हो तो शत्रु वृद्धि, पंचम में हो तो मृत्यु, पुत्र, धन का नाश, षष्ठ में हो तो अर्थ, अन्न का लाभ, सप्तम में हो तो दोष, संग्रह, अनिष्ट, अष्टम में हो तो शरीर पीड़ा, नवम में हो तो धन–क्षय, दशम में हो तो वित्त लाभ एवं द्वादश स्थान हो तो अनर्थ।

शनि के शुभ स्थान 3, 6, तथा 11 एवं बिद्ध स्थान 12, 9 तथा 5 हैं। शनि का वेध मंगल की भांति ही समझना चाहिए। शनि के बुध, शुक्र, राहु तथा केतु नैसर्गिक मित्र हैं। सूर्य, चन्द्र तथा मंगल शत्रु हैं तथा गुरु से समभाव हैं। इसकी गणना पापग्रहों में की जाती है। यह बुद्ध के साथ सात्विक, शुक्र के साथ रजस, मैत्री सम्बन्ध रखता है। इसे सब ग्रहों से अधिक बलशाली माना गया है। जातक के जीवन पर शनि मुख्य रुप से 36 से 42 वर्ष की अवस्था में अपना विशेष प्रभाव प्रकट करता है। शनि की साढ़े साती ढैया भी विशेष प्रभाव करती है।

जन्म कुण्डली के विभिन्न भागों में शनि अपने दोषपूर्ण प्रभाव को निम्नानुसार प्रकट करता है।

1. यदि जातक का जन्म मेष, वृष, तुला अथवा वृश्चिक में हुआ हो तो शनि अशुभ फल देता है।

2. यदि शनि मेष राशि पर स्थित हो तो अशुभ फल देता है।

3. यदि शनि सूर्य के साथ हो तो अशुभ फल देता है।

4. यदि शनि जन्म कुण्डली में वक्री, दुर्बल अथवा असंगत हो तथा शुभ भावों का प्रतिनिधित्व कर रहा हो तो अशुभ फल देता है।

5. यदि शनि षष्ठेश अथवा अष्टमेश के साथ बैठा हो तो अशुभ होता है।

6. यदि शनि अपने भाव से छठे अथवा आठवें स्थान में बैठा हो तो अशुभ फल देता है।

7. यदि शनि चतुर्थ, पंचम, दशम अथवा एकादश भाव में बैठा हो तो कष्ट कारक होता है।

8. यदि शनि सूर्य की राशि पर बैठा हो तो अथवा सूर्य से दृष्ट हो तो अशुभ होता है।

9. मकर तथा तुला के अतिरिक्त अन्य किसी भी राशि का लगनस्थ शनि जातक को दरिद्र बनाता है।

10. शनि अपनी साढ़े साती की अवधि में प्राय: अशुभ फल ही देता है।

11. द्वितीय भावस्थ शनि जातक को मुख रोगी बनाता है।

12. चतुर्थ भावस्थ शनि जातक को कृश शरीर, बलहीन, अपयशी, कपटी, धूर्त, उदासीन तथा वात-पित्त-विकारी बनाता है।

13. पंचम भावस्थ शनि जातक को आलसी, उदासीन तथा वातरोगी बनाता है।

14. षष्ठ भावस्थ शनि जातक को कण्ठरोगी, शवासरोगी, क्षय रोगी, आचारहीन, भोगी तथा जाति विरोधी बनाता है।

15. सप्तम भावस्थ शनि जातक को नीच कर्म करने वाले, आलसी, विलासी, कामी, क्रोधी, धनहीन, सुखहीन तथा आचारहीन बनाता है।

16. अष्टम भावस्थ शनि जातक को कपटी, वाचाल, धूर्त, डरपोक, गुप्त रोगी, तथा कुष्ठ रोगी बनाता है।

17. नवम भावस्थ शनि जातक को कृश शरीर, भीरु, वात रोगी तथा, अन्य रोगों का रोगी बनाता है।

18. दशम भावस्थ शनि उदर विकार देता है।

19. एकादश भावस्थ शनि जातक को क्रोधी तथा पुत्रहीन बनाता है।

20. द्वादश भावस्थ शनि जातक को दुष्ट, व्यसनी, कटुभाषी, अविश्वासी, आलसी, अव्ययी, उन्मादी तथा अपस्मार-रोगी बनाता है।

जन्म कुण्डली में शनि की अशुभ-स्थिति होने पर शनिकृत पीड़ा के निवारणार्थ निम्नलिखित उपायों को करना हितकर तथा पीड़ा शामक सिद्ध होता है।

1. औषधि स्नान- साफ, खिरैटी, लोध्र, खस, लोबान, सुरमा, धामनी काले तिल, गोंद, शतकुसुम तथा खिल्ला मिश्रित जल द्वारा स्नान करने से शनिकृत पीड़ा का शमन होता है।

2. नीलम-दान-जिनके लिए शनि अरिष्ट अथवा अनिष्ट कारक हो, उन्हें दोष परिहारार्थ नीलम का दान करना शुभ तथा हितकर रहता है। नीलम-दान की विधि निम्नलिखित है-

शनिवार के दिन लोहा, सीसा, अथवा रांगे के पत्र पर शनि यंत्र को खुदवाएँ-(शनि यंत्र का स्वरूप नीचे दिया जा रहा है) तथा उसके मध्य में

एक नीलम जड़वाएँ फिर उस यंत्र का विधिवत् पूजन करके प्राण प्रतिष्ठा करें। **"ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः"**–इस मन्त्र से अभिमन्त्रित करना चाहिए। मन्त्र जप तथा यंत्र पूजन के बाद प्राण प्रतिष्ठा करके मध्यकाल में दीप–बलि दें। अन्त में निम्नलिखित वस्तुओं के साथ किसी ज्योतिषी (जोशी) को दान करें। दान की वस्तुएँ इस प्रकार हैं– 1. लोहा 2. सरसों का तेल 3. उपानह अर्थात जूते 4. भैंस 5. काला वस्त्र 6. काली गाय 7. उड़द 8. काले पुष्प 9. स्वर्ण 10. कुलथी 11. कस्तूरी और दक्षिणा। इस दान से शनिकृत बाधा शान्त होती है।

3. रत्न–धारण– शनिकृत पीड़ा के निवारणार्थ शनि का रत्न नीलम अथवा उसके उपरत्न अथवा उसके प्रतिनिधि द्रव्यों को धारण करना शुभफल प्रद रहता है। रत्न धारण की विधि इस प्रकार है।
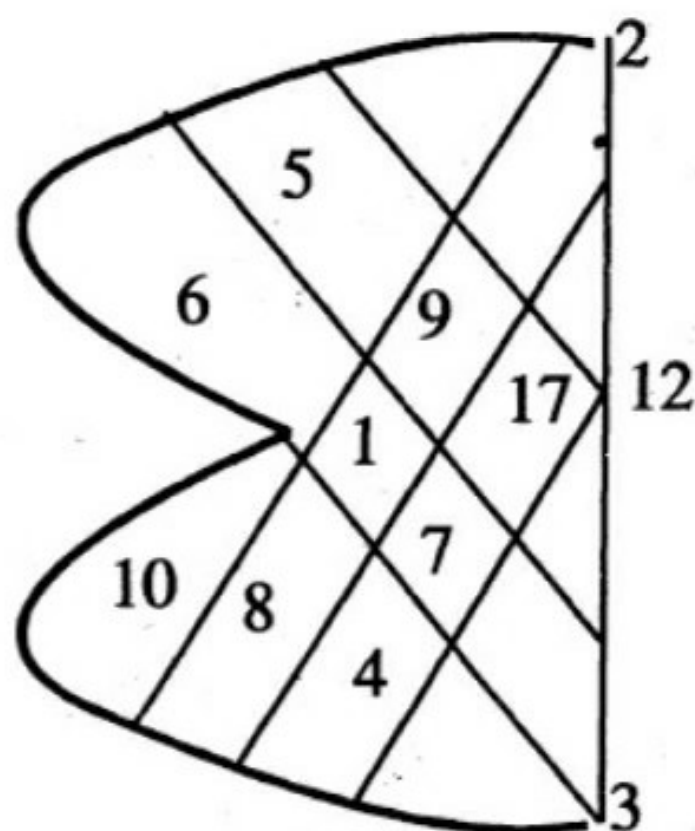
शनिवार के दिन जब उत्तराषाढ़ा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, चित्रा, स्वाति अथवा विशाखा नक्षत्र हो, तब अथवा जब शनि मकर अथवा कुंभ राशि में हो, अथवा तुला राशि के उच्च स्थान में हो तब नीलम खरीद कर, उसे लोहा, सीसा, रांगा, पंचधातु अथवा स्वर्ण की अंगूठी में जड़वाएँ। नीलम का वजन कम–से–कम 4 रत्ती हो तथा स्वर्ण आदि धातु का वजन 9 रत्ती से कम नहीं होना चाहिए। अंगूठी के साथ ही पूर्वोक्त शनि यंत्र का निर्माण भी करा लेना चाहिए।

अंगूठी तथा यंत्र के तैयार हो जाने पर शनि स्थण्डल का निर्माण करें। धनुषाकार शनि स्थण्डल बनाकर उस पर शनि यंत्र को स्थापित कर, यंत्र के ऊपर नीलम जड़ित अंगूठी को रखकर, विधिपूर्वक षोडशोपचार पूजन करें तथा प्राण–प्रतिष्ठा करें। इसके बाद **"ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः"**

इस मन्त्र द्वारा 6000 आहुतियाँ देकर हवन करें। फिर निम्नलिखित शनि के मुख्य मन्त्र का 23,000 की संख्या में जप करें–

“ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये शंय्योरभिस्त्रवन्तु नः ।”

मन्त्र जप के बाद अंगूठी को दायें हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण कर पूर्णाहूति दें तथा शनि–यन्त्र को दान की अन्य वस्तुओं सहित जोशी को दान कर दें। सायंकाल दीप–बलि, भैरव पूजन, दीप–दान, आदि कृत्य करने चाहिए। इस प्रकार से नीलम जड़ित अंगूठी धारण करने से शनिकृत पीड़ा शान्त होती है तथा धारण कर्ता की मनोभिलाषाएँ पूर्ण होती हैं। अंगूठी में जड़वाने के पाँच वर्ष तक नीलम प्रभावकारी बना रहता है। तत्पश्चात् उसमें नया नग जड़वाना चाहिए। पुराना नग नये व्यक्ति के पास पहुँचकर पुनः 5 वर्ष के लिए प्रभावकारी हो जाता है।

जो लोग नीलम की अंगूठी न पहिनना चाहें, वे नीलम को काले रंग के वस्त्र में बांधकर, पूर्वोक्त विधि से पूजनादि करके उसे कण्ठ अथवा भुजा में धारण कर सकते हैं। नीलम के अभाव में उसके उपरत्न संगमीली तथा संग जमुनिया को अथवा बिछली (बिच्छोल) की जड़ को भी धारण किया जा सकता है। परन्तु ये द्रव्य नीलम की अपेक्षा कम प्रभावशाली सिद्ध होंगे।

4. मन्त्रोपचार–निम्नलिखित मन्त्रों का निश्चित संख्या में जप करने से शनिकृत पीड़ा दूर करने में सहायता मिलती है।

1. **‘ॐ शन्नो देवी रभिष्टय आपे, भवन्तु पीतये। शंय्योरभिस्त्रवन्तु नः।’** यह शनि का मुख्य मन्त्र है। इसका 23,000 की संख्या में जप करना चाहिए।

2. **“ॐ शं शनैश्चराय नमः”**–यह शनि का लघु मन्त्र है। इसका भी 23,000 की संख्या में जप किया जाना चाहिए।

3. **“ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः”**–इस मन्त्र का भी 23,000 की संख्या में जप करना चाहिए।

4. **“नीलांचन समाभंस रविपुत्र यमाग्रजम।
छाया मार्तण्ड सम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्”।।**

इस मन्त्र का स्नान–दान के समय अथवा कभी भी जप करना शुभ रहता है।

5. अन्य शनि दोष शान्ति के लिए–(क) शनिवार के दिन व्रत रखना हितकर रहता है। सूर्यास्त के समय व्रत भंग करने से पूर्व हनुमान् जी का

सिन्दूर, तिल्ली के तेल तथा लालरंग के पुष्पों से पूजन करना चाहिए एवं तिल्ली के तेल का दीपक जलाकर रखना चाहिए। (ख) यदि शनि सन्तान पक्ष के लिए अहितकर हो तो महामृत्युंजय स्तोत्र का पाठ एवं मृत्युंजय की आराधना करना शुभ तथा अभीष्ट फलदायक सिद्ध होता है। (ग) शनि-दोष शमनार्थ शनिस्तोत्र का पाठ करना भी हितकर रहता है।

राहु

पुराणानुसार हिरण्यकशिपु की सिंहिका नामक पुत्री का विवाह विप्रचित्ति नामक दानव के साथ हुआ था। उसी के गर्भ से राहु ने जन्म लिया। समुद्र मन्थन के समय जब श्री विष्णु मोहिनी रुप धारण कर देवताओं को अमृत बाँट रहे थे, उस समय राहु भी देवताओं का स्वरूप धारण कर देवताओं की पंक्ति में जा बैठा तथा उसने भी अमृत पान कर लिया था। राहु के इस छल को सूर्य और चन्द्रमा ने ताड़ लिया। उन्होंने संकेत से वास्तविकता बतलाई तो विष्णु ने अपने सुदर्शन चक्र से राहु के मस्तक पर प्रहार किया। चक्र के प्रभाव से राहु का सिर कटकर धड़ से अलग हो गया। परन्तु अमृत पान किये होने के कारण वह मरा नहीं तथा सिर और धड़ दोनों ही अलग-अलग जीव बने रहे। सिर का नाम राहु तथा धड़ का नाम केतु हुआ। उसी समय से यह दोनों सूर्य तथा चन्द्रमा से शत्रुता मानते हैं तथा उन्हें ग्रहण लगाते हैं। पुराणानुसार राहु सूर्य से 10000 योजन की नीचाई पर रहते हुए अन्य ग्रहों की भांति आकाश मण्डल में भ्रमण करता है।

ज्योर्तिविज्ञानियों के मतानुसार अन्य ग्रहों की भांति सौर-मण्डल में राहु तथा केतु के कोई ज्योतिपिण्ड नहीं हैं। इन्हें उत्तरी तथा दक्षिणी ध्रुव की छाया मात्र बन गया है। प्रचीन भारतीय ज्योतिष में मुख्य ग्रह केवल सात ही माने जाते हैं। परन्तु बाद के ज्योतिषियों ने इन छाया ग्रहों के रूप में स्वीकार करके इन्हें ग्रह मण्डल में स्थान दिया तथा इस प्रकार ग्रहों की कुल संख्या 9 मान ली गयी। अध्ययन, अनुसंधान तथा अनुभव से यह सिद्ध हो चुका है कि राहु केतु का भी चराचर जगत पर ग्रहों की भाँति ही विशिष्ट प्रभाव परिलक्षित होता है। कुछ विद्वान राहु का व्यास 30,000,00 मील तथा पृथ्वी से इसकी दूरी 90,000,00 मील मानते हैं। राहु तथा केतु आपस में छ: राशि अर्थात 180 अंश के अन्तर से वक्र गति से अर्थात अन्य ग्रहों की

अपेक्षा उलटी गति से घूमते हैं। एक राशि पर भ्रमण करने से इन्हें प्राय: 18 मास तथा द्वादश राशियों का संक्रमण करने में लगभग 18 वर्ष का समय लगता है।

नवग्रह मण्डल में राहु–केतु को कोई स्थान प्राप्त नहीं है। इनकी अपनी कोई राशि भी नहीं है। परन्तु कुछ विद्वान कन्या राशि पर राहु का आधिपत्य मानते हैं, तथा कुछ विद्वान इसे वृष राशि पर तथा कुछ मिथुन राशि के 15 अंश तक उच्चस्थ मानते हैं। इसी प्रकार कुछ विद्वान वृश्चिक राशि तथा कुछ धनु राशि के 15 अंश तक नीचस्थ मानते हैं। कुछ के मतानुसार कर्क तथा कुंभ राशि में मूल त्रिकोणस्थ होता है। राहु को मेष, वृष, मिथुन, कर्क, कन्या, वृश्चिक, तथा कुंभ राशि एवं दशम भाव बलवान माना जाता है। बुध शुक्र तथा शनि इसके नैसर्गिक मित्र हैं। सूर्य, चन्द्र तथा मंगल शत्रु हैं एवं गुरु से इसका समभाव है। इसकी गणना क्रूर ग्रहों में की जाती है। तथा इसे अत्यन्त बलवान माना जाता है। मेष तथा तुला लग्न में यह योगकारक माना गया है। आर्द्रा–स्वाति तथा शतभिषा नक्षत्रों पर यह शुभ फल देता है। मुख्य रूप से 42 से 48 वर्ष की आयु में यह जातक के जीवन पर अपना विशेष प्रभाव प्रकट करता है।

जन्म कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित राहु अपने दोषी प्रभाव को निम्नानुसार प्रकट करता है।

1. प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, सप्तम, नवम, दशम, तथा एकादश भाव में राहु की स्थिति शुभ नहीं मानी जाती है। परन्तु कुछ विद्वान तीसरे, छठे तथा ग्यारहवें भाव राहु की स्थिति को शुभ भी मानते हैं।

2. नीच अथवा धनु राशि का राहु, अशुभ फल देता है।

3. यदि राहु शुभ भावी का स्वामी होकर अपने भाव से छठे अथवा आठवें स्थान पर बैठा हो तो अशुभ फल देता है।

4. यदि राहु श्रेष्ठ भाव का स्वामी होकर सूर्य के साथ बैठा हो अथवा शुक्र या बुध के साथ बैठा हो तो अशुभ फल देता है।

5. सिंह राशिस्थ अथवा सूर्य से दृष्ट राहु अशुभ होता है।

6. लग्नस्थ राहु जातक को मस्तक रोगी, दुर्बल, नीच, कर्मरत, कामी, तथा अल्प सन्ततिवान बनाता है।

7. द्वितीयस्थ राहु जातक को कठोर भाषी तथा मात्सर्य युक्त बनाता है।

8. चतुर्थस्थ राहु जातक को क्रूर, कपटी, असंतोषी, दुःखी, मिथ्याचारी तथा उदर रोगी बनाता है।

9. पंचस्थ राहु जातक को उदर रोग देता है।

10. षष्ठस्थ राहु कमर दर्द देता है।

11. सप्तमस्थ राहु व्यवसाय में हानि, स्त्री विनाश, दुराचरण एवं वात रोग कारक होता है।

12. अष्टमस्थ राहु जातक को क्रोधी, उदर रोगी, गुप्त रोगी तथा कामी बनाता है।

13. नवमस्थ राहु वात रोग कारक होता है।

14. एकादशस्थ राहु अल्प संतति देता है।

15. द्वादशस्थ राहु जातक को कामी, अविवेकी, चिन्तातुर तथा खर्चीला बनाता है।

जन्म कुण्डली में राहु की अशुभ स्थिति हो तो राहु कृत पीड़ा के निवारणार्थ निम्नलिखित उपाय हितकर होते हैं–

1. औषधि स्नान– कस्तूरी, गजदन्त, लोबान, मुत्थरा तथा तारपिन मिश्रित जल से स्नान करने पर राहुकृत पीड़ा का शमन होता है।
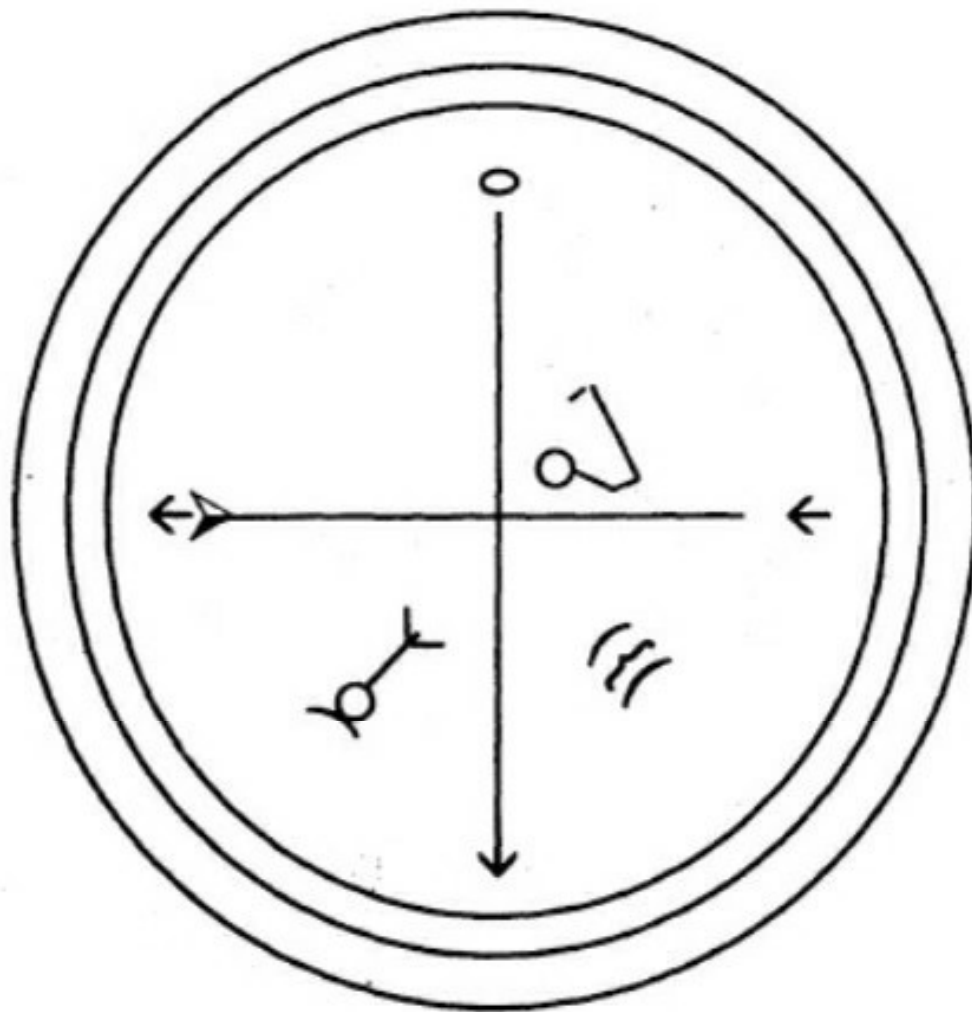
2. गोमेद दान– अनिष्टकारक, राहु की शान्ति के लिए गोमद का दान शुभकारक सिद्ध होता है। गोमेद दान की विधि इस प्रकार है–स्वर्ण पत्र के ऊपर राहु का यंत्र (जिसका स्वरूप ऊपर पर दिया गया है) अंकित करवा कर उसके मध्यभाग में एक गोमेद जड़वाएं, और फिर **"ॐ क्रों क्रीं हुं हुं टं टंकधारिणे राहवेरं ह्रीं श्रीं स्वाहा"**–इस मन्त्र द्वारा उसे अभिमन्त्रित कर 72

दिन तक यंत्र को विधिपूर्वक पूजन तथा उक्त मन्त्र का प्रतिदिन हजार की संख्या में जप करते रहें। जब 72,000 की संख्या में मन्त्र जप पूरी हो जाय तब शुक्रवार अथवा बुधवार की रात्रि में आगे लिखी दान-सामग्री उक्त यन्त्र को छाया दान तथा काल पुरुष के दान सहित किसी जोशी को दान कर दें। दान की वस्तुएँ इस प्रकार हैं-1. सीसा 2. सरसों का तेल, 3. तिल 4. कम्बल 5. मछली 6. तलवार 7. घोड़ा 8. नीले रंग का वस्त्र 9. स्वर्ण 10. गोमेद 11. काले रंग का पुष्प 12. सूप 13. अभ्रक और दक्षिणा।

उक्त विधि से गोमेद दान करने की राहुकृत बाधा शान्त होकर सब प्रकार के अरिष्ट दूर होते हैं। मनोभिलाषा की पूर्ति होती है।

3. रत्न धारण-राहुकृत पीड़ा के निवारणार्थ राहु के रत्न गोमेद अथवा उसके उपरत्न अथवा प्रतिनिधि द्रव्यों को धारण करना भी शुभदायक रहता है। रत्नधारण करने की विधि आगे लिखी अनुसार समझनी चाहिए। रत्न धारण करने से राहुकृत अनिष्टकारक प्रभाव शान्त हो जाता है।

आर्द्रा, स्वाति, अथवा शतभिषा नक्षत्र वाले दिन प्रात: 10 बजे से पूर्व पंचधातु अथवा लोहे की अंगूठी बनाकर उसमें 4 रत्ती वजन का गोमेद चढ़वावें। अंगूठी की धातु का वजन 7 रत्ती से कम नहीं होना चाहिए। गोमेद को अंगूठी में इस प्रकार जड़वाना चाहिए कि उसका निचला भाग अंगुली की त्वचा को स्पर्श करता रहे। अंगूठी के साथ ही 11 तोला वजनी चाँदी के पत्र पर पूर्वोक्त राहु का यंत्र खुदवाकर उसमें एक गोमेद भी जड़वा लेना चाहिए। अंगूठी तथा यंत्र के तैयार हो जानेपर उसी दिन प्रात:काल 11 बजे के बाद सर्वप्रथम राहु का स्थंडिल बनाकर उस पर राहु यंत्र को रखे। तथा यंत्र के ऊपर अँगूठी को रखकर षोडशोपचार पूजन कर तथा गोमेद दान की विधि में वर्णित राहु के मन्त्र का उच्चारण करते हुए रत्न में प्राण-प्रतिष्ठा कर उसी यंत्र के द्वारा राहु यज्ञ आरंभ करके 1000 आहुतियाँ दें। फिर मध्याह्न काल में योगिनी चक्र बनाकर दीप-दान करें। तदुपरान्त राहु के निम्नलिखित मुख्य यंत्र का 13,000 की संख्या में जप करें।

ॐ कयानश्चित्र आमूवदूती सदा वृधः सखा। कया। शचिष्ठया वृता।

उक्त विधि से गोमेद-जड़ित अंगूठी धारण करने से राहुकृत अनिष्ट का प्रभाव शमन होकर धारणकर्ता की मनोभिलाषाएं पूर्ण होती हैं। अंगूठी में जड़वाने के दिन से गोमेद 3 वर्ष तक प्रभावशाली बना रहता है। तदुपरान्त

नया रत्न जड़वाना चाहिए। पुराना रत्न नये व्यक्ति के पास पहुंचकर पुनः तीन वर्ष के लिए प्रभावकारी हो जाता है।

जो लोग गोमेद को अंगूठी में न जड़वाना चाहें वे उसे नीले रंग के वस्त्र में बांधकर पूर्वोक्त विधि से पूजनादि करके भुजा अथवा कण्ठ में भी धारण कर सकते हैं। गोमेद के अभाव में उसके उपरत्न तुरसावा अथवा संगसाफी अथवा प्रतिनिधि द्रव्य चन्दन को भी धारण किया जा सकता है। परन्तु ये सब कम प्रभावकारी रहते हैं।

4. मन्त्रोपचार–निम्नलिखित मन्त्रों का जप भी राहुकृत पीड़ा के निवारण में सहायक सिद्ध होता है।

(क) "ॐ कयामनिचत्र आभुदूती सदावृद्धः सखा। कया शचिष्ठया वृता। राहवे नमः"–इस मन्त्र का 18000 की संख्या में जप करना चाहिए। यह राहु का मुख्य मन्त्र है।

(ख) "ॐ रां राहवे नमः"–यह मन्त्र का राहु मन्त्र है। इसकी जप संख्या भी 18,000 ही है।

(ग) "ॐ भ्रां भ्रौं सः राहवे नमः।" इस मन्त्र की जप संख्या भी 18,000 है।

(घ) "अर्धकाय महावीर्य चन्द्रादित्यविमर्दनम्।
सिंहिका गर्भ सम्भूतं तं राहु प्रणमामहम"

इस मन्त्र का स्नान–दान आदि अथवा अन्य किसी भी समय उच्चारण करना शुभ रहता है।

5. अन्य–यदि राहु सन्तान पक्ष के लिए बाधक हो तो उस बाधा को दूर करने के लिए कन्यादान करना चाहिए। अर्थात् अपनी ओर के किसी कन्या का विवाह कर देना चाहिए।

केतु

इसका पौराणिक परिचय राहु के वर्णन में देख लें। इसकी अपनी कोई राशि नहीं है परन्तु कुछ विद्वान मीन राशि पर इसका भी आधिपत्य मानते हैं। इसे धनुत्मतान्तर से वृश्चिक राशि पर उच्चस्थ तथा मिथुन (मतान्तर से वृष) राशि पर नीचस्थ माना जाता है। कुछ विद्वान इसे सिंह राशि पर मूल त्रिकोणस्थ मानते हैं। वृष, धनु, एवं मीन राशि में यह बलवान होता है। मिथुन, कन्या, धनु, मकर तथा मीन इसकी मित्र एवं कर्क तथा सिंह शत्रु

राशियां हैं। अश्विनी, मघा तथा मूल इसके स्वनक्षत्र माने गये हैं। यह गुरु के साथ सात्त्विक एवं सूर्य, चन्द्र एवं मंगल के साथ शत्रुवत व्यवहार रखता है। बुध, शुक्र तथा शनि इसके नैसर्गिक मित्र हैं। जन्म-कुण्डली में यह सदैव राहु से सप्तम स्थान पर ही रहता है। केतु को अशुभ तथा पापग्रह माना गया है, परन्तु अत्यन्त बली एवं मोक्षदायक होने से इसे लाभदायक भी कहा गया है। कुछ विद्वान इसे राहु का अर्द्धांग होने के कारण सब प्रकार से राहु के समान ही मानते हैं। शुभस्थिति में होने पर यह अन्य शुभग्रहों से अधिक शुभफल देता है अतः कुछ विद्वान इसे शुभग्रह भी मानते हैं। यह मुख्य रूप से 48-54 वर्ष की आयु में जातक के जीवन पर अपना विशेष प्रभाव प्रकट करता है।

जन्म कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित केतु अपने दोषी प्रभाव को निम्नानुसार प्रकट करता है।

1. यदि केतु मंगल, गुरु अथवा शुक्र के साथ बैठा हो तो अशुभ होता है।

2. यदि द्वितीय, चतुर्थ, पंचम, नवम, अथवा दशम भाव में स्थित हो तो अशुभ माना जाता है।

3. यदि केतु सूर्य से युक्त अथवा दृष्ट हो तो अशुभ फल देता है।

4. यदि किसी शुभ भाव का स्वामी होकर, उस भाव से छठे अथवा आठवें भाव में बैठा हो तो अशुभ होता है।

5. यदि सौम्य तथा शुभग्रहों के साथ हो तो अशुभ होता है। (इस संबंध में मतभेद भी है)

6. यदि पंचमेश अथवा नवमेश के साथ बैठा हो तो अशुभ फल देता है।

7. यदि द्वितीयेश, नवमेश, दशमेश, एकदशेश अथवा चतुर्थेश के साथ युति अथवा दृष्टि सम्बन्ध रखता हो तो अशुभ फल देता है।

8. मीन, मेष, सिंह तथा धनु राशि तथा अश्विनी मघा एवं मूल नक्षत्र वालों के लिए केतु शुभ नहीं होता।

9. लगनस्थ केतु जातक को भीरु तथा दुराचारी बनाता है।

10. द्वितीयस्थ केतु मुख रोग देता है।

11. तृतीयस्थ केतु वातरोग देता है।

12. पंचमस्थ केतु जातक की वातरोगी एवं दुर्बुद्धि बनाता है।

13. षष्ठ भावस्थ केतु भूत बाधा जनित रोग तथा वात-विकारों को देता है।

14. सप्तमस्थ केतु मतिमन्दता एवं सुख-हानि देता है।
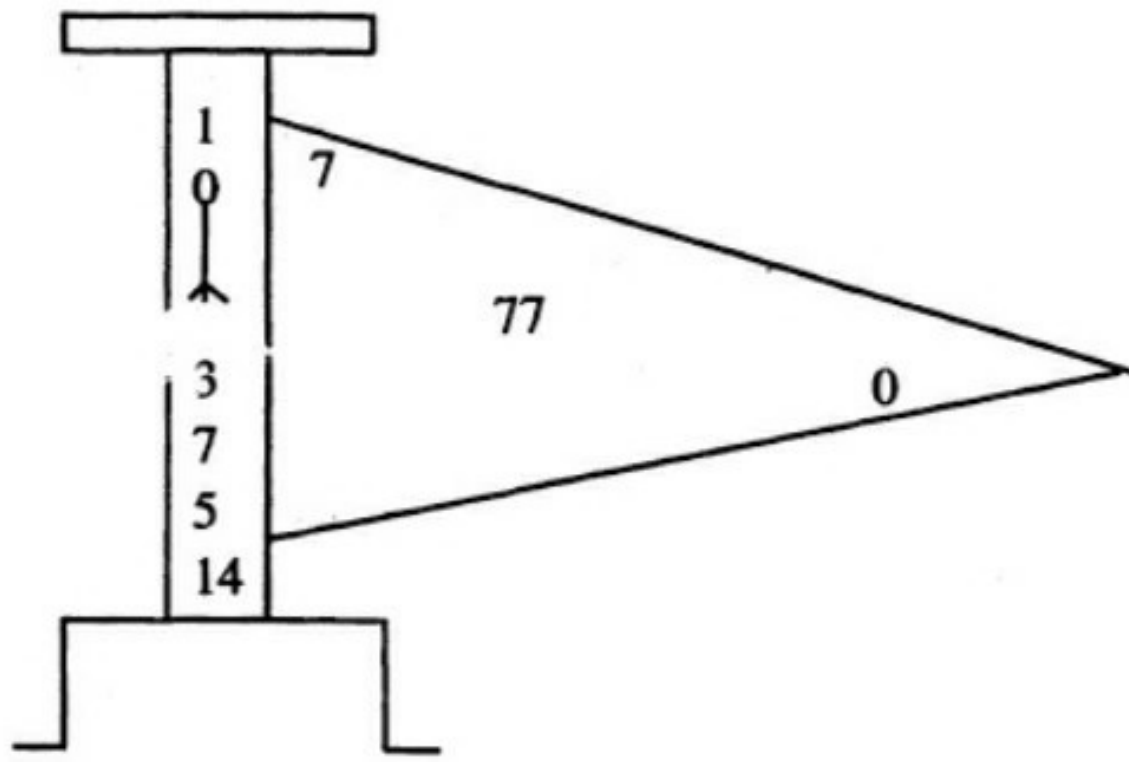
15. अष्टमस्थ केतु दुर्बुद्धिदायक होता है।

16. नवमस्थ केतु अपयश देता है।

17. दशमस्थ केतु जातक को पितृ-द्वेषी बनाता है।

18. एकादशस्थ केतु बुद्धिहीनता एवं वातरोग देता है, तथा

19. द्वादशस्थ केतु जातक को ठग एवं धूर्त बनाता है।

जन्म कुण्डली में केतु की अशुभ स्थिति होने पर केतु-पीड़ा के शमनार्थ निम्नलिखित उपायों को करना हितकर सिद्ध होता है।

1. औषधि स्नान-लाल चन्दन तथा छाग मूत्र मिश्रित जल से स्नान करने पर केतुकृत पीड़ा का शमन होता है।

2. वैडूर्य दान-जिन लोगों के लिए केतु अनिष्ट, अरिष्ट अथवा अशुभकारक हो, उन्हें केतुकृत पीड़ा के निवारणार्थ वैडूर्य अर्थात लहसुनिया नामक रत्न का दान करना हितकर कहा गया है। वैडूर्य दान की विधि निम्नानुसार है।

रांगे के पत्र के ऊपर केतु का यन्त्र अंकित करायें (केतु यन्त्र का स्वरूप अगले पृष्ठ पर प्रदर्शित किया गया है।) फिर, उसके मध्य भाग में एक लहसुनिया जड़वायें। फिर यन्त्र का षोडशोपचार पूजन एवं प्राण-प्रतिष्ठा करके **"ॐ ह्रीं, क्रूं क्रूररूपिण्ये केतवे ऐं सौं स्वाहा"** इस मन्त्र का 28,000 की संख्या में जप करते हुए हवन करें। हवन तथा मन्त्र जप आदि कार्य रात्रि में ही करने चाहिए। जब मन्त्र जप पूरा हो जाय तब रात्रि में ही आगे लिखित सामग्री सहित उक्त यन्त्र किसी सत्पात्र को दान कर दें। दान की वस्तुएं इस प्रकर हैं- 1. लोहा 2. सप्तधान्य 3. शस्त्र 4. कम्बल 5. धूम्र वस्त्र 6.

तिल तेल 7. कृष्णपुष्प 8. कस्तूरी 9. स्वर्ण 10. नारियल 11. बकरा तथा दक्षिणा। इस प्रकार वैडूर्य (लहसुनिया) दान करने से केतुकृत अरिष्ट दोष शान्त होकर मनोभिलाषा पूर्ण होती है।

3. रत्न धारण–केतुकृत पीड़ा के शमनार्थ केतु के रत्न वैडूर्य (लहसुनिया) अथवा उसके उपरत्न अथवा प्रतिनिधि द्रव्यों को धारण करना शुभफल दायक एवं हितकर रहता है। रत्न धारण करने की विधि निम्नलिखित है।

जब बुधवार अथवा शुक्रवार को अश्विनी, मघा तथा मूल नक्षत्र हो अथवा चन्द्रमा मीन, मेष अथवा धनु राशि का हो तब सायंकाल पाँच से आठ बजे के बीच पंचधातु की अंगूठी में लहसुनिया जड़वाना चाहिए। लहसुनिया का वजन कम–से–कम 4 रत्ती अथवा धातु का वजन कम–से–कम सात रत्ती होना चाहिए। यदि वजन और अधिक हो तो अधिक शुभ रहेगा। अंगूठी के साथ ही 7 तोला वजनी चाँदी के पत्र पर पूर्वोक्त केतु का यंत्र भी अंकित करवा लेना चाहिए। जब अंगूठी तथा यंत्र दोनों तैयार हो जाएं तब दूसरे दिन प्रातःकाल 9 बजे के लगभग केतु का मण्डल बनाकर, उसमें केतु स्थंडिल का निर्माण करें, तथा उस पर यंत्र तथा यंत्र के ऊपर रत्न जड़ित अंगूठी रखकर विधिपूवर्क षोडशोपचार पूजन करें। तथा **"ॐ ह्रीं क्रीं क्रूं कूरं रूपिण्यै केतवे स्वाहा।"** इस मन्त्र का उच्चारण 1700 आहुतियाँ देकर हवन करें। फिर केतु के मुख्य मन्त्र **ॐ केतु कृण्वन्नकेतवे पेशोमर्ध्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथा: केतवे नमः।** इस मन्त्र का 1700 की संख्या में जप करें। जप की समाप्ति पर पूर्णाहुति देकर मध्यमा अंगुली में अंगूठी को धारण कर लें तथा दान सामग्री सहित यंत्र किसी सुपात्र को दान करें। बुधवार अथवा शुक्रवार को सूर्यास्त के बाद चार–घड़ी के भीतर ही वैडूर्य को धारण करना शुभ रहता है। इस विधि से अंगूठी धारण करने से केतुकृत अनिष्ट प्रभाव का शमन होता है तथा धारणकर्ता की मनोभिलाषाएं पूर्ण होती हैं। अंगूठी जड़वाने के दिन से 3 वर्ष तक वैडूर्य (लहसुनिया) प्रभावकारी रहता है। तत्पश्चात उसकी जगह नये रत्न जड़वाना चाहिए। पुराना रत्न नवीन व्यक्ति के पास पहुँचकर पुन: 3 वर्ष के लिए प्रभावकारी हो जाता है।

जो लोग वैडूर्य को अंगूठी में न जड़वाना चाहें, वे उसे धूम्रवर्ण के वस्त्र में बाँधकर पूर्वोक्त विधि से पूजन आदि करके कण्ठ अथवा भुजा में धारण कर सकते हैं। वैडूर्य के अभाव में उसके उपरत्न फिरोजा, संग लसनवी, संग

गोदन्ति अथवा गोदन्ता अथवा प्रतिनिधि के रूप में असंगत की जड़ को भी पूर्वोक्त विधि से धारण किया जा सकता है। परन्तु ये सब वैडूर्य की तुलना में कम प्रभावकारी रहते हैं।

4. मन्त्रोपचार–निम्नलिखित मन्त्र केतुकृत पीड़ा के निवारण में सहायक सिद्ध होते हैं। इनका निश्चित संख्या में जप करना आवश्यक है।

(क) **ॐ केतु कृन्वन्न केतवे पेशोमयर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः। केतवे नमः।**

यह केतु का मुख्य मन्त्र है, इसका 17,000 की संख्या मे जप करना चाहिए।

(ख) **ॐ कं केतवे नमः।**

यह केतु का लघु मन्त्र है। इसकी जप संख्या भी 17,000 ही है।

(ग) **"ॐ स्रां स्रीं स्रौं स्रः केतवे नमः"।**

इस मन्त्र की जप संख्या 17,000 है।

(घ) **"पलाशपुष्प संकाशं तारका ग्रहमस्तकम्। रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम"**।

इस मन्त्र का स्नान दान अथवा अन्य किसी भी समय जप अथवा उच्चारण करना शुभदायक सिद्ध होता है।

5. अन्य– यदि केतु संतान पक्ष में बाधक हो, उस बाधा के शमनार्थ कपिला गाय को दान करना हितकर रहता है।

सन्तानोपाय– जिस ग्रह की बाधा हो, उसका पूर्वोक्त विधियों से निवारण करने तथा सन्तानगोपाल स्तोत्र, का नियमित पाठ करने से सन्तान लाभ होता है।

अथ श्री सूर्य स्तोत्रम्

वशिष्ठ उवाच-

सुवस्तत्र तत्ः साम्बकृशोध मनिसन्ततः।
रान्नाम सहस्त्रेण सहस्त्रं शुन्दिवाकरान्।।
विद्यमानं तु तन्दृष्ट्वा सूर्यः कृष्णात्मजन्तदा।
स्वप्नेषु दर्शनन्दत्वा पुनर्व्चन मब्रवीत्।।,

श्री सूर्य उवाच-

साम्ब साम्ब महाबाहो, श्रृणु जाम्बवती सुत।
अलन्नाम सहस्त्रेण पठस्वेयं स्तवं शुभम्।।
यानि नामानि ग्रह्यानि पवित्राणि शुभानि च।
तानि ते कीर्तियिष्यामि श्रुत्वावत्साषधारय।।
विकर्त्तनो विवस्वांश्च मार्तण्डो भास्करो रविः।

अरिष्ट विचार

(1) मेष या वृश्चिक का गुरु अष्टम, उस पर सूर्य, चन्द्र, मंगल, शनि की दृष्टि हो, शुक्र की दृष्टि न हो तो जातक की मृत्यु हो जाती है।

(2) वक्री शनि 1/8 राशिगत लग्न से 6/8/1/4/7/10 भावस्थ हो, बली मंगल से वह दृष्ट हो तो तीन वर्ष में अरिष्ट कारक होता है।

(3) जन्मकाल में सू. चं. श तीनों साथ में 6/8 भाव में हों तो 9 वर्ष में श. मं. सू. 6/8वें हो तो एक मास में अरिष्ट होता है।

(4) कोई पाप ग्रह 6/8 वें पाप ग्रह से दृष्ट हो तो एक वर्ष में अरिष्ट कारक।

(5) कर्क या सिंह राशिगत शुक्र 6/8/12 भाव में शुभ दृष्ट हो जो 6 वर्ष में अरिष्टकारक होता है।

(6) कर्कस्थ बुध 8 या 6 भाव में चन्द्र दृष्ट हो तो 4 वर्ष में अरिष्ट कारक होता है।

(7) सूर्य दशम मंगल या शनि की राशि में हो व पाप दृष्ट हो तो शीघ्र मृत्यु होती है।

(8) केन्द्रवर्ती राहु पर पाप ग्रहों की दृष्टि हो तो 10 या 16वें वर्ष अरिष्ट कारक होता है।

(9) सभी शुभ ग्रह 6/8 भाव में तथा पाप ग्रह 5/9वें उन पर पाप ग्रहों की दृष्टि हो तो 8वें वर्ष अरिष्ट होता है।

(10) लग्न से 6/8 में पाप दृष्ट चन्द्र हो तो शीघ्र मृत्यु होती है।

(11) लग्न से 2/12/6/8 या 8/9 या 6/12 इन 2-2 भावों में पाप ग्रह हों तो 6 या 8वें माह में मृत्यु हो जाती है।

(12) 6/8वें शुभ ग्रह पर वक्री पाप ग्रह दृष्टि हो, शुभ ग्रह की दृष्टि न हो तो एक माह में मृत्यु हो जाती है।

(13) जन्म लग्नेश 8वें पाप ग्रह से दृष्ट हो तो चौथे महीने में अरिष्ट होता है।

(14) लग्नेश पाप ग्रह युक्त 7वें हो या राशीश पाप ग्रह युक्त 8वें भावस्थ हो तो एक ही माह में अरिष्ट होता है।

(15) सूर्य, मंगल युक्त चन्द्रमा मिथुन या कन्या का हो जो दृष्टि रहित हो तो 9वें वर्ष अरिष्ट होता है।

(16) पाप युक्त चन्द्रमा 1/7/8 या 12वें वर्ष शुभ ग्रह से दृष्टिहीन तथा केन्द्र में भी कोई शुभ ग्रह न हो तो जातक की शीघ्र मृत्यु होती है।

(17) कर्क या वृश्चिक लग्न हो, लग्न से षष्ठ भाव तक पाप ग्रह हों, सातवें व बारहवें शुभ ग्रह हो तो वज्र मुष्टि योग के कारण अरिष्ट कारक होता है।

(18) मकर या कुम्भ का गुरु 8वें भाव में पाप ग्रह से दृष्ट हो तो 11वें दिन ही जातक मृत्यु को प्राप्त होता है।

(19) लग्न से 7/8 भाव में पाप ग्रह पर पाप दृष्टि भी हो, शुभ ग्रहों की दृष्टि न हो तो माता-सहित पुत्र की मृत्यु होती है।

(20) पाप ग्रह के साथ राहु ग्रस्त चन्द्र लग्न में व आठवें मंगल हो तो शस्त्रघात से मृत्यु होती है।

(21) सू. श. शुक्र तीनों पाप ग्रहों से युक्त हों, एवं गुरु की दृष्टि हो तो भी जातक की 9वें वर्ष मृत्यु हो जाती है।

(22) जन्म समय में सू. बु. गु. चन्द्र की युति हो या सू. मं. शु. चन्द्र की युति हो या सू. मं.श.चन्द्र की युति हो तो 5वें वर्ष मृत्यु हो जाती है।

(23) लग्न में शनि पर पाप ग्रहों की दृष्टि हो तो 16 दिन में, वह पाप ग्रहों से युक्त हो तो एक मास में, पाप ग्रहों से युक्त न हो तो एक वर्ष में अरिष्ट होता है।

(24) सू. चं और बुध की किसी भी भाव में युति हो व पाप ग्रह की दृष्टि हो तो 11 वर्ष में अरिष्ट होता है।

(25) 7वें भाव में क्षीण चन्द्रमा, लग्न में शनि, सूर्य, शुक्र उन पर गुरु की दृष्टि न हो तो 20वें वर्ष अरिष्ट होता है।

(26) क्षीण चन्द्र आठवें हो, उन पर शुभ गहों की दृष्टि न हो तो दूसरे वर्ष में बालक को अरिष्ट होता है।

(27) पाप ग्रह लग्नेश होकर कर्क के नवांश में चन्द्रमा से द्वादश भावस्थ हो तो 9वें वर्ष अरिष्ट कारक होता है।

(28) राहु सातवें भाव में हो, उस पर शनि-सूर्य की दृष्टि हो तो 12 वर्ष तक ही बालक जीवित रहाता है।

(29) पाप युक्त क्षीण चन्द्रमा पर राहु की दृष्टि हो तो कुछ ही दिन में बालक की मृत्यु हो जाती है।

(30) चन्द्रमा पूर्ण राशि में हो, उस पर सब ग्रहों की दृष्टि हो या अपने मित्र के नवांश में हो व शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो सभी अरिष्ट नष्ट हो जाते हैं।

(31) क्षीण चन्द्र भी यदि उच्च वृष में हो व शुभ ग्रह या मात्र शुक्र से दृष्ट हो तो सभी अरिष्टों का नाश होता है।

(32) चन्द्र शुभ द्रेष्काण में, शुभ ग्रह युक्त तथा 6/7/8वें मात्र शुभ ग्रह हो तो अरिष्टों का नाश होता है।

(33) द्वादशस्थ सभी शुभ ग्रह हों, पूर्ण चन्द्र शुभ राशि में, लग्नेश से दृष्ट हो किसी अन्य ग्रह से दृष्ट न हो, अरिष्ट नष्ट होते हैं।

(34) शुक्ल पक्ष में रात्रि में, कृष्ण पक्ष में दिन का जन्म हो, चन्द्रमा 6/8 में रहते हुए भी क्रमशः शुभ व पाप दृष्ट हो तो अरिष्ट नहीं होता।

(35) लग्नेश बलवान शुभ ग्रह व मित्र ग्रहों से दृष्ट हो या लगनस्थ शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो अरिष्ट नाश होता है।

(36) चन्द्रमा से 10वें गुरु, 12वें बुध, 11वें पाप ग्रह या लग्नेश से 3/4/2/12 व 11वें चन्द्रमा शुभ दृष्ट हो तो सभी अरिष्ट नाश हो जाते हैं।

(37) पूर्ण चन्द्रमा आश्विनी, कृत्तिका या पुष्य के वर्गोत्तम नवांश से हो तो अरिष्ट नाश हो जाते हैं।

(38) लगनस्थ शुभ ग्रह तथा केन्द्र स्थानों में दो–दो ग्रह हों तो क्षीण चन्द्रमा सप्तम में होने पर भी अरिष्ट नाश होता है।

(39) लग्न के शुभ ग्रहों की राशि, उस पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो, सभी शुभ ग्रह बलवान हों तो सभी अरिष्ट नष्ट हो जाते हैं।

(40) पाप ग्रह शुभ ग्रह के षड्वर्ग में हो, शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो अरिष्ट नाश हो जाते हैं।

(41) यदि राहु, वृष, मेष या कर्क लग्न में हो तो अरिष्ट नाश करता है।

(42) मकर, कुम्भ या मीनस्थ केतु ग्यारहवें या छठे हो तो अरिष्ट नाश होते हैं।

(43) उच्च का सूर्य 3/6/11वें हो तो ग्रहणकाल जन्य अरिष्ट नष्ट होते हैं।

(44) सभी ग्रह एक राशि में होकर 3/6/10 या 11वें भावस्थ हों।

(45) चन्द्र या लग्न से 2/3 या अधिक ग्रह एक ही स्थान में हों तो अरिष्ट भंग होता है।

(46) गुरु स्व राशिस्थ होकर चतुर्थ हो, उस पर बलवान चन्द्र की दृष्टि हो तो सभी अरिष्ट नष्ट होते हैं।

(47) लग्न में 1 व 12 भाव में 3–3 ग्रह हो तो अरिष्ट नष्ट होता है।

(48) सभी ग्रह केन्द्र, पणफर या आपोक्लिम में हो तथा शुभ ग्रह के नवांश में हो तो अरिष्ट नाश होते हैं।

(49) गुरु मंगल के परिवर्तन योग से आयु मात्र 12 वर्ष की होती है।

(50) द्वितीय भाव में शनि–मंगल व तृतीय भावस्थ राहु हो तो 1 वर्षायु होती है।

(51) चौथे राहु, छठे, 8वें चन्द्रमा हो तो शीघ्र मृत्यु हो जाती है।

(52) 8वें चन्द्रमा, केन्द्र में पाप ग्रह, चतुर्थ राहु हो तो बालक एक वर्ष ही जीता है।

(53) 7वें मंगल, 8वें शुक्र, 9वें सूर्य अल्पायु देता है।

(54) द्वितीय स्वगृही क्रूर गृह हो तथा 4/10 भाव में भी क्रूर ग्रह हो तो जातक कष्टमय जीवन व्यतीत करता है।

(55) लग्नस्थ मंगल, 12वें गुरु, छठे शुक्र हो तो 1 माह की ही आयु होती है।

(56) लग्न 7/12/2रे भावस्थ क्रूर ग्रह व राहु चतुर्थ हो तो बालक 7 दिन में ही मर जाता है।

(57) छठे या 8वें पाप ग्रह से दृष्ट चन्द्रमा हो तो बालक की तत्काल मृत्यु हो जाती है।

(58) शुभ ग्रह के लग्न में गुरु हो, 8वें शनि व उसी भाव में अन्य पापी ग्रह भी हो तो जातक की शीघ्र मृत्यु हो जाती है।

(59) गुरु से दृष्ट शुक्र, सूर्य या शनि की राशि में हो तो 9वें वर्ष मृत्यु योग होता है।

(60) यदि सूर्य चन्द्र से युक्त बुध किसी शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो 11वें वर्ष जातक की मृत्यु हो जाती है।

(61) 8वें भाव में स्थित राहु पर शनि–सूर्य की दृष्टि हो तो 8वें वर्ष, शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो 12वें वर्ष मृत्यु होती है।

(62) द्वितीय भाव में राहु, शुक्र, शनि, सूर्य हो तो जातक पिता मरणोपरान्त जन्म लेता है। स्वयं कुछ दिनों बाद मर जाता है।

(63) द्वादश राहु–शनि व बुध हो, गुरु लग्न या पंचम भावस्थ हो तो बालक जन्मते ही मर जाता है।

(64) मं. सू. श. शत्रु क्षेत्री होकर आठवें भाव में हो तो 1 वर्ष से अधिक आयु व्यक्ति नही भोगता।

(65) शनि–सूर्य परिवर्तन योग 12 वर्ष से अधिक आयु नही देता।

(66) 1 या छठे बुध शत्रु क्षेत्री 4 वर्ष में मृत्यु योग देता है।

(67) 8वें राहु व केन्द्र में चन्द्र हो तो तत्काल मृत्यु हो जाती है।

(68) चतुर्थ राहु व 6/8 में कहीं चन्द्र हो तो 20 दिन में मृत्यु हो जाती है।

(69) 7या 9वें शत्रु क्षेत्री राहु हो तो 16 वर्ष की आयु में मृत्यु होती है।

(70) 12वें चन्द्रमा 8वें पाप ग्रह हो तो एक मास में मृत्यु होती है।

(71) यदि 6/8 भाव में चन्द्र-बुध युति हो तो विष-दोष से मृत्यु होती है।

(72) यदि लग्न छठे या 8वें शत्रु क्षेत्री बुध हो तो आयु 21 वर्ष होती है।

(73) पाप ग्रह युक्त, दृष्ट राहु केन्द्र में हो तो जातक की मृत्यु 10 या 16वें वर्ष में होती है।

(74) यदि 7वें भाव में शनि, मंगल और राहु युक्त चन्द्रमा हो तो वह 7वें दिन या 7वें वर्ष मर जाते हैं।

(75) मंगल की राशि में गुरु हो, 6 या 8वें चन्द्रमा हो तो 6 या 8 वर्ष में जातक की मृत्यु हो जाती है।

(76) 6 या 8वें चन्द्रमा, 7वें भाव में सूर्य हो तो धन का नाश कर एक ही मास में बालक मर जाता है।

(77) यदि मंगल या सूर्य शत्रु क्षेत्री होकर 8वें भाव में हो तो 1 माह में ही मृत्यु हो जाती है।

(78) 7वें राहु अमृत पान करने पर भी 10 से अधिक बालक नहीं जीता।

(79) लग्न या अष्टम स्थित राहु पर चन्द्र की दृष्टि हो तो इन्द्र भी मरने से नहीं बचा सकता।

(80) दशम भाव में उच्च का या शत्रु क्षेत्री मंगल हो तो माता सहित मृत्यु हो जाती है।

(81) 7वें भाव में चन्द्रमा, लग्न में सूर्य, अष्टम भाव में पाप ग्रह हो तो उस बालक की मृत्यु एक मास में हो जाती है।

(82) गु. शु. बु. में से कोई भी राहु युक्त होकर नीच राशि में हो, उस पर चन्द्रमा की दृष्टि न हो तो बालक जीवित नहीं रहता।

(83) छठे 8वें केतु, चन्द्रमा केन्द्र में हो तो शंकर भी बचा नहीं सकते मरने से।

(84) सू. रा. श. मं, गु ये लग्न या पंचम भाव में हो तो बालक तत्काल मर जाता है।

(85) बुध–गुरु तथा शुक्र में से एक भी ग्रह लग्न या केन्द्र में हो अरिष्ट भंग हो जाता है।

(86) बलवान लग्नेश केन्द्र में हो तो अरिष्ट नष्ट हो जाते हैं।

(87) तुला लग्न में द्वादश सूर्य शतायु बनाता है।

(88) गुरु–मंगल की युति या दृष्टि भी पूर्णायु योग देता है।

(89) सूर्यादि उच्च राशि में हो तो क्रमशः 19/25/15/12/15/21/20 इन वर्षों में रवि आदि ग्रहों की अवस्था समझें। नीच ग्रह उक्त आयु का आधा भाग नष्ट कर देता है।

प्रश्न विचार

यदि प्रश्नकर्ता तेल लगाये हो, अशौच हो, गड्ढ़े के निकट बैठा हो, यदि ज्योतिष भी ऐसी ही स्थति में हो तो प्रश्नोत्तर मृत्यु भयदायक होता है। पुष्प, फल, स्वर्ण रत्नादि से घर की भूमि में नक्षत्र सहित ग्रह पूजन कर, भक्ति युक्त, निर्विकल्प श्रद्धा से, देव–गुरु को प्रणाम कर, हाथ में फल, पुष्प–अक्षत के आदर से ज्योतिष का सम्मान कर शुभदिशा में मुख कर, शुद्ध व एकाग्रचित्त हो एक ही बार प्रश्न पूछे। फल–पुष्पों से शोभित वृक्ष युक्त, जल युक्त, गोमय युक्त, पृच्छक के चरणों को सुखदायक भूमि में बैठ कर प्रश्न करने पर मनोवांछित फल प्राप्त होता है।

1. जो भाव स्वामी या शुभ ग्रह युक्त या दृष्ट हो, उस भाव की वृद्धि होती है।

2. 2/4/10/12 इन भावों में शुभ ग्रह होने से वृद्धि होती है। पाप ग्रहों से हानि।

3. 3/5/6/7/8/11 प्रश्न लग्न हो या लगनस्थ शुभ ग्रह शुभत्व देता है।

4. केन्द्र–त्रिकोण में शुभ ग्रह हों तथा केन्द्र से अष्टम वर्जित 3/6/17 में अशुभ ग्रह सभी कामनाएं पूर्ण करते हैं।

5. केन्द्रेश लग्न में या उसका मित्र केन्द्र में, पाप ग्रह केन्द्र व 12वें के अतिरिक्त हो तो शुभ फल देता है।

6. 1/3/5/7/9/11 लग्न शुभ ग्रह से दृष्ट हो या केन्द्र में शुभ ग्रह हो 3/6/11 में पाप ग्रह हो तो लाभ, धन प्राप्ति होगी।

7. यदि 6/7/3/11 तथा नर राशि में शुभ हो तो शुभ ग्रह फल जानें। १२६११ भाव में पाप ग्रह हो तो अशुभ समझें।

8. चन्द्रमा लग्न में अशुभ, दसम में शुभ, 1/2/10/11 इन भावों में शुभ ग्रह पाप युक्त हो तो बड़ी सिद्धि मिलती है।

9. लग्न व चन्द्रमा पर शुभ ग्रहों की दृष्टि शुभत्व, पाप ग्रहों की दृष्टि अशुभ फल देती है।

10. 3/5/7/11 भाव में शुभ ग्रह लाभप्रद व पाप ग्रह नेष्ठ फल देता है।

11. 10/7 स्थान में शुभ ग्रह लाभदायक। 1/2/5 भाव में शुभ ग्रह सम्मान व धन देते हैं।

12. 2/3/6/7/10/11 में शुभ ग्रहों से दृष्ट चन्द्रमा स्त्री सम्बन्धी शुभत्व व लाभ देता है।

13. 1/3/5/8/9 भाव में अशुभ दृष्ट चन्द्रमा भयदायक कार्य व अर्थ नाशक।

14. 9/5 केन्द्र, चतुर्थ व लाभस्थ शुभ ग्रह व 3/6/11वें अशुभ ग्रह प्रश्न कर्ता को लाभ देते हैं।

15. चन्द्रमा 4/7वें सूर्य 9 या 10वें हो तो तत्काल लाभ मिलता है।

16. 2/5/8/11 लग्न हो तो स्थान का लाभ प्रश्नकर्ता को होता है।

17. 2/5/8/11 राशि प्रश्न लग्न में हो तो परदेश आना-जाना नहीं होता।

18. सू. श. बु. शु. इनमें से कोई ग्रह चर लग्न में हो तो तुरन्त जाना होगा पर वक्री ग्रह की स्थिति में सम्भव नहीं।

19. स्थिर लग्न में गु. बु. शु. सू में से कोई एक ग्रह हो तो यात्रा नहीं होगी सू. गु. बु. शु. में से कोई ग्रह एकादश भाव में हो तो शीघ्र परदेश जाना होगा पर 12वें कोई उक्त में से ग्रह हो तो यात्रा होगी पर मार्ग से ही लौट आएगा।

20. यदि 5/6 भाव में या 3 से अधिक पाप ग्रह एक साथ हों तो मार्ग से ही वह लौट आयेगा।

21. चतुर्थ में वृश्चिक या मीन राशि शत्रु ग्रह से दृष्ट हो तो शत्रु की हार होगी।

22. 1/2/5 में से कोई राशि चतुर्थ भाव में हो तो शत्रु भाग जायेगा।

23. लग्न सं 2/3/5 भाव में ग्रह बैठे हों या दूर स्थान में हो तो परदेश गया मनुष्य दूर चला गया है। पर शुभ ग्रह हों तो वह परदेशी आएगा। यदि उक्त स्थानों में गुरु या शुक्र हो तो शीघ्र आयेगा।

24. यदि 5/9/7 भाव में पाप ग्रह हों, उन पर उनके शत्रु ग्रहों की दृष्टि हो तथा लग्न पृष्ठोदय हो तो प्रवासी की मृत्यु होगी।

25. 9वें शुभ ग्रह हो तो मार्ग में किसी प्रकार का उपद्रव नहीं होगा।

26. 1/8 भाव में पाप ग्रह जन्म राशि को देख रहा हो तो मृत्यु होगी।

27. पृष्ठोदय लग्न तथा केन्द्र में क्रूर ग्रह हों, चन्द्रमा अष्टम हो तो रोगी की मृत्यु।

28. लग्न में चन्द्र या बुध, पाप ग्रहों से दृष्ट हो तो रोग, कष्ट साध्य होगा।

29. 5/7/8वें शुभ ग्रह हो, पाप ग्रहों पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो, चन्द्रमा 11/3/6/10 में कहीं हो तथा चन्द्रमा से इन्ही उक्त स्थानों में शुभ ग्रह हो तो आरोग्य होता है।

30. पाप युक्त या दृष्ट शनि 9वें हो तो रोग पीड़ित मनुष्य परदेश जायेगा। पर ऐसा शनि 6/8 भावस्थ हो तो मृत्यु होगी।

31. लग्नस्थ पूर्ण चन्द्र पर गुरु की दृष्टि हो तो या केन्द्र में गुरु–शुक्र हो तो रोगी रोग मुक्त होगा।

32. स्थिर लग्न या स्थिर अंश में वर्गोत्तम में हो तो चोर अपना ही जानकार है और वस्तु भी उसी जगह है।

33. लग्न चर राशि या घर नवांश में हो तो बाहरी आदमी होगा चोर, द्विस्वभाव लग्न में गई वस्तु पड़ोसी ने चुराई है।

34. सप्तम भाव में जो बलवान ग्रह हो उसकी जाति वर्ण, गुण, आकृति तुल्य चोर समझें। वह सप्तमस्थ ग्रह विषय राशि का व पुरुष ग्रह से दृष्ट हो तो चोर पुरुष है अन्यथा स्त्री।

35. यदि सूर्य व चन्द्र युक्त सिंह लग्न पर शनि व मंगल की दृष्टि हो तो चोर अन्धा है। चन्द्रमा 12वें हो तो चोर बांयी आंख से काना, सूर्य 12वें हो तो दायीं आंख से काना।

36. प्रश्न लग्न प्रथम द्रेष्काण में हो तो द्रव्य चोरी गया है, दूसरे से गिर गया, तीसरे से रखकर भूल गया है–ऐसा जाने। तीसरे द्रेष्काण में वस्तु घर में ही होगी।

37. लग्न में पूर्व चन्द्र, गु. शु. बुध में से कोई भी ग्रह हो तो चोरी गई वस्तु बाद में मिल जायेगी या सप्तमस्थ शुभ ग्रह हो तो मिल जायेगी।

38. लग्न में पाप ग्रह की राशि हो, उस पर पाप ग्रह की दृष्टि हो तो गया धन कभी नहीं मिलेगा।

39. सिंह, वृश्चिक व कुम्भ इनमें की स्व नवांश युक्त कोई राशि सप्तम भाव में हो और पाप ग्रह की उस पर दृष्टि हो तो नष्ट वस्तु नहीं मिलती।

40. लग्नस्थ चन्द्र या बुध पर शनि या बुध की दृष्टि हो तो प्रश्न कुमारी कन्या सम्बन्धी होगा।

41. लग्न शनि हो तो वृद्धा सम्बन्धी, गुरु या सूर्य हो तो प्रसूति सम्बन्धी, शुक्र या मंगल हो तो युवती सम्बन्धी चिन्ता है।

42. सप्तम स्थान में शु. सू. और शनि हो तो पर स्त्री की चिन्ता गुरु हो तो पत्नी की, चन्द्र या बुध हो तो वेश्या की चिन्ता होगी।

43. शनि या राहु–केतु लग्न में हो तो अन्त्य जाति की स्त्री की चिन्ता है।

44. तृतीयस्थ बली ग्रह हो तो भाई की, पंचमस्थ हो तो पुत्र की, चतुर्थ में हो तो माता या बहन की, छठे हो तो शत्रु सम्बन्धी चिन्ता है।

45. सप्तम में बलवान ग्रह हो तो अपनी स्त्री की, नवम में हो तो धर्म सम्बन्धी, दशम में हो तो गुरु सम्बन्धी चिन्ता होगी।

46. लग्न चर राशि व चर नवांश हो तो प्रवासी के लौटने की चिन्ता है।

47. लग्न में या 9/5 भाव में प्रश्न के समय वर्तमान अपने नवमांश को कोई भी ग्रह स्वनवांश स्थित होकर देखता हो या वह गृह वहां बैठा हो तो प्रश्नकर्ता को धातु की चिन्ता है। द्वितीय गृहांश में स्थित ग्रह देखता हो या बैठा हो तो जीव की चिन्ता।

48. लग्न 1/3/5/7/9/11 इन राशियों की हो तो उसके नवांश क्रम से धातु, मूल, तथा जीव की चिन्ता समझें। सूर्य–मंगल प्रश्न कुण्डली में बलवान हो तो धातु चिन्ता, शनि–बुध हो तो मूल चिन्ता–गुरु चंद्र या शुक्र हो तो जीव चिन्ता होगी।

49. चंद्रमा और सूर्य से शनि व शुक्र 7 या लग्न से 4/8 भाव या लग्न से 2/3 में हो तो वर्षाऋतु में तत्काल वर्षा होगी।

50. शुक्ल पक्ष में जो शुभ ग्रह जलराशि 4/7/8/10/11/12 हो तो निश्चय ही वर्षा होगी।

51. लग्न में 4/10/12 राशि हो, उसमें चन्द्र या शुक्र हो तो वर्षा होगी, ऐसे शुक्र और चन्द्रमा केंद्र में उन पर शुभ दृष्टि हो तो वर्षा होगी। जलराशि का लग्न उसमें चंद्र पर शुक्र की दृष्टि हो तो भारी वर्षा होगी।

52. लग्न से 3/5/6/7/11वें चंद्रमा हो, सू. गु. बु. की दृष्टि हो तो विवाह अवश्य होगा। केंद्र या त्रिकोण में शुभ ग्रह हो तो भी विवाह अवश्य होगा।

53. उक्त योग में 7 वें शुभ ग्रह हो तो सुंदर पत्नी पायेंगे, पाप ग्रह हो तो कुरुप।

54. प्रश्न में शनि सम राशि में हो तो कन्या का लाभ व विषम राशिस्थ हो तो पुत्र लाभ होगा।

55. 2/7 उपचय में गुरु से दृष्ट चन्द्रमा हो तो स्त्री लाभ होगा, चंद्रमा पाप युक्त या दृष्ट हो तो स्त्री लाभ नहीं।

56. यदि लग्न में 6 या 8वीं राशि का चंद्रमा हो तो विवाह के 8वें वर्ष में उसकी मृत्यु हो जायेगी।

57. प्रश्न लग्न कन्या सम्बन्धी व लग्न या 8वें शुक्र या बुध हो तो वह कन्या निश्चय ही विधवा होगी।

58. प्रश्न क 7वें मंगल हो तो विवाह के पूर्व ही मृत्यु हो जायेगी।

59. 1 या 7वें सूर्य हो तो कन्या की संतान जीवित नहीं रहेगी, यदि लग्न में सूर्य हो तो वह व्यभिचारिणी होगी। छठे क्रूर ग्रह युक्त चंद्र या बुध हो तो स्त्री दुर्भाग्यशाली होगी। ऐसे चंद्र या शुक्र 11 या 7वें हो तो व्यभिचारिणी होगी।

60. इन्हीं स्थानों में बुध–शुक्र क्रूर ग्रह युक्त हो तो विधवा होगी।

61. लग्न से 3/5/6/7/11 भाव में चंद्रमा पर गु. सू. या बुध की दृष्टि हो अन्य कोई दृष्टि न हो तो शीघ्र विवाह होगा।

62. स्थिर लग्न हो, स्थिर राशिस्थ शुभ ग्रह लग्न को देखते हों तो स्त्री निश्चय ही गर्भवती है।

63. लग्न से विषम शनि बैठा हो तो पुत्र, सम में हो तो कन्या होगी।

64. लग्न पुरुष वर्ग में यानि द्रेष्काण, नवमांशादि पुरुष ग्रह के हो, बलवान भी हो, पुरुष ग्रह की दृष्टि भी हो तो निश्चय ही पुत्र होगा। अन्यथा कन्या।

65. लग्न गुरु–चंद्र ये विषम राशि के हों, पुरुष राशि नवांश में हो व बलवान भी हों तो पुत्र जन्म अथवा कन्या का जन्म होगा।

66. गुरु–सूर्य विषम राशि के हों तो पुत्र जन्म, चंद्र–शुक्र–राहु समांश व सम राशिस्थ हो तो कन्या जन्म होगा।

67. 5/11 भाव में शुभ ग्रह हो तो स्त्री अवश्य गर्भिणी है।

68. लग्न व चन्द्रमा दो पाप के मध्य साथ–साथ या अलग–अलग हो तो स्त्री गर्भ सहित मृत्यु को प्राप्त होगी।

69. शुक्र, मंगल, गुरु, सूर्य, चंद्र, शनि, बुध, लग्नेश, सूर्य, चंद्रमा यें क्रमशः 1 से 10 मास तक गर्भ महीनों के स्वामी हैं। ये ग्रह यदि शत्रु घर में हों या शत्रु से पराजित हों, या अस्त या पीड़ित हों तो जिस मास का स्वामी ऐसा है, उसी मास में गर्भपात हो जाता हैं।

70. प्रश्न कुण्डली में लग्न से च्युति, चतुर्थ से वृद्धि, दशम से प्रवास, सप्तम से प्रवास निवृति उक्त स्थानों में बैठे ग्रह उनके बलाबल का विचार करना चाहिए।

71. यदि 2/7/8 स्थानों में पाप ग्रह हों तथा 3/6 स्थान में शुभ ग्रह हों तो प्रश्नकर्ता की दीर्घायु होती है। यदि इन स्थानों में पाप ग्रह हो तो अल्पायु होती है।

72. दशम व चतुर्थ भाव में शुभ ग्रह हों तो सुख–सम्पत्ति हो, इनमें पाप ग्रह हानि देते हैं, 2/11 में शुभ ग्रह धन लाभ।

73. लग्नस्थ पाप ग्रह हो तो शरीर पीड़ा व कलह, चौथे पाप ग्रह हानि, फूट बंधु विरोध, होता है।

74. यदि चंद्रमा पाप ग्रह युक्त हो तो स्त्रियों से विरोध होगा। अष्टम भाव में शुभ युक्त सूर्य पर शुभ दृष्टि हो तो प्रश्नकर्ता का पिता प्रवास में जहां थे वहां से अन्यत्र चले गये हैं।

75. मस्तक नेत्र, कान, नाक, गला, मुख, कंठ, स्कन्ध, भुजा, पसली, हृदय, गोद, नाभि, पंडु शिश्न, गुदा, जाँघ, घुटने, पिंडली, पांव इन 2 अंगों पर लग्न द्रेष्काण से विचार किया जाता है। लग्न प्रथम द्रेष्काण में हो तो मस्तकादि 7 अंग, द्वितीय में हों तो कंठादि व तृतीय में हो तो पेडू आदि 7 अंगों पर विचार करें। पूर्वोक्त अंगों में जहां पाप ग्रह हो या दृष्ट हो वहां उस अंग में घाव होता है। शुभ ग्रह का योग या दृष्टि हो तो लांछन, पर ग्रह अपनी राशि या अंश हो तो वह व्रण या लांछन जन्म से अन्यथा जन्मोपरान्त हुआ, समझें। शनि पत्थर या वायु द्वारा व्रण, मंगल अग्नि, शस्त्र, विष से, मंगल–बुध पृथ्वी द्वारा, सूर्य–लड़की या पशु से चोट चन्द्रमा सींग से या पानी से।

76. जिस अंग में बुध युक्त 3 ग्रह शुभाशुभ हों तो निश्चय ही व्रण होगा। लग्न में ग्रह हो तो तिल या मस्सा होगा।

77. देह, कोश, योद्धा, वाहन, मन्त्र, शत्रु, मार्ग, आयु, चित्त, कर्म, लाभ, मन्त्री पर क्रमश: लग्नादि भावों से समझते हैं। सू. श. मं. तीनों ग्रह 3/11 भाव को पुष्ट करते हैं। अन्य का विनाश पर सूर्य–मंगल 10वें भाव का विनाश नहीं करते। शुभ ग्रह शत्रु भाव के अतिरिक्त सभी भावों को पुष्ट करते हैं, शुक्र 7वें को चंद्र 8वें को तथा सिंह राशि वाले भाव को पुष्ट नहीं करता।

78. लग्न में शुभ ग्रह आरोग्य, धन, सुख, द्वितीय हो तो धन, तृतीय हो तो पराक्रम, चतुर्थ में वाहन व मित्र, पंचम में सम्पत्ति वृद्धि, षष्ठ से शत्रु नाश, शुक्र के अलावा कोई भी शुभ ग्रह 8वें यात्रा सुखद रहती है। चंद्रमा के

अतिरिक्त सभी ग्रह अष्टम में आयु वृद्धि करते हैं। नवम में शुभ ग्रह यश व सम्पत्ति, दशम में कार्य सिद्धि, एकादश में लाभ, द्वादश में बल मिलता है।

79. मं. सू. श. चंद्र लग्नस्थ हो तो बंधन, मारण, त्रास प्राप्ति, ये ही, द्वितीय हो तो यश प्राप्ति, परधन नाश, तृतीय में यश, चतुर्थ में मित्र-वाहन का वियोग, पंचम में कोई भाव गुप्त नही रहता, षष्ठ में हो तो शत्रु नाश, सप्तम में देश त्याग, अष्टम में मृत्यु, नवम में सैन्य संकट, दश सू. मं. में से कोई हो तो विजय शनि से विनाश, क्रूर ग्रह हो तो सेना में फूट होती है। इन स्थानों में पाप ग्रह उपर्युक्त से विपरीत फल देते हैं।

80. लग्न के पहले द्रेष्काण से 12वें भाव के अन्तिम द्रेष्काण तक 36 द्रेष्काणों से शुभाशुभ व अशुभ ग्रहयोग या दृष्टि का विचार करना चाहिए। 36 द्रेष्काणों से क्रमश: (1). राजा (2). सेनापति (3). ज्योतिषी, पुरोहित, वैद्य (4). नौकर (5). व्यवहार (6). राज्य सैन्य, (7). पडाव (8). शयन (9). आसन (10). आसन, शय्या, वाहन, अश्व (11). अन्न-पान (12). योद्धा और वाहन (13). युवराज (14). सलाह, निश्चय (15). शत्रु (16). (17). (18). शत्रु (19). सेना, शयन, दर्शन (20). धन (21). कोतवाल (22). सैन्य उपद्रव (24). सेना के छिद्र (25). सेनापति (25). आरोग्य (26). सेना (27). चतुष्पद (28). काम (29). कोष (30). फल सिद्धि (31). धर्म (32). क्रिया (33). धन (34). योद्धा (35). पूजा (36). यात्रा समाप्ति समझें।

81. यदि लग्न सूर्य के नवांश में हो तो वाहन का नाश, चंद्रमा का नवांश हो तो मंद प्रताप होकर घर लौटे, मंगल से अग्नि भय, बुध से मित्र प्राप्ति, गुरु से धनागम, शुक्र से भोग वृद्धि, शनि से नौकरों का नाश होता है।

82. सिंह लग्न में यात्रा करने वाले को प्रथम क्षुधा, वृषण सम्बन्धी पीड़ा, मार्ग नाश, नेत्र रोग, क्लेश प्राप्ति होती है। कर्क लग्न में देव कार्यार्थ स्वदेश में ही जाना शुभ है। **मेष**-वृश्चिक में यात्रा से पित्त-प्रकोप, सर्प भय, शस्त्र व अग्नि पीड़ा मिथुन-कन्या लग्न में सन्तोष, इच्छित फल प्राप्ति, यश प्राप्ति, वृष-तुला में स्त्री व रत्न प्राप्ति, मीन लग्न में जाने से धन व स्थान लाभ, शत्रु का नाश, मकर-कुंभ में अग्नि रोग भय, रोग, नीच जन से अपमान, वृष-वश्चिक-कर्क राशियां पूर्वोक्त प्रकार से अनुकूल हों तो भी लग्न व द्वादश भाव में अनुकूल नहीं है।

83. जल राशि के लग्न में प्रस्थान नहीं करना चाहिए। नवांश में भी नहीं।

84. हीरा 3 प्रकार की है। त्रिर्यङ्मुखी 2. ऊर्ध्व मुखी 3 अधोमुखी कुंडली में सूर्य जिस राशि के जिस 1/2 भाग में हो अर्थात् 0 से (15). अंश (16). से (30). अंश जहां बैठा हो वह प्रथम होता है उसका नाम तिर्यङ् मुखी है। आगे 15715 अंश ऊर्ध्व व अधोमुखी। यदि ऊर्ध्व मुखी होरा प्रश्न में लग्न में आये तो बिना विघ्न के कार्य पूर्ण होगा। यदि तिर्यङ् मुखी हो तो क्लेश, परिश्रम व क्षयादि अनिष्ट फल, अधोमुखी होरा हो तो महाकष्ट होगा।

85. व्यतिपात, भद्रा, वैधृति तथा पाप ग्रह का लग्न और बार-बार इनमें चोरी-झगड़ा, झूठ संभाषण-संग्रामादि करने से कार्य सिद्धि होती है। मेष, सिंह, धनु का चंद्रमा पूर्व में, वृष कन्या मकर का दक्षिण में, मिथुन तुला कुंभ का पश्चिम में, कर्क वृश्चिक-मीन का उत्तर में रहता है। जिस दिशा में चंद्रमा हो उस दिशा में जाने के लिए चंद्रमा सम्मुख होता है। परिधि दण्डवाम भाग में हो, चंद्रमा सम्मुख हो, राहु पीठस्थ हो तो यात्रा विजय पूर्ण होती है। दक्षिण चंद्रमा सिद्धि व वाम हानि देता है। पृष्ठ का चंद्रमा मृत्यु कारक है।

86. जिस दिशा में जाना हो, उस दिशा का स्वामी कुण्डली में जहां बैठा हो उससे 5वें कोई बलवान ग्रह बैठा हो तो वह अपनी इष्ट दिशा के फल का नाश कर उसी दिशा में बलपूर्वक ले जाता है।

87. तिथि (5). वार (6). नक्षत्र (7). प्रहर-इन्हें जोड़े 1 हुए 3 से भाग दें लब्धि 5 शेष 2. तो दूसरा तत्त्व रज हुआ। इनके अनुरूप ही पृच्छक जिस तिथि वार, नक्षत्र, प्रहर, में प्रश्न करें, उन्हें जोड़कर 3 का भाग दें। 1 शेष बचे तो सत्त्व 2 रज 0 तम तत्त्व होगा। सत्त्व कार्य सिद्धिदायक, रज विलंब, तम निष्फल फल देता है।

88. अपने शरीर की छाया को नाप कर उसे अंगुलों में गिनें। जितने अंगुल की छाया हो उसमें 13 मिला 8 का भग दें। 1 शेष बचे तो लाभ 2 हानि 3 सिद्धि 4 शोक 5 वृद्धि 6 मरण 7 वृद्धि 8 मृत्यु समझें।

89. प्रश्नकाल के तिथि-वार-नक्षत्र-प्रहर जोड़ 7 का भाग दें। शेषानुसार समझें। अन्य-कृत्तिका से वर्तमान नक्षत्र तक गिन 7 का भाग दें। सार फल देखें-1 शेष यात्री में अभी तक यात्रा प्रारम्भ नहीं की है। 2 यात्री मार्ग में है 3 आधे मार्ग है 4 ग्राम में है 5 मार्ग से लौट गया है 6 रोग ग्रस्त है 7 मर गया है। प्रश्न लग्न से 2रे शुक्र 3 रे गुरु या लग्न में शुक्र और गुरु हो तो परदेशी शीघ्र घर आएगा।

90. प्रश्नकर्ता का मुख जिस दिशा में हो उस दिशा समय के प्रहर, वार, नक्षत्र जोड़ 8 का भाग दें। शेष 1 या 5 बचे तो कार्य सिद्धि 6/4 तीन दिन में कार्य सिद्धि 3/7 विलम्ब से 2 या 0 कार्य नहीं होगा।

91. प्रश्नकर्ता के नाम के अंक का दूना कर, बताए फल के नौ के अंक जोड़े फिर उसमें 13 जोड़ 9 का भाग दें या 9 कोष्ठकों का चक्र बना उसमें 9 तक अंक यों लिखें कि प्रत्येक का जोड़ १५ आए, पृच्छक किसी एक अंक पर उंगली रखें तदनुसार फल दें-(1.) धन वृद्धि (2.) क्षति (3.) आरोग्य (4.) व्याधि (5.) स्त्री लाभ (6.) बन्धु नाश (7.) कार्य सिद्धि (8.) मरण (9.) राज्य प्राप्ति 7 या 3 बचे तो बात-चीत चलती रहेगी, 9/1/5 में कार्य शीघ्र होगा 8/2 कार्य नहीं होगा 6/4/3 घड़ी में कार्य होगा।

92. सोम-बुध को पथिक के लिए प्रश्न किया है तो वह मार्ग में चल रहा है। शुक्र समीप आया समझें। रवि/मंगल दूर समझें। शनिवार पीड़ित है। सूर्य नक्षत्र से चंद्र नक्षत्र तक गिनें। यदि प्रथम 7 नक्षत्रों से चंद्रमा आए तो यात्री निर्जीव है, दूसरे 12 नक्षत्रों तक चंद्र आए तो जीवित व 3 रे नौ नक्षत्रों तक चंद्रमा आये तो रोगी समझें।

93. प्रश्न की तिथि, वार, नक्षत्र, लग्न को जोड़ 3 मिला 5 का भाग दें-1 बचे नष्ट वस्तु पृथ्वी में, 2 जल में, पर नहीं मिलेगी 3 आकाश में नहीं मिलेगी, 4 तेज में राजकोष में चली गई। 0 बचे तो वायु में शोक दायक है।

94. गर्भवती जिस लग्न में प्रश्न करे-लग्न से 3/7/9/5 भाव में सूर्य मंगल या गुरु हो तो पुत्र अन्यथा कन्या होगी।

95. प्रश्नकर्ता की मुट्ठी में किस रंग की वस्तु है इस प्रश्न के समय मेष लग्न हो तो लाल रंग की, वृष-पीत, मिथुन-नील वर्ण, कर्क-पाण्डव वर्ण, सिंह-धूम्र वर्ण, कन्या-नील मिश्रित वर्ण, तुला-पीत मिश्रित, वृश्चिक-ताम्र मिश्रित वर्ण, धनु-पीत मिश्रित, मकर या कुम्भ-कृष्ण वर्ण का, मीन-लग्न हो तो पीत वर्ण की वस्तु कहें।

96. मेष लग्न में प्रश्न किया है तो उसे मनुष्य की चिन्ता है, वृष हो तो पशु की, मिथुन-गर्भ सम्बन्धी, कर्क हो तो व्यवसाय, सिंह हो तो जीव सम्बन्धी, कन्या-स्त्री सम्बन्धी, तुला-धन सम्बन्धी, वृश्चिक-रोग जनित, धनु-धन से, मकर-शत्रु, कुंभ-स्थान सम्बन्धी, मीन-देवता, भूत-पिशाच आदि सम्बन्धी।

97. प्रश्नकर्ता 108 तक में कोई संख्या बोले, 12 का भाग दें, 1/7 शेष बचे तो कार्य बिलम्ब से होगा, 8/4/10/5 कार्य का नाश होगा, 11 कार्य सिद्धि, 2 कार्य वृद्धि 3/6/0 कार्य शीघ्र होगा।

98. तिथि, वार, नक्षत्र, प्रहर, लग्न जोड़ 8 का भाग दें, 7/6 शेष देव बाधा, 2/8 पितर दोष, 6/4 भूत बाधा, 1/5 बाधा नहीं है।

99. सूर्य नक्षत्र से प्रश्न वाले दिन की नक्षत्र संख्या 9 हो तो पशु वन में चला गया है, 6 हो तो मार्ग में है। 7 हो तो घर आ गया, 2 हो तो नहीं आएगा। 3 हो तो पशु मर गया है।

100. चार रेखा तिरछी, 4 रेखा खड़ी बना 16 कोष्ठक चक्र तैयार कर मध्य के 4 कोष्ठकों में कर्णिका को साथ कमल बनाएं। ईशान कोण से प्रारम्भ कर मीनादि राशियाँ लिखें। चक्र में वृष से सिंह तक 4 राशियों की मेष वीथी, वृश्चिक से 4 मिथुन वीथी, तथा मीन, मेष, तुला, कन्या की वृष वीथी संज्ञा जानकर आरूद लग्न का ज्ञान करें। जिस दिशा में प्रश्नकर्ता बैठा हो वह आरूद लग्न कहा जाता है या प्रश्नकर्ता से राशि चक्र में ऊंगली रखवाएं। आरूद लग्न से राशि तक छात्र होता है। मकर, वृश्चिक, कर्क, मीनारगढ़ लग्न से प्रथम व अन्तिम द्रेष्काण हो तो मृत्युदायक, पृष्ठोदय राशि में प्रश्न हो तथा पाप ग्रह लग्न से 4/7/12 वें दशा शनि-चंद्र आठवें हो तो मृत्यु होती है।

101. रोगी, सम्बन्धी प्रश्न के समय वैधृति, व्यतीपात-योग, आश्लेषा, रेवती नक्षत्र, कर्कांश, विषनाड़ी. सूर्य दूषित मंगल-बुध-गुरु-शुक्र-शनि पाप युक्त ग्रह-नक्षत्र, पाप ग्रह युक्त राशि, राशि संधि, मास शून्य राशि तिथि नक्षत्र, जन्म नक्षत्र, लग्न से द्वादश या आठवें क्षीण चंद्र जो शत्रु ग्रह से दृष्ट हो-उक्त योग प्रश्नकर्ता कान, नेत्र, ललाट, मुख, कण्ठ का स्पर्श कर रहा हो तो व्याधि या मृत्यु होती है।

102. जो ग्रह अपने उच्च, मूल त्रिकोण, मित्र-राशि, स्वराशि, स्वद्रेष्काण स्वनवांश में हो तो वह स्थान बली, मंगल-सूर्य दसवें, शनि 7 वें, बुध लग्न, चंद्र-शुक्र चतुर्थ भाव में दिग्बली, मकर से 6 राशि तक चंद्र, सूर्य, बुध, गुरु, शुक्र, बलवान, कर्क से 6 राशि तक मंगज-शनिबली शुक्ल पक्ष में शुभ व कृष्ण पक्ष में पाप ग्रह बली, वक्री ग्रह चेष्टा बली, शुभ ग्रह दिन बली, पाप ग्रह राशि बली है।

103. लग्न, होरा, द्रेष्काण, द्वादशांश, नवांश, सप्तांश, षोडशांश, काल होरा, त्रिशांश, षष्ठांश-उत्तरोत्तर हीन बली है। प्रश्न लग्न की कला

बनाकर 9 से गुणा कर 27 का भाग दें लब्धि नवांश होता है। लब्धि को 7 से गुणा कर 4 से भाग देने पर लब्धि नवांश होती है। अथवा तिगुणा कर 12 से भाग दें वही जन्म लग्न होगा।

104. शुभ ग्रहकेन्द्र, त्रिकोण में पाप ग्रह 1/4/7/10/8 के अलावा अन्यत्र हो तो प्रश्नकर्ता की मनोकामनाएं पूर्ण होंगी। प्रश्न लग्न से 2/7/10/11/6/3 में कहीं चंद्रमा पर गुरु दृष्टि हो तो स्त्री द्वारा लाभ 1/3/9/8 में पाप ग्रह हो तो कार्य नाश, द्रव्य नाश, भय व्याप्त हो। सौम्य दृष्ट शुभ ग्रह 1/7/8/5 में तथा 3/6/10/11 चंद्रमा हो तो रोगी रोग मुक्त होगा।

105. शुभ ग्रह 10/7 भाव में स्थान लाभ 5/9 में सम्मान व धन लाभ, पाप ग्रह 11/12 अनिष्ट, लग्न में क्षीण चन्द्र अशुभ, 10 वें क्षीण चंद्र शुभ।

विंशोत्तरी महादशा के ग्रहों का फलादेश

1. सूर्य की महादशा में जातक का चित्त उद्विग्न बना रहता है। उसे परदेश वास, चोट, अनेक प्रकार के क्लेश, क्षोभ, धन का नाश, भाई–बन्धुओं से वियोग तथा राज कुल से भय आदि कष्टों का सामना करना पड़ता है।

2. चन्द्रमा की महादशा में जातक के बल, वीर्य, प्रताप, सुख, धन, भोजन आदि की वृद्धि होती है। उसे मिष्टान–भोजन, दिव्य, शय्या, आसन, छत्र, वाहन, स्वर्ण, भूमि तथा अनेक प्रकार के ऐश्वय की प्राप्ति होती है।

3. मंगल की महादशा में जातक को शस्त्र के द्वारा चोट, अग्नि अथवा रोगों का भय, धन की हानि, चोरी, व्यवसाय में हानि, दैन्य, दुःख आदि कष्ट उठाने पड़ते है।

4. राहु की महादशा में जातक को मतिभ्रम सर्वशून्य, विपत्ति कष्ट रोग, धन–नाश, प्रिय–वियोग, मृत्युतुल्य कष्ट या अनेक प्रकार के दुःखों का सामना करना पड़ता है।

5. 'गुरु' की महादशा में जातक को राजा से सम्मान, मित्र एवं रत्नों का लाभ, शत्रुओं पर विजय, आरोग्य, शारीरिक बल तथा अनेक प्रकार के सुखों का लाभ होता है। उसके सभी मनोरथपूर्ण होते हैं।

6. शनि की महादशा में जातक को मिथ्या अपवाद, बन्धन, आश्रय का नाश, धन धान्य तथा स्त्री से दुःख, सब कामों में हानि तथा असफलताओं का सामना करना पड़ता है।

7. 'बुध' की महादशा में जातक को अनेक प्रकार के भोग सुख, धन, वैभव तथा दिव्य स्त्रियों की प्राप्ति होती है। उसके आनन्द तथा ऐश्वर्य की वृद्धि होती है।

8. केतु की महादशा में जातक को अनेक प्रकार की आपत्ति–विपत्ति, भय, रोग, संकट, हानि, विषाद एवं अनर्थों का सामना करना पड़ता है, उसके प्राणों पर भी संकट बना रहता है।

9. शुक्र की महादशा में जातक को मित्रों द्वारा उत्तम वस्तुओं की प्राप्ति, स्त्रियों द्वारा विलास, धन, हाथी, घोड़ा, वाहन, छत्र, राज्य, सम्पत्ति आदि की प्राप्ति होती है। तथा उसके सभी मनोरथ पूर्ण होते हैं।

आवश्यक कथन–ग्रहों की महादशा का उक्त फलादेश सामान्य स्थिति में समझना चाहिए। यदि जन्म कुण्डली में राहु, केतु, शनि, मंगल आदि क्रूर ग्रह अथवा अशुभ फल देने वाले ग्रह उच्च राशि में स्वक्षेत्रगत अथवा शुभ फल देने की स्थिति में बैठे हों तो उस परिस्थिति में इन अशुभ फल देने वाले ग्रहों की महादशा भी शुभ फलदायक बन जाती है। इसी प्रकार यदि जन्म–कुण्डली में चन्द्रमा, गुरु, शुक्र, आदि शुभ फल देने वाले ग्रह नीच के शत्रु की राशि में अथवा अशुभ फल देने की स्थिति में बैठे हों तो उस परिस्थिति में इन शुभ फल देने वाले ग्रहों की महादशा में भी अशुभ फल प्राप्त होगा। अन्तर केवल यही है कि जन्म–कुण्डली शुभ फलदायक, क्रूर ग्रहों की महादशा में अशुभ फल, कम मात्रा में ही प्राप्त होता है। यही बात अन्तर्दशा एवं प्रत्यन्तर दशा आदि में ग्रहों के फलादेश का निर्णय करते समय भी ध्यान में रखनी चाहिए।

ग्रहों की महादशा के सामान्य फलादेश के सम्बन्ध में ऊपर कहा जा चुका है। महादशाओं के अन्तर्गत विभिन्न ग्रहों की अन्तर्दशाओं के फलादेश को आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए–

सूर्य की महादशा में '**सूर्य के अन्तर का फल**'

सूर्य की महादशा में सूर्य की ही अन्तर्दशा हो तो जातक को राजकुल से लाभ प्राप्त होता है, परन्तु भाई–बन्धुओं से विपत्ति, पित्त के प्रकोप से पीड़ा एवं सदैव खर्च का सामना भी करना पड़ता है।

सूर्य की महादशा में **'चन्द्रमा के अन्तर का फल'**

सूर्य की महादशा में चन्द्रमा की अन्तर्दशा हो तो जातक को सुख प्राप्ति धन–लाभ, विदेश–गमन तथा शत्रु से सन्धि आदि की प्राप्ति होती है।

सूर्य की महादशा में **'मंगल के अन्तर का फल'**

सूर्य की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा हो तो जातक को स्वर्ण मणि, रत्न, सवारी धन तथा सम्मान की प्राप्ति होती है।

सूर्य की महादशा में **'राहु का अन्तर का फल'**

सूर्य की महादशा में राहु की अन्तर्दशा हो तो जातक को व्याधि, अपमान, शंका धन–नाश, जन–हानि आदि अनेक प्रकार के कष्ट उठाने पड़ते हैं।

सूर्य की महादशा में **'गुरु के अन्तर का फल'**

सूर्य की महादशा में 'गुरु' की अन्तर्दशा हो तो जातक को धन, धर्म एवं पद की प्राप्ति होती है तथा शारीरिक व्याधियाँ दूर हो जाती है।

सूर्य की महादशा में **'शनि के अन्तर का फल'**

सूर्य मी महादशा में 'शनि' की अन्तर्दशा हो तो जातक को राज्य–भंग, भाई बुन्धुओं का वियोग तथा शारीरिक विकलता आदि कष्ट उठाने पड़ते हैं।

सूर्य की महादशा में **'बुध के अन्तर का फल'**

सूर्य की महादशा में 'बुध' की अन्तर्दशा हो तो जातक को दरिद्रता, क्षुद्रकुष्ट, खुजली, शिरोरोग आदि कष्टों का सामना करना पड़ता है तथा उसके शरद्कालीन अन्न का नाश होता है।

सूर्य की महादशा में **'केतु के अन्तर का फल'**

सूर्य की महादशा में 'केतु' की अर्न्तदशा हो तो जातक को देश–त्याग, धन–नाश, बन्धु आदि विपत्तियां घेर लेती हैं। ऐसा व्यक्ति भ्रमण अधिक करता हैं। और लाभ के स्थान पर हानि अधिक होती है।

सूर्य की महादशा में **'शुक्र के अन्तर का फल'**

सूर्य की महादशा में 'शुक्र' की अन्तर्दशा हो तो जातक शिरोरोग, अतिसार, अतिसार ज्वर, शूल आदि रोगों का शिकार बनता है। उसे अन्य प्रकार के शारीरिक कष्ट भी उठाने पड़ते हैं।

चन्द्रमा की महादशा में **'चन्द्रमा के अन्तर का फल'**

चन्द्रमा की महादशा में 'चन्द्रमा' की अन्तर्दशा हो तो जातक को वस्त्राभूषण स्त्री–पुत्र, आदि का लाभ होता है। उसे नींद अधिक आतीर है। तथा उसे आत्मपक्ष में लाभ एवं कल्याण की प्राप्ति होती है।

चन्द्रमा की महादशा में **'मंगल के अन्तर का फल'**

चन्द्रमा की महादशा में 'मंगल' की अन्तर्दशा हो तो जातक मन्दाग्नि एवं पित्त–जन्य व्याधियों से पीड़ित होता है। उसे अग्नि भय, पदावनति तथा अन्य प्रकार के कष्ट भी उठाने पड़ते हैं।

चन्द्रमा की महादशा में **'गुरु के अन्तर का फल'**

चन्द्रमा की महादशा में राहु की अन्तर्दशा हो तो जातक को शत्रु, रोग, अग्नि आदि का भय, धन का नाश, बन्धु–बान्धवों का नाश आदि दुःखों का सामना करना पड़ता है। उसके लिए सुख प्राप्त करना कठिन हो जाता है।

चन्द्रमा की महादशा में **'गुरु के अन्तर का फल'**

चन्द्रमा की महादशा में गुरु की अन्तर्दशा हो तो जातक को वस्त्राभूषण लाभ की प्राप्ति होती है। वह धर्माधर्म का विचार रखता है, तथा सब प्रकार से सुखी रहता है।

चन्द्रमा की महादशा में **'शनि के अन्तर का फल'**

चन्द्रमा की महादशा में शनि की अन्तर्दशा हो तो जातक को भाई–बन्धुओं से उद्वेग, हानि, भय, शोक तथा सन्देह की प्राप्ति होती है। व्यसनों के कारण उसे कष्ट उठाना पड़ता है तथा और भी अनेक प्रकार के दोष उपस्थित हो जाते हैं।

चन्द्रमा की महादशा में **'बुध के अन्तर का फल'**

चन्द्रमा की महादशा में बुध की अन्तर्दशा हो जो जातक को हाथी, घोड़ा, माय, वाहन, धन, आदि अनेक प्रकार की वस्तुएँ प्राप्त होती है। सुख मिलता है।

चन्द्रमा की महादशा में **'केतु के अन्तर का फल'**

चन्द्रमा की महादशा में केतु की अन्तर्दशा हो तो जातक को मनोद्वेग, चपलता, धनहानि, जनहानि, आदि का शिकार बनना पड़ता है।

चन्द्रमा की महादशा में **'शुक्र के अन्तर का फल'**

चन्द्रमा की महादशा में 'शुक्र' की अन्तर्दशा हो तो जातक के घर में कन्या का जन्म होता है। उसे मणि–मुक्ताहार, आदि की प्राप्ति होती है। तथा अनेक स्त्रियों के साथ सम्पर्क रहता है।

चन्द्रमा की महादशा में **'सूर्य के अन्तर का फल'**

चन्द्रमा की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा हो तो जातक के शत्रुओं का नाश होता है, रोग नष्ट होते हैं, मनुष्यों में प्रभाव बढ़ता है। तथा अनेक प्रकार के सुख एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है।

मंगल की महदशा में **'मंगल के अन्तर का फल'**

मंगल की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा हो तो जातक को अग्नि, शस्त्र–चोर, शत्रू तथा अनेक प्रकार की विपत्तियों से भय, धन–नाश एवं रोग के कारण शारीरिक पीड़ा का सामना करना पड़ता है।

मंगल की महादशा में **'राहु के अन्तर का फल'**

मंगल की महादशा में 'राहु' की अन्तर्दशा हो तो जातक देवता, ब्राह्मण आदि का पूजन करता है। उसे तीर्थ यात्रा का लाभ मिलता है, परन्तु राजा के द्वारा कुछ भय भी होता है।

मंगल की महादशा में **'गुरु के अन्तर का फल'**

मंगल की महादशा में 'गुरु' की अन्तर्दशा हो तो जातक का भाइयों से विरोध, शत्रुओं से संग्राम एवं पर स्त्री का साथ होता है। उसे रक्त–पित्त की पीड़ा से भी पीड़ित रहना पड़ता है।

मंगल की महादशा में **'शनि के अन्तर का फल'**

मंगल की महादशा में शनि की अन्तर्दशा हो तो जातक के परिवार जनों का नाश होता है तथा सहस्त्रों प्रकार के कष्टों का सामना करना पड़ता है।

मंगल की महादशा में **'बुध के अन्तर का फल'**

मंगल की महादशा में बुध की अन्तर्दशा हो तो जातक को शत्रु, चोर, तथा अग्नि आदि से भय होता है तथा किसी अत्यन्त क्रूर मनुष्य के द्वारा कष्ट भी उठाना पड़ता है।

मंगल की महादशा में **'केतु के अन्तर का फल'**

मंगल की महादशा में केतु की अन्तर्दशा हो तो जातक की बादल, बिजली, अग्नि, शस्त्र, चोर, आदि से भय तथा कष्ट प्राप्त होता है।

मंगल की महादशा में **'शुक्र के अन्तर का फल'**

मंगल की महादशा में शुक्र के अन्तर्दशा हो तो जातक को शस्त्र–भय, शारीरिक व्याधि, उपद्रव, धन–नाश आदि संकटों का सामना करना पड़ता है तथा परदेश की यात्रा करनी पड़ती है।

मंगल की महादशा में **'सूर्य के अन्तर का फल'**

मंगल की महादशा में 'सूर्य' की अन्तर्दशा हो तो जातक का प्रताप एवं प्रभाव प्रचण्ड बना रहता है। वह अनर्थकर कार्यों को करता है। राजा से शर्त लगाकर विजय प्राप्ति करता है।

मंगल की महादशा में **'चन्द्रमा के अन्तर का फल'**

मंगल की महादशा में चन्द्रमा की अन्तर्दशा हो तो जातक को मणि–माणिक्य धन, मित्र, राजा द्वारा सम्मान तथा धन एवं विभिन्न प्रकार के सुखों की प्राप्ति होती है।

राहु की अन्तर्दशा में **'राहु के अन्तर का फल'**

राहु की महादशा में राहु की ही अन्तर्दशा हो तो जातक के भाई अथवा पिता की मृत्यु, शरीर से रोग, धन का नाश, विदेश गमन तथा सम्मान की हानि होती है। तथा अन्य प्रकार के दुःख भी भोगने पड़ते हैं।

राहु के महादशा में **'गुरु के अन्तर का फल'**

राहु की महादशा में गुरु की अन्तर्दशा हो तो जातक को रक्त-पित्त की पीड़ा, हाथ-पांव आदि शरीर के किसी अंग का टूट जाना, स्वजनों से कलह तथा मूर्खता के कारण किये हुए कर्मों को त्याग देना आदि कष्ट उठाने पड़ते हैं।

राहु की महादशा में **'शनि के अन्तर का फल'**

राहु की महादशा में शनि की अन्तर्दशा हो तो जातक को रक्त पित्त की पीड़ा होती है। मित्र एवं भाइयों के साथ स्नेह बढ़ता है। बुद्धि धन तथा भोग की वृद्धि होती है। परन्तु इसके साथ ही किसी मामले में थोड़ा-सा क्लेश भी भोगना पड़ता है।

राहु की महादशा में **'बुध के अंतर का फल'**

राहु की महादशा में बुध की अन्तर्दशा हो तो जातक देवताओं एवं ब्राह्मणों की सेवा करने वाला, धनी तथा व्याधियों से रहित होता है।

राहु की महादशा में **'शुक्र के अंतर का फल'**

राहु की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा हो तो जातक को मित्र के कारण सन्ताप तथा भाई-बन्धुओं से कलह एवं कष्ट भोगना पड़ता है। उसे स्त्री, भोग तथा धन का लाभ भी होता है।

राहु की महादशा में **'सूर्य के अंतर का फल'**

राहु की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा हो तो जातक को शस्त्र, रोग, चोर, अग्नि तथा राजा से भय होता है। उसके धन का भी नाश होता है।

राहु की महादशा में **'चंद्रमा के अंतर का फल'**

राहु की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा हो तो जातक को कलह, धन-नाश, बंधु-विरोध तथा अनेक प्रकार के कष्टों का सामना करना पड़ता है। साथ ही स्त्री का लाभ भी होता है।

राहु की महादशा में **'मंगल के अंतर का फल'**

राहु की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा हो तो जातक को शत्रु, शस्त्र, अग्नि तथा चोरों का भय निरन्तर बना रहता है। उसे अन्य अनेक प्रकार के कष्ट भी प्राप्त होते हैं।

गुरु की महादशा में **'गुरु के अंतर का फल'**

गुरु की महादशा में गुरु की ही अन्तर्दशा हो तो जातक को पुत्र की प्राप्ति तथा धन एवं धर्म की वृद्धि का लाभ प्राप्त होता है। उसे सब वर्ण के लोगों से धन प्राप्त होता है, तथा अन्य प्रकार के लाभ होते हैं।

गुरु की महादशा में **'शनि' के अंतर का फल**

गुरु की महादशा में शनि की अन्तर्दशा हो तो जातक वेश्या के साथ समागम करता है। वह मद्य-पान करता है तथा धन-धर्म वस्त्र एवं सुख से हीन हो जाता है।

गुरु की महादशा में **'बुध के अंतर का फल'**

गुरु की महादशा में बुध की अन्तर्दशा हो तो जातक शरीर से स्वस्थ रहता है, वह गुरु, देवता तथा अग्नि पूजन आदि सत्कर्म करता है। उसे मित्रों का तथा धन आदि अनेक प्रकार के सुखों का लाभ होता है।

गुरु की महादशा में **'केतु के अन्तर का फल'**

गुरु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा हो तो जातक के पुत्र तथा भाइयों को चोट लगती है। वह स्थान भ्रष्ट, इधर-उधर भ्रमण करने वाला तथा भोगरहित होता है।

गुरु की महादशा में **'शुक्र के अन्तर का फल'**

गुरु की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा हो तो जातक को शत्रु से भय, परिवार में कलह, स्त्रियों से पीड़ा, धन की हानि तथा मानसिक चिन्ताओं का सामना करना पड़ता है।

गुरु की दशा में **'सूर्य के अन्तर का फल'**

गुरु की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा हो तो जातक को शत्रुओं पर विजय प्राप्त होती है। राजा से सम्मान मिलता है। उसके तेज, प्रताप तथा साहस में अत्यधिक वृद्धि होती है, और वह अनेक प्रकार के सुख प्राप्त करता है।

गुरु की महादशा में **'चन्द्रमा के अन्तर का फल'**

गुरु की महादशा में चन्द्रमा की अन्तर्दशा हो तो जातक अनेक स्त्रियों के साथ भोग करता है। उसके शत्रु नष्ट हो जाते हैं। वह राजा के समान प्रतापी, सुख और ऐश्वर्यशाली होता है।

गुरु की महादशा में **'मंगल के अन्तर का फल'**

गुरु की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा हो तो जातक अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता है। उसे धन, कीर्ति, स्वास्थ्य, यश, सौभाग्य की प्राप्ति होती है।

गुरु की महादशा में **'राहु के अन्तर का फल'**

गुरु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा हो तो जातक को भाई–बन्धुओं से घबराहट, रोग–मृत्यु एवं कलह की प्राप्ति होती है। उसके अपने स्थान का भी नाश होता है।

शनि की महादशा में **'शनि के अन्तर का फल'**

शनि की महादशा में शनि की ही अन्तर्दशा हो तो जातक के शरीर में पीड़ा होती है। पुत्र से कलह, स्त्री के कारण बुद्धि का नाश, विदेश गमन तथा अनेक प्रकार के कष्ट उठाने पड़ते हैं।

शनि की महादशा में **'बुध के अन्तर का फल'**

शनि की महादशा में बुध की अन्तर्दशा से तो जातक को विजय, सफलता, यश, सम्मान, सुख, सौभाग्य, तथा मित्रों का लाभ होता है। उसे स्थान, भूमि तथा धन की प्राप्ति भी होती है।

शनि की महादशा में **'केतु के अंतर का फल'**

शनि की महादशा में केतु की अंतर्दशा हो तो जातक को रक्त–पित्त सम्बन्धी पीड़ा धन–हानि, बन्धन, दुःस्वप्न, चिन्ता आदि अनेक प्रकार के कष्टों का सामना करना पड़ता है।

शनि की महादशा में **'शुक्र के अन्तर का फल'**

शनि की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा हो तो जातक को अपने भाई–बन्धु, तथा मित्रों से स्नेह, पत्नी से प्रेम, वात्सल्य सुख, सौभाग्य, धन, विजय, आदि सभी प्रकार के ऐश्वर्यों की प्राप्ति होती है।

शनि की महादशा में **'सूर्य के अंतर का फल'**

शनि की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा हो तो जातक के स्त्री पुत्र तथा धन का नाश होता है। प्राण बचने का भी सन्देह रहता है। जातक को अनेक प्रकार के शारीरिक एवं मानसिक कष्टों का सामना करना पड़ता है।

शनि की महादशा में **'चन्द्रमा के अन्तर का फल'**

शनि की महादशा में चन्द्रमा की अन्तर्दशा हो तो जातक को मृत्यु तुल्य कष्ट, स्त्री–वियोग तथा भाइयों से विरोध आदि दुःख प्राप्त होते हैं। साथ ही उसे क्रोध, बातरोग, उद्वेग, चिन्ता आदि का शिकार भी बनता पड़ता है।

शनि की महादशा में **'मंगल के अन्तर का फल'**

शनि की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा हो तो जातक अपने देश को त्याग देता है। उसे अनेक प्रकार के रोग एवं दुःखों का सामना करना पड़ता है तथा मृत्यु तुल्य कष्ट भी उठाता है।

शनि की महादशा में **'राहु के अंतर का फल'**

शनि की महादशा में राहु की अन्तर्दशा हो तो जातक के शरीर में वात पीड़ा, ज्वर, अतिसार आदि विकार उत्पन्नक होते हैं। वह शत्रुओं से पराजित होता है। उनके धन का नाश होता है तथा अन्य प्रकार से भी पतन के गड्ढे में गिरता है।

शनि की महादशा में **'गुरु के अन्तर का फल'**

शनि की महादशा में गुरु की अन्तर्दशा हो तो जातक ब्राह्मणों तथा देवताओं की पूजा करने वाला, स्थान, मृत्यु, गुण एवं अनेक प्रकार के सुख प्राप्त करने वाला, धनी तथा यशस्वी होता है।

बुध की महादशा में **'बुध के अन्तर का फल'**

बुध की महादशा में बुध की ही अन्तर्दशा हो तो जातक की बुद्धि तथा धर्म की वृद्धि होती है। मित्रों तथा बन्धुओं से स्नेह प्राप्त होता है। ज्ञान एवं धर्म का नाश होता है, परन्तु शरीर में कुछ पीड़ा बनी रहती है।

बुध की महादशा में **'केतु के अन्तर का फल'**

बुध की महादशा में केतु की अन्तर्दशा हो तो जातक को अनेक प्रकार के दुःख, शोक, क्लेश एवं शारीरिक कष्टों का सामना करना पड़ता है।

बुध की महादशा में **'शुक्र के अन्तर का फल'**

बुध की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा हो तो जातक को श्रेष्ठ, वस्त्र आभूषण एवं धन आदि की प्राप्ति होती है तथा धर्म–कर्म में रुचि बढ़ती है।

बुध की महादशा में **'सूर्य के अन्तर का फल'**

बुध की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा हो तो जातक को उतम वस्त्र, स्वर्ण, धन आभूषण, यश आदि की प्राप्ति होती है परन्तु अपनी स्त्री के कारण उसके मन मे उद्वेग की वृद्धि होती है।

बुध की महादशा में **'चन्द्रमा के अन्तर का फल'**

बुध की महादशा में चन्द्रमा की अन्तर्दशा हो तो जातक कुष्ठ, गण्डमाला, क्षय, भगन्दर, आदि रोगों का शिकार बनता है। हाथी आदि से गिरने का भय बना रहता है, तथा अन्य प्रकार के कष्टों का सामना भी करना पड़ता है।

बुध की महादशा में **'मंगल के अन्तर का फल'**

बुध की महादशा में 'मंगल' की अन्तर्दशा हो तो जातक के मस्तक अथवा कण्ठ में रोग होता है। उसे चोरों से भय अथवा अनेक प्रकार के क्लेशों का सामना करना पड़ता है।

बुध की महादशा में **'राहु के अन्तर का फल'**

बुध की महादशा में राहु की अन्तर्दशा हो तो जातक को शत्रु से पीड़ा तथा अग्नि से भय प्राप्त होता है। साथ ही आकस्मिक रूप से धन का नाश भी होता है।

बुध की महादशा में **'गुरु के अन्तर का फल'**

बुध की महादशा में गुरु की अन्तर्दशा हो तो जातक को व्याधि एवं शत्रुओं से भय एवं छुटकारा मिल जाता है। उसे राजा द्वारा सम्मान प्राप्त होता है। धर्म में प्रवृत्ति होती है। अध्यात्म की वृद्धि होती है। स्नेह, पवित्रता आदि सभी सद्रगुणों की प्राप्ति होती है।

बुध की महादशा में **'शनि के अन्तर का फल'**

बुध की महादशा में शनि की अन्तर्दशा हो तो जातक धन तथा धर्म का उपभोग करता है। उसे मित्रों द्वारा भी धन का लाभ होता है। वह बड़ा गम्भीर, धन का उपभोग करने वाला, किसी भी काम को करने में उत्साह न रखने वाला तथा नपुंसक होता है।

केतु की महादशा में **'केतु के अन्तर का फल'**

केतु की महादशा में केतु की ही अन्तर्दशा हो तो जातक को पुत्र-पुत्री की मृत्यु, धन का नाश, अग्नि का भय, दुष्ट स्त्रियों से कलह, रोग आदि अनेक प्रकार के संकटों का सामना करना पड़ता है।

केतु की महादशा में **'शुक्र के अन्तर का फल'**

केतु की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा हो तो जातक को अग्नि से दाह, तीव्र ज्वर, स्त्री से कलह, स्त्री-त्याग आदि के दुःख भोगने पड़ते हैं और उसके घर में कन्या का जन्म होता है।

केतु की महादशा में **'सूर्य के अन्तर का फल'**

केतु की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा हो तो जातक को राजा द्वारा पीड़ा, शत्रुओं से विरोध, अग्नि दाह, तीव्र ज्वर, विदेश गमन आदि कष्टों का सामना करना पड़ता है।

केतु की महादशा में **'चन्द्रमा के अन्तर का फल'**

केतु की महादशा में चन्द्रमा की अन्तर्दशा हो तो जातक को धन की लाभ-हानि, सुख-दुःख की प्राप्ति, स्त्री का लाभ, यश का नाश, आदि दोनों ही प्रकार के शुभ एवं अशुभ फल प्राप्त होते है।

केतु की महादशा में **'मंगल के अन्तर का फल'**

केतु की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा हो तो जातक का अपने गांव के लोगों से झगड़ा होता है। उसे चोरों से भय तथा शारीरिक पीड़ा का सामना करना पड़ता है।

केतु की महादशा में **'राहु के अन्तर का फल'**

केतु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा हो तो जातक को चोरों का भय, शत्रुओं से विरोध, तथा अन्य प्रकार के कष्टों का सामना करना पड़ता है। उसके अंग-भंग हो जाने की सम्भावना भी बनी रहती है।

केतु की महादशा में **'गुरु के अंतर का फल'**

केतु की महादशा में गुरु की अन्तर्दशा हो तो जातक का दुर्जनों अथवा राज-मान्य लोगों से सम्पर्क रहता है। उसके घर में पुत्र का जन्म होता है, तथा भूमि, धन आदि का लाभ भी होता है।

केतु की महादशा में **'शनि के अंतर का फल'**

केतु की महादशा में शनि की अन्तर्दशा हो तो जातक को स्वजनों से कलह तथा वात-पित्त पीड़ा का शिकर होना पड़ता है तथा परदेश गमन भी करना होता है।

केतु की महादशा में **'बुध के अंतर का फल'**

केतु की महादशा में बुध की अन्तर्दशा हो तो जातकों को भाई-बन्धुओं का स्नेह, सेवांग, बुद्धि लाभ, धन-प्राप्ति आदि अनेक प्रकार के सुख प्राप्त होते हैं और किसी भी प्रकार का कष्ट नही उठाना पड़ता है।

शुक्र की महादशा में **'शुक्र के अंतर का फल'**

शुक्र की महादशा में शुक्र की ही अन्तर्दशा हो तो जातक को निधि, स्त्री-समागम, धर्म, अर्थ, यश, काम तथा अनेक प्रकार के लाभ होते हैं।

शुक्र की महादशा में **'सूर्य के अंतर का फल'**

शुक्र की महादशा में 'सूर्य' की अन्तर्दशा हो तो जातक का उदर रोग, क्षय तथा गण्ड रोग आदि का शिकार बनना पड़ता है। उसे राजा, वंध्या स्त्री तथा कपटी मनुष्यों द्वारा भी दुःख भोगना पड़ता है।

शुक्र की महादशा में **'चन्द्रमा के अन्तर का फल'**

शुक्र की महादशा में चन्द्रमा की अन्तर्दशा हो तो जातक को पाण्डुरोग, शिरोरोग, नखरोग, तथा अस्थि-सम्बन्धी रोगों का शिकार होना पड़ता है तथा स्वास्थ की हानि होती है।

शुक्र की महादशा में **'मंगल के अंतर का फल'**

शुक्र की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा हो तो जातक को क्षय रोग तथा पित्तजन्य रोग होते हैं। उसे पद, उत्साह एवं भूमि का लाभ होता है।

शुक्र की महादशा में **'राहु के अंतर का फल'**

शुक्र की महादशा में राहु की अन्तर्दशा हो तो जातक को चाण्डाल मनुष्यों से क्लेश, भाई-बन्धुओं से उद्वेग, तथा आकस्मिक रूप से भय की प्राप्ति होती है।

शुक्र की महादशा में **'गुरु के अंतर का फल'**

शुक्र की महादशा में गुरु की अन्तर्दशा हो तो जातक को धन-धान्य, रत्न, भूमि, पुत्र, स्त्री, ऐश्वर्य एवं प्रभुत्व का लाभ होता है। सब प्रकार से सुखी रहता है।

शुक्र की दशा में **'शनि के अंतर का फल'**

शुक्र की महादशा में शनि की अन्तर्दशा हो तो जातक वृद्धा स्त्रियों के साथ मैथुन करता है। उसके पुत्रों एव शत्रुओं का नाश होता है। अनेक प्रकार की विपत्तियां उठ खड़ी होती हैं। अन्त में जाकर उसे सुख भी प्राप्त होता है।

शुक्र की महादशा में **'बुध के अंतर का फल'**

शुक्र की महादशा में बुध की अन्तर्दशा हो तो जातक को धनागम, राजा द्वारा स्नेह-सम्मान, शौर्य, तेजस्विता, लक्ष्मी सुख-सम्पत्ति आदि की प्राप्ति हो सकती है। उसके सभी मनोरथ पूर्ण होते हैं।

शुक्र की महादशा में **'केतु के अंतर का फल'**

शुक्र की महादशा में केतु की अन्तर्दशा हो तो जातक भाइयों से कलह एवं शत्रुओं का नाश करता है। कभी-कभी उसे शत्रुओं द्वारा पीड़ित भी होना पड़ता है। इस प्रकार उसे दुःख, हानि, लाभ, जय-पराजय, दोनों की प्राप्ति होती है।

❑❑❑